ISSN No. 0970-9398

राजभाषा भारती

वर्ष : 45 | अंक 166 | मार्च, 2024

नारी शक्ति का सम्मान
राष्ट्र का गौरव-अभिमान

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

ISSN No. 0970-9398

26 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

26 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

राजभाषा भारती

वर्ष : 45 अंक : 166 मार्च, 2024

नारी शक्ति का सम्मान, राष्ट्र का गौरव–अभिमान

> भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है, हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।
>
> –नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

संरक्षक
अंशुली आर्या
सचिव, राजभाषा विभाग

प्रधान संपादक
डॉ. मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग

उप सचिव (पत्रिका)
प्रेम नारायण

उप संपादक
डॉ. धनेश द्विवेदी

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्र–व्यवहार का पता:
उप संपादक (पत्रिका)
राजभाषा विभाग
एनडीसीसी–II भवन, चौथा तल,
बी विंग, जय सिंह रोड,
नई दिल्ली–110001
ईमेल–patrika-ol@nic.in
वेबसाइट–rajbhasha.nic.in

निःशुल्क वितरण के लिए

शुभकामनाएँ :

- ❖ माननीय गृह मंत्री 3
- ❖ माननीय गृह राज्य मंत्री (एन) 4
- ❖ माननीय गृह राज्य मंत्री (ए एम) 5
- ❖ माननीय गृह राज्य मंत्री (एन पी) 6
- ❖ सचिव, राजभाषा विभाग 7
- ❖ संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग 8

आमने–सामने :

1. सुमित्रा बाल्मीक, राज्य सभा सांसद 9
2. पी.टी. उषा, राज्य सभा सांसद 12
3. अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग 15
4. रेखा शर्मा, अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग 18
5. नीना सिंह, महानिदेशक, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल 21
6. डॉ. अरूणिमा सिन्हा, पर्वतारोही 23
7. डॉ. रश्मि शर्मा, उप निदेशक, इसरो, अहमदाबाद 25

लेख :

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1.	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः	मीनाक्षी भसीन	27
2.	मानस में स्त्री का स्वरूपः आदर्श का भव्यतम रूप	बिपिन कुमार झा	31
3.	संविधान सभा की सशक्त नारियाँ	डॉ. ज्योति यादव	34
4.	महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता	अस्मिका सिन्हा	39
5.	कम्ब रामायण में नारी पात्र	डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन	42
6.	भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान	अभिषेक कुमार प्रकाश	46

ISSN No. : 0970-9398

रा
ज
भा
षा
भा
र
ती

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
7.	सुरक्षा बलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी	सतीश चन्द्र डबराल	50
8.	चंद्रयान–3 से भारतीय महिला वैज्ञानिकों की उड़ान	प्रो. समिना मुनवर नायकवडी	54
9.	आंध्र प्रदेश का एक सितारा: श्रीमती पोणका कनकम्मा	डॉ. वी एल नरसिंहम शिवकोटी	56
10.	परिवार और समुदाय निर्माण में महिलाओं की भूमिका: हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में	डॉ. सोनाली मल्होत्रा	59
11.	ब्रह्मवादिनी वेदज्ञ: महान विदुषी गार्गी	वाई. उमापति	63
12.	आदिवासी कथाकार: एलिस एक्का	डॉ. हीरा मीणा	65
13.	भारतीय स्वाधीनता संग्राम की विस्मृत वीरांगनाएं: रानी वेलू नचियार और सेनापति कुयिली	डॉ. जी. एस. चौहान	68
14.	उन्नत तकनीकी से होता महिला कृषक उत्थान	डॉ.एस.आर.यादव	73
15.	विज्ञान के क्षेत्र में महिलाएं	निवेदिता मिश्रा	76
16.	हिंदी नाट्य साहित्य एवं रंगमंच में महिला नाटककारों का योगदान	आराधना साव	80
17.	बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में नेतृत्व का परचम लहराती नारी शक्ति	नौशाबा हसन	84
18.	ग्रामीण महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने का एक सशक्त माध्यम: स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी)	मनीष पासवान	88
19.	शैव भक्ति के संवर्धन में तमिल की महान नारियाँ	लता वेंकटेश	91
20.	समाज सुधारक: सावित्री बाई फूले	डॉ. अजय कुमार	94
21.	स्त्री दर्पण: रामेश्वरी नेहरू की महिला पत्रकारिता	सुभाष	97
22.	कोविड–19 महामारी से संघर्ष में महिलाएं नहीं रहीं किसी से कम	डॉ. विनीता	100
23.	पर्यावरण की रक्षा में रत एक अमूल्य रत्न: वृक्षजननी सालुमरदा तिम्मक्का	किरण अय्यर वी.	102
24.	मेहरुन्निसा परवेज़ और नारी उत्थान संघर्ष	इरफान आलम	105
25.	महिलाओं का बदलता कलेवर: लॉन बाउल्स खेल में भारतीय महिला शक्ति	संजय राघव	108
26.	संघर्षशील आदिवासी नायिका: मैरी कॉम मैदान के अंदर और बाहर	डॉ. गौतम कुमार मीणा	112

ISSN No. : 0970-9398

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

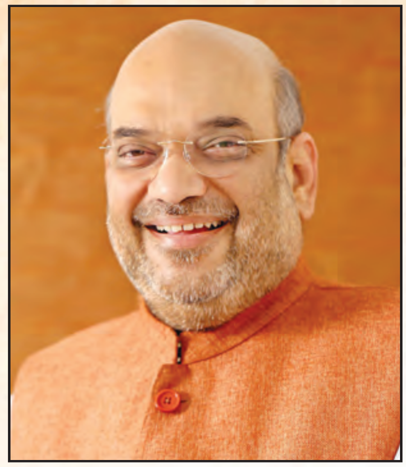

संदेश

गृह मंत्रालय (भारत सरकार) के राजभाषा विभाग की गृह–पत्रिका **'राजभाषा भारती'** के महिला सशक्तीकरण पर केन्द्रित 166वें अंक का प्रकाशन हार्दिक प्रसन्नता का विषय है।

यह अंक इस लिहाज से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि विगत दिनों नीतिगत दूरदर्शिता को ध्यान में रखते हुए नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 को सर्वसम्मति से संसद में पारित किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत की सनातन संस्कृति के अनुरूप "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" को देश के लोकतंत्र में चरितार्थ करके दिखाया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने दिखाया है कि 'वीमन लेड डेवलपमेंट' मोदी सरकार के लिए एक नारा नहीं, बल्कि एक संकल्प है। मुझे विश्वास है कि देश की महिला शक्ति को उनका अधिकार देने वाला मोदी सरकार का 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' संबंधी निर्णय, आने वाले समय में एक विकसित और समृद्ध भारत के निर्माण का मुख्य स्तंभ बनेगा।

भारत के लोग न केवल नारी को पूजनीय मानते हैं, अपितु समता और समावेशीकरण की अग्रिम पंक्ति में उन्हें स्थान भी देते हैं। गणतंत्र दिवस–2024 की परेड में महिलाओं की प्रभावी भागीदारी ने यह दिखा दिया है कि चाहे नीति हो या नेतृत्व, भारत की नारी शक्ति किसी भी क्षेत्र में किसी से कम नहीं है। सरकार का मानना है कि नारी शक्ति के सहयोग और सामर्थ्य के बिना एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण संभव नहीं है।

मैं राजभाषा विभाग द्वारा **'राजभाषा भारती'** के इस अंक के माध्यम से महिलाओं को दिए जा रहे सम्मान संबंधी प्रयास की सराहना करते हुए सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों और इस अंक के लेखकों को शुभकामनाएँ देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(अमित शाह)

ISSN No. : 0970-9398

नित्यानन्द राय
NITYANAND RAI

सत्यमेव जयते

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की पत्रिका **"राजभाषा भारती"** का आगामी अंक महिलाओं को समर्पित कर प्रकाशित किया जा रहा है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है ताकि उन्हें रोजगार, शिक्षा, आर्थिक तरक्की के बराबरी के मौके मिल सके, जिससे वह सामाजिक स्वतंत्रता और तरक्की प्राप्त कर सकें। यह वह माध्यम है, जिसके द्वारा महिलाएँ भी पुरुषों की तरह अपनी हर आकांक्षा को पूरा कर सकें। भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएँ चलाई जाती हैं। इन योजनाओं का गठन भारतीय महिलाओं की परिस्थिति को देखते हुए किया गया है ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकार द्वारा नई संसद के उद्घाटन सत्र में नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023 प्रस्तुत कर सर्वसम्मति से पारित कराने संबंधी अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया गया, जो नारी सम्मान की दिशा में अभी तक का सबसे सशक्त कदम है।

मैं **"राजभाषा भारती"** के माध्यम से महिला शक्ति को नमन करते हुए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई देता हूं ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(नित्यानन्द राय)

ISSN No. : 0970-9398

अजय कुमार मिश्रा
AJAY KUMAR MISHRA

सत्यमेव जयते

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि राजभाषा विभाग अपनी पत्रिका **'राजभाषा भारती'** का आगामी अंक महिला विशेषांक के रूप में प्रकाशित कर रहा है।

महिलाएं किसी भी राष्ट्र, समाज और परिवार की धुरी हैं। आज महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही हैं। भारत वर्ष में आदिकाल से ही नारी को वंदनीय माना गया है। महिला सशक्तीकरण वर्तमान समय की मांग है। महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य है महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता तथा उनके द्वारा स्वयं के अधिकारों का अधिक से अधिक उपयोग करने का सार्थक प्रयास। आज भारत की महिलाएं नीति से लेकर देश के नेतृत्व तक अपनी भूमिका बखूबी निभा रही हैं।

भारत आज सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से विश्व के अग्रणी देशों में शामिल है। सरकार का भी यही प्रयास है कि महिलाएं स्वयं से जुड़े अधिकारों के प्रति जागरूक बनें एवं निरंतर राष्ट्र विकास के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दें। सरकार द्वारा महिला उत्थान से जुड़ी अनेक योजनाओं और कार्यक्रम का संचालन सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा विभाग द्वारा पत्रिका **'राजभाषा भारती'** के अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने वाले इस अंक की सामग्री ज्ञानवर्धक, रोचक और प्रेरक होने के साथ–साथ महिलाओं को बेहतर कार्य करने की दिशा में प्रेरित करेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(अजय कुमार मिश्रा)

ISSN No. : 0970-9398

निशिथ प्रामाणिक
NISITH PRAMANIK

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका **"राजभाषा भारती"** का आगामी अंक महिलाओं को समर्पित है।

2. हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्व को सर्वोच्च मानते हुए बताया गया है कि **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः"** अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। महिला सशक्तिकरण हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत रही है।

3. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी महिलाओं के उत्थान और सम्मान के लिए सतत प्रतिबद्ध हैं। मोदी जी के प्रेरणादायक मार्गदर्शन में भारतीय संसद ने 128वें संविधान संशोधन विधेयक द्वारा "नारी शक्ति वंदन अधिनियम" पारित किया जो कि महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में उठाया गया एक ऐतिहासिक कदम है। इसके तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। महिलाओं के लिए आरक्षण के प्रावधान का महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, नेतृत्व, महिला सशक्तिकरण और संसाधनों के आबंटन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

4. मुझे पूर्ण विश्वास है कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर लोकार्पित होने वाला **'राजभाषा भारती'** का यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणादायक होगा।

(निशिथ प्रमाणिक)

ISSN No. : 0970-9398

अंशुली आर्या, आई.ए.एस.
सचिव
ANSHULI ARYA, I.A.S.
Seceretary

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTER OF HOME AFFAIRS

सत्यमेव जयते

संदेश

महिलाओं पर केंद्रित **"राजभाषा भारती"** का यह अंक प्रकाशित करना राजभाषा विभाग का सराहनीय प्रयास है।

हाल ही में आयोजित 26 जनवरी, 2024 की परेड में महिला शक्ति का प्रदर्शन अविस्मरणीय रहेगा। देश की नई संसद के पहले दिन प्रस्तुत "नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के पारित होने पर समूचा देश माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है और पुनः नारी शक्ति के उस स्वरूप की कल्पना कर रहा है जिसमें कहा गया है – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः। निश्चित रूप से देश की महिलाओं का सशक्तिकरण मजबूत और विकसित भारत का अभिन्न स्तम्भ है। हमारे देश में वैदिक युग में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी अनेक विदुषी महिलाओं ने अपने ज्ञान एवं कौशल से संसार को प्रभावित किया है। आज भी अनेकों महिलाएं अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हुए समृद्ध भारत की नींव रखने में देश की ध्वजवाहक बनी हुई हैं।

आज महिलाएं स्वतंत्र हैं, आर्थिक रूप से सशक्त हैं, दृढ़ संकल्पित हैं, सुरक्षा का भाव है और सपनों को साकार कर रही हैं। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस ऐसे ही प्रयासों को रेखांकित करते हुए खुशी जाहिर करने का अवसर है।

मैं **"राजभाषा भारती"** के सभी पाठकों को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई देती हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

अं आर्या

(अंशुली आर्या)

ISSN No. : 0970-9398

डॉ० मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव
DR. MEENAKSHI JOLLY
JOINT SECRETARY
Telefax : 23438130
E-mail : jsol@nic-in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
राजभाषा विभाग
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
चतुर्थ तल, एन. डी. सी. सी.-II भवन,
4th FLOOR, N.D.C.C.-II BHAWAN,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली—110001
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001

संदेश

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की पत्रिका **'राजभाषा भारती'** विगत 46 वर्षों से राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रही है। इसके अंक 166 को महिलाओं पर केंद्रित कर प्रकाशित करने की प्रेरणा सचिव, राजभाषा विभाग द्वारा दी गई है जो अत्यंत उत्साहवर्धक होने के साथ–साथ रोमांचपूर्ण भी है।

पत्रिका के इस अंक में माननीय राज्यसभा सांसद सुश्री सुमित्रा बाल्मीक एवं सुश्री पी.टी. उषा; सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय सुश्री अंशुली आर्या; अध्यक्ष, राष्ट्रीय महिला आयोग सुश्री रेखा शर्मा; महानिदेशक, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल सुश्री नीना सिंह; महिला पर्वतारोही सुश्री अरूणिमा सिन्हा एवं उप निदेशक, इसरो, अहमदाबाद सुश्री रश्मि शर्मा जैसे अपने–अपने क्षेत्रों की विशेषज्ञ महिलाओं के साक्षात्कार शामिल किए गए हैं। इससे पाठकों को नई जानकारी तो प्राप्त होगी ही, जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी।

पत्रिका में महिलाओं द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्राप्त उपलब्धियों पर आधारित लेखों का गुच्छ भी शामिल है, जिनकी गुणवत्ता अत्यंत उन्नत है तथा पाठकों को रोचक और प्रेरक जानकारी प्रदान करेंगे।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर लोकार्पित होने वाले **'राजभाषा भारती'** के अंक 166 को पाठकों को सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

मीनाक्षी जौली

(डॉ. मीनाक्षी जौली)

ISSN No. : 0970-9398

समाज निर्माण में महत्वपूर्ण है नारी की भूमिका – सुमित्रा बाल्मीक

सुमित्रा बाल्मीक जी मध्य प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। इन्होंने सामाजिक कल्याण के लिए लोगों को विशेषकर दलितों, पिछड़े वर्गों और महिलाओं की सेवा में 40 वर्ष बिताए हैं। कौशल विकास और प्रशिक्षण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण, महिलाओं के लिए रोजगार सृजन, दलितों, पिछड़े वर्गों और सफाई कर्मचारियों के मुद्दों को आगे बढ़ाया, जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन की दिशा में भी इन्होंने सक्रिय कार्य किए हैं।

❖ **सेवा की अमृतध्वनि समाज से होती हुई राजनीति तक कैसे पहुंची? राजनैतिक दायित्व बोध की अपनी मानवीय यात्रा के बारे में संक्षेप में बताएं?**

देखिए, सेवा धर्म सर्वोत्तम कर्म माना जाता है। लोगों की सहायता करना मेरी सामान्य प्रवृत्ति रही है। मैंने अपना शुरुआती जीवन घोर अभावों के बीच जिया है। इस दुर्गम यात्रा में उल्लास कम पीड़ा ज्यादा सहनी पड़ी। मैं जिस समाज में बड़ी हुई वहां सामाजिक रूढ़ियों की जड़ें गहरी थीं। समाज में लड़कियों के लिए पढ़ने लिखने का शून्य अवसर था। उन दिनों घरेलू कामकाज में पारंगत होना ही लड़कियों के जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता मानी जाती थी। अशिक्षा और घोर गरीबी के चलते समाज में लड़कियों की स्थिति नारकीय थी। ये सब मुझे बहुत सालता था। मैं घर के आस पास पुरुषों द्वारा स्त्रियों पर किए जाने वाले अत्याचार को देख भीतर तक आहत हो जाती थी। बचपन से ही संवेदनशील रही। पर पीड़ा मेरी निज पीड़ा बन जाती थी। मेरे पिता स्वतंत्रता सेनानी थे। लड़कियों की शिक्षा को लेकर उनकी सोच व्यापक थी। राष्ट्रीय समस्याओं को लेकर उनकी सूक्ष्म परिकल्पना एकदम विशिष्ट थी। वे सामाजिक समस्याओं और समाज में लड़कियों की दशा को लेकर व्यथित चिंतित रहते और उस पर गंभीर चर्चा करते थे। उनके व्यक्तित्व का खासा प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा। उस दौर में उनके द्वारा घर में रखी गई स्वाधीनता संग्राम से जुड़ी सारी किताबें मैंने छुप कर पढ़ ली थी। इन पुस्तकों ने मेरे भीतर रचनात्मकता और मानवीयता का विस्तार किया। इससे मेरे व्यक्तित्व में निखार आया। सामाजिक बंधनों के चलते जल्दी ही मेरी शादी कर दी गई। शादी के उपरांत अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मैंने अपनी सृजनात्मक अस्मिता बचाए रखी। पर सेवा का भाव शादी के बाद भी मन में यथावत बना रहा। इसे धार देने के लिए एक निमित्त की आवश्यकता थी इसलिए अर्थोपार्जन और लड़कियों को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से मैंने घर पर ही एक छोटा सिलाई केंद्र खोला। ये साल 1978 की बात है तब लड़कियों के लिए सिलाई बुनाई को ही प्राथमिकता दी जाती थी। इस केंद्र पर स्कूली लड़कियों के साथ घरेलू महिलाएं भी सीखने आने लगी। जैसा कि मैंने बताया कि मैं अतिसंवेदनशील हूं। इसलिए सिलाई प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं की छोटी–छोटी समस्याओं पर चर्चा करने लगी। उनकी तकलीफ और पीड़ा मुझे उद्वेलित करती और मैं उनकी मदद के लिए निकल पड़ती। मुझे आज भी स्मरण है कि मैं देर रात बाहर रहकर महिलाओं की मदद करती। उन्हें अस्पताल पहुंचाने से लेकर उनके बच्चों के स्कूल में नामांकन और घरेलू समस्याओं को हल करने में उनकी मदद करती।

इस तरह समाज सेवा की यात्रा की शुरूआत हुई। धीरे–धीरे मैंने कुछ महिलाओं के साथ मिलकर एक समिति की नींव रखी। तकरीबन 93 महिलाओं को उससे जोड़ा और आसपास की महिलाओं की घरेलू समस्याओं को सुलझाने में मदद करने लगी। धीरे धीरे लोग जुड़ने लगे। साल 1993 में मैं भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुई और 1999 में पहली बार कॉरपोरेशन का चुनाव जीतकर लोगों की मदद करने में जुट गई। साल 2004 में पुरुष सीट से निगम चुनाव जीतने का भी मौका मिला। लोग मेरे काम से खुश थे क्योंकि मैं उनकी हर छोटी बड़ी समस्या में उनके साथ खड़ी रहती थी। उन दिनों समाज में महिलाओं की बहुत दुर्दशा थी। शराब आदि की समस्या आम थी। मैंने इन समस्याओं को

ISSN No. : 0970-9398

सुलझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनौतियां खूब आईं लेकिन मैंने कभी अपना आत्मविश्वास नहीं खोया। लोगों का प्यार, सम्मान और प्रोत्साहन पाकर आगे बढ़ती रही। मुझे भारी जनसमर्थन मिला। आज मैं गर्व से कह सकती हूं कि पिछले कुछ सालों के मेरे छोटे छोटे प्रयासों से महिलाओं के जीवन और उनके आसपास के परिवेश में बहुत बदलाव आया है। माननीय मोदी जी के नेतृत्व में सबका साथ, सबका विकास के एजेंडे के साथ नारी सशक्तिकरण की दिशा में आज भी अग्रसर हूं।

❖ **आप हिंदी भाषी राज्य से हैं क्या राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करते हुए कभी किसी प्रकार की भाषाई चुनौती का सामना करना पड़ा?**

मेरा तो जन्म ही विशुद्ध रूप से ऐसे परिवेश में हुआ जहां हिंदी भाषा के जरिए लोग निरंतर अपनी श्री वृद्धि का स्वप्न देख रहे थे। बाल्यकाल से ही मुझे दो भाषाओं से बेहद लगाव था पंजाबी और हिंदी। हालांकि मैं बांग्ला भी समझ सकती हूं। लेकिन अंग्रेजी कभी भी मेरी रुचि सूची में शामिल नहीं रही। हिंदीं भाषी क्षेत्र से हूं इसलिए हिंदी की प्रकृति से भलीभांति परिचित हूं। मुझे एक वाक्या याद आता है जब मैं साउथ अफ्रीका में किसी सम्मेलन में भागीदारी के लिए गई थी। मैंने वहां हिंदी में ही अपना पक्ष रखा। मेरे लिए विशेष तौर से अंग्रेजी दुभाषिए को रखा गया। इसी तरह तमिलनाडु में भी जब जाना होता है तब भी हिंदी भाषा में ही संवाद करती हूं। हालांकि तमिलनाडु में हिंदी बहुत कम बोली जाती है और अंग्रेजी का भी उतना चलन नहीं। स्थानीय लोग तमिल भाषा का ही ज्यादा प्रयोग करते हैं। लेकिन मजे की बात ये है कि हिंदी में बोलते हुए भी वहां की महिलाएं भावों के जरिए मेरी बातों को बखूबी समझ रही थी। वे इतनी अभिभूत थी कि भावुक होकर उन्होंने गले लगा लिया। संप्रेषण का माध्यम कोई भी हो यदि आप अपनी बात को सहज भाव से रखते हैं तो भाषा दीवार नहीं बनती। वहां हम महिलाएं एक दूसरे की भाषा नहीं समझ रही थीं। लेकिन भावों का आदान–प्रदान कुछ ऐसा हुआ कि ऐसा लगा कि मैं उनके बीच की ही हूं। इसलिए भाषा का महत्व बहुत ज्यादा नहीं होता। भावों की अभिव्यक्ति बहुत महत्वपूर्ण होती है। मेरा मानना है कि हिंदी की तमाम बोलियां है जो अनेक प्रांतों में बोली जाती हैं और अन्य भारतीय भाषाएं भी हिंदी से कहीं ना कहीं जुड़ी हुई हैं। संवाद स्थापित करने के लिए हिंदी भाषा की सख्त जरूरत है। संस्कृत भाषा से निकली हुई हिंदी और हिंदी से अन्य भाषाओं का जुड़ाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए आध्यात्मिक कड़ी को पुनः जोड़ने का काम भी हिंदी भाषा अच्छे से कर सकती है।

❖ **क्या राजनीति में भाषाई प्रतिबद्धता महत्व रखती है? इस क्षेत्र में हिंदी भाषा के ग्राफ को आप उत्तरोत्तर कितना ऊपर उठता देखती हैं?**

आपकी बात को मैं एक ऐतिहासिक परिपेक्ष से जोड़ने की कोशिश करूंगी बाबा साहब अंबेडकर की जीवनी को पढ़ते हुए मैंने पाया कि एक बार जब वे इंग्लैंड में गोलमेज सम्मेलन में अपनी बात रख रहे थे तब वहां महात्मा गांधी भी उपस्थित थे। वहां देश के गरीबों के उत्थान और उन्हें न्याय देने की बात चल रही थी। संविधान के अनुच्छेदों में किस तरह की व्यवस्थाएं की जाएं इस पर भी चर्चा हो रही थी। तब बाबा साहब अंबेडकर ने पूरे आत्मविश्वास के साथ सबके समक्ष ये बात रखी कि निर्धनों की बात तो ठीक है किंतु अनुसूचित जाति जो हिंदुस्तान की आधी आबादी है, उनके उत्थान की भी बात हो। गौरतलब है यदि बाबा साहेब अंबेडकर को अंग्रेजी ना आती होती तो शायद उस बैठक में उनके लिए अपनी बात रखना अत्यंत मुश्किल हो जाता। इसलिए मैं फिर कहती हूं कि अपनी भाषा सीखनी चाहिए, उस पर गर्व करना चाहिए। किंतु दूसरी भाषाएं सीखने से हमें और भी मजबूती मिलती है। एक बात और

कहना चाहूंगी कि संविधान में दिए गए अधिकारों के बारे में लोगों को जानकारी प्राप्त हो इसलिए भाषा को प्रवाही बनाना होगा। देश के एक बड़े तबके को संविधान से सदैव दूर रखा गया। यदि वे संविधान में अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ जाते तो आज भारत की कुछ अलग तस्वीर होती। भारत का संविधान हिंदी में हो या अंग्रेजी में उसे पूरी तरह लोगों तक पहुंचाने का काम अब तक नहीं किया गया। लेकिन हमारी वर्तमान सरकार माननीय मोदी जी के नेतृत्व में संविधान को सर्वोपरि रखते हुए सभी जातियों के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। अगर हम बाल्मीकि रामायण का भी दृष्टांत लें तो उसके चरित्रों के जिन अधिकारों का वर्णन है, हमारा संविधान कहीं न कहीं उससे अनुप्राणित है। आपको पता होगा कि संविधान का पहला पृष्ठ रामायण के मुख्य पृष्ठ से लिया गया था जिसे बाद में हटा दिया गया। वर्तमान सरकार यह प्रयास कर रही है की अंतिम छोर के लोगों तक संविधान की बात पहुंचे।

❖ **वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार प्रसार की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों पर आपका क्या सुझाव है?**

मौजूदा सरकार ने नई शिक्षा नीति के तहत हिंदी भाषा के विस्तार के लिए बेहतरीन प्रयास किए हैं। आज मोदी जी के सद्प्रयासों का ही परिणाम है कि भारत पूरी गरिमा के साथ एक बार पुनः विश्व में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हुआ है। इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि 21वीं सदी के सबसे बड़े भाषाई सिपाही मोदी जी ही हैं। वे समाज को नई दिशा देने का काम कर रहे हैं। न केवल भाषा की प्रगति के लिए अपितु सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में पूरे प्राणपण से लगे हैं। हिंदी भाषा को वैश्विक पहचान दिलाने में उनकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। वे देश–विदेश में गर्व के साथ हिंदी में अपनी बात रखते हैं। हमारे गृहमंत्री जी भी हिंदी के विस्तार के लिए अत्यंत प्रयत्नशील दिखते हैं। चहुंओर हिंदी का मान बढ़ रहा है। भाषाई और सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में हम अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं इससे अच्छा और क्या हो सकता है।

❖ **भावी पीढ़ी के निर्माण में महिलाओं की क्या भूमिका है और भाषा इसमें सहोदर कैसे बन सकती है?**

देखिए मैं बलपूर्वक कहना चाहूंगी कि भाषा ही जननी है और जननी ही भाषा। बच्चा अपने जीवन का पहला शब्द मां की गोद में सीखता है। नारी शक्ति ही बच्चों में संस्कार बीज डालती है और उसे जीवन पथ पर अग्रेषित करती है। परिवार में संस्कारिक निर्मिती की जड़ों को आगे बढ़ाने वाली स्त्री ही है। मां पहली बार जब अपने बच्चे का परिचय अपने रिश्तेदारों से कराती है तो भाषा ही उसकी सहोदर बनती है। इसलिए भाषा की नींव को मजबूत करने में मां की भूमिका महत्वपूर्ण है। मां के संस्कारों और मां की प्रेरणा से ही बच्चा अपने भविष्य का निर्माण करता है। इसलिए मां जैसा बीज बोती है आगे चलकर फसल भी वैसी ही कटती है। यदि वह नफरत का बीज बोए तो जीवन भर बच्चा नफरत में जीता है और अगर सहिष्णुता का बीज डाले तो बच्चा पूरे जीवन सहिष्णु होकर आगे बढ़ता है। इसलिए समाज के निर्माण में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका है और भाषा इसमें पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाती है। बच्चा अपने बाल्यकाल में जिस भाषा की बेली चढ़ता है उत्तरोत्तर दृढ़ता से उसे ही अपने व्यक्तित्व में समाहित करता जाता है इसलिए भाषा बच्चों की सहोदर है और मां उसमें निर्णायक की भूमिका में होती है।

धन्यवाद! आपने अपना बहुमूल्य समय दिया।

साक्षात्कारकर्ता– लता प्रकाश
अपर निदेशक (आर),
राज्यसभा सचिवालय

ISSN No. : 0970-9398

देश के शीर्ष नेतृत्व ने हिंदी को वैश्विक सम्मान दिलाया है– पी.टी.उषा

अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्ध एथलीट और कोच सुश्री पी.टी. उषा वर्तमान में राज्यसभा में मनोनीत सदस्या हैं। 'एथलीट एक्सप्रेस' के नाम से लोकप्रिय पी.टी. उषा ने एशियाई खेलों, एशियाई चैंपियनशिप और विश्व जूनियर आमंत्रण मीट सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत के लिए पदक जीते हैं। उन्होंने अपने कैरियर में कई राष्ट्रीय और एशियाई रिकार्ड बनाए और तोड़े। इनको अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री पुरस्कार सहित अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। 'गोल्डन गर्लः द ऑटोबायोग्राफी ऑफ पी.टी.उषा' सहित उनके जीवन और उपब्धियों पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं।

खेल की उड़ान से राजनीति की उर्वरा भूमि पर अपने पांव जमाने वाली महान धावक और भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष, राज्यसभा की मनोनीत सांसद पिलाउल्लाकांडी थेक्केपरांबिल उषा उर्फ पी.टी. उषा ने राज्यसभा में हिंदी में शपथ लेकर राष्ट्र शिरोधारिणी हिंदी का मान बढ़ाया। नारी सशक्तिकरण की अनुपम छवि प्रस्तुत करने वाली पी.टी. उषा ने सामाजिक मिथकों और रूढ़ियों को तोड़ समाज में अपने लिए एक खास जगह बनाई है। वे महिलाओं की प्रेरणा स्त्रोत हैं। वे असीमित ऊर्जा और स्फूर्ति से भरी हैं। वे अक्सर कहती हैं, 'जब अधिकार ज़्यादा होते हैं, तो ज़िम्मेदारी भी बड़ी होती है...' इसे मैंने तब महसूस किया, जब मैंने राज्यसभा सत्र की अध्यक्षता की...। हम महिलाओं को भी हमारे प्रति लोगों के निहित विश्वास और आस्था के साथ आगे बढ़ना चाहिए और अपने कार्यों से मील का पत्थर बनना चाहिए।

❖ **भारत विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का देश है, आप इसे कैसे परिभाषित करती हैं?**

संस्कृति और भाषा के बीच परस्पर लेनदेन और आवाजाही बनी रहे तभी राजतंत्र और राष्ट्रधर्म का तालमेल बना रहता है। भारत की संस्कृति बहुधा विविध रूपों में अनुकरणीय रही है। विभिन्न जाति, धर्म, बोली ,भाषा और संस्कृति के विराट संयोजन ने इसे महान राष्ट्र बनाया है। इसलिए तमाम विप्लवों तथा विघटनों के बावजूद यह राष्ट्र केवल सांस्कृतिक और भाषाई सद्भावना के चलते ही मजबूती से अपने आधार स्तंभ पर टिका हुआ है। किसी भी राष्ट्र की भाषा और संस्कृति उसकी वैश्विक पहचान की कारक होती है, उसे एकसूत्र में पिरोती है। भारत भूमि भी अनेक संस्कृतियों की संगम स्थली रही है। कालक्रम में अनेक सभ्यताएं और संस्कृतियां यहां पल्लवित होती रही हैं। भाषा रूपी संस्कार शाला के विराट विस्तार का योग सूत्र केवल इसी बात में निहित है कि दुर्बोधता और भिन्नता के बावजूद हमने सभी बोलियों और भाषाओं को समवेत रूप में खुलकर स्वीकारा है। भारत की एकता और अखंडता की पृष्ठभूमि में भी यही स्वीकार्यता का भाव अवलंबित है। और कितना सुखद है कि अलग–अलग प्रांत के भाषा भाषी होने के बावजूद हम सब इस राष्ट्र की बगिया के स्वतंत्र पुष्प हैं। इससे बड़ी सिद्धि और जागृति और क्या हो सकती है। यहां सभी भाषाएं प्रश्रय पाती रहीं है। यही हमारे राष्ट्र की खूबी है यही चेतन भाव है।

❖ **खेल से राजनीति के सफर को कितना चुनौतीपूर्ण मानती हैं?**

जुलाई, 2022 में भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने मुझे राज्यसभा में मनोनीत किया। और नवंबर, 2022 में ही भारतीय ओलिम्पिक एसोसिएशन (IOA) की अध्यक्ष भी निर्वाचित हो गई थी। पहले मैं खेल में थी बाद में मुझे राजनीति का हिस्सा बनाया गया। दोनों जगह मैं पूरी दक्षता के साथ अपना कार्य कर रही हूं। राज्यसभा आने के बाद दायित्व बोध ज्यादा बढ़ गया। दिसंबर सत्र के दौरान राज्यसभा के उपसभापतियों के उस पैनल का हिस्सा बनी, जो सभापति और उपसभापति की गैर–मौजूदगी में सदन की कार्यवाही की अध्यक्षता करता है। इस पैनल में शामिल की जाने वाली पहली मनोनीत सदस्य होने का गौरव मुझे प्राप्त हुआ। उस सीट पर बैठकर पहली बार लगा कि किसी जहाज के कैप्टन की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। उस दिन मैंने खुद को सशक्त महसूस किया। जिस तरह खेल में देशवासियों का असीम प्रेम मिला उसी तरह राजनीति में भी लोगों का उतना ही उत्साह, स्नेह और समर्थन मिल रहा है। मैं खुश हूं कि दोनों क्षेत्र में देश की सेवा का मौका मिल रहा है।

ISSN No. : 0970-9398

❖ **आप गैर–हिन्दी भाषी राज्य से हैं, क्या आपको राष्ट्रीय स्तर पर भाषा संबंधी किसी चुनौती का सामना करना पड़ा?**

देखिए मन की साधना बड़ी चीज होती है। अहिंदी भाषी होने की वजह से निश्चित तौर पर मुझे भी भाषाई दुरुहताओं का सामना करना पड़ा। लेकिन बहुत मामूली तौर पर केवल शुरुआत में ही ऐसा हुआ। मैंने अपने जीवन में सकारात्मक रूप से साधना की सिद्धि प्राप्त कर ली है। मेरा मानना है आप जहां भी जाएं उस भूमि की जलवायु, खान–पान, पहनावा और उसकी भाषा को सद्भावना के साथ खुलकर स्वीकारें। उसके साथ तालमेल बैठाएं तो समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाती हैं। शुरू में जब दिल्ली आना जाना शुरू हुआ तो मैंने पाया की यहां ज्यादातर लोग बोलचाल में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी भी बहुतायत नहीं बोली जाती। ऐसे में मलयाली भाषी होने के कारण मुझे थोड़ी असहजता होती। लेकिन कहते हैं न कि सर्वत्र समभाव से देखने वाला व्यक्ति किसी भी वातावरण में स्वयं को उपयुक्त बना ही लेता है। इसलिए किसी एक भाषा में खुद को संकुचित या सीमित करने की बजाय मैंने स्वयं को साधन संपन्न बनाया और हिंदी सीखनी शुरू की। इसके बाद धीरे–धीरे सब सरल होता गया। मैंने मुक्त रूप से हिंदी को स्वीकारा और आत्मसात किया। फिर क्या था हिंदी ने भी मुझे स्वीकार लिया। अब कोई परेशानी नहीं होती। सारे अवरोध मिट गए। अब खुलकर हिंदी में संवाद भी करती हूं। अब यह मुझे बहुत सरल लगने लगी है। दरअसल जिस दिन आपने कर्म क्रिया को तय कर लिया उस दिन से सब सरल हो जाता है। अक्रिया या अकर्म ही किसी कार्य को दुर्गम बनाता है। इसलिए भाषा कोई भी हो उसे अपना बनाइए फिर वो हमेशा के लिए आपकी बन जाती है।

❖ **क्या हिन्दी भाषा को ग्लोबल रूप मिल रहा है और इसमें रोजगार की कितनी संभावनाएं हैं?**

मेरा मानना है कि जो लोग हिंदी की पत्र पत्रिकाओं पुस्तकों को घर का कबाड़ समझते हैं जिन्हें अंग्रेजी के माध्यम से केवल वैभव देने वाले धन की लालसा होती है वह विरासत का मूल्य नहीं समझते। हिंदी में भारतीय सांस्कृतिक और भाषाई संपदा के एक–एक तार को बारीकी से बुनने का सामर्थ्य है। इसलिए हमारी इस नई पीढ़ी को इस विरासत के महत्व को समझना होगा और इसे रोजगार में प्रयोग करना होगा। हर व्यक्ति अपने मन,कर्म और चेतना के अनुरूप हिंदी का आस्वादन ले तो हिंदी अपने आप आगे बढ़ेगी। हमें दिखावे के लिए नहीं बल्कि हिंदी को विलुप्त होने से बचाने के लिए काम करना होगा और हिंदी की विरासत को समझना होगा तभी हिंदी अपने मूल अस्तित्व के साथ बची रहेगी। रही बात रोजगार कि इसमें संभावनाओं की कमी नहीं। जिस तरह हिंदी को समूचे विश्व में सम्मान मिल रहा है उससे निरंतर रोजगार की संभावनाएं भी बलवती हो रही हैं। तमाम ऐसे क्षेत्र हैं जहां हिंदी के जरिए अर्थोपार्जन की दिशाएं खुली हैं। विश्व के अनेक विश्वविद्यालय हिंदी रोजगार सृजन से जुड़ी संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। भारत में भी अब हिंदी से जुड़े रोजगार के विकल्पों की कमी नहीं रही। निश्चित तौर पर वह समय दूर नहीं जब तकनीकी कौशल से लैस हिंदी भाषा एक ग्लोबल भाषा बन जाएगी और हम इसके माध्यम से अपनी क्षमता और दक्षता में निखार ला सकेंगे। आज भी यह एक व्यावहारिक भाषा मानी जाती है जिसमें रोजगार की असीमित संभावनाएं निहित हैं। बस कोशिश यह होनी चाहिए कि इसे और ज्यादा सर्वाग्रही और सरल कैसे बनाया जाए ताकि यह जन–जन की भाषा बन सके। सार्वजनिक हित की अभिवृद्धि तभी होगी जब कतिपय संस्थाओं द्वारा इसे रोजगार के निहितार्थ प्रयोग में लाया जाएगा। हालांकि काफी हद तक इस क्षेत्र में कार्य हो रहा है और आगे भी होने की संभावना है।

❖ **विभिन्न भाषाओं के खिलाड़ियों के साथ समन्वय स्थापित करने में भारतीय खेल संघ की क्या चुनौतियाँ हैं?**

किसी भी राष्ट्र के नागरिकों में खेल भावना का विकास होना शुभ संकेतक है। यह इस बात का द्योतक है कि देश की रीढ़ मजबूत हो रही है। सर्वांगीण विकास की यह कड़ी विविधता और भिन्नता के बावजूद हमें एक सूत्र में पिरोती है। यही आत्मविश्वास सतत विकास की संभावना को जन्म देता है। निश्चित तौर पर भारतीय खेल संघ में देश के अलग–अलग प्रांत के खिलाड़ी जुड़ते हैं और सच पूछिए तो विविधता में एकता की वास्तविक तस्वीर यही दिखती है। ऐसे में भाषा कई बार चुनौती तो बनती है लेकिन सबसे अच्छी बात यह है की यहां खिलाड़ी खेल के माहौल में न केवल खेल भावना के साथ आगे बढ़ते हैं बल्कि परस्पर भाषा सहचर बनते हुए साथी खिलाड़ी को आगे भी बढ़ाते हैं। खेल भावना का विस्तार होता है बल्कि हमारी भाषा भी समृद्ध होती है। जब हम खिलाड़ी अलग–अलग भाषाओं में एक दूसरे से संवाद करते हैं तो हम परस्पर भाषाओं का आदान–प्रदान भी करते हैं। इस तरह भाषा और सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी होता है। और साथ रहते–रहते हम एक दूसरे की भाषा भी सीख लेते हैं। ऐसे में संपूर्ण भारत एक भाषाई छतरी के नीचे समा जाता है। कई बार खेल के दौरान मुझे भी भाषाई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन एक एथलीट के तौर पर मैंने इसे बहुत सहजता से लिया। जब भी मैं किसी हिंदी भाषी क्षेत्र की एथलीट से मिलती हूं तो उसकी भाषा की सूक्ष्मता को गहराई से ग्रहण करती हूं। फिर धीरे–धीरे आपसी संवाद के जरिए हम एक दूसरे

की भाषा सीख लेते हैं। वे मुझे अपनी भाषा सिखा देते हैं और मैं उन्हें अपनी। तो अब ग्राउंड में रहते हुए हम एक दूसरे की भाषा को आसानी से समझ सकते हैं और सीख भी सकते हैं। इस तरह भाषाई दीवार टूटती है और हम एक विस्तृत परिपेक्ष्य में सोचने लगते हैं। हम खेल के दौरान कई विदेशी भाषाओं से भी आत्म साक्षात्कार करते हैं। यह अच्छी बात है कि खिलाड़ी के तौर पर मैंने कई अन्य क्षेत्रीय भाषाएं भी सीखी और दूसरों को सिखाई भी। इस तरह खेल के ग्राउंड में आदान प्रदान का सिलसिला चलता रहता है। इससे भाषा और बोलियां समृद्धि होती हैं।

❖ **आप महान खिलाड़ियों में शुमार रहीं हैं और महिलाओं की प्रेरक शक्ति भी। महिलाएं सशक्त रूप में राष्ट्र के विकास की धूरी बनें इसके लिए क्या संदेश देना चाहेंगी?**

आमतौर पर लोग मुझे 'पय्योली एक्सप्रेस' या उड़नपरी के तौर पर जानते हैं। अंतरराष्ट्रीय खेल मंचों पर मैंने भारत के लिए कई पदक जीते हैं, जिनमें एशियाई खेल, एशियाई चैम्पियनशिप तथा वर्ल्ड जूनियर इन्विटेशनल मीट शामिल हैं। अपने करियर के दौरान मैंने कई राष्ट्रीय तथा एशियाई रिकार्ड भी तोड़े और बनाए हैं। चार स्वर्ण और सात रजत पदक हासिल किए हैं। और वर्ष 1984 में लॉस एंजिलिस में हुए ओलिम्पिक खेलों में महिलाओं की 400 मीटर बाधा दौड़ स्पर्धा में मेरे द्वारा लिया गया 55.42 सेकंड का वक्त आज तक राष्ट्रीय रिकॉर्ड है। तो मैं ये सब इसलिए बता रही हूं कि मैंने जो भी हासिल किया वो आसान नहीं। इसके लिए कठिन तप की जरूरत है। हमारे देश की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में कामयाबी का परचम लहरा रही हैं। नई पीढ़ी की महिलाएं अब हर प्रकार के खेलों में दस्तक दे रही हैं। लेकिन मेरा कहना है कि महिलाएं अपने जीवन में स्वावलंबी जरूर बनें। आत्मनिर्भरता बहुत जरूरी है। इससे आत्मविश्वास आता है। किसी भी क्षेत्र में जाएं पूरे गौरव और सम्मान के साथ मर्यादा का पालन करें। जीवन में शॉर्टकट सफलता का विकल्प नहीं है। मेहनत और लगन से ही कामयाबी का सफर तय करें। जीवन में अनुशासित भी बने और यशस्वी और दीर्घायु रहते हुए समाज के लिए निरंतर प्रेरक की भूमिका निभाएं।

❖ **वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में किये जा रहे प्रयासों पर आपके क्या सुझाव हैं?**

हंसते हुए... आपको मालूम ही होगा कि मैंने राज्यसभा की सदस्यता हिंदी में ग्रहण की है। ये गर्व की बात है कि माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार लगातार हिंदी के प्रचार प्रसार और विकास पर दृढ़ता से काम कर रही है। आज समूचे विश्व में हिंदी का डंका बज रहा है। यूएनओ से लेकर विभिन्न वैश्विक मैत्री सम्मेलनों में देश के शीर्ष नेतृत्व ने हिंदी को सर्वोच्च स्थान दिलाया है। अब अंग्रेजी भी, यहां तक की कारपोरेट जगत के लोग भी परस्पर संवाद की भाषा के तौर पर हिंदी को ही तरजीह दे रहे हैं। अंग्रेजी बोलने वाले लोग अब हिंदी में प्रेजेंटेशन दे रहे हैं और हिंदी में ही अपने विचारों को वैश्विक पटल पर रख रहे हैं। यह एक अच्छी बात है। इससे हिंदी का बाजार बढ़ रहा है। देश का शीर्ष नेतृत्व जब अपनी बात अपनी मातृभाषा में रखने लगे तो देशवासियों को निश्चित ही इससे प्रेरणा मिलती है। भारत में हिंदी बोलने वालों की एक बड़ी संख्या है। समूचा विश्व इस सत्य को स्वीकार रहा है कि हिंदी ही राष्ट्र के प्रतिनिधित्व की भाषा है। मौजूदा सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी हिंदी के विस्तार और विकास की चर्चा की है और इसे प्रमुखता से स्थान दिया है। मेडिकल से लेकर इंजीनियरिंग की पढ़ाई में हिंदी को महत्व दिया जा रहा है। अत्यंत हर्ष का विषय है कि हमारे माननीय गृहमंत्री भी हिंदी की समृद्धि और वैभव को लेकर गंभीर रूप से प्रयासरत दिखते हैं। हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने की उनकी कोशिश सराहनीय है। हम सभी देशवासियों को इससे प्रेरणा मिलती है। वास्तव में हिंदी में नेतृत्व की ताकत है और हिंदी को वह दर्जा मिलना ही चाहिए। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य तकनीकी क्षेत्र में भी हिंदी का दबदबा बढ़ा है यह गौरव की बात है।

साक्षात्कारकर्ता–डॉ. दर्शनी प्रिय
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

ISSN No. : 0970-9398

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में अहम है महिलाओं की भूमिका – अंशुली आर्या

भारतीय प्रशासनिक सेवा (बैच 1989) की बिहार कैडर की अधिकारी सुश्री अंशुली आर्या वर्तमान में गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग की सचिव हैं। उत्तरप्रदेश, बिहार सरकार में विभिन्न पदों पर कार्य करने सहित सुश्री अंशुली आर्या ने भारत सरकार में रक्षा मंत्रालय, भारत मौसम विज्ञान विभाग, दूरसंचार विभाग इत्यदि में कार्य किया है।

❖ **केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संबंध में भारतीय संविधान में किए गए प्रावधानों के बारे में आपका क्या कहना है?**

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 में संघ की राजभाषा के संबंध में प्रावधान किए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 351 में राजभाषा हिंदी के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। राजभाषा विभाग प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति पर कार्य करते हुए संविधान में प्रदत्त उपबंधों के तहत राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को लेकर निरंतर प्रयासरत है।

❖ **राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए विभाग द्वारा किस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं?**

माननीय गृह मंत्री जी की प्रेरणा से हाल ही में बहुत सारी नई पहलें की गई हैं। अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की एक श्रृंखला आरंभ की गई है जिसकी शुरुआत वाराणसी से हुई थी। अब तक ऐसे तीन सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं। इन सम्मेलनों के माध्यम से न केवल देशभर के राजभाषा कर्मियों, हिंदी सेवियों और हिंदी प्रेमियों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया जा रहा है बल्कि विभाग द्वारा की जा रही तमाम पहलों से भी अवगत कराया जाता है।

गृह मंत्रालय में कामकाज हिंदी में किया जा रहा है और अन्य मंत्रालयों में भी राजभाषा में कार्य का प्रतिशत बढ़ा है। राजभाषा विभाग राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए सतत प्रयासरत है। विभाग देशभर में स्थित अपने 8 क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों के माध्यम से देश में राजभाषा हिंदी का बेहतर कार्यान्वयन सुनिश्चित करता है। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय अपने अधिकारियों के माध्यम से केन्द्र सरकार के कार्यालयों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और बैंकों आदि का निरीक्षण ही नहीं करते अपितु राजभाषा के कार्यान्वयन में उनके समक्ष पेश आ रही समस्याओं का भी निराकरण करते हैं।

❖ **राजभाषा विभाग द्वारा अनुवाद को सहज,सरल और प्रभावशाली बनाने के लिए किए जा रहे उपायों के बारे में बताएं।**

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में अनुवाद कार्य की विशिष्ट भूमिका है। भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों आदि में तमाम ऐसे कार्य हैं जिन्हें द्विभाषी रूप में ही किया जाना अपेक्षित है। ऐसे कार्यों में अनुवाद की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। उदाहरण के तौर पर, राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अन्तर्गत 14 प्रकार के दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत किए जाने अनिवार्य हैं। इनमें संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले अनेक दस्तावेज़ भी शामिल हैं, जिन्हें द्विभाषी रूप में ही संसद के पटल पर रखा जाना होता है। अनुवाद की महती उपयोगिता के मद्देनजर राजभाषा विभाग ने सी–डेक पुणे के सहयोग से 'कंठस्थ' नाम से एक सॉफ्टवेयर तैयार किया है जो अनुवादकों के लिए बेहद उपयोगी है।

माननीय प्रधानमंत्री जी की वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए आज कंठस्थ ह्यूमन इंटेलीजेंस और आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का जीवंत उदाहरण है। इसकी ग्लोबल मेमोरी में आज

ISSN No. : 0970-9398

1 करोड़ से ज्यादा अनूदित वाक्यों का भंडार अनुवादकों के लिए उपलब्ध है। मशीनी ट्रांसलेशन के मामले में भी यह बेहतरीन परिणाम दे रहा है। मेरा मानना है कि यह टूल अब विश्व के बेहतरीन अनुवाद टूल की श्रेणी में शामिल हो गया है। इसी क्रम में "हिंदी शब्द सिंधु" नामक बृहत एवं सर्वसमावेशी शब्दकोश का निर्माण भी किया जा रहा है।

❖ **आपने "हिंदी शब्द सिंधु" शब्दकोश की बात उठाई, कृपया इस बारे में पाठकों को बताएं कि यह शब्दकोश कैसे अब एक व्यापक और लोकप्रिय कोश बनता जा रहा है?**

माननीय प्रधानमंत्री जी ने अनेक मंचों पर हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के विकास और उत्थान की बात कही है। माननीय गृह मंत्री जी की प्रेरणा से हमारा विभाग केन्द्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के सहयोग से "हिंदी शब्द सिंधु" नामक बृहत हिंदी शब्दकोश का निर्माण कर रहा है। यह शब्दकोश सर्वसमावेशी होने के साथ–साथ पूर्णतया डिजिटल है तथा इसमें आठवीं अनुसूची की सभी भारतीय भाषाओं के प्रचलित व लोकप्रिय शब्दों को समाहित करने का प्रयास किया जा रहा है। आज की तारीख में इसमें साढ़े तीन लाख से अधिक शब्दों को समाहित किया जा चुका है। मुझे उम्मीद है कि आने वाले समय में यह शब्दकोश सभी के लिए बेहद उपयोगी और सार्थक सिद्ध होगा।

❖ **आपकी दृष्टि में, हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की भूमिका किस प्रकार की है?**

केंद्र सरकार के देश भर में फैले हुए कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के मार्ग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करने के प्रयोजन से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। इस समय देश भर में 531 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां कार्यरत हैं। राजभाषा कार्यान्वयन की सबसे सूक्ष्म किंतु अत्यंत प्रभावी इकाई होने के कारण नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की महत्ता बढ़ जाती है।

❖ **राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों/नागरिकों को प्रोत्साहित करने के लिए विभाग द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के संबंध में कृपया बताएं।**

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, बोर्डों/स्वायत्त निकायों/ट्रस्टों आदि, को और उनके द्वारा प्रकाशित की जा रही गृह पत्रिकाओं को पुरस्कृत करने के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" योजना चलाई जा रही है। इसके साथ ही विभाग द्वारा हिंदी में मौलिक लेखन हेतु 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' योजना भी चलाई जा रही है, जिसके अंतर्गत विविध विषयों पर प्राप्त पुस्तकों को प्रति वर्ष पुरस्कृत किया जाता है। प्रति वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के पावन अवसर पर आयोजित किए जाने वाले भव्य कार्यक्रम में 'राजभाषा कीर्ति और गौरव पुरस्कार' प्रदान किए जाते हैं।

ISSN No. : 0970-9398

❖ **देश में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति के बारे आपकी क्या राय है?**

जब हम वर्तमान की बात करते हैं तो पाते हैं कि आज का समय भारत की सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से सर्वोत्तम समय है। माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश विकास और विरासत की समभाव दृष्टि से आगे बढ़ रहा है। वर्ष 2022 में लाल किले की प्राचीर से माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा पंच प्रण का आह्वान किया गया जिस पर चलकर हम गुलामी की हर सोच से मुक्ति और विरासत पर गर्व करने जैसी सुखद अनुभूति प्राप्त करने की दिशा में काम कर रहे हैं। राम मंदिर का नवनिर्माण इस बात का सशक्त प्रमाण है। संस्कृति और विरासत का सीधा संबंध भाषा से होता है। संख्या की दृष्टि से हिंदी भाषा देश में सर्वाधिक बोली और समझे जाने वाली भाषा है। देश के हर प्रान्त में हमें हिंदी भाषा बोलने वाले और समझने वाले मिल जाएंगे। हिंदी भाषा देश की अन्य प्रमुख भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों को अपनाने में कोई गुरेज नहीं करती। यही सर्वसमावेशी और उदार प्रवृति हिंदी की बढ़ती स्वीकार्यता और लोकप्रियता की मुख्य वजह है। माननीय प्रधान मंत्री जी के शब्दों में, "हमें प्रयत्नपूर्वक हिंदुस्तान की सभी बोलियों व भाषाओं में जो उत्तम चीजें हैं, उन्हें हिंदी भाषा की समृद्धि के लिए उसका हिस्सा बनाना चाहिए और यह प्रक्रिया अविरल चलती रहनी चाहिए।" हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी सार्वजनिक मंचों पर हिंदी का उपयोग करते हैं, आम जन से जुड़ने के लिए हिंदी में अपने उद्बोधन देते हैं, जो सभी हिंदी प्रेमियों के लिए उत्साह और प्रेरणा की बात है।

❖ **वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ाने के लिए विभाग द्वारा क्या पहल की गई हैं?**

विभाग द्वारा विदेशों में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। वर्तमान में 5 देशों– मॉरीशस (पोर्ट लुई), संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), यूनाइटेड किंगडम (लंदन), फिजी और सिंगापुर में नराकास गठित हैं।

❖ **युवा पीढ़ी के लिए वर्तमान परिदृश्य में हिंदी में रोजगार की क्या संभावनाएं हैं?**

भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषियों के लिए रोजगार के अनेक अवसर सृजित हुए हैं। केन्द्र सरकार के कार्यालयों/ बैंकों/पीएसयू आदि में राजभाषा अधिकारियों के अनेक पद सृजित किए गए हैं। साथ ही अनेक बहुराष्ट्रीय कंपनियां आज अपने उत्पादों के विज्ञापन, प्रचार–प्रसार आदि के लिए हिंदी भाषा पर ही आश्रित हैं। विश्वपटल पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता और स्वीकार्यता को देखते हुए मुझे पूरा विश्वास है कि हिंदी भाषा का भविष्य उज्ज्वल है और इसमें रोजगार की तमाम संभावनाएं मौजूद हैं।

❖ **आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में भारतीय महिलाएं किस प्रकार योगदान दे सकती हैं?**

आज भारतीय महिलाओं ने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी है। आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना में भारतीय महिलाएं विविध क्षेत्रों में अहम योगदान दे रही हैं जैसे शिक्षा, खेल, सेना, स्वास्थ्य, कौशल विकास, सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी क्षेत्र इत्यादि। इन क्षेत्रों में और अधिक प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करने के लिए उन्हें क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रशिक्षण की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

❖ **राजभाषा भारती के इस महिला केंद्रित अंक के माध्यम से आप पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगी?**

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की पत्रिका 'राजभाषा भारती' का यह अंक महिलाओं के योगदान को समर्पित है जो अत्यंत हर्ष का विषय है। मैं विभाग की संयुक्त सचिव तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं देती हूं तथा मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'राजभाषा भारती' इसी प्रकार राजभाषा संवर्धन की दिशा में कार्य करती रहेगी।

साक्षात्कारकर्ता – वीरेंद्र कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

ISSN No. : 0970-9398

हिंदी भारत की पहचान है – रेखा शर्मा

सुश्री रेखा शर्मा वर्तमान में राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) की अध्यक्ष हैं। अध्यक्ष के रूप में, उनका काम लैंगिक समानता की वकालत करना, महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य को आगे बढ़ाने की पहल करना है।

❖ **भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों का देश है, आप इसे किस प्रकार देखती हैं ?**

वास्तव में भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों का देश है। विश्व के सबसे अधिक भाषाई विविधता वाले देशों में से एक भारत में ऐसी 121 भाषाएं हैं जो दस हजार या अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 19 हजार से अधिक भाषाएं या बोलियां मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं। भारत में राज्य कानून के माध्यम से अपनी–अपनी आधिकारिक भाषा निर्धारित कर सकते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह देश कई भाषाओं और संस्कृतियों को संजोए फूलों के एक सुन्दर गुलदस्ते के समान है। सबसे अधिक बोली जाने वाली भारतीय भाषाओं में हिंदी, बंगाली, मराठी, तेलुगु, तमिल, गुजराती, उर्दू और पंजाबी शामिल हैं। अधिकांश भारतीय भाषाएं हमारी प्राचीन मूल भाषा संस्कृत से निकली हैं। हिंदी भारत के जनमानस की भाषा है, संपर्क भाषा है और साथ ही शासकीय प्रयोजनों के लिए भारत संघ की राजभाषा भी है।

❖ **आप राष्ट्र स्तर पर कार्य कर रही हैं, भाषा इन कार्यों में किस प्रकार की चुनौती पेश करती है ?**

मेरा अनुभव है कि राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने में मुझे भाषा कभी चुनौती नहीं लगी और न ही मुझे किसी भी प्रदेश में कार्य करने में कोई परेशानी हुई। वैसे भी इच्छाशक्ति मजबूत हो तो कहीं भी कोई दिक्कत नहीं आती। भारत में अनेकों भाषाएं होने के बावजूद भी लगभग अधिकांश राज्यों में हिंदी किसी न किसी रूप में बोली समझी जाती है और हिंदी बोलने समझने में स्थानीय भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेती है। दक्षिण भारत के राज्यों जैसे कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में लोग हिंदी नहीं बोलते मगर थोड़ा–बहुत समझ सकते हैं और जब भी मैं वहां जाती हूं तो वहां के कुछ शब्द सीखने को मिलते हैं जिससे वहां के स्थानीय लोगों से सम्पर्क करने में कोई विशेष कठिनाई नहीं आती है। भाषा ही प्रांतों को जोड़ने का माध्यम है और हमारी संस्कृति की प्रतीक भी है।

❖ **भारतीय भाषाओं में कार्य करना कितना आसान है ?**

सभी लोगों को, चाहे वे उत्तर भारत के हों, पूर्वोत्तर के हों, दक्षिण भारत के हों अथवा देश के किसी भी भू–भाग पर रहते हों, सभी को अपनी मातृभाषा में कार्य करना, समझना और बोलना सहज होता है। किसी को भी इस बात के लिए जोर नहीं दिया जाना चाहिए कि वह अमुक भाषा ही बोले या लिखे अपितु वह ऐसी होनी चाहिए जो सरल हो और उस स्थान पर स्वीकार्य। भारत की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा हिंदी में कार्य करना बहुत सरल और सहज है।

❖ **हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की स्थिति किस प्रकार की है ?**

हिंदी भाषा सबसे सरल और मधुर भाषा है जो विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली दूसरे नम्बर की भाषा है। उसका प्रयोग करने वाले अपनी आवश्यकतानुसार, देश–काल–पात्र के अनुसार, उसका प्रयोग करने को स्वतंत्र हैं। उन पर कोई बंधन अथवा सीमा नहीं है। लेकिन यह भी सच्चाई है कि हम जिस क्षेत्र में रहते हैं वहीं की स्थानीय भाषा को बोलने में ही गौरवान्वित महसूस करते हैं। दक्षिण भारत के कुछ राज्य जैसे कर्नाटक, तमिलनाडु व केरल राज्य हिंदी का विरोध अपने राजनैतिक लाभ के लिए करते रहे हैं। स्वतंत्रता संग्राम की महान विभुतियां जैसे स्वामी दयानंद, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी आदि हिंदी भाषी राज्यों से न होने के बावजूद भी इन्होंने हिंदी भाषा को ही अभिव्यक्ति और संचार का माध्यम बनाया था।

❖ **रोजगार की संभावनाओं में भाषा का क्या महत्व है?**

रोजगार में भाषा का महत्व बहुत अधिक होता है। आज के समय में किसी भाषा या बोली के जीवित रहने के लिए मात्र साहित्य की नहीं, बल्कि उसे व्यवसाय, विज्ञान और रोजगार की भाषा बनाने की भी जरूरत होती है। जो भाषा सामान्य मनुष्य को रोजगार नहीं दे पाती, वह धीरे–धीरे एक संकुचित दायरे में सिमटती चली जाती है। अंग्रेजी के अन्तरराष्ट्रीय भाषा होने का सबसे बड़ा कारण व्यवसाय ही है। अधिकतर लोग किसी न किसी व्यावसायिक कारण से ही अन्य भाषा को सीखते हैं। विश्व के अधिकांश देशों में भाषा की संख्या सीमित होती है, इसलिए उन देशों को रोजगार में वहीं के लोगों को

प्राथमिकता मिलती है। लेकिन भारत में स्थिति विपरीत है। यहां बहुसंख्यकों द्वारा बोली जाने वाली या प्रयोग की जाने वाली भाषा हिंदी के मुकाबले अंग्रेजी भाषा को, विशेषकर गैर–सरकारी संस्थानों में, रोजगार की भाषा माना जाता है।

❖ **हिंदी भाषा में रोजगार की क्या स्थिति है ?**

वर्तमान में हिंदी में रोजगार के अनेक सृजित हुए हैं। सभी सरकारी अधिकारियों के लिए दफ्तरों में अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी का उपयोग अनिवार्य बनाया गया है। केन्द्र व राज्य सरकारों के सभी विभागों में राजभाषा अधिकारियों के पद सृजित किए हैं। हिंदी से जुड़ी परम्परागत नौकरियों के अतिरिक्त भारत में इलेक्ट्रानिक माध्यम से विज्ञापन का कारोबार बहुत विस्तृत है। हिंदी में विज्ञापनों का बाजार भी तेजी से बढ़ा है। अधिकतर राज्यों में विज्ञापन बाजार में हिंदी का प्रयोग किया जाता है। इसके साथ–साथ हिंदी का अध्ययन करने वाले छात्रों के बीच पत्रकारिता रोजगार के एक आकर्षक विकल्प के रूप में भी सामने आया है। समाचार चैनलों और अखबारों के अलावा भी हिंदी के अनेक चैनल और पत्र–पत्रिकाएं हैं जो योग्य उम्मीदवारों को मौका दे रहे हैं। यह आम मानसिकता है कि हिंदी में विज्ञान और तकनीकी विषयों की पढ़ाई तथा अनुसंधान कार्य करना उतना आसान नहीं है जितना अंग्रेजी में। दुर्भाग्य से हमारी मानसिकता अंग्रेजी को ही ज्ञान का प्रतीक मानने की है। हम इस विदेशी भाषा को ज्ञान के भंडार के रूप में देखते हैं जबकि हम जानते हैं कि भाषा किसी भी ज्ञान को प्राप्त करने का केवल एक माध्यम होती है और उसका ज्ञान से कोई लेना देना नहीं है। यदि ऐसा होता तो चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस और रूस जैसे विकसित देश, जहां अंग्रेजी भाषा का प्रयोग नहीं होता, केवल अपनी भाषा के बल–बूते पर आज इतनी उन्नति नहीं कर सकते थे।

❖ **भारतीय सभ्यता को समझने में हिंदी भाषा किस प्रकार प्रभावी हो सकती है ?**

भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति और सभ्यता है। इसे विश्व की सभी सभ्यताओं की जननी माना जाता है। एक भाषा के रूप में हिंदी न केवल भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक व परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवत सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा है जिसे विश्वभर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं।

❖ **आपने विदेशों में भी दौरे किए हैं, भारत तथा अन्य देशों में भाषा विविधता को किस प्रकार देखती हैं ?**

जहां तक अन्य देशों में भाषा का संबंध है, विश्व के कई उन्नत देशों ने अंग्रेजी भाषा को नहीं अपनाया है। उन्होंने अपनी शिक्षा, टेक्नोलाजी, संचार व अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अपने ही देश की भाषा को अपनाया है। रूस, जर्मनी, चीन आदि देशों ने अपने देश की भाषा को महत्व दिया है न कि अन्य किसी भाषा को। बाहर से जाने वाले लोगों को उनकी भाषा में ही बातचीत करनी पड़ती है। टूरिस्ट और गाइड को छोड़ अन्य लोग अपनी भाषा में बात करना अच्छा मानते हैं। लेकिन भारत में इसके विपरीत स्थिति है। आज भी हिंदी भाषा बोलने वालों को दोयम दर्जे का नागरिक माना जाता है। हमें इस सोच में बदलाव लाना होगा। अंग्रेजी अथवा दूसरी भाषा को एक अतिरिक्त या वैकल्पिक भाषा के रूप अपनाया जा सकता है। हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधाएं लोगों तक पहुंचा सकते हैं। भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है। आज के तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी और स्थानीय भाषा में ही काम को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

❖ **यदि मानव अधिकारों की बात करें, तो भाषा का महत्व किस प्रकार का है ?**

मानव अधिकार हर व्यक्ति का नैसर्गिक या प्राकृतिक अधिकार है। इसके दायरे में जीवन, आजादी, बराबरी और सम्मान का अधिकार आता है। साथ ही गरिमामय जीवन जीने का अधिकार, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकार भी इसमें शामिल हैं। ये अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा में व्यक्त करने की आजादी होनी चाहिए। राष्ट्रीय महिला आयोग में समस्त भारत से प्राप्त शिकायतें या आवेदन अनेक भाषाओं में प्राप्त होते हैं जिनका, यदि आवश्यक हो, अनुवाद कर उनका निस्तारण किया जाता है। संविधान के मूल स्वरूप के अनुसार हम अपनी भाषा के प्रति सजग रहें लेकिन दूसरों की भाषा के प्रति संवेदनशील भी होना चाहिए। भाषा संबंधी मानवाधिकार के संरक्षण की जिम्मेदारी भी उसी राष्ट्र अथवा राज्य की होनी चाहिए।

❖ **अधिकार और कर्तव्य समझने के लिए क्या भारतीय भाषाओं में कोई प्रावधान है ?**

भारत का संविधान भाषाई सुरक्षा प्रदान करता है। संविधान का अनुच्छेद 29 भारत के क्षेत्र या किसी हिस्से में रहने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग, जिसकी अपनी विशिष्ट भाषा, लिपि या संस्कृति है, को उसे संरक्षित करने का अधिकार होगा। भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को शामिल किया गया है। संविधान में दिए गए अधिकार और कर्तव्य जानने में भाषा कोई अड़चन नहीं है और देश के नागरिक किसी भी भाषा को अपना माध्यम चुन सकते हैं।

ISSN No. : 0970-9398

❖ **भारतीय संविधान की मूल भावना लोगों तक पहुंचाने में हिंदी कितना सफल रही है ?**

भारतीय संविधान का मूल भाव मानवता है। एक ऐसी मानवता जिसमें मनुष्य ही नहीं संपूर्ण प्राणी जगत के कल्याण की भावना व्याप्त है और इसका मूल मंत्र सर्वे भवंतु सुखिना है। चूंकि देश के अधिकांश हिस्सों में हिंदी बोली और समझी जाती है, इसलिए भारतीय संविधान की मूल भावना समझने में हिंदी भाषा का विशेष योगदान है।

❖ **राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष होने के नाते महिलाओं में भाषा ज्ञान को किस प्रकार देखती हैं ?**

जैसा कि मैंने पूर्व में उल्लेख किया है, वर्ष 1970 तक देश के अधिकांश राज्यों के विद्यालयों और महाविद्यालयों में हिंदी अथवा स्थानीय भाषा ही शिक्षा का माध्यम होता था। लेकिन इसके पश्चात प्राइवेट और कान्वेन्ट स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बन गया और केवल सरकारी व ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में ही हिंदी और स्थानीय भाषा शिक्षा का माध्यम रही जिसके कारण ये भाषाएं पिछड़ती चली गई। इन स्कूलों में पढ़ने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा जबकि अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने वालों को अधिक योग्य समझा गया। योग्यता का यह पैमाना उचित नहीं है, हमें अपने अतीत के गौरवशाली इतिहास और भाषा का सम्मान करना होगा। इसीलिए मेरा मानना है कि स्कूलों में चाहे वे सरकारी हों अथवा कान्वेन्ट, सभी में कक्षा 12 तक हिंदी अथवा स्थानीय भाषा एक विषय के रूप में अनिवार्य होनी चाहिए।

❖ **महिलाओं की दृष्टि में भाषा विकास और राष्ट्र विकास किस प्रकार जरूरी है ?**

पुरुषों की तुलना में अधिकतर महिलाएं हिंदी अथवा स्थानीय भाषा को ही प्राथमिकता देती हैं। हम भी कोई कार्यक्रम करते हैं तो श्रोताओं की भाषा को ही प्राथमिकता देते हैं और उन्हीं की भाषा में वार्तालाप करते हैं। लेकिन यह भी सही है कि दक्षिण भारतीय राज्यों में महिलाएं और पुरुष दोनों ही अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता देते हैं। उनका मानना है कि अंग्रेजी भाषा के माध्यम से उन्हें नौकरियां प्राप्त करने में सुविधा होती है। यह सत्य है महिलाओं के लिए भाषा विकास बहुत आवश्यक है क्योंकि इससे उनकी कार्य करने की क्षमता, समझने की क्षमता, कौशल में वृद्धि और आत्म–विश्वास बढ़ाने में मदद मिलती है। किसी देश की भाषा और राष्ट्र विकास एक दूसरे के पर्यायवाची हैं।

❖ **वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों पर आपके सुझाव क्या हैं ?**

हिंदी चूंकि देश के अधिकांश हिस्सों में बोली व समझी जाती है इसलिए हिंदी भाषा राजभाषा के रूप में स्थापित की गई है। समय–समय पर सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु निरन्तर प्रयास किए जाते रहे हैं। पहले हिंदी का क्षेत्र सीमित था। जिन क्षेत्रों में हिंदी की जानकारी नहीं थी वहां भी हिंदी भाषा का बोलचाल में उपयोग हो रहा है। विश्व के कई विकसित देशों में भी भारतीय लोगों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है, इससे हिंदी बोलने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं परंतु इस कार्य में आम–जनों की सहभागिता आवश्यक है। स्वयं से ही भाषा का उत्थान हो सकता है। घर परिवार में भी हिंदी को व्यवहार में लाना होगा। राजभाषा अधिकारियों के मनोबल को बढ़ाने तथा उनकी जिम्मेदारियों को बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही साथ दायित्व बोध होना भी जरूरी है। सरकारी विद्यालयों के साथ–साथ कान्वेन्ट स्कूलों में भी कक्षा 12 तक हिंदी को एक आवश्यक विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए तथा साइंस व सोशल स्टडीज आदि विषयों को भी हिंदी माध्यम से पढ़ाने का पाठ्यक्रम तैयार होना चाहिए, क्योंकि भाषा के आधार पर योग्यता व ज्ञान को कम या अधिक नहीं आंका जाना चाहिए।

❖ **भाषा संबंधी आपका कोई अनुभव जो पाठकों से साझा करना चाहें ?**

मैं जब भी किसी कार्यवश तमिलनाडु या केरल जाती हूं तो वहां की महिलाएं अपनी स्थानीय भाषा में ही बात करती हैं। वे मुझे भी अपनी स्थानीय भाषा सिखाती हैं और मुझसे हिंदी के कुछ शब्द बोलना सीखती हैं। इन राज्यों में दौरे के समय मेरे लिए यह हमेशा बड़ा ही रोचक पहलू होता है।

साक्षात्कारकर्ता– सना कौशल गुप्ता
मीडिया सलाहकार, राष्ट्रीय महिला आयोग

ISSN No. : 0970-9398

अपनी भाषा के प्रयोग से होती है गर्व की अनुभूति – नीना सिंह

भारतीय पुलिस सेवा (बैच 1989) की राजस्थान कैडर की अधिकारी सुश्री नीना सिंह केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षाबल के महानिदेशक के पद पर नियुक्त होने वाली पहली महिला हैं। इन्हें राजस्थान की पहली महिला आईपीएस अधिकारी होने का गौरव प्राप्त है। इन्होंने 2013–18 के दौरान केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो में बतौर संयुक्त निदेशक भी काम किया है।

❖ **भारत में विभिन्न भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं, आप इसे किस प्रकार देखती हैं?**

भारत में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएं और बोलियां भारत की विविधता में एकता के विराट स्वरूप की परिचायक हैं। ये भारत की सांस्कृतिक एकता को मजबूती प्रदान करने तथा एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करती हैं।

❖ **आप एक सशक्त बल के मुखिया के रूप में कार्य कर रही हैं और इसमें सभी प्रांतों के लोग कार्य करते हैं, भाषा इन कार्यों में किस प्रकार की चुनौती होती है?**

देश का एक सशक्त बल होने के कारण सीआईएसएफ में देश के विभिन्न प्रांतो से बल कार्मिक आते हैं जिनकी भाषाएं और बोलियां अलग–अलग होती हैं। सीआईएसएफ में स्थानांतरण नीति के अंतर्गत एक राज्य के बल कार्मिक को दूसरे राज्य में पदस्थ किया जाता है, जहां भाषायी और सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण बल कार्मिकों को शुरूआत में सामंजस्य बैठाने में चुनौती का सामना करना पड़ता है किंतु हमारे बल कार्मिक स्वप्रयासों एवं आपसी सहयोग से उचित सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं। इसी क्रम में वे नई भाषाओं का ज्ञान हासिल करते हैं जिससे न केवल उनकी कार्य क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है बल्कि वह देश की अन्य भाषाओं का ज्ञान भी प्राप्त कर पाते हैं।

❖ **भारतीय भाषाओं में कार्य करना कितना आसान है?**

सर्वप्रथम अपनी भाषा से जुड़े रहना व उसे दैनिक व कार्यालय संबंधी कार्यों में प्रयोग करना गौरव की अनुभूति प्रदान करता है। भारतीय भाषाएं एक दूसरे से काफी जुड़ी हुई हैं। बल कार्मिकों की तैनाती उनके सेवाकाल में विभिन्न प्रांतों में होती है जिससे वे वहां की भाषा एवं बोली को सीख लेते हैं। ऐसे में विभिन्न प्रांतों के लोक भवनों, सार्वजनिक स्थानों, मेट्रो व एयरपोर्ट आदि पर तैनाती होने पर वहां के सामान्य निवासियों के साथ तालमेल बैठाने में उन्हें आसानी होती है। इस स्थिति में विविध भाषाओं का ज्ञान होने से कार्य करना आसान हो जाता है।

❖ **हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं की स्थिति किस प्रकार की है?**

सामान्य रूप से भारतीय भाषाएं अपने क्षेत्र की सीमाओं में ही प्रयोग में लाई जा रही हैं। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। बहुत सरल, सुगम और सहज भाषा होने के साथ हिंदी संभवतः विश्व की सबसे वैज्ञानिक भाषा है। हमें बिना झिझक अन्य भाषाओं व बोलियों के शब्दों को दैनिक बोलचाल में शामिल करते हुए हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए।

❖ **क्या रोजगार की संभावनाओं में भाषा का महत्व होता है?**

आज के इस वैश्वीकरण के युग में केवल देश ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व समीप आ रहा है। मजबूत भाषा कौशल होने से ग्राहकों एवं सहकर्मियों के साथ बेहतर संवाद संभव हो पाता है, विभिन्न संस्कृतियों के लोगों के साथ प्रभावी रूप से कार्य करने में मदद मिलती है। फिल्म जगत, साहित्य लेखन, शिक्षण, चिकित्सा, कृषि क्षेत्र इत्यादि में विविध भाषाओं का ज्ञान रोजगार की अनेक संभावनाएं उत्पन्न करता है।

ध **हिंदी भाषा में रोजगार की क्या स्थिति है?**

हिंदी भाषा में अनुवादक, इंटरप्रेटर, विषय वस्तु लेखन आदि के अनेक अवसर उत्पन्न हो रहे हैं। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, टी.वी. चैनलों, कॉल सेन्टर इत्यादि में रोजगार के अनेक अवसर हैं। अब मेडिकल एवं इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिंदी में की जा रही है तथा न्यायालय में भी हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाने लगा है जिससे इन क्षेत्रों में भी रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही हैं।

❖ **भारतीय सभ्यता को समझने में हिंदी भाषा किस प्रकार प्रभावी हो सकती है?**

साहित्य समाज का दर्पण है। हिंदी भाषा की कृतियां प्राचीन, मध्यकालीन, स्वातंत्र्य काल और वर्तमान समसामयिक विषयों को जानने और समझने का सर्वोत्कृष्ट साधन है। भारतीय सभ्यता व भारतीय समाज के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए हिंदी भाषा एक सरल माध्यम है।

ISSN No. : 0970-9398

❖ **भारत तथा अन्य देशों में भाषा विविधता को किस प्रकार देखती हैं?**

भारत में रहन–सहन, खान–पान, सांस्कृतिक व भाषा स्तर पर बहुआयामी स्वरूप दिखता है। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। इसके अतिरिक्त भारत में अन्य देशों की तुलना में असंख्य भाषाएं एवं बोलियां प्रचलित हैं। भारत की विविध भाषाएं अनेकता में एकता का संदेश देती हैं। हम सभी को अपनी भाषाओं के विस्तार व विकास के लिए सदैव प्रयासरत रहना चाहिए।

❖ **यदि सशस्त्र बलों की बात करें, तो भाषा का महत्व किस प्रकार का है तथा हिंदी किस प्रकार सभी के लिए सहयोगी होती है?**

बल के कार्यालय संबंधी कार्य में राजभाषा अर्थात कार्यालय में प्रयोग की जाने वाली भाषा के रूप में हिंदी एक सर्वसुलभ व सर्वप्रयोज्य भाषा है। बल की कार्य प्रणाली में सूचना, अधिसूचना, ज्ञापन, संहिताएं, आचरण संबंधी नियम आदि को जारी करने में भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग अति महत्वपूर्ण है। सभी बल कार्मिकों में भाषा का स्वरूप एक होने पर आपसी सद्भावना व सहयोग का भाव भी उत्पन्न होता है।

❖ **भारतीय सेना तथा सशस्त्र बलों की चुनौतियों में किस प्रकार समानताएं हैं?**

प्रमुख रूप से भारतीय सेना बाहरी खतरों तथा सशस्त्र बल आंतरिक खतरों की चुनौतियों का सामना करते हैं। इनमें तैनात सैन्य बल अपने सेवा काल के दौरान देश के विभिन्न इलाकों में तैनात रहते हैं। बलों को घुसपैठ का सामना, सीमाओं, जंगलों और हिमालय के कठिन भू–भाग तथा देश की सुरक्षा के दौरान अनेक प्रकार की समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जिसमें भाषा की विविधता भी एक बड़ी चुनौती है। इन सबके बावजूद, सेना तथा सभी सशस्त्र बल अपनी सशक्त रणनीतियों और तकनीकी के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं।

❖ **भारतीय संविधान की मूल भावना लोगों तक पहुंचाने में हिंदी कितना सफल रही हैं?**

भारतीय संविधान की मूल भावना में लोकतंत्र, एकता, स्वतंत्रता, अखण्डता, भाईचारा, समानता और न्याय समाहित है। चूंकि हमारे देश में अधिकतर लोग हिंदी समझते हैं। अतः वे संविधान में वर्णित मूल अधिकारों व मूल कर्तव्यों की भावना को आसानी से समझ पाते हैं।

❖ **सीआईएसएफ मुखिया होने के नाते महिलाओं में भाषा ज्ञान को किस प्रकार परिभाषित करती हैं?**

विभिन्न राज्यों से आई महिला बल सदस्यों को क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी का ज्ञान भी होना चाहिए क्योंकि सीआईएसएफ एक ऐसा बल है जिसका जनता से सीधा संवाद रहता है। बल मुख्यालय की सभी इकाइयां अपनी महिला कार्मिकों को भी समान रूप से हिंदी भाषा में कौशल प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं तथा उनके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था भी उपलब्ध कराई गई है।

❖ **महिलाओं की दृष्टि में भाषा विकास और राष्ट्र विकास किस प्रकार जरूरी है?**

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। महिलाओं के द्वारा ही भविष्य की पीढ़ियां तैयार की जाती हैं। अतः महिलाओं के लिए भी भाषा का विकास नितांत आवश्यक है ताकि राष्ट्र विकास की ओर अग्रसर हो सके। भाषा की उन्नति से ही राष्ट्र का विकास संभव है।

❖ **वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों पर आपके सुझाव क्या हैं?**

वर्तमान सरकार राजभाषा हिंदी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देते हुए राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलनों का आयोजन इत्यादि करके हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत है। फिजी में 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन, पुणे महाराष्ट्र में हिंदी दिवस, 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं दिल्ली में राजभाषा तकनीकी सम्मेलन का आयोजन किया गया जो कि अत्यंत सराहनीय है। मेरा सुझाव है कि इनका आयोजन अनवरत रूप से होते रहना चाहिए।

❖ **भाषा संबंधी आपका कोई अनुभव जो पाठकों से साझा करना चाहें?**

सीआईएसएफ में तैनात कार्मिक अलग–अलग राज्यों के मूल निवासी हैं, अतः अलग–अलग भाषाएं उनकी मातृभाषा होती हैं। इसके बावजूद भी सभी बल कार्मिक राजभाषा हिंदी में उत्साहपूर्वक कार्य करते हैं तथा भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। यह मेरे लिए बहुत ही सुखद अनुभव रहा है।

साक्षात्कारकर्ता– राकेश कुमार
पूर्व निदेशक(राजभाषा), गृह मंत्रालय

ISSN No. : 0970-9398

क्षेत्रीय भाषाएं भी हिंदी की बहनें हैं– डॉ. अरूणिमा सिन्हा

अरूणिमा सिन्हा माउंट एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने वाली पहली भारतीय दिव्यांग महिला तथा राष्ट्रीय स्तर की पूर्व वालीबाल खिलाड़ी हैं। वह एशिया में एवरेस्ट, अफ्रीका में किलिमंजारो, यूरोप में एल्ब्रस, आस्ट्रेलिया में कोसियुज्को, दक्षिण अमेरिका में एकॉनकागुआ और उत्तरी अमेरिका में डेनाली और अंटार्कटिका में माउंट विंसन के शिखर पर फतह कर चुकी हैं। उन्हें 2015 में भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया।

❖ **भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं। इन सबके बीच हिंदी की क्या स्थिति है?**

भाषा तथा संस्कृति की भिन्नता से हमें नई–नई बातें सीखने को मिलती हैं। मुझे लगता है कि भाषा एवं संस्कृति की विविधता में एकता की झलक हमें अपने देश भारत में ही देखने को मिलती है, अन्य किसी देश में नहीं, इसीलिए मेरा भारत महान है।

हिंदी भाषा हम भारतीयों की आत्मा का स्वर है। यह बात अलग है कि भारत के अलग–अलग राज्यों में अनेक क्षेत्रीय भाषाएं प्रचलित हैं। हम अपने–अपने क्षेत्र में तो अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में ही बात करना सहज समझते हैं किंतु राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा की जरूरत पड़ती है। वैसे भी क्षेत्रीय भाषाएं हमारी हिंदी भाषा की सहोदर ही हैं।

मैं तमिलनाडु विश्वविद्यालय में मोटिवेशनल भाषण हिंदी में दे रही थी। मेरे हिंदी भाषा में बोलने पर लोगों ने एतराज किया, तब मैंने उनसे स्पष्ट कहा कि मुझे हिंदी ही आती है, मैं हिंदी में ही बात करूंगी। अन्ततः उन्हें अनुवादक को बुलाना पड़ा। मेरा हिंदी में भाषण जारी था। ऐसे ही मैंने देखा कि बॉलीवुड के लोग फिल्में तो बनाते है हिंदी में, किंतु बातचीत की भाषा उन्होंने अंग्रेजी चुन रखी है। जब भी वे मेरी बायोग्राफी या फिल्म बनाने के लिए लम्बी चौड़ी बातें अंग्रेजी में करते और मैं उनका जबाव हिंदी में देती तो वे मुझसे खीझ कर लौट जाते हैं। कहने को फिल्म इंडस्ट्री हिंदी फिल्मों का निर्माण करती है जबकि वास्तव में वहां सभी की भाषा अंग्रेजी ही है।

मैं अपने गाँव–घर में जरूर क्षेत्रीय भाषा अवधी में बात कर लेती हूं। लेकिन पूरे देश में भ्रमण के दौरान हिंदी भाषा में ही बोलना, काम करना पसंद करती हूं।

❖ **वर्तमान परिदृश्य में हिंदी में रोजगार की क्या संभावनाएं हैं?**

रोजगार के दृष्टिकोण से यदि आप हिंदीतर भाषायी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि आपको वहां की क्षेत्रीय भाषा की भी जानकारी हो, हां लेकिन यदि आप हिंदी भाषी क्षेत्र में काम कर रहे हैं तो खड़ी भाषा हिंदी का प्रयोग करना आपके लिए पर्याप्त होगा। विदेशों में रोजगार के लिए अंग्रेजी भाषा की जानकारी जरूर आवश्यक हो जाती है, ऐसा मेरा विदेश भ्रमण के दौरान का अनुभव रहा है।

हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के कारण पूरे देश में हिंदी भाषा में रोजगार में वृद्धि हुई है। तमाम चैनल हिंदी समाचार वाचक, एंकर रखते ही हैं। बॉलीवुड वाले भी भले ही अंग्रेजी भाषा को ढ़ोते हैं लेकिन जब फिल्म की हिंदी कथा–पटकथा लिखने की जरूरत पड़ती है तो ऐसे में हिंदी भाषा के जानकार कथाकार का ही चयन करते है। केंद्रीय मंत्रालयों के राजभाषा विभाग में भी हिंदी अधिकारी, अनुवादक आदि के तमाम पद हैं। इसलिए हिंदी भाषा में निश्चित ही रोजगार के अनेकों अवसर उपलब्ध हुए हैं।

❖ **वैश्वीकरण के इस दौर में भारतीय और वैश्विक परिवेश में आप हिंदी को कहां पाते हैं?**

भारत की आत्मा को समझना है तो हिंदी भाषा को जानना, बोलना और समझना होगा। दिनांक 22 जनवरी, 2024 को मैं अयोध्या में भगवान श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में उपस्थित होकर देख रही थी कि कैसे अंग्रेजी बोलने वाले तमाम अतिथि हिंदी में जय श्री राम का नारा लगा रहे थे। बॉलीवुड के अनेक अभिनेता–अभिनेत्री जो अंग्रेजी भाषा में ही अपनी सुबह–शाम गुजारते हैं, हिंदी भाषा में भगवान श्री राम के भजन गाकर अनुसरण कर रहे थे। हिंदू धर्म, धर्म ग्रंथों को समझना है तो हिंदी भाषा को समझना होगा।

मैं पूरी दुनिया के सात महाद्वीप घूम चुकी हूं, इन सभी स्थानों पर मुझे अनेक भाषाओं का सामना करना पड़ा, किंतु मेरे हदय का स्वर तो हिंदी भाषा ही है, अतः मैं हिंदी में ही बात करने के लिए उत्सुक रहती थी। हिंदी में बोलने–समझने वाले जब कम मिलते तो भाव–अभिव्यक्ति न हो पाने का अफसोस बना रहता था। जब मेरा जहाज भारत की धरती को स्पर्श करता

ISSN No. : 0970-9398

तो मैं खुशी से भाव विह्वल हो उठती थी कि अब मुझे हिंदी में खुलकर बात करने से कोई नहीं रोक सकता।

❖ **खेलों के प्रति आपका रूझान कब हुआ और बताएं कि खेलों का जीवन में क्या महत्व है?**

खेल के क्षेत्र में भी पहले से वर्तमान स्थित में काफी फर्क आया है। पहले अंग्रेजी के अभाव में खिलाड़ी अपनी बात आत्मविश्वास के साथ नहीं रख पाते थे। जबकि वर्तमान में आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी के हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के सद्प्रयासों के कारण खिलाड़ी हिंदी भाषा में भी अपनी बात आत्मविश्वास के साथ करता है। मेरी बात माननीय प्रधानमंत्री जी से जब भी होती है, हिंदी में ही होती है। यह हम सभी देश के खिलाड़ियों के लिए गर्व की बात है।

मेरी उम्र 23 वर्ष की थी जब आकस्मिक दुर्घटना में मेरी एक टांग चली गयी। मैं एम्स हॉस्पिटल, दिल्ली में चार माह भर्ती थी। वहीं मैंने पर्वतारोहण का स्वप्न देखा। मैंने बछेंद्री पाल जी से मिलकर ट्रेनिंग ली। जब मैं पीक पर थी, मेरा Oxygen खत्म हो रहा था ऐसा लग रहा था कि मैं मिशन पूरा नहीं कर पाउंगी लेकिन तभी मुझे एहसास हुआ कि अब यह सपना अकेले मेरा नहीं रहा बल्कि यह पूरे देश का सपना बन चुका है। सहसा मैंने अपने को सभांलकर संकल्प लिया कि अब जिन्दगी रहे या न रहे, तिरंगा तो शिखर पर जरूर फहराउंगी। इस अभियान को मैंने 52 दिन में पूरा किया था।

❖ **भारतीय न्याय प्रणाली में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डालें।**

मुझे जहां तक जानकारी है कि हिंदी के प्रति पूरे देश ही नहीं बल्कि दुनिया में बोलने, पढ़ने और सीखने की ललक बढ़ी है। किंतु अफसोस है कि उच्च न्यायालयों, उच्चतम न्यायालय में अंग्रेजी भाषा का ही बोल बाला है। जिसके कारण हमारे देश की आम जनता को परेशानी उठानी पड़ती है। मैं अपने देश की वर्तमान सरकार से निवेदन करना चाहती हूं कि अपने देश के उच्च न्यायालयों, उच्चतम न्यायालय में भी हिंदी भाषा की बहाली पर ध्यान देवें।

❖ **विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत भारतीय महिलाएं हिंदी के प्रति कितना सहज अनुभव करती हैं।**

महिलाओं का एक शिक्षित वर्ग तो हिंदी भाषा का प्रयोग करता है, किंतु गांव घर में तो ज्यादातर महिलाएं अपनी क्षेत्रीय भाषा में ही बातचीत करना पसंद करती हैं।

आज महिलाएं लगभग सभी क्षेत्र में कार्यरत हैं। हमारे देश की महिलाएं भी अधिक से अधिक हिंदी भाषा का प्रयोग कर अपने आप को सहज महसूस करती हैं। यदि हिंदी भाषा का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाए तो निश्चित ही इससे देश मजबूत होगा।

❖ **वैश्विक परिदृश्य में अंग्रेजी के वर्चस्व को हिंदी किस प्रकार टक्कर दे सकती है।**

इसे विडम्बना ही कहा जाएगा कि एक तरफ देश में हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में बढ़ोत्तरी हो रही है तो दूसरी तरफ देश में अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों की बाढ़ आई हुई है। इन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में हिंदी भाषा को भी अनिवार्य करते हुए हमारे धर्म ग्रंथ, रामायण, महाभारत, भगवत गीता आदि का अध्ययन भी हिंदी भाषा में पढ़ाया जाना अनिवार्य किया जाना चाहिए। साथ ही देश के किसी भी संस्थान में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त किया जाना चाहिए।

मैंने हिंदी माध्यम से अपनी शिक्षा पूरी की है। मैं जब भी दुनिया के किसी देश में गई तो जरूर अंग्रेजी भाषा से पाला पड़ा है और मेरी अभिव्यक्ति कमजोर पड़ी किंतु माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के सद्प्रयासों से हिंदी भाषा के प्रति देश–विदेश में लोगों का रूझान बढ़ता देखकर अब अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व होने लगा है। मैं देश–विदेश में रहने वाले अपने देशवासियों से कहना चाहूंगी कि आप सभी भी निसंकोच हिंदी भाषा को अपनी बोलचाल के साथ ही कार्य प्रणाली का भी ज्यादा से ज्यादा अंग बनाएं। हिंदी भाषा में ही लिखने, पढ़ने और बोलने का कार्य करें जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी।

जय हिंद! जय हिंदी!

साक्षात्कारकर्ता–प्रभात वर्मा
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति,
रेल मंत्रालय

ISSN No. : 0970-9398

हिंदी भाषा में तकनीकी रोजगार की अपार संभावनाएं हैं– डॉ. रश्मि शर्मा

डॉ. रश्मि शर्मा ने भौतिकी विज्ञान में स्नाकोत्तर के बाद सन् 1991 में इसरों में वैज्ञानिक/अभियंता–बी के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वर्तमान में वह अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (सैक) अहमदाबाद में उप निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

❖ **आप तकनीकी संस्थान में वरिष्ठ पद पर हैं, यह यात्रा कहां से शुरू हुई, कृपया अवगत कराएं।**

धन्यवाद, इस सुखद एवं रोमांचक यात्रा की शुरुआत सन् 1991 में हुई। भौतिकी विज्ञान में स्नातकोत्तर के पश्चात् अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (इसरो) में वैज्ञानिक/अभियंता–बी के पद पर मेरी नियुक्ति हुई और उपग्रह समुद्र विज्ञान (Satellite Oceanography) के क्षेत्र से मैंने अनुसंधान शुरू किया। शुरुआती वर्ष थोड़े चुनौतीपूर्ण थे, क्योंकि टेक्नोलॉजी इतनी विकसित नहीं थी, पर्याप्त डेटा भी उपलब्ध नहीं थे और कंप्यूटर संसाधन भी सीमित थे। पर इन सब चीज़ों ने हमें बहुत कुछ सिखाया। फिर इसरो के Oceansat–1 (1999) और Oceansat–2 (2009) उपग्रह के प्रक्षेपण के बाद समुद्र विज्ञान को काफी बढ़ावा मिला। Oceansat–3 (2022) ने तो इस अनुसंधान को एक नयी दिशा दे दी और यह उपग्रह संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित समुद्री दशक (Ocean Decade) (2021–2030) के कार्यक्रम में काफी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। सन् 2020 में मुझे मौसम विज्ञान टीम को नेतृत्व प्रदान करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी मिली और फिर सन् 2023 से उप निदेशक के तौर पर पृथ्वी एवं ग्रहीय विज्ञान तथा अनुप्रयोग (Earth and Planetary Sciences and Applications) क्षेत्र में कार्यरत हूँ। इस क्षेत्र में कार्य करने का सबसे सुखद अनुभव है कि हम उपग्रह के आंकड़ों द्वारा विभिन्न विकास परियोजनाओं में हिस्सा लेकर राष्ट्र–निर्माण में सहयोग करते हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम" की आत्मा को साकार करने हेतु, उपग्रह का इस्तेमाल विश्व कल्याण में भी कर पाते हैं। अभी तक की मेरी यात्रा काफी संतोषप्रद रही है और यहाँ तक पहुँचने में मुझे अपने सहयोगियों, वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं पूरे परिवार का भरपूर सहयोग मिला है।

❖ **आज इसरो नित नए आयाम तय कर रहा है, आगे किस प्रकार की रणनीति होगी?**

निश्चय ही इसरो ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में कई सफलताएं अर्जित की हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का प्रयोग सामाजिक विकास के लिए करने हेतु हम प्रतिबद्ध हैं, क्योंकि इसरो के संस्थापक डॉ. विक्रम साराभाई का यही विजन था। यह विदित है कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का रेलवे, राजमार्ग, कृषि, जल मानचित्रण, स्मार्ट सिटी, ब्लू इकोनॉमी आदि विभिन्न विकास परियोजनाओं में उपयोग किए जाने की अपार संभावनाएं हैं जिस पर कार्य किया जा रहा है। समय पर मौसम पूर्वानुमान व आपदा के समय सटीक जानकारी तथा जलवायु परिवर्तन अध्ययन में उपग्रहीय आंकड़ों का उपयोग किया जा रहा है। इसके साथ ही विभिन्न अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ साझेदारी को बढ़ाया जा रहा है जिससे उपग्रह डेटा का समग्र मानव जाति के विकास के लिए सर्वाधिक उपयोग हो सके। अंतर–ग्रहीय अन्वेषण मिशन (CH–1–2–3, डब्ल), गगनयान तथा अंतरिक्ष पर्यटन इत्यादि के द्वारा भविष्य में भारत का अंतरिक्ष के क्षेत्र में अग्रणी बनने का मार्ग प्रशस्त होगा।

❖ **तकनीकी संस्थानों में भाषा किस प्रकार प्रभावी होती है?**

निश्चय ही प्रभावी होती है। अर्थशास्त्र का माँग और पूर्ति का सिद्धांत यहाँ लागू होता है। रोजगार प्राप्ति में जिस भाषा की माँग होगी, उस भाषा का महत्व होगा। तकनीकी संस्थानों में विभिन्न भाषाओं/क्षेत्रों के लोग काम करते हैं जिनमें आपस में संवाद व बेहतर कार्यकुशलता के लिए भाषा एक सेतु का काम करती है। अगर भाषा ऐसी होगी जिसे सभी कर्मचारी बोल व समझ सकें तो उस संस्थान की कार्यक्षमता में काफी बढ़ोतरी होगी। हमारा यह मानना है कि भाषा का कोई भी रूप हो, हम अपने विचारों को पूर्णतः अभिव्यक्त कर सकें। हमारे संस्थान में हम अंतरराष्ट्रीय मिशनों जैसे – निसार (NISAR), त्रिष्णा (TRISHNA), लुपेक्स (LUPEX) इत्यादि पर अन्य अंतरराष्ट्रीय स्पेस एजेन्सी (NASA, CNES. ESA, JAXA) के साथ काम करते हैं। उनके साथ कार्य करने में हम अंग्रेजी का प्रयोग अवश्य करते हैं, लेकिन आंतरिक प्रोजेक्ट्स में हम इसरो में हिंदी का भरपूर प्रयोग कर रहे हैं। हमारे संस्थान में समय–समय पर तकनीकी संगोष्ठियां हिंदी में आयोजित की जाती हैं, जिनके माध्यम से हमारे वैज्ञानिक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के विविध विषयों पर हिंदी में आलेख प्रस्तुत करते हैं तथा आपस में परिचर्चा करते हैं। साथ ही हमारे संस्थान के वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में छात्रों की जिज्ञासाओं का समाधान करने के लिए संपूर्ण भारत में जाकर अंतरिक्ष प्रदर्शनी का आयोजन करते हैं तथा उन्हें इसरो के विविध मिशनों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

❖ **हिंदी भाषा में तकनीकी रोजगार की क्या संभावनाएं हैं?**

हिंदी भाषा हमारे देश में सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। तकनीकी क्षेत्र में जो भी प्रयोग किए जाते हैं या जो भी विकास होता है उसका लक्ष्य मानव कल्याण या किसी न किसी रूप में समाज का विकास है। अतः आम जनता तक सरल

भाषा में ये जानकारी पहुंचाना बहुत आवश्यक है और हिंदी इसके लिए उपयुक्त भाषा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अब हिंदी भाषा में तकनीकी पुस्तकें, शोध–पत्र, वेबसाइट, मोबाइल एप, बैंकिंग प्रणाली, कौशल विकास इत्यादि उपलब्ध कराये जा रहे हैं। जैसे कि अंतरिक्ष की वैज्ञानिक–तकनीकी शब्दावली का प्रयोग करके हिंदी में उच्च स्तर के शोध पत्र एवं पुस्तकें लिखी जा रही हैं। अतः हिंदी भाषा में तकनीकी रोजगार की अपार संभावनाएं हैं।

❖ **भारत विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों का देश है, आप इसे किस प्रकार देखती हैं?**

बहुत गर्व महसूस करती हूँ कि मैं इस विविधता भरे देश की नागरिक हूँ। अनेकता में एकता, समन्वय एवं समरसता हमारी एकीकृत भारतीय संस्कृति की विशेषता है। वैसे इसरो स्वयं एक छोटा भारत है, जिसमें देश के कोने–कोने से आई प्रतिभाएं कार्य करती हैं। जिस प्रकार देश की प्रगति के लिए सब एक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर काम करते हैं, उसी प्रकार इसरो में हर प्रांत एवं जाति के लोग मिलकर देश को अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अव्वल बनाने के लिए कार्यरत हैं।

❖ **नई शिक्षा नीति के अंतर्गत भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने में किस प्रकार की चुनौतियां आ सकती हैं?**

नई शिक्षा नीति काफी प्रभावी है जिसे सही तरीके से अमल में लाना आवश्यक है। विभिन्न भाषाओं की वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का रूपांतरण सरल शब्दों में उपलब्ध हो सके, यह एक चुनौती होगी। मगर चुनौतियाँ मानसिक ही अधिक रहेंगी। कुछ शुरुआती मुश्किलें आ सकती हैं। जैसे, जो शिक्षक हैं, वे अंग्रेजी माध्यम से पढ़े हुए हैं। किंतु, दैनिक जीवन में तो वे भी भारतीय भाषाओं का प्रयोग ही करते हैं। तो थोड़े–से अभ्यास से वे भारतीय भाषाओं में भी पढ़ा सकेंगे। तकनीकी शब्दों के पर्याय लोगों की जुबान पर चढ़ने लगेंगे, भारतीय भाषाओं में भी नए प्रकार के प्रयोग प्रारंभ होंगे।

❖ **भारतीय संविधान की मूल भावना लोगों तक पहुंचाने में हिंदी कितना सफल रही है?**

भारतीय संविधान का मूल भारत की क्षेत्रीय विविधता को जोड़कर, एक सूत्र में पिरोकर विश्व के सामने उसे एक अखंड राष्ट्र के रूप में प्रदर्शित करता है। निश्चय ही भारतीय संविधान की मूल भावना– 'स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व इत्यादि' के प्रचार–प्रसार में हिंदी का अग्रणी योगदान है। हिंदी भाषा ने नदी के प्रवाह के समान ही देश, काल, परिवेश और सामजिक– सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप अपना विकास किया है। हिंदी भाषा ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' का संदेश देते हुए समस्त विश्व को एक परिवार माना है।

❖ **महिलाएं भावी पीढ़ियों के निर्माण में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं?**

किसी भी समाज की रीढ़ महिला होती है। एक महिला जब शिक्षित होती है तब वह पूरे परिवार को शिक्षित बनाती है। अतः महिलाएं परिवार एवं समाज दोनों का ही मूलभूत आधार हैं। महिलाएं प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूप से समाज के निर्माण में, भावी पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। स्वामी विवेकानंद, छत्रपति शिवाजी महाराज से लेकर डॉ. कलाम तक अनेक सफल व्यक्तियों के उदाहरण हैं, जिनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माता का सर्वाधिक योगदान रहा है।

❖ **वर्तमान सरकार द्वारा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों पर आपके सुझाव क्या हैं?**

हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए बनाई गई योजनाएं काफी अच्छा असर दिखा रही हैं। प्रशासनिक और तकनीकी, दोनों प्रकार के कार्यों में हिंदी का प्रयोग बढ़ता दिखाई दे रहा है। आज हिंदी को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है कि हिंदी में सरल शब्द भंडार तथा अन्य भाषाओं में प्रयुक्त शब्द एवं शैलियां भी आत्मसात हो। हिंदी के सरल रूप का प्रयोग किया जाए। तकनीकी क्षेत्रों में यदि पूर्णतः शुद्ध प्रयोग न भी हो सके, तब भी मिश्रित रूप में ही भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए। दूसरा सुझाव रोजगार से संबंधित है। आज के अर्थप्रधान युग में हर भारतीय भाषा को रोजगार प्रदान करने वाली भाषा बनाया जा सके, तो इनके प्रयोग में अत्यधिक वृद्धि देखने को मिलेगी।

❖ **हिंदी में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के और उपाय किए जा सकते हैं?**

किसी भी भाषा में शिक्षा प्रदान करने के लिए पहले उससे संबंधित पाठ्यपुस्तकें और संदर्भ साहित्य होना बहुत जरूरी है। जब हम हिंदी भाषा में तकनीकी और उच्च शिक्षा की बात करते हैं, तो सबसे बड़ी कमी हमें इसी क्षेत्र में दिखाई देती है। यह जरूरी है कि श्रेष्ठ लेखक तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकें लिखें और ये पुस्तकें बाजार में आसानी से उपलब्ध हों। शुरुआत में अच्छे अनुवादकों की भी जरूरत होगी कि वे अन्य भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को हिंदी में उपलब्ध कराएं, लेकिन अनुवाद के सहारे शिक्षा लंबे समय तक प्रभावी नहीं रह पाएगी। समय के साथ मौलिक लेखन की ही अधिक आवश्यकता होगी। इस कदम को अत्यंत महत्वपूर्ण समझते हुए हमारे वर्तमान निदेशक श्री नीलेश देसाई जी ने पुस्तक लिखने के लिए वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित कर विशेष पहल की है। हम इसरो के वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान के विविध विषयों पर हिंदी में पुस्तकें लिख चुके हैं और कई अन्य पुस्तकों को प्रकाशित कराए जाने की दिशा में भी प्रयासरत हैं। मेरे अपने क्षेत्र से भी हिंदी पुस्तक लेखन की दिशा में पहल की जा रही है। हमें आशा है कि अन्य क्षेत्रों में भी विद्वान पहल करेंगे और हिंदी को आगे बढ़ाएंगे।

साक्षात्कारकर्ता– श्रीमती नीलू सेठ
उप निदेशक(राजभाषा)
इसरो, अहमदाबाद

ISSN No. : 0970-9398

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

–मीनाक्षी भसीन

नारी एक ऐसा शब्द है जो इस संसार के अस्तित्व की व्याख्या करता है और सृजनात्मक शक्ति का प्रतीक है जिसके बिना संसार की कल्पना करना असंभव है। 'नारी' शब्द में इतनी ऊर्जा और ऊष्मा समाहित है कि इसका उच्चारण ही मन–मस्तिष्क को भीतर तक झंकृत कर देता है। यह नारी ही है जिसे माँ, यामिनी, कांता, स्त्री, मही इत्यादि नामों से संकेतित किया जाता है। यह शक्ति मानव की ही नहीं अपितु समस्त मानवता की जन्मदात्री है। इसी कारण नारी मानवता के आधार रूप में प्रतिष्ठित समस्त मानवीय गुणों की, मूल्यों की, संस्कारों की जननी है, आधारशिला है, स्रोत है। यही कारण रहा है कि इतनी गुरुतरा व महनीया शक्ति का वर्णन हमारी इस गौरवमयी संस्कृति में प्रायः हर कालखण्ड में विवेचित हुआ है।

प्रत्येक युग में, सभ्यताओं के आवर्तन, विवर्तन में, प्रत्येक संस्कृति ने यह उद्घोषित किया है कि नारी सृष्टि की नियामिका शक्ति है, अखिल ब्रहमाण्ड की आधारशिला है। अखिल ब्रह्माण्ड को नियोजित, नियमित व संचालित करने वाले, अपने दिव्य स्पंदनों से स्पंदित करने वाले उस विधाता की मूल प्रतिकृति है नारी। वैदिक सभ्यता और साहित्य के निर्माण में नारी का महती योगदान रहा है। वैदिक साहित्य में संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिषद् तथा रामायण काल, महाभारत काल, स्मृति काल, पौराणिक काल, बौद्ध साहित्य, अपभ्रंश साहित्य, सिद्ध–साहित्य, नाथ–साहित्य आदि तथा मध्यकालीन हिन्दी साहित्य से लेकर आधुनिक साहित्य तक नारी स्वरूपों का विस्तार से विवेचन मिलता है। इस प्रपंचमय जगत में जब भी मनुष्य ने स्वबोधगम्यता की प्राप्ति की तथा उसने उस अप्रतिम ऊर्जा के प्रति आभार प्रकट करने का यत्न किया तो अनायास ही मानव के मुख से ये पंक्तियाँ निःसृत हो उठी कि–

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

अर्थात् हे विधाता! तुम ही माँ हो, सबसे पूर्व प्रयुक्त हुआ यह शब्द भी स्वयंमेव इस सृष्टि को, सृष्टि संचालक ब्रह्म को 'माँ' शब्द से संबोधित कर, इस शब्द की अवर्णनीय महत्ता को समुद्घाटित कर देता है। प्रायः देखा जाता है कि जब हम किसी सांसारिक विपत्ति या जब किसी कृत्य से खिन्न या आहत हो जाते हैं तो बरबस हमें एक ही व्यक्ति की याद आती है और वह है 'माँ'। भयावह क्षणों और जीवन के वैपरित्य में अनायास याद आया यह शब्द हमें नवीन ऊर्जा और चेतना से संपृक्त कर देता है।

स्त्री को गूढ़ भावों से युक्त होने के कारण भूमि से भी अधिक श्रेयस्कर कहा है, पूर्ण वंदन किया है– 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादि अपि गरीयसी।'

पृथिवी सूक्त का प्रथम मंत्र उन धर्मों की गणना करता है जिससे पृथिवी धारित है। इस प्रथम मंत्र में ही कहा गया –

'सत्यं बृहदऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरूं लोकं पृथिवीः नः कृणोतु।।'

(अथर्व. 12.11) अर्थात् सत्य, वृहद ऋतम्, उग्रता, दीक्षा, तप, ब्रह्म, यज्ञ, यह धर्म के सात अंग पृथिवी को धारण करते हैं और यह पृथिवी हमारे भूत–भविष्य और वर्तमान तीनों कालों की रक्षिका व पालिका है। "सर्वथा इन्हीं शब्दों में अपनी पत्नी के रूप में, नारी जाति की प्रशंसा में गा रहा है–

यस्यां भूतं समभवत् यस्यां विश्वं इदं जगत्।
तामद्य गाथां गास्यामि स्त्रीणां यदुत्तमं यशः।।

जिसमें हमारे कुल का बीता हुआ युग, भूतकाल उज्ज्वल रहा है, नहीं–नहीं, हमारे वंश की ही नहीं अपितु हमारे समाज और राष्ट्र का भूतकाल उज्ज्वल रहा है और भविष्य भी उज्ज्वल रहेगा और वर्तमान भी जिनसे उज्ज्वल है। उन गाथाओं को गा–गाकर ऐ नारी–जाति! हम तेरा यशोगान करते हैं। "(वैदिक संहिताओं में नारी–स्वामी दीक्षानंद सरस्वती के विचार, वाङमय–मधुपर्क में वर्णित विचार)

इतिहास के गह्वरों में गोते लगाने से स्पष्ट होता है कि ऋग्वेदकालीन समाज पितृसत्तात्मक होते हुए भी नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण रखता है। आर्यों के देवतासमूह में शामिल अनेक स्त्रियाँ इसका उदाहरण हैं। स्त्री ने उस समय ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा भी अर्जित की और ऋचाओं की रचना भी की। इस काल में लोपामुद्रा, रोमसां, घोषा, सूर्या, अपाला, मैत्रेयी, गार्गी, विलोमी, सावित्री, यमी, विश्वम्भरा, श्रद्धा, शती, देवयानी आदि नामों के उल्लेख मिलते हैं, जिन्हें उनकी विद्वता के आधार पर ही ऋषिका या ब्राह्मणी कहा गया है। ब्रह्मवादिनी और सघोद्वाहा भी तत्कालीन ज्ञानार्जन करने वाली स्त्रियों के प्रकार थे। अपनी विद्वता के कारण ही रामायणकालीन परिवार पैतृक परिवार थे। सीता, तारा, कैकयी, मंदोदरी के प्रसंग इस काल की विदुषी महिलाओं की श्रेणी में मिलते हैं। महाभारत काल में स्त्री की प्रस्थिति में कुछ बदलाव देखने को मिलते हैं। बौद्ध साहित्य की अनेक जातक कथाएँ नारी के सतीत्व के आदर्श को प्रतिष्ठित करती हुई नजर आती हैं।

अगर संस्कृत वाङमय में वर्णित स्त्री के विविध रूपों की बात करें तो जीव का माँ से ज्यादा सामीप्य या तादात्म्य अन्य

ISSN No. : 0970-9398

किसी से नहीं हो सकता। इसका कारण है कि अन्य सभी शब्द कंठ का विषय हैं, कंठ से निकलते हैं जबकि 'माँ' की ध्वनि आत्मा से गुंजायमान होती है। संभवतः इतनी आत्मीयता से, इंसानी रूह से निकलने वाला यही प्रभावी शब्द है। इसीलिए उस परम तत्त्व, सत्ता या शक्ति को मानव ने पहली बार मातृस्वरूप में स्मरण किया और अनन्तर उसे पिता, बन्धु, मित्र, धन, धान्य, सम्पदा इत्यादि शब्दों से संबोधित किया। शायद यही कारण है कि महाकवि कालिदास ने भी स्त्री शक्ति को बारम्बार प्रणाम किया है–

"वागर्थाविव संप्रक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।"

(कुमारसंभवम्–आदिश्लोक 1/1)

अर्थात् जगत के माता–पिता (पितरौ) भवानी, शंकर, वाणी और अर्थ की भाँति एकीभूत है, संपृक्त है, उन्हें वंदन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ।

इसी क्रम में महाकवि तुलसीदास का कथन भी द्रष्टव्य है–

"जगत मातु–पितु– संभु–भवानी"

(बालकाण्ड–रामचरितमानस)

प्रसिद्ध सूफी संत जायसी ने भी नायिका को परमात्मा शब्द से संकेतित किया है। स्पष्ट है भारतीय संस्कृति में नारी को समग्र सृष्टि की अधिष्ठात्री माना गया है। पूरी सृष्टि ही स्त्री है, क्योंकि इस सृष्टि में दया, दाक्षिण्य, बुद्धि, शुद्धि, शक्ति, शांति, लज्जा, प्रेम, करूणा, इच्छा, तृष्णा, श्रद्धा, चेतना और लक्ष्मी आदि अनेक रूपों में स्त्री ही व्याप्त है। इन्हीं अनेकविध मानवीय आदर्शों की पूर्णता को संवलित करने से ही नारियाँ भाव प्रधान हृदय की स्वामीनियाँ होती है। वास्तविकता तो यह है कि नारी हृदय का ही पर्याय है, उसके शरीर में हृय की ही प्रधानता है। नारी बुद्धि में भी हृदय का प्राधान्य परिलक्षित होता है, तभी तो गर्भाधान से लेकर पालन–पोषण तक अनिर्वचनीय असीम वेदनाओं और कष्टों में भी उसे अद्वितीय आनंद की अनुभूति होती है। उसी का प्रतिफल है कि वे एक नवीन सृष्टि की सृजक बन जाती है। सृजन की इस प्रक्रिया में वे कोई व्यावसायिक या हिसाबी दृष्टि न रखते हुए सानन्द इसे पूर्णता प्रदान करती है। हृदय या भाव प्राधान्य होने के कारण ही उसका अन्तःकरण अनेक बार पति, पुत्र या परिजनों द्वारा दी गई अनेक प्रताड़नाओं के बावजूद भी वह सभी के प्रति शुभशंसा या कल्याणमयी कामना करती नज़र आती है। जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में इसी तत्व को समुद्घाटित किया है–

"नारी जीवन का चित्र यही,
क्या विकल रंग भर देती है।
स्फुट रेखा की सीमा में,
आकार कला को देती है।।"

(कामायनी)

भारतीय संस्कति में नारी का उल्लेख जगत्–जननी, आदि शक्ति–स्वरूपा, ज्ञान–स्वरूपा व सृष्टि अधिष्ठात्री के रूप में किया गया है। संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, स्मृतियों और पुराणों में नारी को इसी रूप में चित्रित किया गया है। विश्व की सभी सभ्यताओं और संस्कृतियों में सम्भवतः हमारी सभ्यता ही ऐसी है जिसमें स्त्रियों को देवी, शक्ति या पुरूषों से सौ गुना ज्यादा वंदनीया व पूजनीया बताया गया है। भारतीय जीवन मूल्यों की संकल्पना व प्रकृति की अवधारणा के केन्द्र बिन्दु में स्त्री ही है। हमने भूमि को माता कहा, गौ को मातृवत् कहा, गंगा, यमुना, सरस्वती प्रभृति नदियों को भी इसी शब्द से संबोधित किया है। गायत्री मंत्र जिसे हम पवित्र स्तुति मानते हैं ; उसमें भी माँ गायत्री की आराधना है। अन्नपूर्णा स्थूलांश की संचालिका या खाद्यान्न की देवी है।

मनुस्मृति में भी कहा गया है–

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
यत्रास्तु ना पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।"

भाव यह है कि जिस स्थल पर नारी की उपेक्षा हो वहाँ कोई मंगल कार्य संपन्न नहीं होता; परन्तु जहाँ नारी की दैवीय रूप में स्तुति की जाएगी, देवता भी प्रसन्नतापूर्वक उसी स्थल पर सुशोभित होंगे। इसी कथ्य को पल्लवित करते हुए 'महर्षि गर्ग' कहते हैं–

'यद् गृहे रमते नारी लक्ष्मीस्तद् गृहवासिनी।
देवता कोटिशो वत्सः न त्यजन्ति गृहं ही तत्।। –

अर्थात् जिस घर में सद्गुण भूषित नारी आनन्दपूर्वक निवास करती है, उस घर में निरंतर लक्ष्मी का वास होता है। हे वत्स! कोटि देवता भी ऐसे घर का त्याग नहीं करते हैं।

भारतीय संस्कृति की यह महत्ता ही है कि इस तथ्य को समझते हुए कुछेक स्थलों को छोड़कर नारी को सदैव वंदनीया ही माना गया है। मनुष्य जीवन के सर्वांगीण समुत्कर्ष एवं निःश्रेयस के लिए आधारभूत, श्री, ज्ञान, ऐश्वर्य तथा शौर्य को अधिष्ठात्री नारी रूपों में अवतरित देवियों को ही माना गया है। वैदिक काल से ही हमारे देश में नारी को पूज्या मानते हुए उसकी बहुविध स्तुतियाँ की गई हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में 'अर्धनारीश्वर' का आदर्श स्पंदित रहा है। अर्धनारीश्वर की कल्पना से लोमहर्षक कुछ भी नहीं हो सकता। सौंदर्य और भाव के इस सागर को अगर हर कालखण्ड अपने भीतर समाहित कर ले वर्गभेद के प्रति हिंसा शमित हो जाएगी। अधुनातन समय में भी इसी आदर्श की परिणति त्रिदेवियों में विद्यमान है। संतति को विद्या संस्कार देते समय उसका सरस्वती रूप उद्घाटित होता है, गृह संचालन एवं गृह स्वामिनी की कुशलता में उसका लक्ष्मी रूप तथा पापियों व दुष्टों का संहार करते समय उसका दुर्गा रूप प्रकट हो जाता है। यहाँ तक कि किसी भी शुभ व मंगलकार्य को नारी की अनुपस्थिति में निष्फल ही माना गया है।

वेद, उपनिषद् और स्मृतियों में अनेक प्रमाण हैं कि मानव जीवन पद्धति में नारी, विधाता की सर्वोत्तम परिकल्पना मानी गई है। सनातन काल से नारी का इस सृष्टि में अतुलनीय एवं प्रभूत योगदान है। उपनिषद् सृष्टि को स्त्री की अनुपस्थिति में अपूर्ण मानते हैं। वहाँ सृष्टि की सम्पूर्णता या रिक्तता का हेतु स्त्री को ही माना गया है– **'अयमाकाशः स्त्रियाः पूर्यते।'** (वृहदारण्यकोपनिषद् –1.4.3)। इसी संदर्भ में ऋग्वेद का कथन है कि स्त्री ही ब्रह्मा है– **'स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ।'** इसी संदर्भ में वेदवाणी ने यह भी उद्घोषित किया है कि–

'त्वे विश्वा सरस्वती' (ऋग्वेद–2.41.17)

ISSN No. : 0970-9398

अर्थात् हे विदुषी! तुझ देवी पर सब जीवन आश्रित है, क्योंकि तू ही सरस्वती रूपा है। भारतीय संस्कृति में मंत्रद्रष्टा ऋषियों (मंत्र–द्रष्टाः ऋषयः) ने नारी को गौरवशाली व्यक्तित्व प्रदान किया है। अतः वैदिक काल नारी का अति अभिनंदनीय एवं उज्ज्वल रूप प्रस्तुत करता है– **'विराडियं सुप्रजा अत्यजैषीत्'** (अथर्ववेद–14.2.74)

स्त्री शक्ति रूपा है, यह वही स्त्री है जो सृष्टि के पोर–पोर में कभी कोंपल बन खिलती है तो कभी फूल बन महकती है। उसका समर्पण स्तुत्य है। स्त्री की इसी विशेषता को रेखांकित करते हुए यजुर्वेद कहता है–

"इड़े रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतिअदिते सरस्वती मही विश्रुति।
एता तेअघन्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्।"
(यजुर्वेद–8.43)

इस मंत्र में स्त्री को संबोधित करते हुए कहा गया है कि हे स्त्री! – तू स्तुति योग्य, उत्तम वाणी युक्ता, रमणीया, पूजनीया, कमनीया, चन्द्रवत् आह्लादकारिणी, श्रेष्ठशील से प्रकाशमान अर्थात् ज्योति के समान अज्ञानांधकार को अपने दिव्यगुणों से दूर करने वाली, दीनता एवं हीनता के भावों से रहित गौरवमयी परम्परा से परिपूर्ण, विविध गुणों से मण्डित अथवा विविध कल्याणमयी विधाओं का जिसने श्रवण किया हुआ है, तथा विविध विधाओं में प्रवीण, ये तेरे नाम है। तू उत्तम गुणों के लिए मुझे उपदेश दिया कर। इस मंत्र का विशेष सौंदर्य यह है कि नारी को इस मंत्र में अघन्ये अर्थात् ताड़ना ना करने योग्य एवं मही अर्थात् अत्यंत पूजनीया एवं वंदनीया कहा गया है।

ऋग्वेद भारतीय नारी को सूनृता अर्थात् मधुर एवं सत्यवचन की प्रेरिका तथा सुमति अर्थात सम्यक् मति प्रदात्री के रूप में चित्रित कर रहा है–

"चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् यज्ञं दधे सरस्वती।" (ऋग्वेद–1.3.11)

ऋग्वेद नारी को सुलाभिका – उत्तम लाभ अर्थात् महैश्वर्य को प्रदान कराने वाली घोषित करता है।

"उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाड़्ग भविष्यति।" (ऋग्वेद–10.87.7)

वेद में नारी को सुभद्रिका अर्थात् श्रेष्ठ कल्याणदायिका लक्ष्मी कहा है।

"सुभद्रिका काम्पीलवासिनीम्" (यजुर्वेद–23.18)

यजुर्वेद के अनुसार स्त्री दानशीलता, ऐश्वर्यवती एवं सिर पर पगड़ी के समान आदर पूर्वक धारण करने योग्य है–

"रास्नासि इंद्राण्या उष्णीषः।" (यजुर्वेद–38.3)

स्मृति ग्रंथों में भी कहा गया है कि –

"प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्त्यः।
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु, न विशेषोस्ति कश्चन। "

अर्थात् उत्तम संतानों को जन्म देने हेतु जिनका निर्माण हुआ है, ऐसी महान भाग्यशालिनी, पूजनीया, और घर की शोभा कहलाने वाली स्त्रियां हैं। वे ही साक्षात् लक्ष्मियां हैं; अतः स्त्रियों और लक्ष्मियों में कोई अंतर नहीं है।

"उत्पादनमपत्यस्य, जातस्य परिपालनम्।
प्रत्यहं लोकयात्रायाः, प्रत्यक्षं स्त्री निबन्धनम्।।

अर्थात् संतान को जन्म देने, जन्मे हुए का पालन पोषण करने और दैनिक लोक व्यवहार का स्त्री ही प्रत्यक्ष एवं एकमात्र मूल आधार है।

"अपत्यं धर्मकार्याणि, शुश्रूषा रतिरुत्तमा
दाराधीनस्तथा स्वर्गः, पितॄणामात्मानश्च ह।।"
(मनुस्मृति–1.28)

अर्थात् संतानों का निर्माण, धर्मकृत्य, सेवा और उत्तमरति तथा अपना और पिता आदि का विशेष सुख, ये सब कार्य स्त्री पर ही निर्भर है।

महाभारत के उद्योग पर्व में भी कहा गया है कि–

"पूजनीयाः महाभागाः, पुण्याश्च ग्रहदीप्तयः,
स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः।।"

अर्थात् पूजायोग्य, अतिभाग्यशालिनी, पुण्य कर्म वाली और गृह की शोभा बढ़ाने वाली स्त्रियों को ही घर की लक्ष्मी कहा गया है। अतः नारियों की विशेष रूप से रक्षा की जानी चाहिए। इसी प्रकार महाभारत में भी स्त्रियों को सत्कार योग्य बताते हुए वेदव्यास कहते हैं कि –

"पूज्या लालयितव्याश्च, स्त्रियो नित्यं जनाधिपः।
स्त्रियो यत्र हि पूज्यंते, रमन्ते तत्र देवता।।
अपूजिताश्च यत्रैताः सर्वास्तत्राऽफलाःक्रियाः।
तदा चैतत्कुलम् नास्ति, यदा शोचन्ति जामयः।।"

अर्थात् हे राजन् ! स्त्रियों का सदा सत्कार करना चाहिए और इन्हें लाड़ से रखना चाहिए। जहां स्त्रियों का सत्कार किया जाता है वहां दिव्य गुण संपन्न आत्माएं जन्म लेती हैं। और जहाँ स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहाँ सब क्रियाएँ निष्फल होती हैं, उसका परिवार नष्ट हो जाता है, वहां पत्नी, बहू आदि स्त्रियां शोकमग्न रहती है। कुटुम्ब की अवधारणा में स्त्री के अवदान के संदर्भ में यह भी कहा गया है कि–

'न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं तु गृहिणीहीनं कान्तारादतिरिच्यते।।

यानी भवन को घर नहीं कहते हैं अपितु गृहिणी (गृहनारी) ही घर कहलाता है। जो घर गृहिणी से विहिन है, वह तो जंगल से भी बढ़कर सूना है।

इन्हीं गुणों के कारण महात्मा गांधी भी स्त्री को अबला कहना उसका अपमान मानते हैं और संभवतः इसी कारण राधाकृष्णन् कहते हैं कि नारी हर हाल में पुरूष की शिक्षिका है। स्त्री के ही कारण हमारी संस्कृति, सभ्यता, व्यक्तित्व, भूत, वर्तमान और भविष्य सदा सर्वदा सुरक्षित रहेंगे। वह श्रद्धा की भांति विनम्र है, मैत्रेयी, गार्गी की भाँति बौद्धिक एवं राधा, मीरा और मरवण की भाँति प्रेमिल। वह उसी प्रेममार्ग की धीर पथिक है जिसके प्रेम के निश्छल तर्कों से उद्धव जैसे योग के परमज्ञानी भी निरूत्तर हो जाते हैं। स्त्री से ही जीव है, जीवन है, पुरूष है और ब्रह्माण्ड सुचारू रूप से चलायमान है। स्त्री के इन रूपों को, उसके प्रदेय को, समर्पण को स्मृति में रखते हुए ही वेद,

ISSN No. : 0970-9398

उपनिषद्, पुराण, स्मृतियां और अनेकानेक लोक–ग्रंथ उसे ईश्वर की संज्ञा देते है।

जहां तक स्त्रियों की साहित्य में भूमिका का प्रश्न आता है, साहित्य का आदिकाल महिलाओं की कोमल भावनाओं के अनुकूल नहीं था, अतः इस काल में कोई महिला साहित्यकार प्रकाश में नही आई परन्तु उसके पश्चात अन्य सभी कालों में महिलाओं ने साहित्य की वृद्धि में यथा शक्ति योगदान दिया। भक्तिकालीन महिला काव्यकारों में सहजोबाई, दयाबाई और मीराबाई का नाम विशेष है। अक़बर के शासनकाल में 'राय प्रवीण' का नाम भी है जो नृत्य और गीत के साथ सुन्दर कविता भी करती थी। वह महाकवि केशव की शिष्या थी। इसके बाद 'ताज' का नाम आता है। यद्धपि यह मुसलमान थीं फिर भी इन्हें श्रीकृष्ण से प्रेम हो गया था, इनकी कविताएं भक्तिरस से ओत–प्रोत हैं। ताज के पश्चात शेख़ का नाम आता है ये रंगरेजिन महिला थीं, इन्होंने एक ब्राह्मण कवि से विवाह कर लिया था और उसका नाम आलम रखा था दोनों पति–पत्नी आनन्द से कविता किया करते थे प्रथम पंक्ति में पति प्रश्न करते थे, दूसरी पंक्ति में शेख़ उसका उत्तर देतीं। साहित्य की सभी विद्धाओं पर महिलाओं ने लेखनी चलाई है।

भक्तिकाल में कई कवयत्रियों हुईं और इन कवित्रियों द्वारा कविताएं भी लिखी गई परन्तु इनकी कवितायें कहाँ गयी ये कोई नहीं जानता भक्ति काल की समस्त कवियित्रियाँ स्त्री काया जनित वेदना और विद्रोह को अभिव्यक्त करती हैं चाहे वो मीरा हो या लल्लेश्वरी भक्ति में भिगोई इनकी दमनकारी व्यवस्था के प्रति आक्रोश को सहज ही पहचाना जा सकता है। मीरा की तरह भक्तिकाल में अनेक महिला साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इनमें रायप्रवीन, ताजप्रताप, कुंवरबाई, सुन्दरबाई, सुन्दर कुंवरबाई, चंद्रकला बाई, अक्कामहादेवी, ललद्य आदि शामिल हैं। इनमें संत कवयित्रियों में बाबरी साहिबा, दयाबाई, सहजोबाई जैसे कवयित्रियों ने हिन्दी के विकास में अपना योगदान दिया।

"बावरी रावरी का कहिये मन हयै के पतंग भरे नित भंवरी भंवरी जानहि संत सुजान जिन्हें हरिरुप हिये दरसावरी।"

महान् कवयित्रियों में 'त्रेयी' का यह स्वर आज भी हमारी भाषा और भाव का एक अविभाज्य अंग हैं।

कालांतर में समाज और साहित्य में स्त्री–चिंतन का प्रादुर्भाव आधुनिक शिक्षा तथा विचारों की देन है। बीसवीं सदी स्त्री के लिए वरदान साबित हुई है। मन में जल रही मुक्ति की लौ को आधुनिक विचारों की हवा ने ज्वाला का रूप दिया। फलस्वरूप स्त्री के जीवन तथा स्थिति में क्रांतिकारी परिवर्तन आये और यह परिवर्तन आज भी हो रहे हैं। समकालीन स्त्री उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री के बदलते जीवन संदर्भ, बदलती मानसिकता तथा संघर्ष को विशेष स्थान दिया। यह अस्तित्व, अस्मिता और समता के लिए संघर्षरत स्त्री की कथा है। कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, शशि प्रभा शास्त्री, चन्द्रकिरण जैसी अनेक लेखिकाओं ने स्त्री–चिंतन और स्त्री–लेखन को सार्थकता दी। इनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री पूर्वाग्रहों से मुक्त, स्वतंत्र, शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वाभिमानी, सबला तथा निर्णय क्षमता से युक्त स्त्री है। वह अपने कार्यों और विचारों से बदलते मूल्यों को अभिव्यक्त करती है। विवाह, मातृत्व जैसे मूल्यों पर सवाल उठा रही है। जहाँ एक ओर वह पुरुषसत्ता का विरोध करती है तो दूसरी ओर उन परंपराओं को स्वीकारती भी है जो मानवता के पोषक हैं।

आज़ादी की लड़ाई के दौरान ज्यादातर साहित्य में देश प्रेम के भावना दिखती थी। उषा देवी मित्रा, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने समकालीन विषयों को अभिव्यक्ति दी, भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू का मानना था कि भारतीय नारी कभी भी कृपा की पात्र नहीं थी, वह सदैव समानता की अधिकारी रही है।

आधुनिक युग की महिला कवियत्रियों में प्रथम नाम श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान का आता है। छायावादी युग की प्रमुख कवियत्रियों में महादेवी वर्मा का नाम आता है। कविता के क्षेत्र में श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा रहीं। आज़ादी के बाद परिस्थितियां बदलने के साथ ही साहित्य और लेखन में महिलाओं के स्वर और विषयों में भी बदलाव दिखने लगा। नारी मुक्ति की भावना और अभिव्यक्ति ज्यादा मुखर रूप से उभर कर सामने आयी।

नए परिवेश में पुरुष के साथ बराबरी से कन्धा मिलाकर चलने, पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ साथ वैयक्तिक चेतना ने महिला साहित्य में एक नए स्वर को जन्म दिया। अमृता प्रीतम, शिवानी, कृष्णा सोबती, निरुपमा सेवती, मेहरुन्निसा परवेज़ आदि के लेखन ने नारी मूल्यों को नए सिरे से गढ़ा और एक नयी पहचान दी। वर्तमान स्त्री अपने लेखन में स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे मूलभूत अधिकारों के लिए संघर्षरत और सक्रिय स्त्री रचनाकार स्त्री–हितों की चर्चा स्वयं करने लगी है और अपनी अस्मिता को पहचान रही है। नारी साहित्य लेखन एक और स्वांतः सुखाय है तो दूसरी ओर जन हिताय है नारी साहित्य इस परिवर्तन युग का शुभचिंतक है।

अतः प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर विशाल मौर्य और गुप्त साम्राज्यों तक, भारतीय महिलाओं ने सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं। रानी पद्मिनी, रजिया सुल्तान और रानी लक्ष्मीबाई जैसी शक्तिशाली और प्रभावशाली महिलाओं के उदाहरणों ने अपने साहस और दृढ़ संकल्प से पीढ़ियों को प्रेरित किया है। भारतीय पौराणिक कथाएँ दिव्य और नश्वर महिलाओं की असंख्य आकर्षक कहानियाँ प्रस्तुत करती हैं जो शक्ति, बुद्धि और सदाचार का उदाहरण हैं। दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी जैसी देवियों की पूजा उनके स्त्री शक्ति, ज्ञान और समृद्धि के अवतार के लिए की जाती है। ये देवता सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में कार्य करते हैं और भारतीय समाज में महिलाओं की श्रद्धा को आधार प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, महाकाव्य रामायण और महाभारत महिलाओं की विविध भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को दर्शाते हैं, जिनमें सीता की वफादारी, द्रौपदी का लचीलापन और कुंती और गांधारी जैसी महिलाओं की बुद्धिमत्ता शामिल है। भारतीय नारीत्व का उत्सव भारत की सांस्कृतिक विरासत के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। पूरे इतिहास में महिलाओं ने कला, साहित्य, परंपराओं और अर्थव्यवस्था में अपने योगदान के माध्यम से देश की पहचान को आकार देने में अपरिहार्य भूमिका निभाई है।

–कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
आईसीएमआर–एनआईएमआर

ISSN No. : 0970-9398

मानस में स्त्री का स्वरूप: आदर्श का भव्यतम रूप

–बिपिन कुमार झा

मानसः एक सूक्ष्म दृष्टि

भक्ति काल के श्रेष्ठतम कवि तुलसीदास ने अपने जीवन काल में अनेक कालजयी ग्रंथों की रचना की जिनमें प्रमुख ग्रन्थ हैं– श्रीरामचरितमानस, कवितावली, रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न, जानकी मंगल, पार्वती मंगल, विनय पत्रिका, बरवै रामायण और दोहावली। तुलसी की समस्त रचनाओं में रामचरितमानस, विनयपत्रिका, कवितावली और गीतावली प्रमुख हैं। श्रीरामचरितमानस तुलसीदास जी द्वारा विरचित भक्ति का ऐसा महाकाव्य है जिसमें मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम को केंद्र में विराजमान कर आदर्श का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। मानस में राम के अतिरिक्त स्त्री पात्रों को भी समाहित करके इसे नैसर्गिक और प्रासंगिक आयाम दिया गया है। इन स्त्री पात्रों के माध्यम से तुलसी ने परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की स्त्रियों के मध्य आदर्श का अनुपम रूप प्रस्तुत किया है जो युग–युगांत तक अनुकरणीय है।

मानसःप्रमुख स्त्री पात्र

मानस की राम कथा में यथार्थतः केन्द्रीय भूमिका श्रीराम की ही है परन्तु इसमें अनेक स्त्री पात्रों को भी आदर्श स्वरूप में समाहित किया गया है। ये सभी स्त्री पात्र मानस को अधिक रुचिकर, भावपूर्ण और सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य बनाती हैं। आइए, मानस के इन स्त्री पात्रों के आदर्श स्वरूप के भव्यतम रूप पर एक दृष्टि डालने का प्रयास किया जाएः

कौशल्याः मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की माता कौशल्या के चरित्र–चित्रण में तुलसी ने अपनी लेखनी के साथ–साथ अपने भक्ति के तारों को भी पिरो दिया है। तुलसी ने भगवान श्रीराम के रामावतार प्रसंग में भगवान श्रीराम के कौशल्या के गर्भ से अवतरित होने पर उन्हें अपना दैविक रूप दिखलाने और पुनः माता कौशल्या द्वारा उनके शिशु रूप के लिए लालायित हो उठने वाले चित्रों में समाज के एक सामान्य परिवार की स्त्री एवं शिशु के मध्य के वात्सल्य स्नेह का सहज चित्रण किया है। तुलसी ने कौशल्या के शब्दों द्वारा ही भगवान के शिशु रूप की स्तुति कर माता का आदर्शतम रूप स्थापित किया हैः–

माता पुनि बोलि, सो मति डोली, तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला, यह सुख परम अनूपा।।

कौशल्या आदर्श माता के साथ–साथ आदर्श स्त्री भी थीं जो अपनी सौतन को बहन सदृश्य मानती थीं। कौशल्या ने ही राजा दशरथ की मृत्यु के पश्चात् राम को वन जाकर अपने पिता की आज्ञा का पालन करने को कहा। इस प्रकार मानस की कौशल्या आज के समय भी आदर्श का अनुकरणीय रूप हैं।

सुमित्राः सुमित्रा के माध्यम से तुलसी ने मानस में समाज की स्त्रियों के मध्य सौतन को सौत के रूप में न देखकर बहन के रूप में देखने का आदर्श चित्रित किया है। सुमित्रा कौशल्या को सौत नहीं मानकर अग्रजा मानती थीं। वह श्रीराम से अपने पुत्र लक्ष्मण की अपेक्षा अधिक प्रेम करती थीं। तुलसी ने सुमित्रा की महिमा का चित्रण इन शब्दों द्वारा किया हैः

पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगत जासु सुत होई।।

पुनः श्रीराम के वनवास गमन के समय सुमित्रा लक्ष्मण को सीख देती है कि वे राम–सीता के साथ बन जाएं और उनकी सेवा करें क्योंकि राम के बिना यह भवन अंधकारमय रहेगाः

अवध तहाँ जहँ राम निवासू। तहँइँ दिवसु जहाँ भानु प्रकासू।।

अर्थात् सुमित्रा के माध्यम से वर्तमान समाज की स्त्रियों को सौतन के साथ सौतिया भाव न रखकर बहन के सदृश सहृदय भाव रखने की सीख मिलती है जिसे तुलसी ने सुमित्रा के द्वारा आदर्श के भव्यतम रूम में प्रस्तुत किया है।

सुनयनाः सुनयना राजा जनक की धर्मपत्नी और सीता की माता थीं। तुलसी ने मानस में सुनयना का चरित्र–चित्रण कम ही किया है परंतु सुनयना का चरित्र–चित्रण जहां भी हुआ है उन्हें आदर्श माता के रूप में चित्रित किया गया है जो अपनी पुत्रियों को आदर्श पुत्री के रूप में स्थापित करने का प्रयास करती हैं। सीता–स्वयंवर के समय धनुष–भंग में विलंब होने के समय सीता के साथ–साथ माता सुनयना की व्याकुलता और व्यग्रता भी वर्णननीय है।

इसके अतिरिक्त वह प्रसंग जब राजा जनक और माता सुनयना चित्रकूट जाकर सीता और राम से मिलती हैं तब सीता द्वारा राम की सेवा से उन्हें पूर्ण संतुष्टि प्राप्त होना सुनयना के आदर्श को भव्यतम रूप से चित्रित करता है। वर्तमान समाज में जब स्त्रियां अपनी पुत्री को एकल परिवार में देखकर अधिक हर्षित होती हैं यहां उन्हें सुनयना द्वारा पुत्री को संयुक्त परिवार

ISSN No. : 0970-9398

में स्थापित कर सास–ससुर, पति की सेवा करने का संदेश एवं पति के सुख–दुःख में उनकी संगिनी बनकर आदर्श पत्नी बनने के अनुपम आदर्श को स्थापित करने की प्रेरणा मिलती है। अतः सुनयना का चरित्र वर्तमान समय में स्त्रियों के लिए पूर्णतः अनुकरणीय है।

उर्मिलाः मानस के प्रमुख स्त्री पात्रों में उर्मिला का स्थान अनुपम एवं अद्वितीय है। मानस में सीता को आदर्श पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है परंतु उर्मिला के भव्यतम आदर्श को मानस में कम ही दिखाया गया है। उर्मिला को आदर्श की पराकाष्ठा पर मैथिलीशरण गुप्त जी ने साकेत में स्थापित किया। तथापि मानस में उर्मिला के माध्यम से एक पति–परायणा, नवयुवती को दर्शाया गया है जो अपने पति की तपस्या के मार्ग में बाधक नहीं बनकर साधक बनी। यर्थाथतः उर्मिला का दुःख सीता के दुःख से कम भी नहीं था जो एक बार उनकी माता सुनयना द्वारा कहे गए इन शब्दों के द्वारा स्पष्ट हैः

मिला न बन ही न गेह ही तुझको।

यह कहना भी सटीक होगा कि मानस में उर्मिला के माध्यम से तुलसी ने आदर्श पत्नी और भगिनी के आयाम को अधिक विस्तारित किया है। वह लज्जावश सीता से वन जाने का अनुरोध नहीं कर सकीं और आदर्शवश लक्ष्मण की आज्ञा का पालन करना पड़ा जिसके कारण वह दीया की बाती के समान स्वयं को जलाकर अन्य के लिए प्रकाश बिखेरती रहीं:

मानस मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप।
जलती–सी उस विरह में, बनी आरती आप।।

अहिल्याः मानस के प्रमुख स्त्री पात्रों में सौंदर्यवती अहिल्या का नाम भी अग्रणी है। मानस में तुलसी ने अहिल्या का अप्रतिम, अद्वितीय एवं भव्यतम वर्णन किया है। यह जानते हुए भी कि अहिल्या के साथ देवराज इंद्र ने कपटपूर्ण और असभ्य व्यवहार किया था परंतु गौतम ऋषि द्वारा अहिल्या को शिला पत्थर बन जाने का शाप देना और उनका परित्याग एक स्त्री की दारुण व्यथा को वर्णित करता है। वह प्रभु श्रीराम ही थे जिन्होंने अपने स्पर्श से उस स्त्री को आदर्श रूप में पुर्नस्थापित किया जिसे अपावन स्त्री की संज्ञा दी गई थीः

मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन, रावण रिपु जन सुखदाई।।

अहिल्या दोषरहित थी परंतु वह फिर भी शापित और पतिता कहलाई तथापि उसका उद्धार सर्वश्रेष्ठ पुरूष पर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के हाथों ही हुआ। अहिल्या का चरित्र समाज की स्त्रियों में यह संदेश देता है कि स्त्री का चतुर होना और पुरुष के कुचक्र से स्वयं को पृथक रखना भी आवश्यक है। अहिल्या के माध्यम से तुलसी ने समाज में यह आदर्श दिया कि प्रभु श्रीराम पतितों के पावनहार और उद्धारकर्ता हैं:

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।।

शबरीः शबरी मानस के प्रमुख स्त्री पात्रों में से एक है। तुलसीदास जी ने शबरी का चरित्र– चित्रण करते हुए समाज को यह संदेश दिया कि भक्ति में जात–पात कुछ नहीं देखा जाता हैः

केहि बिधि अस्तुति करऊँ तुम्हारी।
अधम जाति मैं जड़मति भारी।।

शबरी भील जाति की थीं परन्तु भगवान श्री राम के प्रति उनकी ऐसी भक्ति थी कि उसने भगवान को अपने जूठे फल खाने को दिए ताकि प्रभु केवल मीठे फल ही खाएं। यह भक्ति की पराकाष्ठा है जिससे वशीभूत होकर प्रभु श्रीराम ने उन्हें नवधा–भक्ति का उपदेश दिया जो किसी मोक्ष से कम नहीं है। अतः तुलसी ने शबरी के माध्यम से समाज में स्त्री के लिए भक्ति के भव्यतम रूप का सर्वश्रेष्ठ वर्णन किया हैः

नवधा–भक्ति कहिय तोहि पाहि। सावधान सुनू धरि मन माहीं।।

मंदोदरीः मंदोदरी राक्षस कुलवधू होते हुए भी सहृदया थीं। वह वाकपटु, चतुर और सहृदया थीं और उसने ही रावण को सीता का वध करने से रोकाः

सुनत बचन कह मारन धावा। मयतनया कह नीति बुझावा।।

मंदोदरी सीता के प्रति सहृदयता की भावना और प्रभु राम के प्रति भक्ति की भावना रखती थीं। वह रावण को अंत समय तक यह समझाने का प्रयास करती रही कि प्रभु श्रीराम से मैत्री करके ही उसका कल्याण हैः

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हें।।

इस प्रकार तुलसी ने मंदोदरी के माध्यम से समाज में आदर्श का यह संदेश दिया कि राक्षस कुल की स्त्रियां भी आदर्श स्त्री हो सकती हैं।

त्रिजटाः मानस के प्रमुख स्त्री पात्रों में त्रिजटा का नाम अनन्य राम भक्त के रूप में चिर स्मरणीय हैः

त्रिजटा नाम राक्षसी एका, राम चरण मति निपुण विवेका।।

इतना ही नहीं तुलसी ने त्रिजटा को धैर्य, साहस, सेवा और भक्ति की भव्यतम प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया है। अशोक वाटिका में शोकाकुल सीता के लिए त्रिजटा ही एक मातृ–तुल्य स्त्री थीं जो उन्हें शोकाकुल न होकर धैर्यपूर्वक प्रभु श्रीराम का स्मरण करने का सुझाव देती है और विश्वास दिलाती है कि प्रभु श्रीराम लंका आकर रावण का वध करके सीता को अपने साथ ले जाएंगे। अतः तुलसी ने त्रिजटा के माध्यम से स्त्री–समाज में पारस्परिक सहानुभूति एवं सहृदयता के भाव को विस्तारित करते हुए इसे गौरवान्वित किया हैः

त्रिजटा सन बोलि कर जोरि, मातु बिपति संगिनी तै मोरि।।

सीताः तुलसी ने मानस में भगवान श्रीराम के उदात्त चरित्र का वर्णन करने के साथ–साथ जनकनंदिनी जानकी जी के अनुपम, अद्वितीय, अतुलनीय और अविस्मरणीय चरित्र की भी भव्यतम प्रस्तुति दी है। यह सत्य है कि सीताजी ने राजभवन के सुख का परित्याग कर प्रभु के साथ वन में जाने का प्रण किया, पुनः वन में भी रावण द्वारा हरण कर लंका ले जाने, वहां रावण एवं राक्षसियों द्वारा यातना दिया जाने, पुनः अयोध्या आने के पश्चात

धोबी के वचन पर भगवान श्रीराम द्वारा उनका परित्याग कर दिये जाने, वन में ही लव–कुश का जन्म, पालन–पोषण और अंततः लव–कुश को राम के साथ परिचय कराने के उपरांत वसुधा की अंक में समाहित हो जाने के रूप में दुःख ही दुःख उठाए। तथापि वह अपने जीवन–क्रम के सभी प्रसंगों में स्त्री के लिए आदर्श का नित–नव कीर्तिमान स्थापित करतीं रहीं जिसे तुलसी ने सीता जी के शब्दों से ही प्रस्तुत किया है:

जियं बिनु देह, नदी बिनु बारि। तैसहिं नाथ पुरुष बिन नारि।।

तुलसी ने मानस के समस्त कांडों में जहां भी सीता का चरित्र–चित्रण किया वह उन्हें उनके आदर्श के अनुरूप ही चित्रित किया है। तुलसी ने हनुमान जी द्वारा सीता माता से वरदान प्राप्त करने के पश्चात् उनकी गरिमा एवं महिमा को हनुमान के शब्दों से ही वर्णित किया है:

अब कृतकृत्य भयऊँ मैं माता। आशीष तव अमोघ विख्याता।।

यह सीता का ही आशीर्वाद है जिसके प्रताप से हनुमान जी को अजरता–अमरता का वरदान प्राप्त हुआ:–

अजर–अमर गुणनायक होहू। करहु बहुत रघुनायक छोहू।।

इस प्रकार मानस में तुलसी ने सभी स्त्री–पात्रों के चरित्र–चित्रण में सीता के आदर्श चरित्र को भव्यतम एवं उत्कृष्टतम रूप से उद्धृत किया है। मानस की सीता मानस मात्र की आदर्श न होकर हमारे घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व की आदर्श स्त्री पात्र हैं। मिथिलांचल में वर्तमान समय में भी लोग अपनी बेटी को स्नेहपूर्वक "सीता बेटी" के रूप में ही संबोधित करते हैं और मैथिली भाषा में बेटी को "सिया–धिया" कहकर ही बुलाते हैं। अतः तुलसी ने मानस में श्रीराम के साथ–साथ सीता के चरित्र को भी चातुर्दिक आयाम देने का प्रयास इन शब्दों से किया है:–

सियाराम मय सब जग जानि।
करिय प्रणाम जोरि जुग पानि।।

मानस के स्त्री पात्रः नैसर्गिकता एवं प्रासांगिकता

तुलसी ने मानस में स्त्री पात्रों के माध्यम से दैविक आदर्शों, भावनाओं को समाज के जन–जन और मन–मन में स्थापित करने का प्रयास किया है। मानस के स्त्री पात्र दैवीय शक्ति से निहित अवश्य थे परन्तु इनकी भावनाओं को इतनी सूक्ष्मता से चित्रित किया गया है कि ये रामायण के पात्र न होकर हमारे परिवार, समाज के सदस्य प्रतीत होते हैं। बाल्मीकि रामायण, कंबन रामायण एवं अन्य भाषाओं के रामायण की तुलना में तुलसी द्वारा विरचित मानस में स्त्री पात्रों को आदर्श की पराकाष्ठा पर विराजमान किया गया है जिसके फलस्वरूप ही ये पात्र आज जन–जन में नैसर्गिक एवं प्रासंगिक हो गए हैं।

मानस के स्त्री पात्रः वर्तमान समाज की स्त्रियों का आदर्श

मानस को पुरुष केन्द्रित काव्य कहना श्रेयस्कर प्रतीत नहीं होता है। यद्यपि मानस में भगवान श्रीराम की केन्द्रीय भूमिका है तथापि तुलसी ने स्त्रियों को उनके आदर्श के अनुरूप भव्यतम स्वरूप से गौरवान्वित किया है। बालकाण्ड से लेकर उत्तरकाण्ड तक कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में आदर्श स्त्री–पात्र को अवश्य ही समाहित किया गया है और उनके आदर्श की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई है। कौशल्या से लेकर शबरी तक सभी स्त्री पात्रों के माध्यम से तुलसी ने वर्तमान समाज की स्त्रियों को इन आदर्श का अनुकरण करने की प्रेरणा दी है। वर्तमान समय में जहां पारंपरिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की आहूति दी जा रही है और स्त्रियां आत्म–केन्द्रित हो रही हैं ऐसे में उन्हें मानस की इन आदर्श स्त्रियों की भूमिका का अनुकरण करने और अपने परिवार–समाज में आदर्श की स्थापना करने की प्रेरणा मिलती है। यह कहना सटीक होगा कि मानस के स्त्री पात्र–युग–युगांत तक स्त्रियों के लिए आदर्श हैं।

अंततः यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि तुलसी द्वारा विरचित मानस के समस्त स्त्री पात्र, व्यक्ति की कल्पना के पात्र न होकर मानव जन–जीवन के जीवंत पात्र हैं जिनके माध्यम से तुलसी ने घर–घर में आदर्श का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। तुलसी ने नारी की महिमा एवं गरिमा की भव्यतम अभिव्यक्ति करते हुए मानस के समस्त स्त्री पात्रों द्वारा समाज में उनकी स्वतंत्रता, समानता एवं सदभावपूर्ण–स्वीकार्यता का सर्वश्रेष्ठ चित्रण किया है:

कत विधि सृजीं नारी जग माहिं,
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं।

वर्तमान समय में मानस अत्यधिक नैसर्गिक एवं प्रासंगिक है और इसके साथ–साथ मानस का सार एवं सन्देश अनुसरणीय, अनुकरणीय, अविस्मरणीय एवं अतिपूजनीय है।

–वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

सन्दर्भ स्त्रोतः

1. श्रीरामचरितमानस–गोस्वामी तुलसीदास
2. साकेत–मैथिलीशरण गुप्त
3. महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकें
4. पांडिचेरी विश्वविद्यालय की पाठ्य पुस्तकें
5. भारतकोश (https://bharatdiscovery.org)
6. कविताकोश (http://kavitakosh.org)
7. विकिपीडिया (https://en.wikipedia.org)
8. गूगल (https://www.google.com)

ISSN No. : 0970-9398

संविधान सभा की सशक्त नारियाँ

– डॉ. ज्योति यादव

भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान है। हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान सभा की विभिन्न बैठकों द्वारा कुल 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन में इसे अंतिम रूप दिया। संविधान सभा की बैठकों की यह यात्रा 9 दिसम्बर 1946 ई० से प्रारम्भ हुई, जिसे अंतिम रुप 26 नवम्बर 1949 ई० को दिया गया। आजादी के पूर्व ही संविधान सभा का गठन हुआ था, जिसमें कुल 389 लोगों को इसका सदस्य बनाया गया। भारत विभाजन के बाद संविधान सभा में कुल 299 सदस्य शेष रह गये, जिनमें महिला सदस्यों की संख्या 15 थी। राष्ट्र निर्माण में इन महिलाओं ने संविधान सभा के सदस्य के रूप में अपनी विद्वतापूर्ण भूमिका से भारतीय संविधान को एक नया आयाम देने में अपना योगदान दिया। संविधान सभा की हमारी 15 विदुषियाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, सम्प्रदायों और क्षेत्रों से थी परन्तु उनकी एकजुटता ने राष्ट्र निर्माण में बिना किसी राग– द्वेष और पूर्वाग्रह से सभा के वाद–विवाद और संवादों में अपनी अहम भूमिका अदा की। इनमें सरोजिनी नायडू (बिहार), सुचेता कृपलानी, पूर्णिमा बनर्जी, कमला चौधरी और बेगम एज़ाज रसूल (संयुक्त प्रांत), लीला रे, रेणुका रे (पश्चिम बंगाल), मालती चौधरी (उड़ीसा), एनी मैसकरीन (केरल), हंसा मेहता (मुम्बई), अम्मू स्वामीनाथन (मद्रास), दाक्षायाणी वेलायुदन (कोचीन), राजकुमारी अमृत कौर (मध्यप्रांत और बरार), दुर्गाबाई देशमुख (मद्रास) एवं विजय लक्ष्मी पंडित (संयुक्त प्रांत) थीं। ये महिलाएं भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमियों से थीं। जिनमें सरोजिनी नायडू और सुचेता कृपलानी जहाँ उस समय की प्रख्यात राजनेता एवं स्वतंत्रता सेनानी थीं, तो विजय लक्ष्मी पंडित प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी की बहन थीं, अम्मू स्वामीनाथन एक बहुत ही साधारण परिवार से तो बेगम एज़ाज रसूल और राजकुमारी अमृत कौर राजघराने से ताल्लुक रखती थीं, वहीं 32 वर्षीय दाक्षायणी वेलायुदन संविधान सभा की सबसे युवा और एकमात्र दलित महिला सदस्य थीं। सभा की इन महिला सदस्यों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, नागरिक स्वतंत्रता और महिला सशक्तिकरण से जुड़े विषयों पर अहम योगदान दिया है, जिनकी चर्चा प्रायः नहीं हो पाती है।

संविधान सभा की बैठक के तीसरे दिन 11 दिसंबर 1946 ई. को पहली बार सरोजिनी नायडू को किसी महिला सदस्य के रूप में बोलने के लिए आमंत्रित करते हुए सभा के अस्थाई अध्यक्ष डॉ0 सच्चिदानंद सिन्हा ने कहा–"अब मैं भारत कोकिला बुलबुल हिंद से अनुरोध करूंगा कि वे सभा के समक्ष अपना भाषण दें, पर गद्य में नहीं पद्य में।"[1] जोरदार तालियों की गड़गडाहट के बीच भारत कोकिला ने कश्मीरी कवि की पंक्तियों "बुलबुल को गुल मुबारक, गुल को चमन गुबारक / रंगीन तबियतों को रंगे सखुन मुबारक।"[2] से अपने भाषण की शुरुआत की। स्थायी सभापति चुने गये डा. राजेन्द्र प्रसाद के बारे में कुछ शब्द बोलने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि "मेरे लिए यह तभी सम्भव है जब मेरे पास सोने की कलम और शहद की स्याही हो, क्योंकि संसार भर की स्याही भी काफी नहीं है, जिससे राजेन्द्र बाबू के गुणों का वर्णन किया जा सके या उनकी गुणावली का अभिनन्दन किया जा सके।"[3] वे सबको साथ लेकर चलने कि हिमायती थीं। संविधान सभा का मुस्लिम लीग द्वारा बहिष्कार करने पर वे दुखी थीं तथा उनकी वापसी को लेकर आशान्वित थीं और भारत में रहने को लेकर अल्पसंख्यकों एवं देसी नरेशों के मन में पैदा हुई तमाम शंकाओं को दूर करते हुए उन्हें आश्वस्त करती हैं– "इस सभा भवन में मुझे कुछ जगहें खाली दिखाई दे रही हैं और इन मुस्लिम बंधुओं की अनुपस्थिति से मुझे हार्दिक क्लेश है। मैं उस दिन की ओर देख रही हूं जब वे बंधु भी चिर परिचित मित्र मि. मोहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में यहां उपस्थित होंगे।... इस परिषद में जाति और धर्म का, प्राचीन और नवीन का कोई भेदभाव नहीं है। मुझे विश्वास है कि इस देश का छोटा से छोटा अल्पसंख्यक सम्प्रदाय भी, उसे चाहे जिस रूप में यहां प्रतिनिधित्व मिला हो, यह अनुभव करेगा कि उनके हितों की रखवाली वाला एक ऐसा सतर्क और स्नेह परायण संरक्षक है जो कभी भी ऐसा न होने देगा कि सुविधा प्राप्त समुदाय उनके जन्मजात अधिकारों को समानता और सम अवसर के अधिकारों को रत्ती भर भी दबा सके। मुझे आशा है कि देशी नरेश भी, जिनमें बहुतों को मैं अपना मित्र मानती हूं, जो आज चिंता, अस्थिरता अथवा भय में पड़े हैं, यह समझ जाएंगे कि भारत का विधान ऐसा विधान होगा, जो प्रत्येक भारतीय को चाहे राजा हो या रंक सबको स्वतंत्रता और मुक्ति प्रदान करेगा।"[4]

संविधान सभा में महिलाओं की भागीदारी के सवाल पर बोलते हुए उन्होंने तमाम रुढ़ियों और स्त्रियों के विरुद्ध कही गयी कहावतों को खारिज कर दिया। उनका मानना था कि विश्व सभ्यता की प्रगति में अब वह समय आ गया है जब स्त्री–पुरुष के पृथकत्व का विचार नहीं रखना चाहिये। वे कहती हैं कि– "मैं समझती हूं कि मुझे निश्चय ही इस पुरानी कहावत का खंडन करना चाहिये कि "औरत अंत में बोलती है और बहुत ज्यादा बोलती है। " मैं अन्त में तो बोल रही हूँ पर इसलिए नहीं कि मैं औरत हूं बल्कि इसलिए कि आज मैं भारतीय राष्ट्रीय महासभा की मेजबान (यजमान) हूं और महासभा ने प्रसन्नतापूर्वक

ISSN No. : 0970-9398

इन अतिथियों को जो सभा के सदस्य नहीं हैं, विधान बनाने में हमारा साथ देने के लिए आमंत्रित किया है और यह विधान भारतीय स्वतंत्रता का अमर विधान होगा।"[5]

संविधान सभा में बेगम एज़ाज रसूल एकमात्र मुस्लिम महिला सदस्य थीं। उन्होंने 1937 के प्रांतीय चुनावों में भाग लेने के लिए पर्दा प्रथा का त्याग कर दिया था, जिसके कारण उनके खिलाफ मौलवियों ने फतवा जारी कर दिया था। बेगम मुस्लिम महिला होते हुए भी मुसलमानों के पृथक आरक्षण दिए जाने की विरोधी थीं। उनका मानना था कि– "संयुक्त निर्वाचन के इस नवीन ढांचे में किसी भी सम्प्रदाय के लिए संरक्षित स्थान देना बिल्कुल व्यर्थ है। हमें बहुसंख्यक सम्प्रदाय की सद्भावना पर निर्भर रहना ही होगा। इसलिए मुसलमानों की ओर से बोलते हुए मैं कहूंगी कि मेरी समझ से संरक्षित स्थान की मांग करना बिल्कुल बेमतलब है। पर डा. अम्बेडकर के इस कथन से मैं अवश्य सहमत हूं कि बहुसंख्यक सम्प्रदाय का यह कर्त्तव्य है कि वह किसी भी सम्प्रदाय के विरुद्ध कोई भेदभाव न बरते और इस कर्त्तव्य का उसे ज्ञान होना चाहिए। श्रीमान्, अगर यह सिद्धान्त बहुसंख्यक सम्प्रदाय को किसी अल्पसंख्यक के विरुद्ध कोई भेद भाव न बरतना चाहिए– स्वीकार कर लिया जाये, तो मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि जहां तक मुसलमानों का सम्बन्ध है, हम एक भी संरक्षित स्थान नहीं मांगेंगे।"[6] बेगम देश में रहने वाले भारतीयों के जीवन में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की पक्षधर थीं। वे संविधान सभा में लोगों के जीवन में बदलाव का लक्ष्य लेकर शामिल हुई थीं। उनका कहना था कि "हमारा विधान ऐसा होना चाहिए जो हमारे भविष्य का स्वरूप निश्चित करता हो और इस महादेश में बसने वाले तीस करोड़ नर–नारियों की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक अवस्थिति का रुप निर्धारण करता हो। इसलिए हमें अपनी जिम्मेदारियों से पूर्णतः अवगत हो जाना चाहिए और इस विचार के साथ कि जैसे भी हो हम एक ऐसा विधान प्रस्तुत करें जो हमारे देशवासियों– की संस्कृति, प्राकृतिक योग्यता एवं उनकी आवश्यकताओं के सर्वथा अनुरुप हो।"[7]

स्त्री पुरुष समानता की पैरोकार बेगम एज़ाज रसूल सभा में समानता के अधिकार के प्रस्ताव से बेहद खुश थीं। उनका कहना था कि– "एक नारी होने के नाते मुझे इस बात से परम संतोष है कि स्त्री अथवा पुरुष होने के कारण अब कोई भेदभाव न बरता जायेगा। यह उचित ही है कि मसौदे में इस आशय का प्रावधान रख दिया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब स्त्रियां भी इस नवीन विधान के अधीन अवसर–साम्य प्राप्त करने की आशा रख सकती हैं।"[8] भाषा के प्रश्न पर बेगम का मत था कि ऐसी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए जो देश भर में अधिक बोली और समझी जाती हो, ऐसी भाषा के रूप में वे हिंदी को ही स्वीकार करती थीं, जिसे अधिकांश देशवासी बोलते और समझ सकते हैं। वह भारत को समुन्नत और खुशहाल देखना चाहती थीं, एक ऐसा भारत जो विश्व का नेतृत्व करे तथा पूरे विश्व को आलोकित करे। बेगम के अनुसार – "मेरा यही कहना है कि विधान में हम चाहे जो भी बातें रखे, पर हमें सदा यही ध्यान में रखना चाहिए कि विधान ऐसा हो कि हमारा देश सशक्त और सम्पन्न हो और देशवासियों को सुख–समृद्धि प्राप्त करने का समान अवसर प्राप्त हो सके, ताकि यह देश विश्व के अन्य देशों का नेतृत्व कर सके और उन्हें शान्ति और समुन्नति की ओर अग्रसर कर सके।"[9]

दाक्षायणी वेलायुदन संविधान सभा की सबसे युवा एवं एकमात्र दलित महिला नेत्री थीं। वह बचपन से ही समाज में समानता की पक्षधर थीं। उन्होंने श्रमिकों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी और जाति विरोधी संघर्षों का नेतृत्व किया। उन्होंने सविधान सभा में जाति आधारित भेदभाव को मिटाने के लिए जोरदार तर्क दिए थे। वंचित समाज से आने के कारण वंचितों की मांगों को आपने तर्कसंगत ढंग से रखा। वे सभी प्रकार की साम्प्रदायिकता की विरोधी थीं। सांप्रदायिकता को वे राष्ट्रीयता के विरुद्ध मानती थीं। उनका कहना था कि– "भारतीय जनतंत्र में जाति और सम्प्रदाय आश्रित कोई रुकावटें नहीं होंगी। भारतीय संघ के जनतंत्रात्मक राज्य में हरिजन सुरक्षित होंगे। मैं अनुमान करती हूं कि नीचे के वर्ग के लोग भारतीय जनतंत्र के शासक होंगे। मैं इसलिए विधान परिषद् के हरिजन प्रतिनिधियों से निवेदन करूंगी कि वे पृथक्वाद का राग न अलापें। पृथक्वाद के राग को अलापकर हम अपने आपको अपनी भावी संतानों के लिए हास्यास्पद न बनायें। साम्प्रदायिकता चाहे हरिजन, मुसलमान या सिख (किसी की हो) राष्ट्रीयता के विरुद्ध है। जो कुछ हम चाहते हैं, वह सब प्रकार का संरक्षण नहीं है। वह नैतिक संरक्षण ही है, जो कि देश के नीचे वर्ग के लोगों को वास्तविक शरण देता है। मैं हरिजनों के भविष्य के लिए बिलकुल भयभीत नहीं हूं। वे संरक्षण जो हरिजनों की स्थिति में सुधार करते हैं, संरक्षण नहीं हैं। .... इसलिए मैं आशा करती हूं कि भावी स्वतंत्र भारत में हरिजनों को देश के प्रत्येक नागरिक के समान सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त होगा।"[10] संविधान सभा में दाक्षायणी के कहे गए यह शब्द वास्तव में सत्य साबित हुए और दलित जाति से होते हुए पूर्व महामहिम आदरणीय रामनाथ कोविंद जी राष्ट्रपति बनें और आदिवासी महिला होते हुए भी महामहिम आदरणीय द्रोपदी मुर्मू जी इस समय देश के सर्वोच्च पद को सुशोभित कर रही हैं। दाक्षायणी वेलायुदन मानव समानता व स्वतंत्रता की अनन्य समर्थक थीं। वे बेगार प्रथा का पुरज़ोर विरोध करते हुए सभा में इसे रोकने के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहती हैं– "यह खण्ड जब अस्तित्व में आयेगा–अमल में आयेगा तो इससे बहुत से ऐसे लोगों को कष्ट से मुक्ति मिल जायेगी जो अभी आर्थिक शोषण के शिकार बने हुए हैं जब इस तरह के आर्थिक शोषण इस भूमि से उठ जाते हैं तो गुलाम भी ऊपर उठ जायेंगे और वह अपने अधिकार की मांग तथा प्रतिष्ठा और गौरव की रक्षा कर सकेंगे। उन्हें भी जीवन का आनन्द लेने का वैसा ही अधिकार मिलेगा जैसा ऊपर की श्रेणी और ऊंची जाति वालों को मिला हुआ है। मुझे इस खण्ड का समर्थन करते हुए बड़ी खुशी है।"[11] दाक्षायणी मानवों के क्रय–विक्रय एवं दासता की घोर विरोधी थीं। सभा के विभिन्न सत्रों के वाद विवादों में इन्होंने ऐसी तमाम कुरीतियों और कुप्रथाओं को रोकने का प्रस्ताव किया या सदस्यों द्वारा रखे गए इस तरह के प्रस्तावों का समर्थन किया।

अम्मू स्वामीनाथन का जन्म पलक्कड़, केरल में हुआ था। वे मद्रास से संविधान सभा के लिए चुनी गईं। आजादी की लड़ाई में वे जेल में भी रहीं। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के 'इंडियन नेशनल आर्मी' की महिला शाखा की प्रमुख कैप्टन लक्ष्मी सहगल एवं प्रख्यात भरतनाट्यम नृत्यांगना एवं भारतीय

ISSN No. : 0970-9398

अंतरिक्ष के पिता विक्रम साराभाई की पत्नी मृणाल साराभाई दोनों अम्मू की बेटियां थी। संविधान सभा में रहते हुए अम्मू स्वामीनाथन ने मौलिक अधिकारों और नीति–निर्देशक सिद्धान्तों पर हुई चर्चाओं में हिस्सा लिया था। उन्होंने संविधान निर्माण के बाद उसके बेहतर क्रियान्वयन पर बल देते हुए कहा– "मेरा ख्याल यह है कि अगर हम वस्तुतः अपने को इस संविधान के लायक बनाना चाहते हैं तो हमें इस बात का पक्का इरादा कर लेना होगा कि हम इसे एक सजीव वस्तु मानकर इस पर इस तरह अमल करेंगे कि देश के प्रत्येक नर नारी को लाभ पहुंच सके। मैं यह जानती हूं कि संविधान में हमें मूलाधिकार दिये हैं। समता का अधिकार दिया है, वयस्क मताधिकार की व्यवस्था की है तथा अस्पृश्यता को उठाने की व्यवस्था की है और इसी तरह की अन्य कई बातों का उपबंध इसने किया है जिसके लिये हम वर्षों से संघर्ष करते आ रहे हैं। पर अगर हम देश को सुखी और सम्पन्न बनाना चाहते हैं तो इन अधिकारों को केवल संविधान में लिपिबद्ध कर देने से ही हमारा काम नहीं चल जायेगा। हमें कोशिश इस बात की करनी होगी कि संविधान में रखे गये विचारों और आदर्शों को क्रियान्वित किया जाये और देश के लोग उन पर अमल करें।"[12]

राजकुमारी अमृत कौर कपूरथला के राजा हरनाम सिंह की पुत्री थीं। उनकी उच्च शिक्षा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से हुई। 1918 ई. में भारत वापसी पर वे राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गई। बाद में वे 16 वर्ष तक महात्मा गांधी की 'सचिव' रहीं एवं 'नमक सत्याग्रह' तथा 'भारत छोड़ो आंदोलन' में जेल भी गयीं। उन्होंने पर्दा प्रथा, बाल विवाह और देवदासी जैसी कुप्रथाओं के खिलाफ आवाज बुलंद की। वे राजनीति में महिलाओं की व्यापक भागीदारी तथा समान नागरिक संहिता के समर्थकों में थीं। वे आजाद भारत की प्रथम स्वास्थ्य मंत्री बनीं। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन केन्द्र, दिल्ली का लेडी इरविन कालेज और 'एम्स' अस्पताल इन्हीं के प्रयासों से अस्तित्व में है।

रेणुका रे पश्चिम बंगाल से संविधान सभा की सदस्य थीं। आजादी से पहले उन्होंने महिला श्रमिकों की स्थिति सुधारने और उसे बेहतर बनाने के लिए कार्य किया। उनके द्वारा 1949 ई. में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत का प्रतिनिधित्व किया गया। संविधान सभा में उन्होंने महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए आवाज उठाई। वे महिलाओं के लिए विशेष स्थान नियत करने की विरोधी थीं। इनके अनुसार– "इस देश में महिला–आन्दोलन आरम्भ होने के समय से ही स्त्रियां विशेष अधिकार तथा संरक्षण का मौलिक रूप से विरोध करती रही हैं। शताब्दियों से पराधीन, निराहत तथा नाशोन्मुख रहने के कारण स्त्रियों की दशा इतनी गिर गई है कि धीरे–धीरे उसने अपने सब सामाजिक तथा कानूनी अधिकार खो दिए। लेकिन चेतना के प्रथम आवेश में भी उनके हृदय में कभी मताधिकार विस्तारवादी संकीर्ण भाव उत्पन्न नहीं हुए जो कि बहुत से उन्नत कहे जाने वाले राष्ट्रों में प्रायः पाये जाते हैं। इस देश की नारियों ने स्थिति की समानता, न्याय और सद्व्यवहार प्राप्त करने के लिये और खासकर अपने देश के उत्तरदायित्व पूर्ण सेवा कार्य में भाग प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किये हैं। समाज में पिछड़ी हुई रहने के कारण उन व्यक्तियों ने जो कि देश में स्वतंत्रता नहीं चाहते थे, महिला समाज का उसी प्रकार शोषण किया है जिस प्रकार कि इस देश के कई दलों का शोषण पिछड़े हुये रहने के कारण हुआ है।"[13] रेणुका रे महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों का विरोध स्वतंत्रता के पूर्व से ही कर रहीं थीं। वे बताती हैं कि 1935 ई० के एक्ट लागू होने के पहले ही भारत की महिला समाज के प्रतिनिधियों ने अखिल भारतीय महिला सम्मेलन तथा त्रिस्तरीय महिला प्रतिनिधियों ने ज्वाइंट पार्लियामेंटरी कमेटी के सामने बयान देकर साफ शब्दों में कह दिया था कि महिलाएं अपने लिए स्थानों का संरक्षण नहीं चाहती है, परन्तु महिलाओं के विरोध के बाद भी 1935 ई० के एक्ट में उनके लिए स्थानों को आरक्षित किया गया, परन्तु महिलाओं ने अपनी दृढ इच्छाशक्ति और ठोस फैसलों से स्वयं को उस जाल में नहीं फंसाया।

रेणुका जी महिलाओं के उत्थान में केवल महिलाओं का ही योगदान नहीं मानती थीं अपितु वे पुरुषों को भी इसका श्रेय देतीं थीं। उनका मत था कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति में महिलाओं और पुरुषों को कंधे से कंधा मिलाकर ही चलना होगा तभी हमारा राष्ट्र विकसित होगा। सभा में वे कहती हैं– "इस देश में महिलाओं में राष्ट्रीय जागृति आरम्भ होने के समय से ही ज्ञानवान पुरुष उनको साहस दिलाते रहे हैं कि वे स्वतंत्रता के युद्ध में समान सहयोगी के सदृश आगे बढ़ें और जीवन के विभिन्न पहलुओं में राष्ट्रीयता उत्पन्न कराने का कार्य करें। जब महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के लिये इस देश की महिलाओं को अपना आदेश दिया तो देश के समस्त सामाजिक बन्धन टूट गये। भारतीय महिलाओं के पास इस महान व्यक्ति के लिये कृतज्ञता प्रकट करने के लिये शब्द नहीं हैं, जिसने कि आज देश को स्वतंत्रता के द्वार पर खड़ा कर दिया है। इसलिये यह स्त्रियों के स्वाभाविक गुणों के कारण ही नहीं वरन् मैं तो कहूंगी कि यह विशेषकर हमारे पुरुष समाज के गुणों के कारण ही यह श्रेय प्राप्त हुआ है कि इस देश में कभी स्त्री और पुरुष में संघर्ष नहीं हुआ।"[14] इसके अतिरिक्त रेणुका जी राज्य द्वारा पोषित या वित्तीय सहायता प्राप्त संस्थाओं द्वारा धार्मिक शिक्षा देने का विरोध करती थीं। सभा में उन्होंने इस संबंध में अपना संशोधन प्रस्ताव रखा कि– "राज्य द्वारा संचालित स्कूलों में कोई साम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी। राज्य द्वारा सहायता प्राप्त अथवा प्रमाणित किसी भी स्कूल या शिक्षण संस्थाओं में जाने वाले किसी व्यक्ति को ऐसी किसी धार्मिक शिक्षा में उपस्थित होने के लिये बाध्य नहीं किया जायेगा।"[15] यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया इसीलिए राज्य या राज्य द्वारा सहायता प्राप्त संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा देने पर रोक लगाई गई।

पूर्णिया बनर्जी संयुक्त प्रांत से संविधान सभा में शामिल हुई थीं। उन्होंने रेणुका रे की ही तरह राज्याश्रित शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा देने के का प्रबल विरोध किया था। वे कहती हैं– "मेरे प्रान्त में ऐसे मकतब और पाठशालायें हैं जो स्कूल जाने वाले उम्र के बच्चों के शिक्षण का कार्य करते हैं, लेकिन हमने देखा है कि वहां इस प्रकार की धार्मिक शिक्षा दी जाती है कि बच्चे की बुद्धि को परिमार्जित करने के स्थान में उसकी बुद्धि को दूषित करते हैं और इन मकतबों तथा पाठशालाओं में शिक्षा पाने के फलस्वरूप कभी–कभी एक विशेष प्रकार का धार्मिक अन्धविश्वास तथा कट्टरपन उत्पन्न हो जाता है। ... इस

ISSN No. : 0970-9398

संशोधन को पेश करने से मेरा उद्देश्य यह है कि किसी भी व्यक्ति के धर्म में हस्तक्षेप किये जाने के, बिना किसी भय के सरकार इन संस्थाओं में दी जाने वाली शिक्षा में प्रतिबन्ध लगायेगी या उसे नियंत्रित करेगी। पाठ्यक्रम सरकार के नियंत्रण में होना चाहिये और वह इस प्रकार का हो कि पृथकत्व उत्पन्न करने की अपेक्षा वह बुद्धि को अधिक परिमार्जित करे।"[16] इनका कहना था कि यदि किसी संस्था को सरकारी सहायता प्राप्त होती है तो वह अन्य जाति के सदस्यों के दाखिले में न तो भेद करेगा और न मना कर सकता है।

हंसा मेहता (बम्बई) एक क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी थीं। संविधान सभा में उन्होंने महिलाओं के समान अधिकार तथा स्त्री पुरुष समानता जैसे मुद्दों को मुखरता से रखा। मौलिक अधिकारों पर बोलते हुए उन्होंने कहा था कि यह भाग स्त्रियों के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव डालते हैं। स्त्री पुरुषों में परस्पर सहयोग को वे राष्ट्र की उन्नति का पर्याय मानती थीं। संविधान के लक्ष्य संबंधी प्रस्तावों पर बोलते हुए वे कहती हैं कि– "यह अनेक स्त्रियों के हृदय में हर्ष उत्पन्न करेगा कि स्वतंत्र भारत का आशय केवल स्थिति की समानता से ही नहीं, वरन् अवसर की समानता से भी होगा। यह सत्य है कि कुछ थोड़ी सी स्त्रियां अतीत काल में और आज भी उच्च स्थिति का आनन्द उपभोग कर रही हैं और हमारी सहेली श्रीमती सरोजनी नायडू के सदृश उस उच्च मान को प्राप्त हुई हैं, जो कि शायद ही किसी पुरुष को मिल सकता हो। परन्तु ऐसी स्त्रियां बहुत कम और यत्र–तत्र हैं। यह केवल सांकेतिक उदाहरण ही हो सकता है, क्योंकि इन स्त्रियों से देश की स्त्रियों की वास्तविक स्थिति का परिचय नहीं मिलता। इस देश की सामान्य स्त्री शताब्दियों से उस पुरुष–समाज के राजनियम, व्यवहार और रीति–रिवाज द्वारा लादी हुई असमानताओं से पीड़ित है जो कि सभ्यता के उच्च शिखर से, जिसका कि हम सबको गौरव था, पतित हो गया है, जिसकी प्रशंसा में डॉक्टर सर राधाकृष्णन सदैव कहते रहे हैं। आज ऐसी हजारों स्त्रियां हैं, जिनको साधारण मानवी अधिकारों से वंचित रखा जाता है। ये सब होने पर भी हमने कभी विशेष अधिकार नहीं मांगे हैं। स्त्रियों के संघ ने, जिसके सदस्य होने का मुझे गौरव है, कभी भी संरक्षित स्थान (Reserved Seats) अपना आनुपातिक भाग (Quota) या पृथक् निर्वाचन (Separate electorate) की मांग नहीं की है। जो कुछ भी हमने मांगा है, वह सामाजिक न्याय, आर्थिक न्याय और राजनैतिक न्याय है। हमने केवल उस समानता की मांग की है, जो कि पारस्परिक सम्मान और समझौते का आधार हो सकती है और जिसके बिना पुरुष और स्त्री में वास्तविक सहयोग संभव नहीं है। इस देश की आधी जनसंख्या स्त्रियों की है, इस कारण बिना उसके सहयोग के पुरुष अधिक अग्रसर नहीं हो सकता। यह प्राचीन भूमि आधुनिक जगत् में बिना स्त्रियों के सहयोग के अपना उचित और आदरणीय स्थान नहीं प्राप्त कर सकती। इस कारण मैं इस प्रस्ताव का, उस विशाल प्रतिज्ञा के लिए जो इसके अंतर्गत है, स्वागत करती हूं और आशा करती हूं कि इस प्रस्ताव में जिन उद्देश्यों का समावेश है, वे पत्र पर अंकित नहीं रहेंगे, बल्कि उन्हें क्रियात्मक रूप दिया जायेगा।"[17]

हंसा मेहता ने भारतीय महिला समाज की ओर से आजादी (15 अगस्त 1947) की आधी रात को सर्वप्रथम राष्ट्रीय पताका संविधान सभा में पेश किया था। इसके साथ ही उन्होंने 74 महिलाओं की एक सूची भी पेश की तथा बताया कि उनके पास विभिन्न सम्प्रदायों की सौ महिलाओं के नाम हैं जो इस महोत्सव में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की हैं। वे राष्ट्रीय परम्पराओं को बनाए रखने और उसे सुदृढ़ करने के पक्ष में बोलते हुए कहती हैं कि– "भारत के प्रत्येक स्त्री–पुरुष का यह धर्म है कि वह इन परम्पराओं की रक्षा करे ताकि भारतवर्ष संसार पर अपना आध्यात्मिक प्रभुत्व बनाये रखे। यह पताका हमारे महान् भारत का प्रतीक हो। यह सदा फहराती रहे और विश्व पर आज जो संकट की कालिमा छाई है, उसमें उसे यह प्रकाश दे। इसकी छत्र–छाया में रहने वाले प्राणियों को यह सुख और शांति दे।"[18]

दुर्गाबाई देशमुख संविधान सभा में उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय के न्यायधीशों की स्वतंत्र नियुक्तियों की पैरोकार थीं। उनका मानना था कि न्यायधीशों के मन में यह भावना नहीं आने देनी चाहिए कि वे किसी खास व्यक्ति या दल की कृपा पर नियुक्त हुए हैं। उनको सदा यह अनुभूति होनी चाहिए कि वे स्वतंत्र हैं। ऐसी सूरत में ही न्याय विभाग का शासन समुचित रूप से चल सकता है। उन्होंने न्यायधीशों के भारतीय संघ के नागरिक होने की अनिवार्यता का प्रस्ताव रखा था। एनी मैसकरीन केरल से सभा में सदस्य थीं। इन्होंने संविधान सभा की चयन समिति में काम किया, जो हिंदू कोड बिल पर विचार कर रही थी। इन्होंने मुख्य रूप से संघवाद के विषय में हुई चर्चाओं में भाग लिया था। सुचेता कृपलानी भी राष्ट्रीय आंदोलन की उपज थीं। वे राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान कई बार जेल गई। आजादी के बाद वे भारत में किसी भी प्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं। संविधान सभा के स्वतंत्रता सत्र में उन्होंने 'वंदेमातरम' गान करके सभा को हर्षित कर दिया था। कमला चौधरी हिन्दी की प्रख्यात साहित्यकार और स्वतंत्रता सेनानी थीं। महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के लिए इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तर पर प्रयास किया। सभा की एक अन्य सदस्य मालती चौधरी ने ग्रामीण पुनर्निर्माण में शिक्षा, विशेष रूप से वयस्क शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया। वे विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से जुड़ी तथा इन पर गांधी और टैगोर का व्यापक प्रभाव था। संविधान सभा में ऐसी ही एक अन्य तेजस्वी महिला लीला रे थीं, जो सशक्त क्रांति में यकीन रखने वाली नेत्री थीं और बम बनाना जानती थीं। उन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष में बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 6 वर्षों तक जेल में रहीं। उन्होंने 1931 ई. में 'जयश्री' पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया जिसका संपादन और प्रबंधन महिलाओं द्वारा किया जाता था। भारत विभाजन के विरोध में इन्होंने संविधान सभा को छोड़ दिया था। एक अन्य प्रमुख चर्चित महिला सदस्य नेहरू जी की बहन विजय लक्ष्मी पंडित थीं। वे भी राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ी थीं और अनेकों बार जेल गयी। वे प्रथम भारतीय महिला थीं जो कैबिनेट मंत्री बनीं थीं। वे एक कुशल राजनयिक और राजदूत के साथ संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष भी हुई। वे राजनीति, समाज और शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की प्रभावी भूमिका की प्रमुख पैरोकार रही तथा जीवन भर इनके जीवन स्तर को सुधारने का प्रयत्न करती रहीं।

ISSN No. : 0970-9398

संविधान सभा की इन सशक्त नारियों ने राष्ट्र निर्माण के इस महत्वपूर्ण कार्य में अपनी प्रभावी भूमिका निभाई। उन्होंने अपने तर्कसंगत और विद्वतापूर्ण विचारों से सभा को प्रभावित किया। उनके रखे प्रस्तावों पर खूब वाद–विवाद और संवाद हुए तथा उन्हें स्वीकार किया गया। शिक्षा, स्वतंत्रता तथा महिला सशक्तिकरण के मुद्दों को उन्होंने बेहतरीन तरीके से उठाया और वे सभा को प्रभावित करने में सफल रहीं। वे भारत के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास और अतीत को भी लोगों को सामने रखीं तथा एक नया भारत बनाने को लेकर उत्साहित थीं। सरोजनी नायडू दो सौ वर्षों की गुलामी से आज़ाद होने वाले भारत की तस्वीर खींचते हुए कहती हैं– "बर्फानी छतों और समुद्री दीवारों के चिर प्राचीन अपने भवन में खड़ी होकर हमारी भारत–भूमि मानव इतिहास में फिर एक बार ज्ञान और प्रेरणा का दीपक जलाकर संसार के स्वातंत्र्य पथ को आलोकित करेगी। इस तरह पुनः उसे अपनी संतति का गौरव और संतति को अपनी माता का गौरव प्राप्त होगा।"[19] हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि उनके कहे गये यह शब्द निश्चित रूप से सत्य होंगे।

– (असिस्टेंट प्रोफेसर)
राजकीय महिला महाविद्यालय हमीरपुर,
उत्तर प्रदेश।

संदर्भ–

1. भारतीय संविधान सभा के विवाद की सरकारी रिपोर्ट, लोकसभा सचिवालय, नई दिल्ली, द्वितीय पुनर्मुद्रण–2015, अंक–1, संख्या–3, 11 दिसम्बर 1946, पृ.– 22
2. वही– पृ.–23
3. वही– पृ.–24
4. वही– पृ. 24–25
5. वही
6. वही, अंक–7, संख्या–4, 8 नवम्बर 1948, पृ.– 281
7. वही– पृ.– 278
8. वही– पृ.– 280
9. वही– पृ.– 282
10. वही, अंक–1, संख्या–9, 19 दिसम्बर 1946, पृ.–35–37
11. वही, अंक–3, संख्या–4, 1 मई 1947, पृ.–9
12. वही, अंक–11, संख्या–10, 24 नवम्बर 1949, पृ. –4126–4127
13. वही, अंक–4, संख्या–5, 18 जुलाई 1947, पृ.–24
14. वही, पृ.– 24–25
15. वही, अंक–6, संख्या–2, 30 अगस्त 1947, पृ.–28
16. वही, पृ.–27
17. वही, अंक–1, संख्या–9, 19 सितम्बर 1946, पृ.–13–14
18. वही, अंक–5, संख्या–1, 14 अगस्त 1946, पृ.–16
19. अंक–1, संख्या–3, 11 दिसम्बर 1946, पृ.– 25

प्रपत्र–4 (देखिए नियम–8) पं.सं. 3246/77

प्रेस तथा पुस्तक पंजीकरण अधिनियम

समाचार पत्रों का पंजीकरण (केंद्रीय) नियम

''राजभाषा भारती'' के स्वामित्व तथा विवरणों की सूचना

1.	प्रकाशन का स्थान	नई दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	वारिधि कार्ड्स एण्ड ग्राफिक्स
4.	क्या भारत का नागरिक है?	भारतीय नागरिक
5.	प्रकाशन का नाम व पता	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, एन.डी.सी.सी.–2 भवन, चौथा तल, बी विंग, नई दिल्ली–110001
6.	संपादक का नाम व पता	डॉ. धनेश द्विवेदी, उप संपादक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, एन.डी.सी.सी.–2 भवन, चौथा तल, बी विंग, नई दिल्ली–110001
7.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	अप्रयोज्य

मैं, डॉ. धनेश द्विवेदी घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह./–

कवर डिजाइन एवं टाइपसेटिंग–वारिधि कार्ड्स एण्ड ग्राफिक्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली–6 **प्रकाशक का हस्ताक्षर**

ISSN No. : 0970-9398

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

–अस्मिका सिन्हा

प्रस्तावना

'महिला सशक्तिकरण' शब्द का प्रथम दृष्टया तात्पर्य यह है कि महिलाएं पर्याप्त रूप से शक्तिशाली नहीं हैं उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता है। यह दुखद सच्चाई लंबे समय से अस्तित्व में है। हाल के कुछ वर्षों में महिलाओं को तुच्छता और शक्तिहीनता की खाई से बाहर निकालने के लिए अनेक प्रयास हुए हैं। इतिहास देखा जाए तो समाज एवं दुनिया भर में महिलाओं की आज़ादी का दमन किया गया है। महिलाएं घरों तक ही सीमित थीं। समय बीतने के साथ ही उन्हें एहसास हुआ कि उनका जीवन सिर्फ घर में सेवा करने से कहीं अधिक है। क्योंकि महिलाओं ने जब मानव निर्मित बाधाओं को पार करना शुरू किया तभी से दुनिया में उनका उत्थान देखा जाने लगा। महिलाएं पुरुषों की आवाज न दबाकर हमेशा जिसका हाथ पकड़ती हैं, उन्हें कई विपरीत परिस्थिति से उबारने और उनके जीवन को बेहतर बनाने हेतु प्रयास करती हैं। यदि हम महिला इतिहास की बात करें तो उसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है:–

महिला सशक्तिकरण का इतिहास

महिला सशक्तिकरण का इतिहास किसी एक निश्चित तारीख से शुरू नहीं होती है, यह एक संचयी प्रक्रिया है। तथापि, कुछ ऐसे आंदोलनों, विरोध, क्रांतियों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने महिला सशक्तिकरण के पावन उद्देश्य को और तेजी से आगे बढ़ाया है।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धियों से भरा पड़ा है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865–1887) पहली भारतीय महिला चिकित्सक और अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक थीं। सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एम. सी. मैरीकॉम एक जाना–पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है– अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ अन्य नामचीन महिलाएं हैं, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। कुछ समय पहले तक सैकड़ों देशों में महिलाओं को वोट देने की अनुमति नहीं थी। समय बीतने के साथ महिलाएं एकजुट हुईं और उनकी आवाज़ बुलंद हुई। मतदान का अधिकार मिलने से समाज में महिलाओं को एक स्थान मिला। यह बड़े पैमाने पर समाज के लिए चिंता की बात है कि कई देशों ने महिलाओं को बहुत लंबे समय के बाद वोट देने का अधिकार दिया है जैसे कुवैत, कतर, जायरे, बहरीन, अंडोरा, मध्य अफ्रीकी गणराज्य आदि ने 20वीं सदी के उत्तरार्ध के बाद महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया है जहां महिला परदे में रहती थीं। कोई भी महिला तब तक सशक्त नहीं हो सकती जब तक वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र न हो।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद महिलाओं ने स्वयं ही जॉब एवं अन्य विविध कार्य करने का निर्णय लिया। आज महिलाओं के लिए अधिकाधिक नौकरियों के अवसर हैं। महिलाएं पदनामों के योग्य अपने आप को लगातार साबित कर रही हैं।

यदि समाज के निचले पायदान की महिलाएं सशक्त नहीं होंगी तो महिला सशक्तिकरण का संकल्प सफल नहीं हो सकता। 21वीं सदी के आज के दौर में, महिलाएं को कई व्यावसायिक कार्य भी सफलतापूर्वक निष्पादित कर रही है, जिन पर केवल पुरुषों का एकाधिकार था। आज की महिलाएं, निचले स्तर यथा राजमिस्त्री, बस ड्राइवर, पेट्रोल पंप अटेंडेंट, पशुपालन और कृषि कार्य से लेकर शस्त्र बलों के साथ साथ अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भी स्वेच्छा से बढ़–चढ़ कर उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं।

भारत में महिला सशक्तिकरण

वैदिक युग में महिलाओं का अत्यधिक सम्मान किया जाता था, 'सहधर्मिणी' शब्द वैदिक काल से ही जाना जाता था। सहधर्मिणी का अर्थ है – बराबर की भागीदार, इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में भारत में महिलाओं को शिक्षा और समुचित सम्मान प्राप्त था। जैसे–जैसे समय बीता, भारतीय संस्कृति रूढ़िवादी मध्य–पूर्वी और ब्रिटिश संस्कृति से दूषित होते गई। परिणामस्वरूप, महिलाओं को जो शक्ति और सम्मान प्राप्त था वह समय के साथ कम होता गया। इसी बीच अगर अहिल्या बाई की बात करें तो इन्होंने मध्य प्रदेश में अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भी भारत भर में प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों, मंदिरों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया। शास्त्रों का मनन–चिन्तन किया और महिलाओं की आत्मनिर्भरता के लिए उनका मनोबल बढ़ाया। अपने उत्कृष्ट विचारों एवं नैतिक आचरण के चलते ही समाज में उन्हें देवी का दर्जा मिला।

आजादी के बाद धीरे–धीरे महिलाओं को अपनी खोई हुई शक्ति वापस मिलने लगी। आज देश में महिलाएं प्रतिष्ठित पदों पर विद्यमान हैं। हमने अपनी महिला प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को देखा, देश में साइना नेहवाल या पीटी ऊषा जैसी कई प्रतिष्ठित महिला खिलाड़ी भी उभरीं, वहीं हमें ए॰ चटर्जी या बी॰ विजयलक्ष्मी जैसी प्रतिभाशाली महिला वैज्ञानिकों का सानिध्य मिला है। स्व. लता मंगेशकर और शारदा सिन्हा जैसे लोकप्रिय कलाकारों ने भी जो हमारे समाज का उत्थान किया है। भारत में महिलाएं अब किसी हिचकिचाहट और अवरोध के बिना

ISSN No. : 0970-9398

सशस्त्र बलों में शामिल हो रही हैं तथा हर चुनौतियों का सामना भी करती है।

महिला सशक्तिकरण की चुनौतियां और भविष्य

आज महिलाएं पहले से कहीं अधिक स्वतंत्र हैं। वह स्वयं निर्णय ले सकती हैं। हालांकि, मंजिल अभी दूर है। कुछ धर्म में महिलाओं को आज भी मौलिक अधिकारों से वंचित रखने की कुप्रथा विद्यमान है। उन्हें दबाने के लिए धर्म का इस्तेमाल होता है, अभी तक देश में सभी सैन्य पद महिलाओं के लिए खुले नहीं हैं। फिल्म उद्योग, खेल और विशेष जॉब प्रोफ़ाइल में वेतन में कुछ जगहों पर भेदभाव किया जाता है। महिलाओं को उन सभी बाधाओं को दूर करने के लिए अपनी मेहनत और प्रतिभा से अर्जित शक्ति का उपयोग करने की आवश्यकता है जिनको वे अनादि काल से झेल रही हैं। भारत एवं विश्व की कुछ महान विभूतियों का संक्षिप्त जीवन का सार इस प्रकार हैः–

रानी लक्ष्मीबाई– मराठा शासित झांसी राज्य की रानी और 1857 की राज्यक्रांति की द्वितीय शहीद विरांगना थी। उन्होंने 29 साल की उम्र में ब्रिटिश सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति प्राप्त की। वे अपनी वीरता और दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध थीं, साथ ही विद्रोही नेताओं में सबसे अधिक खतरनाक मानी जाती थीं।

सावित्रीबाई फुले– सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं मराठी कवयित्री थीं उन्होंने 1852 में बलिकाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की तथा दलित जातियों को शिक्षित करने का प्रयास किया, जिसका उद्देश्य विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना था। सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले जी अपने जीवन को एक मिशन की तरह जिया।

फातिमा बीबी– भारत में सुप्रीम कोर्ट की पहली महिला न्यायाधीश के रूप में 1989 में, अपने करियर की शुरूआत की। 1972 में वे केरल में निचली अदालत में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट और 1984 में वह उच्च न्यायालय की स्थायी न्यायाधीश बनीं। पांच साल बाद 6 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुईं जहां से वह 29 अप्रैल 1992 को सेवानिवृत्त हुईं।

पुनीता अरोड़ा– भारतीय सर्वोच्च सशस्त्र बल की लेफ्टिनेंट जनरल और बाद में भारतीय नौसेना की वाइस एडमिरल नियुक्त होने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। 1963 में सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज, पुणे में नियुक्त होने पर उन्होंने भारतीय सशस्त्र बल में 36 वर्ष सेवा की, इस दौरान उन्हें 15 पदकों से सम्मानित किया गया।

किरण मजूमदार शॉ– भारत की पहली बिलियन नेटवर्थ वाली महिला बिजनेस वुमन बनीं किरण मजूमदार शॉ। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया में बलारेट कॉलेज आफ एडवांस्ड एजुकेशन से मेलटिंग और ब्रूइंग का अध्ययन किया। पूरे कोर्स में वह एकमात्र महिला थीं। अपना उद्यम शुरू करते समय बड़ी परेशानियों के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी और अब वह वर्तमान में देश के सबसे सफल उद्यमियों में से एक हैं। इन्होंने संस्कृति, समाज और सभ्यता को नया मोड़ दिया। भारतीय इतिहास में इनका योगदान कभी भूला नहीं जा सकता।

मदर टेरेसा– एक अल्बेनियाई परिवार में जन्मी मदर टेरेसा 1929 में भारत के दार्जिलिंग शहर आईं। यहां उन्हें मिशनरी स्कूल में पढ़ाने के लिए भेजा गया था। मई 1931 में उन्होंने नन के रूप में प्रतिज्ञा ली। मिशनरी के काम से उन्हें कलकत्ता शहर के 'लोरेटो कॉन्वेंट भेजा गया। यहां उन्हें गरीब बंगाली लड़कियों को शिक्षा देनी आरंभ की। मदर टेरेसा को बंगाली व हिंदी दोनों भाषाओं का बहुत अच्छा ज्ञान था।

'मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी' की शुरुआत 13 लोगों के साथ हुई थी। 1946 में उन्होंने गरीबों, असहायों, बीमारों और लाचारों की मदद करने का मन बना लिया। इसके बाद मदर टेरेसा ने पटना के होली फॅमिली हॉस्पिटल से आवश्यक नर्सिंग ट्रेनिंग पूरी की और 1948 में वापस कोलकाता आकर पहली बार तालतला गई, जहां वह गरीब बुजुर्गो की देखभाल करने वाली संस्था के साथ रहीं। दिनांक 7 अक्टूबर 1950 को उन्हें वैटिकन सिटी से 'मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी' की स्थापना की अनुमति मिली। इस संस्था का उद्देश्य भूखों, निर्वस्त्र, बेघर, दिव्यांगों, चर्म रोग से ग्रसित और ऐसे लोगों की सहायता करना था जिनके लिए समाज में कोई जगह नहीं थी। मदर टेरेसा ने 'निर्मल हृदय' और 'निर्मला शिशु भवन' के नाम से आश्रम भी खोले और उन्होंने बेसहारा और विकलांग बच्चों और सड़क के किनारे पड़े असहाय रोगियों की दयनीय स्थिति को अपनी आंखों से देखा। इसके बाद उन्होंने जनसेवा का जो व्रत लिया, अपने देहावसान तक वे उसका पालन लगातार करती रहीं।

किरण बेदी– भारत की पहली महिला आईपीएस अधिकारी किरण बेदी सबसे ज्यादा चर्चित महिला हैं। राजनीति विज्ञान व्याख्याता के रूप में अपना करियर चुनने वाली किरण बेदी ने जुलाई 1979 को भारतीय पुलिस सेवा ज्वाइन की। 2007 में उन्होंने स्वेच्छा से सेवानिवृत होने का फैसला कर लिया।

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान

भारत में असमानता का मुद्दा हमेशा से रहा है। फिर भी अनेक महिलाओं ने ऐसे व्यवसायों को चुना जिसमें केवल पुरुष ही जाया करते थे। इन महिलाओं ने अपने कार्य की उत्कृष्टता से सबको हैरत में डाला और अपना नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज कराया।

भारत में महिला उद्यमियों के स्वामित्व वाले व्यवसाय कुछ वर्षों में काफी बढ़ गए हैं। अब आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होने जा रहा है। इस अभियान में ग्रामीण महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। वे कृषि, पशुपालन, सिलाई, कशीदाकारी आदि का व्यवसाय कर अपने परिवारों को समृद्ध बनाने के साथ–साथ रोजगार सृजन और वित्तीय आधार को मजबूत करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचे के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। लघु और कुटीर उद्योग–आधारित व्यावसायिक बुनियादी ढांचे के निर्माण में सरकारी योजनाओं के अलावा, विलेज फाइनेंशियल सर्विसेस (वीएफएस) जैसी माइक्रोफाइनांस कंपनियों ने लघु ऋण देकर सहायता कर रही है।

आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकता देने के क्रम में प्रधानमंत्री द्वारा महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर प्रदान करने का प्रयास किया गया है जो सुरक्षा के पांच पहलुओं पर आधारित एक व्यापक मिशन है। ये पाँच पहलू है– माँ एवं शिशु की स्वास्थ्य सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा, वित्तीय सुरक्षा, शैक्षणिक एवं वित्तीय कार्यक्रमों के माध्यम से भविष्य की सुरक्षा तथा

महिलाओं की सलामती। जब भी राष्ट्र को सशक्त करने की बात करते है तो महिला सशक्तीकरण के पहलू को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

आर्थिक अधिकारों की बात करें तो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण महिलाओं का सशक्तीकरण हुआ है। देश के कई आर्थिक संस्थानों के शीर्ष पदों पर महिलाएँ कार्यभार संभाल रही हैं तथा देश के विकास में अपना योगदान दे रही हैं। अरुंधति महाचार्य, शिखा शर्मा, नैनालाल किदवई, सावित्री जिंदल आदि आर्थिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर हैं।

गांधी जी ने कहा था कि ''महिलाएं पुरुषों से बेहतर सैनिक साबित हो सकती हैं। बस उन्हें मौका देने की ज़रूरत है। '' कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, टेंसी थॉमस, अवनी चतुर्वेदी जैसी अनेक नारियां आज समाज में महिलाओं की मज़बूत छवि प्रस्तुत कर रही हैं। अग्नि–V मिसाइल के विकास में प्रमुख भूमिका निभाने वाली टेंसी थॉमस को 'मिसाइल वुमेन' के नाम से जाना जाता है।

भारत के संबंध में वर्ल्ड बैंक ने भी कहा है कि अगर यहां महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि की जाए तो भारत की विकास दर में तीव्र वृद्धि हो सकती है। वर्तमान में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है। सामाजिक क्षेत्र में उनकी क्षमता को कोई ललकार नही सकता है, फिर भी स्त्रियां अनेक स्थानों पर पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित रहती है।

नए भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका

भारत की महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत हो चुकी है। कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में, हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं, बल्कि इस रोशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के उदाहरण स्थापित किए है।

नए भारत की बात करें तो सब से पहले हमारे प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड–अप इंडिया, और स्टार्ट–अप जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं। महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को अनेक संसाधनों, की सुविधा प्रदान करता है। महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी मिलियन नौकरियां पैदा करने का दावा कर रही हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के माध्यम से शुरू से ही उद्यमिता के बीज बोने का सार्थक प्रयास किया जा चुका है।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबूती में भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही है। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है, जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने–फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए 'अमृत काल' इन्हें समर्पित हो!

सारांश

महिला सशक्तिकरण शब्द का तात्पर्य लैंगिक समानता से है। यह विशेषकर महिला अधिकारों का पक्षधर है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य महिलाओं को अपनी पसंद से सभी निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाना है ताकि वे अपने सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए सभी फैसले स्वयं ले सकें। महिला सशक्तिकरण एक मिशन है जो महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि वह सकारात्मक रूप से आत्मसम्मान हासिल कर सकें और अपने अंदर दुनिया से प्रतिस्पर्धा करने और अपनी पसंद का स्थान बनाने की क्षमता पैदा कर सकें। यह तभी संभव है जब महिलाओं को भी समाज में समान अवसर उपलब्ध होंगे। महिलाओं को सशक्त बनाने का अर्थ है उन्हें उनके सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए प्रोत्साहित करना। प्राचीन काल से ही समाज में महिलाओं को बहुत कष्ट सहना पड़ा है। अतीत में उन्हें शिक्षा और आत्मनिर्भर होने का समान अधिकार नहीं दिया गया। उन्हें शिक्षा और विकास से दूर रखकर केवल घरेलू कार्यों तक ही सीमित रखा गया। भारत को महाशक्ति के रूप में विकसित करने के लिए महिलाओं का विकास भी उतना ही जरूरी है और उन्हें खुद को विकसित करने का मौका देना प्राथमिकता होनी चाहिए। इसे हासिल करने के लिए हमें मुख्य रूप से लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें समान काम के लिए पुरुषों के समान वेतन भी मिलता है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए हमारा लक्ष्य पूरे देश से बाल विवाह और दहेज प्रथा का उन्मूलन भी होना चाहिए। भारत सरकार भी भारत की महिलाओं के लिए काम कर रही है ताकि उन्हें भी समान अवसर उपलब्ध कराया जा सके और सामाजिक विकास की यात्रा में वे भी अपना योगदान दे सकें। इस संबंध में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने भी महिलाओं के लिए राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रवेश देना अनिवार्य कर दिया। भारत सरकार ने यह भी घोषणा की कि अब से महिलाओं के लिए सैन्य स्कूल भी उपलब्ध होंगे। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक समान दृष्टिकोण इसका उल्लेखनीय समाधान हो सकता है।

–वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लि.

संदर्भः–

1. भारत की क्रांतिकारी महिलाएं, लेखक बलबीर सक्सेना
2. स्त्री सशक्तिकरण के आयाम लेखक– कविता शर्मा
3. महिला एवं कैरियर लेखक श्रीमती अर्चना सिंह
4. नव भारत के निर्माण में महिलाओं की बड़ी भूमिका, लेखक श्री बंडारू दत्तात्रेय
5. विकिपीडिया से साभार।

ISSN No. : 0970-9398

कम्ब रामायण में नारी पात्र

–डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन

कम्ब रामायण और तुलसीदास रामायण दो ऐसी महान कृतियाँ है जिनके नारी पात्रों के अध्ययन से भारत के दो प्रदेशों के नारी जीवन की यथार्थ सामाजिक मान्यताओं एवं सांस्कृतिक आदर्शों पर प्रकाश पड़ता है। इस काल में पारिवारिक और सामाजिक जीवन उत्कृष्ट था। इस काल में नारी की सामाजिक सत्ता लगभग पुरुष के ही समान थी अतः इस समय को हम नारी–उत्कर्ष का युग भी मान सकते हैं। नारी पात्रों में सीता का चरित्र सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उसके बाद नारी पात्रों में शूर्पणखा और कैकेयी हैं।

विभिन्न ग्रन्थों में सीता को रक्तजा, भूमिजा, पद्मजा, अग्निजा आदि रूपों में बताया गया है। वाल्मीकि रामायण में भूमि से सीता के जन्म का उल्लेख और कम्ब रामायण में सीता की उत्पत्ति हल की नोक से हुई मानी जाती है। पृथ्वी की पुत्री के रूप में सीता को स्वीकार किया गया है। कम्बन और तुलसीदास दोनों कवियों ने विवाह के अवसर पर सीता के अपूर्व सौन्दर्य का वर्णन किया है।

निज पानि मनि महुँ देखि, अति मूरति रूपनिधान की
चलति न भुजवल्ली बिलोकनि बिरहमय बस जानकी।

(तुलसी रा. 1–326–3)

राम के वनगमन के प्रसंग पर पहली बार सीता की मानसिक दृढ़ता और उसकी पति भक्ति का परिचय मिलता है। अब तक वह सुखपूर्वक जीवन बिता रही थी। परन्तु अब वन जाने के लिये उसे श्रीराम से आज्ञा लेनी पड़ती है।

श्रीराम वनवास ले जाने से जब उसे मना करते हैं तब वह श्रीराम से तर्क करती है और वाल्मीकि रामायण में सीता की प्रतिक्रिया तीव्र होती है। पहले वह श्रीराम से उसे साथ ले जाने के लिये विनती करती हैं। परन्तु जब श्रीराम वनवास के कष्टप्रद जीवन की व्याख्या कर उसे साथ ले जाने को मना करते हैं तब सीता दुखी होकर कहती है कि श्रीराम यदि उसे वन में नहीं ले चलेंगे तो वह विष या जल या अन्य किसी के सहारे आत्महत्या कर लेंगी। (वा.रा. 2–29–21) फिर भी श्रीराम उन्हें मना कर देते हैं तब सीता उनका उपहास करती है और उनसे पूछती है कि–क्या वे अपनी पत्नी की रक्षा करने में असमर्थ हैं?

कंब रामायण में वनप्रसंग के समय श्रीराम और सीता के संवाद का बहुत ही संक्षिप्त वर्णन है। राम सीता से "मैं वन जाऊँगा, तुम दुखी मत होना" कहते हैं। (कंब रामायण 2–4–224) उनकी बात सुनकर सीता दुखी हो जाती है। वह श्रीराम से कहती है कि "आप मुझे अपने से अलग समझने लगे इसीलिये "हम जायेंगे" कहने के बजाय "मैं जाऊँगा" कहते हैं। इस वचन से सीता की भावुकता स्पष्ट प्रतीत होती है।

कंब रामायण में सीता अधिक समय तक वार्तालाप नहीं करती है। वह स्वयं वल्कल वस्त्र पहनकर तैयार हो जाती है और राम के साथ वन जाने के लिए तैयार होकर खड़ी हो जाती है। इसमें उनकी वीरता और आत्मविश्वास प्रकट होता है।

कंब रामायण में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य के साथ–साथ सीता के सौन्दर्य का बखूबी वर्णन किया है। वन्य दृश्य दिखाते समय सीता के प्रति राम के संबोधन सौन्दर्य बोधक अनेक विशेषणों से भरे हुए हैं। (कंब रामायण – 2–7–3, 9–12)

वन में श्रीराम और सीता के साथ कुछ समय तक सुमंत्र रहते हैं, बाद में श्रीराम के आज्ञानुसार वे सबको छोड़कर अयोध्या जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। कंबरामायण और तुलसीरामायण में सीता इस अवसर पर अपना संदेश अयोध्यावासियों को सुमंत द्वारा भेजती है। उसका संदेश अपनों के प्रति प्रेम, स्नेह श्रद्धा और अपने पालित पशुओं के प्रति प्रेम को भी प्रकट करता है। सीता अपनी बहिनों को उनकी देखरेख करने का संदेश भेजती हैं। (कंब रामायण 2–5–40)

चित्रकूट प्रसंग में दशरथ की मृत्यु का संदेश सुनकर सीता दुखी होकर रोने लगती है और वह भी राम लक्ष्मण के साथ जलांजलि देने के लिए नदी पर जाती है। कंब रामायण में माताएं सीता से गले मिलकर रोती हैं। मुनि पत्नियाँ सीता को धैर्य पहुँचाती हैं।

चित्रकूट प्रसंग में तुलसीदास ने जगह–जगह पर सीता की सेवाभाव को प्रकट किया है। इस अवसर पर यह अनुसूया के उपदेश के अनुसार कार्य करती है। कंब रामायण में (3–1–5) एक ही पद में सीता के अनुसूया से दिव्य भूषण आदि ग्रहण करने का उल्लेख है।

ISSN No. : 0970-9398

तुलसीदास में अनुसूया "सुनु सीया तब नाम मुनि नारि पतिव्रत करहि।" कहकर सीता के पतिव्रता के महत्त्व को प्रकट करती है।

आध्यात्मिक और तुलसीरामायण में मायामृग को माँगने के पूर्व सीता श्रीराम की आज्ञा से कुछ समय तक अग्नि में वास करती है और उनके स्थान पर उसकी छाया–मात्र रह जाती है। रावण इसी छाया का अपहरण करता है। अग्नि–परीक्षा के समय छाया सीता अग्नि में जल जाती है और वास्तविक सीता फिर से प्रकट होकर श्रीराम से मिल जाती है।

कौशल्या

श्रीराम की माता, पुत्र–वत्सला एवं धर्मशीला हैं। कम्ब रामायण में कौशल्या दशरथ की पत्नी और राम की माता के रूप में वर्णित है परन्तु इनके माता–पिता, कुल आदि के सम्बन्ध में कम्बन मौन हैं।

कौशल्या का वर्णन कम्ब रामायण के अयोध्याकांड में विस्तारपूर्वक मिलता है। कौशल्या समदर्शी है, उन्हें राम या भरत के राजा होने में कोई अन्तर दिखाई पहीं पड़ता। वह राम को भरत के साथ रहने का परामर्श देती है।

कौशल्या श्रीराम को दशरथ के उत्तराधिकारी के रूप में राजमुकुट धारण किये हुए अपने पुत्र के आने की प्रतीक्षा करती है परन्तु जब राम अकेले वन–गमन जाने के लिए उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं तब सामान्य भाव से कौशल्या कारण पूछती है–इसका उत्तर देते हुए श्रीराम कहते हैं कि, "आपका प्रेम–पात्र उत्तम गुणवाला मेरा भाई भरत मुकुट धारण करने वाला है।"

यद्यपि कौशल्या दशरथ की अन्य पत्नियों के पुत्रों पर भी राम के समान स्नेह रखती है, परन्तु श्रीराम के वनगमन की सूचना पाते ही एक सामान्य माता के समान फूट–फूटकर रोने लगती है और मूर्च्छित होकर गिर जाती है। इसमें उसका मातृत्व उमड़ पड़ता है।

वन जाते समय राम से कौशल्या कहती है कि वन–देवता तुम्हारे पिता, वन देवियाँ तुम्हारी माता और वहाँ के पशु–पक्षी तुम्हारे सेवक होंगे। कम्ब रामायण में ऐसा वर्णन नहीं है। राम की तरह सीता पर भी उनका अत्यधिक स्नेह है। एक आदर्श सास की भाँति सीता पर उनका पुत्रीवत् स्नेह है। "दीप बाति नहीं टारन कहऊँ।" (रामचरितमानस 2/59/3) से उनका सीता पर असीम स्नेह प्रकट होता है। कम्ब–रामायण में ऐसा वर्णन नहीं है। कौशल्या को एक आदर्श माता के रूप में चित्रित किया गया है। उन्हें एक स्नेहपूरिता आदर्श सास, आदर्श राजमाता, श्रेष्ठ नीतिज्ञा के रूप में कम्ब रामायण में दर्शित किया गया है जो प्रत्येक भारतीय नारी के लिए एक जाज्वल्यमान आदर्श है।

कैकेयी

रामकथा में दशरथ की तीन रानियों का उल्लेख मिलता है परन्तु दशरथ ने कब, कैसे और किन परिस्थितियों में इनसे विवाह किया, यह कम्ब रामायण और रामचरितमानस में कहीं नहीं मिलता। केकय–नरेश की पुत्री होने के कारण उसका नाम कैकेयी पड़ा। शील, सौन्दर्य, तेजस्विता, कूटनीति, लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चय आदि गुणों से पूर्ण कैकेयी अपने जीवन के पूर्वार्द्ध में दशरथ से लेकर सम्पूर्ण प्रजा की रानी बनकर सभी का हृदय जीत लेती है परन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध में क्रूर नियति का शिकार होकर सम्पूर्ण समाज में नारी जाति के लिए कलंक बनकर रह जाती है। वह कठोरता का प्रतीक बन जाती है। कैकेयी के कारण अयोध्या में अचानक बदलाव हुआ। उस समय भरत ननिहाल में था। लौटने के बाद जब वह सारी घटनाओं से अवगत हुआ तो, उसे लगा कि जैसे पाँव तले जमीन खिसक गयी है। माता की करतूतों पर उसे बड़ी ग्लानि हुई। क्रोध में आकर भरत माँ को खरी–खोटी सुनाने पर उतारू हो गये। तुलसीदास जी लिखते हैं–

धीरज धरि भरि लेहिं उसासा, पापिनी सबहिं भाँति कुलनासा।
जो पै कुरुचि रही अति तोही, जनमत काहे न मारे मोही।

रामचरितमानस, अयोध्याकांड, पृ. 462

कैकेयी का परिचय कम्ब रामायण से अयोध्या कांड के द्वितीय–तृतीय पड़लम में मिलता है। कम्बन ने कैकेयी का चित्रण अत्यन्त उदात्त और श्रेष्ठ गुण सम्पन्ना के रूप में किया है। चारों पुत्रों में से राम पर उसका विशेष अनुराग है। जहाँ अन्य लोगों ने कैकेयी को दुष्टा के रूप में चित्रित किया है, वहाँ कम्बन ने उसे उदारता की देवी के रूप में प्रस्तुत किया है।

कम्बन की कैकेयी के विचार–परिवर्तन का कारण तुलसी से भिन्न है। गुणशालिनी कैकेयी मन्थरा नामक दासी की मन्त्रणा से भयंकर स्वार्थी, अपयश से न डरने वाली, स्वार्थ–सिद्धि के लिए कुछ भी कर सकने वाली, अन्याय करने में दृढ़संकल्पा बन जाती है। वह विवेक खोकर, पति खोकर, वैधव्य और महान अपयश प्राप्त करती है।

कम्बन दशरथ की मृत्यु का पूर्वाभास कैकेयी द्वारा अपने ललाट की बिन्दी मिटाने, चूड़ियाँ उतारकर फेंकने और अपने बाल खोलकर पृथ्वी पर लोटने के द्वारा देते हैं और सीता का वनगमन कवि ने द्वितीय पड़लम में किया है।

कम्बन की कैकेयी दूरदृष्टि सम्पन्न तथा नीतिज्ञा है। वह कुल गुरु वशिष्ठ के अनुरोध की उपेक्षा करती है। वह अत्यन्त नीतिज्ञ तथा धर्मज्ञ किन्तु त्रियाचरित्र के साथ–साथ सिसक–सिसक कर रोते हुए कहती है–अगर राजा अपने वचन को पूर्ण नहीं करते, तो वे सत्य से विचलित हो जायेंगे और मैं तुरन्त मर जाऊँगी। यह वर्णन रामचरितमानस से सर्वथा भिन्नि है।

सम्पूर्ण राम–कथा में एकमात्र कैकेयी का ही ऐसा चरित्र है जो प्रशंसा के साथ ही साथ निन्दा का भी पात्र है। कैकेयी के चरित्र में नारी प्रकृति की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों

ISSN No. : 0970-9398

का अद्‌भुत समन्वयात्मक रूप मिलता है। इस चरित्र के माध्यम से कवि ने नारी के मानसिक द्वन्द और मनोभावों के परस्पर संघर्ष का अत्यन्त सुन्दर, सजीव और मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

कैकेयी के मन में राम के प्रति करुणा, स्नेह तथा वात्सल्य था परन्तु मन्थरा की कुमन्त्रणा एवं अन्य अनेक कारणों से वह स्वयं राम–वनगमन का कारण बनती है और अपनी सहज करुणा खो देती है। कम्बन, जो नारी को हमेशा आदरणीय एवं पूज्या मानते हैं, कैकेयी की हृदयहीनता और क्रूरता उनको मार्ग से विचलित कर देती है और वे भी तुलसीदास की तरह नारी के 'इस रूप' के आलोचक बन जाते हैं। कम्ब रामायण 2/3/17

सुमित्रा

लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माँ और राजा दशरथ की तीन रानियों में एक है। इनका चित्रण कम्ब रामायण में संक्षिप्त रूप से किया गया है। छोटी रानी होने के कारण उसे दो बार खीर दी गयी। इसलिए वह दो पुत्रों की माँ बनी। कम्ब रामायण में खीर वितरण के समय सर्वप्रथम सुमित्रा का कथा–प्रवाह में प्रवेश होता है।

कम्ब रामायण में सुमित्रा को त्याग की देवी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अपने बेटों से बढ़कर वे राम से अधिक स्नेह करती हैं। जब लक्ष्मण वनवास जाने के लिए माँ से आज्ञा लेने आते हैं तब सुमित्रा आदेश देते हुए कहती हैं कि, "सीता–राम ही तुम्हारे माता–पिता हैं। दण्डकारण्य तुम्हारे लिए अयोध्या है, तुम्हारा अब यहाँ रहना अपराध है। तुम भी राम–सीता के साथ वन जाओ और भाई होकर नहीं, दास होकर उनकी सेवा करो। यदि वे लोग अयोध्या लौटें तो उनके साथ ही आना अन्यथा उनसे पूर्व तुम अपने प्राण त्याग देना।" कम्ब रामायण 2/4/746, 147

कम्बन ने सुमित्रा को प्रेम, त्याग, आदर्श और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति के रूप में दर्शाया है। रामकथा में शबरी का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। शबरी प्रसंग में अपने इष्ट राम के प्रति उसका भक्तिभाव उत्कृष्ट रूप से प्रकट हुआ है। उसका विश्वास था कि श्रीराम अवश्य ही कुटिया में आयेंगे। वर्षों की प्रतीक्षा के बाद भी उसका विश्वास टूटता नहीं।

शबरी

भगवान श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण के साथ जैसे ही शबरी आश्रम पहुँचते हैं, शबरी उन्हें देखकर हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है और उनके चरणों पर गिरकर प्रणाम करती है। उनका आदर–सत्कार करती है।

शबरी श्रीराम को प्रेम से जूठे बेर खिलाती है और श्रीराम भी उसके प्रेम को देखकर गदगद हो जाते हैं। शबरी की कहानी से हमें दलित वर्ग की बात याद आती है। दलित वर्ग समुदाय हमारे समाज के लिए कितनी सेवा करता है और वे हमें कितना प्यार देते हैं किन्तु हम उन्हें उपेक्षित भाव से देखते हैं। वे भी मनुष्य हैं, उनके मन में भी हमारे प्रति सद्‌भावना है, यह तथ्य हमें शबरी कहानी से उद्‌भासित होता है। राम–कथा हमें वर्तमान काल में समाज के कमजोर वर्ग के अपने भाइयों की स्थिति सुधारने की बात याद दिलाती है।

शबरी राम की पूजा–अर्चना–प्रदक्षिणा आदि कर थक जाती है और बिस्तर पकड़ती है, तब राम अपना सारा दुःख भूलकर उसकी सेवा करते हैं।

शबरी कहती है कि "बेटा मेरे लिए दुःखी मत हो। हरी पत्ती के लिए उपचार की जरूरत है, पके पत्ते के लिए यह सब क्यों? 'रामायण दर्शनम्। '

वाल्मीकि रामायण की शबरी सिद्धा है, चारुभाषिणी है और सिद्ध पुरुषों द्वारा सम्मानित है। शबरी का श्रीराम से प्रभावित होना तो स्वाभाविक है, परन्तु राम भी शबरी से प्रभावित होते हैं यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात है।

गोस्वामी तुलसीकृत रामचरितमानस में शबरी प्रसंग अरण्यकांड में प्राप्त होता है। जो शबरी निम्न जाति की थी, ऐसी स्त्री को राम ने मोक्ष प्रदान किया। यह शबरी का राम के प्रति निश्छल, निष्कपट एवं प्रगाढ़ प्रेमपूर्वक भक्ति का ही प्रतिफल है।

अनसूया

रामायण के प्रमुख पात्रों में अनसूया का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। अत्रि मुनि की पत्नी अनसूया का तपोबल प्रख्यात है। उसने सीता को वस्त्र, आभूषण आदि का दान दिया था। वाल्मीकि रामायण (3–177, 9, 13) में अत्रि मुनि ने बताया है कि एक बार जलवृष्टि के अभाव में संसार झुलसने वाला था तब अनसूया ने अपनी तपस्या के बल पर मुनियों के लिए. फल, फूल उत्पन्न किये और स्नान के लिए गंगा बहाई इसके अलावा सीता के लिए उसके मन में अपार स्नेह था। कंबन ने एक ही पद (3–15) सीता के अनुसूया से आभूषण आदि स्वीकार करके राम के साथ जाने का उल्लेख किया है। कंबन का चित्रण आधार काव्य की तुलना में एकदम संक्षिप्त है। तुलसी रामायण में सीता के साथ अनसूया में उपदेशात्मक का स्वर तीव्र है। अनसूया के तपोबल से मन्दाकिनी को प्रसारित करने का उल्लेख हुआ है।

अहल्या

दुर्बल चित्तवाली स्त्रियों के लिए अहल्या की कथा एक चेतावनी के रूप में है। वाल्मीकि रामायण में गौतम मुनि के वेश में आये हुए देवेन्द्र के साथ अहल्या के जानबूझकर पापकर्म में प्रवृत होने का वर्णन उसकी स्वभावगत चंचलता को प्रकट करता है। राम के दर्शन से उसका उद्धार होता है। वह पवित्र होकर अपने पति के साथ मिलकर राम–लक्ष्मण की पूजा करती है। अध्यात्म रामायण में अहल्या का पाप, गौतम का शाप आदि का वर्णन है। कम्बन के चित्रण की प्रमुख

ISSN No. : 0970-9398

विशेषता पात्र को उसके द्वारा दिलाई हुई उदात्तता है। कम्ब रामायण में राम और विश्वामित्र अहल्या को गौतम मुनि के आश्रम में ले जाते हैं और उसकी पवित्रता का उल्लेख करते हैं फिर गौतम मुनि से विदा लेते हैं।

कम्ब रामायण के अनुसार रावण भूमि पर मरणासन्न पड़ा हुआ है। उसका पूरा शरीर राम के बाणों से छलनी हो गया। अन्तिम बाण छोड़ते समय श्रीराम ने बाण को आदेश दिया कि रावण के शरीर के अन्दर पहुँचकर देखो तो सही, रावण के हृदय में कहीं सीता का नाम तो अंकित नहीं है। बाण रावण के शरीर में प्रत्येक जगह खोजता है और अन्त में रावण के चरणों में गिर जाता है। इससे श्रीराम को मालूम होता है कि रावण के हदय में कहीं भी सीता का नाम नहीं है, फिर भी रावण ने सीता का अपहरण क्यों किया? उत्तर यही है, रावण की बहन शूर्पणखा का नाक–कान छेदन कर उसे अपमानित किया। इसका बदला लेने के लिए रावण ने सीता का अपहरण किया।

इससे हमें यही शिक्षा मिलती है कि किसी भी स्त्री के साथ घृणास्पद कार्य नहीं करना चाहिए। परपुरुष को कभी भी मन में न लाकर पति के प्रति विश्वसनीयता को निभाना पत्नी का धर्म है। कम्ब रामायण में सीता की विश्वसनीयता का उज्ज्वल चित्र हनुमान के द्वारा प्रस्तुत किया गया है। कौशल्या के द्वारा भी इसको पूरी तरह निभाया गया है। राम–सीता के आदर्श दाम्पत्य का चित्रण कम्बन ने सुन्दर ढंग से किया है।

शूर्पणखा प्रसंग में कम्बन ने अपनी मौलिकता का विशेष परिचय दिया है। आरम्भ में कम्बन ने शूर्पणखा के सौन्दर्य का वर्णन किया है। जब वह राम से प्रणय निवेदन करती है तब श्रीराम उसे समझाते हैं कि वे विवाहित हैं और उसकी पत्नी सीता है। तब शूर्पणखा सारी रात विरह में छटपटाती है और सोचती है कि उसके प्रति उपेक्षा का कारण सीता ही है। इसलिए अगले दिन वह सीता को उठा ले जाने के लिए आश्रम पहुँचती है। यहाँ लक्ष्मण सीता जी की रक्षा कर रहे थे। जैसे ही शूर्पणखा सीता की ओर झपटी, लक्ष्मण ने शीघ्रता से उसके केश पकड़ उस पर पदाघात किया। इससे नाराज होकर वह लक्ष्मण पर झपटी, तब लक्ष्मण उसके नाक–कान काट लेते हैं। लक्ष्मण का शूर्पणखा पर प्रहार आत्मरक्षा से प्रेरित था जिसके लिए उनको दोष नहीं दिया जा सकता।

रावण द्वारा सीता हरण के प्रसंग में भी कम्बन ने महत्त्वपूर्ण संशोधन किया है। रावण सीता का स्पर्श न कर उन्हें पर्णकुटी सहित उठा कर ले जाता है। वाल्मीकि के राम आदर्श मानव हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, जबकि कम्बन ने अपने राम को नारायण और सीता को लक्ष्मी के अवतार के रूप में चित्रित किया है। श्रीराम मानव के समान सहज व्यवहार करते हैं।

रामचरितमानस और कम्ब रामायण में नारी पात्र का चरित्र–चित्रण सत्यं–शिवं–सुंदरम से समन्वित प्रसंग साहित्य की एक ऐसी निधि है जिसका सम्बल पाकर मनुष्य की जीवन–यात्रा सुगम और सरल हो सकती है। नारी के प्रति कम्बन तथा तुलसीदास के दृष्टिकोण की भूमिका में उनके व्यक्तिगत स्वभाव, परिस्थितियाँ और पूर्ववर्ती मान्यताएँ आदि तत्त्व निहित हैं। कम्बन और तुलसीदास दोनों ने नारी की पतिवर्तता को समाज–सापेक्षित धर्म के रूप में माना है। सतियों के बल से समाज टिकता है अथवा उजड़ता है।

मन्दोदरी

मन्दोदरी कौसल्या, सीता और सुमित्रा की भाँति साध्वी–पत्नी थी। अपने पति के प्रति उसका मनोभाव पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति में रमी हुआ था। रावण की दुष्टता और नीचता जग विख्यात है। सीता का अपहरण न करने के लिए कई बार उसने अपने पति को समझाया किन्तु अन्त में मन्दोदरी ने अपने पति की दुर्बलताओं से समझौता कर लिया था।

कम्ब रामायण में रावण की मृत्यु पर विलाप करने के अवसर पर मन्दोदरी का सहज गर्व, पति के अपनी बात न मानने पर उसका क्षोभ आदि का वर्णन है। कम्ब ने राम के साथ सुमित्रा के स्नेह स्निग्ध संबंधों का चित्रण एक दो मौलिक प्रसंगों में किया है। शूर्पणखा में कम्बन और तुलसीदास ने रूप–चेतना की प्रतिष्ठा की है। अहल्या के प्रति कम्बन की दृष्टि अधिक उदार है। दोनों कवियों ने कैकेयी को परिस्थिति के शिकार के रूप में अधिक उभारा है।

कम्बन और तुलसीदास के द्वारा नारी पात्रों के उद्घाटन से आदर्श की ओर उनकी उन्मुखता एवं उनकी परिष्कृत अभिरुचि अभिव्यंजित है। तुलसीदास का चित्रण उनकी भक्तिभावना से प्रेरित है। अध्यात्म, दर्शन एवं साहित्य की सर्वश्रेष्ठ पूँजी समेटकर जीवन पथ का हर पथिक युग–युगान्तर तक अपने पथ पर अग्रसर होता रहेगा। हमारा यह विश्वास जितना अटल और अक्षुण्ण है, उतना ही अर्थपूर्ण भी है।

–सेवा निवृत्त प्रोफेसर
अन्ना आदर्श महिला महाविद्यालय, अन्ना नगर
प्रभारी नागरी लिपि परिषद, तमिलनाडु।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रामचरितमानस–गोस्वामी तुलसीदास
2. तमिल कम्ब रामायण–डॉ. एम शेषन्
3. संक्षिप्त रामायण–सत्यप्रकाश चौधरी
4. रामकथा–नरेन्द्र कोहली
5. रामचन्द्र शुक्ल–गोस्वामी तुलसीदास, काशी।

ISSN No. : 0970-9398

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान

–अभिषेक कुमार प्रकाश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एक ऐतिहासिक आंदोलन था जो कई दशकों तक चला एवं जिसकी परिणति 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश शासन से देश की आजादी के रूप में हुई। यद्यपि, इस स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुखतः पुरुष नेताओं के योगदान को व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है, परंतु यह भी महत्वपूर्ण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष की इस वीरोचित गाथा में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिकाएं कदापि नजरअंदाज न की जाए। गुलामी का दंश झेल रहे भारत की विविध पृष्ठभूमियों और क्षेत्रों की महिलाओं ने इस संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया एवं अदम्य साहस एवं समर्पण का प्रदर्शन किया। इन महिलाओं ने इस महासमर की हर वेदी पर चाहे वह राजनीतिक सक्रियता हो, सामाजिक सुधार हो या जन आंदोलनों में भागीदारी, अपने–अपने हिस्से की आहुति दी।

स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की आरंभिक पहलः

स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी की जड़ें 19 वीं शताब्दी के मध्य एवं उत्तरार्द्ध से आरंभ मानी जा सकती हैं, जब एक तरफ तो सन् 1857 के संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई एवं बेगम हजरत महल जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों से लोहा लेते हुए राष्ट्र हेतु सर्वोत्कृष्ट बलिदान दिया तो दूसरी तरफ पंडिता रमाबाई और ताराबाई शिंदे जैसी महिलाओं ने सामाजिक असमानताओं और औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने ब्रिटिश शासन की आलोचना करने और महिलाओं के अधिकारों को प्रतिबंधित करने वाले सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने के लिए अपनी लेखनी का उपयोग किया। रमाबाई की पुस्तक "द हाई कास्ट हिन्दू वुमन" और शिंदे की कृति "स्त्री पुरुष तुलना" ने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति पर चर्चा शुरू की एवं भविष्य में महिलाओं की सक्रियता के लिए प्रारंभिक मंच तैयार किया।

राष्ट्रवादी आंदोलनों में महिलाओं की भूमिकाः

बीसवीं सदी की शुरुआत में जैसे ही राष्ट्रवादी आंदोलनों ने गति पकड़ी, महिलाएं सक्रिय रूप से संघर्ष में शामिल हो गईं। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन ने राजनीतिक सक्रियता के लिए एक मंच प्रदान किया था। इस अवधि के दौरान एनी बेसेंट और सरोजिनी नायडू जैसी प्रमुख महिला नेता उभरीं। आयरिश समाज सुधारक एनी बेसेंट ने भारत में होमरूल की पुरजोर वकालत की, जबकि सरोजिनी नायडू, जिन्हें "भारत कोकिला" कहा जाता है, ने अपने शक्तिशाली भाषणों और लेखों के माध्यम से इस मुद्दे के लिए समर्थन जुटाया।

असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनः

असहयोग आंदोलन (1920–1922) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–1934) स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। महिलाओं ने विरोध प्रदर्शनों, मोर्चों और सविनय अवज्ञा आदि गतिविधियों में सक्रियता से भाग लिया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा गाँधी की प्रतिष्ठित छवि बलिदान और अहिंसक प्रतिरोध की भावना का प्रतीक है। अरुणा आसफ अली, राजकुमारी अमृत कौर और कमला नेहरू जैसी कई अन्य महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन आयोजित करने और बड़े आंदोलन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलनः

नमक सत्याग्रह (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी देखी गई। उषा मेहता, सुचेता कृपलानी और कैप्टन लक्ष्मी सहगल जैसी महिलाओं ने अलग–अलग भूमिकाओं में अपनी पूर्ण क्षमता सहित इन आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। रेडियो प्रसारक उषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन के संदेशों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं समस्त राष्ट्र में इस आंदोलन के प्रसार में योगदान दिया।

सशस्त्र आंदोलनों में महिलाएंः

यद्यपि, अहिंसा ही स्वतंत्रता संग्राम का मूल सिद्धांत था, परंतु ऐसे उदाहरण भी थे जहाँ महिलाओं ने सशस्त्र विरोध में सक्रिय रूप से भाग लिया। इन महिलाओं ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वारा गठित आजाद हिंद फौज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनकी सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में झाँसी की रानी रेजिमेंट इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है। आजाद हिंद फौज की इस महिला यूनिट की स्थापना 12 जुलाई 1943 को सुभाष चंद्र बोस ने की थी।

सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधार के क्षेत्र में भागीदारी :

राजनीतिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी के अलावा, महिलाओं ने सामाजिक और शैक्षिक सुधारों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। सावित्रीबाई फुले और फातिमा शेख जैसी हस्तियां महिलाओं और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने में अग्रणी थीं। उनके प्रयासों ने महिलाओं की भावी पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने की नींव रखी।

जनजातीय आंदोलनों में महिलाएँ:

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, आदिवासी समुदायों के औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अपने स्वयं के संघर्ष थे। इन आंदोलनों में आदिवासी समुदाय की महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। नागा आंदोलन में रानी गाइदिन्ल्यू और संथाल विद्रोह में दो जुड़वा बहनें – फूलो मुर्मू और झानो मुर्मू का योगदान देश के विभिन्न हिस्सों में महिलाओं द्वारा निभाई गई विविध भूमिकाओं को उजागर करता है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाने वाली यूं तो लाखों वीरांगनाएं हैं, जिनके शौर्य को लिखने हेतु शायद कागज और स्याही कम पड़ जाए। प्रकृति से कोमल कही जाने वाली हमारी इन वीरांगनाओं ने जिस तरह क्रूर अंग्रेजों के दाँत खट्टे किए, यह इतिहास अपने आप में अप्रतिम है। इन महिलाओं की शौर्य गाथाएं, वस्तुतः उन लाखों वीरांगनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिन्होने इस पुण्य पथ पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया –

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (19 नवम्बर 1828 – 18 जून 1858):

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, 1857 के भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योद्धाओं में से एक हैं। उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल फूंका था। मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी और 1857 की राज्यक्रान्ति की द्वितीय शहीद, वीरांगना लक्ष्मीबाई ने केवल 29 वर्ष की उम्र में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना से युद्ध किया और रणभूमि में वीरगति को प्राप्त हुईं। रानी लक्ष्मीबाई झाँसी की घेराबंदी के दौरान अपनी वीरता के लिए भारतीय इतिहास में प्रतिशोध का प्रतीक बन गईं। उनके शौर्य पर प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई कविता 'झाँसी की रानी' वीर रस की अत्यंत लोकप्रिय साहित्यिक कृति के रूप में स्थापित है।

बेगम हज़रत महल (1820 – 1879):

बेगम हज़रत महल, जो अवध की बेगम के नाम से भी प्रसिद्ध थीं, अवध के नवाब वाजिद अली शाह की दूसरी पत्नी थीं। अंग्रेज़ों द्वारा कलकत्ते में अपने शौहर के निर्वासन के बाद उन्होंने लखनऊ पर कब्जा कर लिया और अपनी अवध रियासत की हुकूमत को बरकरार रखा। उन्होंने 1857 के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया। अंततः उन्होंने नेपाल में शरण ली, जहाँ उनकी मृत्यु 1879 में हुई थी।

सरोजिनी नायडू (13 फरवरी 1879 – 2 मार्च, 1949):

"भारत कोकिला" के नाम से प्रसिद्ध सरोजिनी नायडू एक प्रमुख सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता और कवयित्री थीं। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली भारतीय महिला और किसी भारतीय राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली महिला थीं। श्रीमती सरोजिनी नायडू ने अहिंसक तरीकों से भारत की आजादी की मांग करते हुए असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

श्रीमती भीकाजी रूस्तम कामा (24 सितंबर 1861–13 अगस्त 1936):

श्रीमती भीकाजी जी रुस्तम कामा (मैडम कामा) भारतीय मूल की पारसी नागरिक थीं, जिन्होंने लंदन, जर्मनी तथा अमेरिका का भ्रमण कर भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया। वे जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में 22 अगस्त 1907 में हुई सातवीं अंतर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस में भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराने के लिए प्रसिद्ध हैं, जहां उन्होंने कहा था – "भारत में ब्रिटिश शासन जारी रहना मानवता के नाम पर कलंक है। एक महान देश भारत के हितों को इससे भारी क्षति पहुँच रही है।" उनके द्वारा पेरिस से प्रकाशित "वन्दे मातरम्" पत्र प्रवासी भारतीयों में काफी लोकप्रिय हुआ था। उन्होंने लोगों से भारत को दासता से मुक्ति दिलाने में सहयोग की अपील की और भारतवासियों का आह्वान किया कि – "आगे बढ़ो, हम हिंदुस्तानी हैं और हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का है।"

डॉ. एनी बेसेंट (1 अक्टूबर 1847 – 20 सितम्बर 1933):

डॉ॰ एनी बेसेन्ट के जीवन का मूल मंत्र था 'कर्म'। वे भारत को अपनी मातृभूमि समझती थीं। वे जन्म से आयरिश, विवाह से अंग्रेज तथा भारत को अपना लेने के कारण भारतीय थीं। वे भारत की स्वतंत्रता के नाम पर अपना बलिदान करने को सदैव तत्पर रहती थीं। 1913 से 1919 तक वह भारतीय राजनीतिक जीवन की अग्रणी विभूतियों में से एक थीं। सितम्बर 1916 में उन्होंने होमरूल लीग (स्वराज्य संघ) की स्थापना की और स्वराज के आदर्श को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचार किया।

ISSN No. : 0970-9398

कस्तूरबा गांधी (जन्म–1869, मृत्यु – 1944):

कस्तूरबा गांधी महात्मा गांधी की पत्नी थी जिन्हें 'बा' नाम से भी जाना जाता था। 'बा' का अर्थ गुजराती भाषा में मां होता है। उन्होंने असहयोग आंदोलन और नमक सत्याग्रह सहित विभिन्न आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। कस्तूरबा गांधी, जो गांधीवादी सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जानी जाती हैं, बलिदान और अहिंसक प्रतिरोध का प्रतीक बन गयी।

अरुणा आसफ़ अली (16 जुलाई 1909–29 जुलाई 1996):

अरुणा आसफ अली प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बॉम्बे (अब मुंबई) के गोवालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का झंडा फहराया था। अरुणा आसफ अली द्वारा ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ की गई अवज्ञा भारतीय स्वाधीनता संग्राम की एक अति महत्वपूर्ण कड़ी साबित हुई।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल (24 अक्टूबर 1914 – 23 जुलाई 2012):

डॉक्टर लक्ष्मी सहगल का जन्म 1914 में एक परंपरावादी तमिल ब्राह्मण परिवार में हुआ और उन्होंने मद्रास मेडिकल कॉलेज से मेडिकल की शिक्षा ली, फिर वे सिंगापुर चली गई। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान जब जापानी सेना ने सिंगापुर में ब्रिटिश सेना पर हमला किया तो लक्ष्मी सहगल सुभाष चंद्र बोस की आज़ाद हिंद फ़ौज में शामिल हो गयी। स्वाधीनता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सैनिकों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों की धरपकड़ के दौरान वे 4 मार्च 1946 को गिरफ्तार हुई, पर बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया। कैप्टन लक्ष्मी सहगल एशिया की पहली महिला सैन्य कर्नल थी। उन्होंने आजाद हिंद फौज की झाँसी की रानी रेजिमेंट का नेतृत्व किया था। भारत की आजादी के पश्चात वे जीवनपर्यंत सामाजिक कार्यों में अपना योगदान देती रहीं।

कमला नेहरू (1 अगस्त 1899 – 28 फरवरी 1936):

कमला नेहरू ने भी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। कमला नेहरू सामाजिक और महिला कल्याण गतिविधियों में भी शामिल रहीं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक पटल पर महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उषा मेहता (25 मार्च 1920 – 11 अगस्त 2000):

उषा मेहता एक स्वतंत्रता सेनानी और रेडियो प्रसारक थीं, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत रेडियो प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों से बचते हुए, स्वतंत्रता संग्राम के संदेशों को जनता तक पहुँचाया। रेडियो प्रसारण में उषा मेहता के प्रयासों ने स्वतंत्रता आंदोलन के महत्वपूर्ण चरणों के दौरान लोगों को संगठित करने में योगदान दिया। स्वतंत्रता के बाद वे विभिन्न गांधीवादी संस्थाओं से जुड़ी रहीं एवं गांधीवादी विचारों को आगे बढ़ाने, विशेषकर महिलाओं से जुड़े कार्यक्रमों में काफी सक्रिय रहीं। राष्ट्रहित में किए गए उनके महत्वपूर्ण योगदानों हेतु भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिला साहित्यकारों का योगदान:

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत में कई महिला साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन महिला साहित्यकारों ने आम जन को स्वतंत्रता के लिए प्रेरित करने हेतु अपनी कलम को एक शक्तिशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। यहां कुछ महत्वपूर्ण महिला भारतीय साहित्यकारों का उल्लेख है, जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रप्रेम की भावना को उत्प्रेरित कर देने वाले प्रभावी साहित्य की रचना की –

महादेवी वर्मा (1907 – 1987):

पद्म विभूषण महादेवी वर्मा प्रसिद्ध हिंदी कवयित्री, निबंधकार एवं हिंदी साहित्य में छायावाद के चार स्तंभों में से एक होने के साथ–साथ भारत के स्वाधीनता संग्राम की एक सशक्त सिपाही भी थी। महादेवी की कविताओं में राष्ट्र चेतना एवं राष्ट्र जागरण के स्वर स्वतः स्फुटित होते हैं। अपने अतुल रचना संसार में छायावादी कवि महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता को सर्वोत्कृष्ट स्थान दिया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान (16 अगस्त 1904 –15 फरवरी 1948):

भारत की पहली महिला सत्याग्रही सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका थीं। वे राष्ट्रीय चेतना की एक सजग कवयित्री रही हैं। स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातना सहने के पश्चात उन्होंने अपनी अनुभूतियों को कहानियों में भी व्यक्त किया है। उनकी रचना 'झाँसी की रानी' एक कालातीत कविता है, जिसकी लोकप्रियता ने समय और देश की सीमाओं को लांघ कर लोगों के दिलो दिमाग में एक अमिट छाप बना दी। इसी कविता से उद्धृत ये पंक्तियां उनकी स्वाधीनता हेतु तड़प को स्पष्ट व्यक्त करती हैं।

ISSN No. : 0970-9398

"सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।"

नलिनी बाला देवी (23 मार्च 1898 – 24 दिसम्बर 1977):

असमिया भाषा की प्रसिद्ध कवयित्री पद्मश्री नलिनी बाला देवी अपने राष्ट्रवादी तथा रहस्यवादी कविताओं के लिये प्रसिद्ध हैं। परिवार के संस्कार एवं पिता के प्रोत्साहन से उनमें साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति अनुराग पैदा हुआ। वे न केवल महात्मा गांधी से प्रभावित थी, बल्कि उनके बताए हुए कार्यों को अंजाम भी देने लगीं। इसी क्रम में उनकी लेखनी से राष्ट्रवादी भावनाएं उनकी मातृभाषा असमिया में अवतरित होने लगी। 1965 में उनकी काव्य कृति अलकनंदा के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस्मत चुगताई (21 अगस्त 1915– 24 अक्टूबर 1991):

इस्मत चुग़ताई एक उर्दू लेखिका थीं। उन्हें 'इस्मत आपा' के नाम से भी जाना जाता है। वे अपने साहसिक और प्रगतिशील लेखन के लिए जानी जाती हैं। चुगताई की लघु कहानियों और उपन्यासों में स्वतंत्रता आंदोलन के माहौल और उसके द्वारा लाए गए सामाजिक परिवर्तनों को सूक्ष्मता से दर्शाया गया है।

अमृता प्रीतम (1919–2005):

पद्मविभूषण से सम्मानित पंजाबी लेखिका और कवयित्री अमृता प्रीतम अपनी मार्मिक साहित्यिक रचनाओं के लिए जानी जाती हैं। "अज्ज आखाँ वारिस शाह" शीर्षक से उनका कविताओं का संग्रह 1947 में भारत के विभाजन के कारण हुए दर्द और पीड़ा की एक सशक्त अभिव्यक्ति है। हालांकि उन्होंने खुद को स्पष्ट रूप से किसी भी राजनीतिक विचारधारा के साथ नहीं जोड़ा, लेकिन उनका लेखन स्वतंत्रता के मानवीय प्रभाव को दर्शाता है।

कुर्रतुल ऐन हैदर (20 जनवरी 1927 – 21 अगस्त 2007):

ऐनी आपा के नाम से जानी जाने वाली उर्दू की प्रतिष्ठित उपन्यासकार एवं लेखिका कुर्रतुल ऐन हैदर का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम काल के दौरान भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनका सुप्रसिद्ध उपन्यास "आग का दरिया" स्वतंत्रता संघर्ष सहित भारतीय इतिहास के विभिन्न कालखंडों तक फैला हुआ है। यह उपन्यास उस युग के दौरान राष्ट्र के सामने आए सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों और चुनौतियों का एक विहंगम दृश्य प्रदान करता है। इस उपन्यास के बारे में निदा फ़ाज़ली ने यहां तक कहा है कि – मोहम्मद अली जिन्ना ने हिंदुस्तान के साढ़े चार हज़ार सालों के इतिहास में से मुसलमानों के 1200 सालों के इतिहास को अलग करके पाकिस्तान बनाया था। कुर्रतुल ऐन हैदर ने उपन्यास 'आग का दरिया' लिख कर उन अलग किए गए 1200 सालों को हिंदुस्तान में जोड़ कर हिंदुस्तान को फिर से एक कर दिया।

कृष्णा सोबती (18 फरवरी 1925 – 25 जनवरी 2019):

कृष्णा सोबती, एक प्रसिद्ध हिंदी लेखिका हैं, जो सामाजिक मुद्दों पर अपने साहसिक और यथार्थवादी चित्रण के लिए जानी जाती हैं। यद्यपि, उनके शुरुआती साहित्यिक कार्य सीधे तौर पर स्वतंत्रता आंदोलन से नहीं जुड़े रहे, परंतु उनके बाद के लेखन, जैसे उपन्यास "जिंदगीनामा"– विभाजन के प्रभाव और स्वतंत्रता के बाद के भारत की बदलती सामाजिक–राजनीतिक गतिशीलता को दर्शाते हैं। जिंदगीनामा के लिए उन्हें 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कमला मार्कण्डेय (23 जून 1924 – 16 मई 2004):

कमला मार्कण्डेय (कमला टेलर), एक ब्रिटिश भारतीय उपन्यासकार और पत्रकार थीं। उन्हें "अंग्रेजी में लिखने वाले सबसे महत्वपूर्ण भारतीय उपन्यासकारों में से एक" माना गया है। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं में भारत के सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। यद्यपि, उनके उपन्यास, जैसे "नेक्टर इन ए सीव" और "ए साइलेंस ऑफ डिज़ायर", सीधे तौर पर स्वतंत्रता आंदोलन पर ध्यान केंद्रित नहीं करते थे, परंतु फिर भी इन उपन्यासों ने उस अवधि के दौरान आम लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान की।

इन महिला साहित्यकारों ने अपने विपुल साहित्य के माध्यम से भारत के साहित्यिक परिदृश्य में अतुलनीय योगदान दिया और प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से स्वतंत्रता संग्राम के सामाजिक–राजनीतिक परिवेश का दस्तावेजीकरण किया। उनका लेखन न केवल उनकी साहित्यिक योग्यता के लिए बल्कि भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवधि में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि के लिए भी मूल्यवान है। इन महिलाओं ने, कई अन्य लोगों के साथ, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, सामाजिक मानदंडों को चुनौती दी और एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक राष्ट्र के निर्माण में योगदान दिया। उनकी कहानियां भारत को पीढ़ियों तक प्रेरित करती रहेंगी और औपनिवेशिक उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई में महिलाओं की अदम्य भावना के प्रमाण के रूप में सदैव कार्य करती रहेंगी।

–कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सीबीआई, रायपुर

ISSN No. : 0970-9398

सुरक्षा बलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

–सतीश चन्द्र डबराल

शौर्य तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यलायनम्
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।।

क्षत्रिय धर्म का पालन करने वाले हों या युद्ध में शौर्य प्रदर्शन करने वाले योद्धा, सभी अपनी सैन्य शक्ति में वृद्धि और सफलता की कामना "आदि शक्ति" से ही करते हैं। 'शक्ति' अर्थात बल, ताकत, सामर्थ्य, जिसकी आराध्या देवी 'शक्ति' जो माँ दुर्गा, काली या भवानी इत्यादि नामों से जानी जाती हैं, सभी भारतीय सशस्त्र बलों में सर्वधर्म समभाव रखते हुए भी पूजनीय हैं। कोई भी योद्धा जो किसी भी धर्म समुदाय का रहा हो विजयश्री का आशीर्वाद अपनी जननी से ही माँगता है। ऐसे में कोई जननी जो किसी योद्धा को जन्म देती है, असहनीय प्रसव पीड़ा को भी सहन कर, नवजीवन का संचार करती है, किसी योद्धा से सिर्फ इसलिए कमतर नहीं मानी जा सकती क्योंकि वह 'स्त्री' है। भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित वीरांगनाओं का युद्ध कौशल व शौर्य प्रदर्शन स्वयं इसका प्रमाण है।

वर्ष 1861 के पुलिस अधिनियम की प्रस्तावना के अनुसार यह अपराधों की रोकथाम और उसका पता लगाने के लिए पुलिस को पुर्नव्यवस्थित करने और इसे एक अधिक कुशल साधन बनाने के लिए एक प्रयोगात्मक प्रयास है। आज तक प्रमुखतः राजकीय पुलिस संगठन 1861 के अधिनियम द्वारा प्रभावित है और वे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से आज भी उन्ही सिद्धान्तों पर कार्य करते हैं जो उक्त शासन अधिनियम द्वारा विहित और निर्धारित किए गए थे जो प्रारम्भतः निम्नलिखित थेः

1. भारतीय दंड संहिता 1860 व तत्कालीन दंड प्रक्रिया संहिता के प्रमुख अपराध नियंत्रणकारी प्रावधानों की कठोर अनुपालना।
2. अपराधों के अन्वेषण, अनुसंधान व अध्ययन संबंधी कार्य
3. अपराधों के अभियोजन संबंधी कार्य
4. कानून व्यवस्था व शांति बनाए रखने हेतु साम्प्रदायिक स्थिति, उत्सवों के प्रसंग, कृषिपरक संकट, औद्योगिक अशांति के अवसर, राजनैतिक विद्रोह आदि की संवेदनशील स्थिति से निपटना।
5. गश्ती नियुक्ति, रक्षा व्यवस्था और सहायता व्यवस्था करना।
6. आपराधिक न्यायालयी प्रक्रिया की परिपालना।
7. भीड़ व यातायात के नियमन के प्रयास,
8. प्राकृतिक आपदा, अग्निकांड, दुर्घटनाओं, प्राचीन इमारतों के ध्वंस पर बचाव कार्य,
9. प्राचीन संग्रहों, पुरातत्व, संदेहास्पद संपति का सत्यापन, सैन्य परिव्यक्तों का व अन्य प्रक्रियाओं में सत्यापन करना।
10. जन्म मरण रिपोर्ट, शव परीक्षण, भगौड़े, व घोषित अपराधी व लोगों को पकड़ना।

वर्ष 1968 में दिल्ली पुलिस कमीशन ने बदलते हालात की आवश्यकतानुसार यह सिफारिश की थी कि महिला पुलिस को महिलाओं और बच्चों से सम्बन्धित कार्यों में लगाया जाए तथा जनसम्पर्क के कार्यों में भी महिला पुलिस का सहयोग लिया जाए। क्योंकि अपराध पुरातन काल में भी होते थे किन्तु आधुनिक काल में उनकी रीति और प्रक्रिया भी आधुनिक हो चुकी हैं। ऐसे में महिलाओं द्वारा या महिलाओं के प्रति अपराधों को एक महिला पुलिसकर्मी ही अच्छे से समझ सकती है। अतः संयुक्त राज्य अमेरिका में 1967 में विधि प्रवर्तन व न्याय प्रशासन पर राष्ट्रपति आयोग की टास्क फोर्स के प्रतिवेदन और 1968 में दिल्ली पुलिस की सिफारीशों के आधार पर कुछ दायित्वों को जोडा गया जो महिला पुलिस द्वारा निर्वहन किए जाने थेः–

1. महिलाओं व बाल अपराधों के विषय में अनुसंधान करना और ऐसे अपराधों की जाँच पड़ताल करना जिसमें स्त्रियों या बच्चों को हानि हुई है।
2. महिला अपराधियों व बाल अपराधियों पर नजर रखना व उनको सुधारने का वातावरण देना।
3. सामाजिक अभिनियमों की पालना कराना।
4. स्कूल, कॉलेजों और महिला केन्द्रित संस्थानों के आस–पास यातायात व्यवस्था संभालना।
5. पुलिस स्वागत कक्षों में अतिथियों व आगंतुकों को सहायक मार्गदर्शन देना।
6. प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षकों व प्रबंधकों के कार्य/वहीं अनुसंधान केन्द्रों में पुलिस नियमों संबंधी अनुसंधान कार्य करना।
7. किशोर अपराधियों के साथ कार्य करते हुए, मनावैज्ञानिक रीति से सुधारना।
8. गुप्तचर विभाग में कार्य करते हुए, गुप्त भेद प्राप्त करना (intelligence department)
9. पारिवारिक झगड़ों को निपटाने, पारिवारिक कलह को सुलझाते हुए, समाज सेवी संस्थाओं के साथ समाज सुधार के कार्य करना।
10. पुलिस हिरासत में महिला व लापता बच्चों, (किशोर अपचारी) आदि को सुरक्षा देना, तलाशी लेना, जाँच

पडताल करना और उन्हे गार्ड करना।

11. पुलिस थानों का रिकॉर्ड कन्ट्रोल रूम में व्यवस्थित रखना और गश्ती दलों से थानों का सम्पर्क बनाए रखना इत्यादि।

1861 के अधिनियम के परिमार्जन स्वरूप 2006 में पुलिस मॉडल पुलिस अधिनियम 2006 का प्रारूप आया, जिसकी प्रेरणा से 2010–11 में देश भर में लगभग 420 थाने स्थापित किए गए जिनकी प्रभारी व सहायक पुलिस कर्मी महिला होती थी जो महिला संबधी अपराधों की रोकथाम व जांच पडताल को प्रमुखता से देखते थे। धीरे – धीरे बदलते परिवेश में पुलिस 'बल' से पुलिस 'सेवा' में परिवर्तित होने लगी जिसका मूल मंत्र ''अपराधियों में डर और आमजन की सुरक्षा'' बन गया। अब पुलिस एक थर्ड डिग्री दायी भयावह चेहरे से बाहर एक सरंक्षणात्मक संस्था बनने लगी जो लॉकडाउन और कॉरोना काल में एक सुरक्षा चक्र के साथ – साथ समाज को जीवनदान देते फरिश्तों के रूप में नजर आए। ऐसे में महिला पुलिस का समावेश पुलिस में एक सकारात्मक शक्ति का समावेश रहा।

वर्ष 2013 में भी केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक पुलिस स्टेशन में कम से कम 3 महिला सब इंस्पेक्टर और 10 महिला पुलिस कांस्टेबल की उपस्थिति महिला "हैल्प डैस्क'' के लिए हर सफल संचालन हेतु अनिवार्य करने कि सिफारिश कर दी गई थी तो 2015 में केन्द्र सरकार द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में "महिलाओं के विरूद्ध अपराधों'' की अन्वेषण इकाई की स्थापना पर बल दिया गया जो राज्य के सभी अपराध बाहुल्य क्षेत्रों के पुलिस थानों में मौजूद रहें जिनमें 15 विशेषज्ञ अन्वेषण महिला के विरूद्ध अपराधों की विशेष जांच करें और जहां 1/3 (कम से कम) अन्वेषणकर्ता, महिला होनी अनिवार्य हैं। यह इकाई IUCA W (Investigative Unit for Crimes Against Women) उन सभी मुख्य परामर्शकारी मानकों का अनुपालन भी करेगी जो महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा के समुचित उपाय करने में सहायक हों।

राष्ट्रीय पुलिस अकादमी में हुए एक सर्वेक्षण अनुसार महिला पुलिस की मुख्य विशेषताएं व उनके व्यक्तिव की शक्ति जो उनकी भूमिका को और सुदृढ़ कर देती है निम्नतः मानी गई:–

1. धैर्य
2. स्त्री के सहज स्वभावी गुण – करूणा, दया, सहायता और शांत व्यवहार
3. पुरूष सहकर्मियों की तुलना में उनका अधिक मृदुल आचरण और वार्तालाप की निपुणता और पुरूषों से कहीं कम भ्रष्ट आचरण।
4. महिलाओं, बच्चों और कमजोर वर्ग के प्रति सहानुभूति के साथ अपेक्षित व्यवहार जो मनोवैज्ञानिक तौर पर महिला पुलिस के लिए सामान्य है।
5. कर्तव्य के प्रति दृढ़प्रतिज्ञ, गंभीर और आत्मनिर्भर विचारधारा।

संयुक्त राज्य के राष्ट्रीय महिला पुलिस केन्द्र National Centre for Women and Policing - US - NCWP के प्रस्तावों और FBI-UCR फैडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टीगेशन की Uniform Crime Report के अनुसार पुलिस संगठन मात्र एक शक्तिप्रधान, दंड के भय को बनाने वाली संस्था नहीं है बल्कि यह एक सुरक्षात्मक आवरण है जो लैंगिक उत्पीड़न, अभिरक्षा में की गई हिंसा, बालकों के शोषण, महिलाओं को प्रताड़ित करने संबधी हिंसात्मक अपराधों से बचाव करता है। साथ ही जो पीड़ित उक्त किसी अपराध का शिकार बन चुका है उसे भी अपनी सहायता सहज उपलब्ध कराता है।

मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी देखा जाए तो महिला पुलिस कर्मी की Problem Solving Skills पुरूषों की तुलना में विस्तृत व गहन होती है। वहीं किसी अपराध से पीड़ित महिला या बच्चा प्रायः ऐसी मनोदशा में होता है जब वह कोई भी बात कहने में असमर्थ हो जाता है। वह सबको संशय से देखता है और किसी पर विश्वास भी नहीं कर पाता। ऐसी डरे हुए शोषित उत्पीड़ित, और अपराध से त्रस्त महिला या बच्चे को एक विश्वासपात्र सहानुभूति से भरे व्यक्तित्व की आवश्यकता होती है जो स्वभाविक रूप से एक महिला पुलिस में अर्न्तनिहित होता है। एक महिला या बच्चे को जितना सहज और सुरक्षित माहौल महिला पुलिस के साथ मिलता है, उतना पुरूष पुलिसकर्मी के साथ सामान्यतः नहीं हो पाता।

घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना, लज्जा भंग – दुष्कर्म, बाल उत्पीड़न के मामलों के साथ–साथ बच्चों का लावारिस हालात में मिलना आदि स्थिति में एक महिला पुलिस की बहुत विशेष भूमिका होती है। ऐसे मामलों में जांच–पडताल महिला पुलिसकर्मी द्वारा आसानी से और सुगमता से हो पाती है क्योंकि पीड़ित अपनी परेशानी और सभी पहलुओं से जुड़े बिन्दुओं को बेझिझक कह सकते हैं लॉस एंजेलिस पोलिस विभाग LA PD – द्वारा जारी एक शोध रिपोर्ट के अनुसार महिला पुलिसकर्मी अपनी कार्यवाहियों में तुलनात्मक रूप से बल प्रयोग कम करती है वहीं उनका श्रेष्ठ प्रदर्शन 'अंडरकवर ऑपरेशन' और खुफिया जासूसी कार्यक्रमों की सफलता में प्रमाणित कर रहा है कि वे जोखिम भरे चुनौतीपूर्ण लक्ष्य भी प्राप्त कर सकती है।

वर्ष 2012 में, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा और अपराधों की रोकथाम व बच्चों को उत्पीडन से सुरक्षा देने हेतु पुलिस तक पीड़ितों की पहुंच को सरल और सुगम्य बनाने के लिए महिलाओं एवं बच्चों के लिए गठित विशेष यूनिट SPUWC (Special Police Unit for Women and Children) दिल्ली द्वारा एक सरकारी वेबसाईट प्रारम्भ की गई जो महिलाओं को शिकायत दर्ज करवाने की पूर्ण प्रक्रिया का सविस्तार सरलीकरण करते हुए सविस्तार वर्णन करती है। साथ ही पीड़ित महिलाएं वेबसाईट के अलावा फेसबुक टिवटर या सोशल मीडिया के अन्य प्रभावी माध्यमों से भी पुलिस से सम्पर्क बना सकती है। इस विशेष पहल द्वारा पुलिस की त्वरित सहायता प्राप्त होती है और महिला पुलिस सुरक्षा का सुदृढ़ प्रबंधन करने की ओर अग्रसर होती है।

मार्च 2015 में, रेलवे सुरक्षा बल (RPF) द्वारा गठित महिला इकाई "शक्ति स्कवॉड'' का प्रभार 25 वर्षीय असिस्टेंट सिक्योरिटी कमिशनर देवाष्मिता चटर्जी ने संभाला जो RPF की महिला कांस्टेबलों के संयोजन से बनी थी। इसके पश्चात 23 अक्टूबर 2020 मे RPF द्वारा रेलवे बोर्ड के सहयोग से एक और ठोस कदम, महिला सुरक्षा हेतु उठाया गया है ट्रेनों में जहां महिलाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी आरपीएफ को सौंपी गई है। इसके लिए "मेरी सहेली'' नाम की सुविधा प्रारम्भ की गई है। बरेली में इस योजना की कमान सब इंस्पेक्टर ज्योति सिंह के नेतृत्व में गठित चार सदस्यीय महिला टीम को सौंपी गई है।

ISSN No. : 0970-9398

आरपीएफ इंस्पेक्टर विपिन सिसोदिया के अनुसार सृजन की आवश्यकता प्रायः अकेली यात्रा करने वाली महिलाओं की असुविधाओं व असुरक्षा से जुडी निरंतर शिकायतों पर मानी गई। इसी वजह से यह सुविधा प्रारम्भ की गई है। रेलवे बोर्ड से जारी सूची के अनुसार, हर रेलवे कोच में यह टीम महिला यात्रियों का हाल चाल लेती है और यह प्रक्रिया महिला के यात्रा प्रारम्भ करने के स्थान से, हर स्टेशन पर गन्तव्य स्थान तक जारी रहती है जहां उसे सुरक्षित पहुँचाया जाएगा। ट्रेन में पूछताछ के बाद उसकी पूरी जानकारी संदेश बनाकर कंट्रोल रूम को भी भेजी जाती है। अतः यह वाकई में एक आधुनिक प्रयास है जो महिला पुलिस द्वारा, महिला सुरक्षा को सुदृढ़ता से स्थापित करने को अग्रसर है। निश्चय ही रेलवे सुरक्षा बल अपने ऐसे क्रांतिकारी और प्रेरणास्पद प्रयासों, सकारात्मक पहल और अनुकरणीय दृष्टांत प्रस्तुत कर धन्यवाद का पात्र है। सच में अपने नाम को सार्थक बनाता और सिद्ध करता हुआ प्रतीत होता है। वहीं आरपीएफ द्वारा उत्तर पश्चिम रेलवे की आई जी, अरोमा सिहं ठाकुर और अरूण सिहं द्वारा राजस्थान में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और अजमेर मंडल में भी ऐसी ही विशेष टीमों का गठन किया गया है। रेलवे हेल्पलाइन नं. 182 के माध्यम से विशेष टीम, महिला एकल यात्रियों के लगातार संपर्क में बनी रहेगी और ट्रेन के प्रत्येक कोच को एस्कॉर्ट करेगी। जयपुर में सब इंस्पेक्टर दीक्षा चौहान को मेरी सहेली टीम का प्रभार सौंपा गया है।

इससे पहले राजस्थान के जयपुर शहर में "ऑपरेशन गरिमा" की शुरूआत 3 मार्च, 2004 को हुई। सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं के साथ छेड़छाड़, स्कूल कॉलेज जाती बालिकाओं पर फब्तियाँ कसना, कार्यशील महिलाओं का कार्यस्थल पर उत्पीड़न, घरों में महिलाओं का शारीरिक और मानसिक रूप से शोषण, दहेज या अन्य कारणों से उत्पीड़न आदि ऐसे मामले हैं जो सभ्य समाज की गरिमा के प्रतिकूल हैं। इस प्रकार की घटनाओं की रोकथाम के लिए ऑपरेशन गरिमा प्रारम्भ किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य महिलाओं एवं बालिकाओं में आत्मविश्वास उत्पन्न करना एवं समाज में सम्मानजनक तरीके से प्रतिष्ठित करना है तथा इनको क्षति पहुँचाने वाले विकृत मानसिकता वाले तत्वों को हतोत्साहित करना और दण्डित करना है। इसके तहत निम्नलिखित मामले हैं:–

1. स्कूल, कॉलेज, कार्यशील महिला छात्रावासों, कार्यस्थलों, परिवहन बसों, सार्वजनिक स्थलों यथा बस स्टैण्ड, सिनेमाघर, बाजार आदि में महिलाओं से छेड़छाड़ आदि।
2. घरों, कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के प्रयास, दहेज की मांग, शारीरिक मानसिक यातनाएं।
3. सार्वजनिक स्थलों पर चित्रों, लेखों, संकेतों के प्रदर्शन संबंधी मामले।
4. दुपहिया वाहन आदि पर चलने वाली लडकियों पर टिप्पणी/फब्तियां कसना।

ऐसे प्रकरण पर अविलम्ब एवं त्वरित कार्यवाही करने हेतु जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन द्वारा जन सुविधा हेतु 24 घण्टे चलने वाली हेल्पलाइन चालू की गई जिसमें कोई भी पीड़िता अपनी शिकायत व परिवेदना फोन द्वारा दर्ज करवा सकती है, उसे किसी कार्यालय में जाने की जरूरत नहीं है। शिकायत प्राप्त होने पर यथाशीघ्र कार्यवाही की जाती है, शिकायतकर्ता और पीड़िता को की गई कार्यवाही से अवगत कराया जाता है। प्रार्थना के लिए आवश्यक है कि वह अपने पते के साथ दूरभाष पर अपनी पूरी जानकारी दें। इसमें प्रार्थिया की पहचान गोपनीय रखी जाती है एवं जिस व्यक्ति के विरूद्ध शिकायत की गई है, उसको सूचना का स्त्रोत नहीं बताया जाता। बाद में ऑपरेशन गरिमा के सुखद व सफल परिणामों को देखते हुए इसे सभी जिलो में लागू कर दिया गया। वर्तमान में यह महिला गरिमा हेल्पलाइन नम्बर 1090 जयपुर पुलिस कंट्रोल पर संधारित है जहाँ कोई भी महिला फोन करके अपनी शिकायत दर्ज करा सकती है। महिला गरिमा हेल्पलाइन पर महिला पुलिसकर्मी तैनात हैं जिनके द्वारा फोन पर आने वाली प्रत्येक शिकायत का फॉलोअप किया जाता है तब तक कि समस्या का समाधान ना हो जाए।

कोविड–19 में लगाए गए 'लॉकडाउन' में दिन रात ड्यूटी पर तैनात महिला पुलिस अपनी और परिवार की परवाह किए बिना, चिलचिलाती गर्म धूप में भी डटी रहीं। दिन भर लोगों से घर से बाहर ना निकलने की अपील करना, स्वास्थ्य सुरक्षा हेतु जरूरी संदेश देना तो रातों में पैट्रोलिंग से लेकर नाकेबंदी पर भी "लॉ एण्ड ऑर्डर" का जिम्मा बखूबी संभाला, उदाहरण के लिए जयपुर पुलिस प्रशासन की बात की जाए तो महिला पुलिस कर्मियों द्वारा कर्फ्यूग्रस्त इलाकों में 4000 (लगभग) गर्भवती महिलाओं को मेडिकल असिस्टेंस और प्रसूति से लेकर दूसरी जरूरतमंद महिलाओं को लगभग 40,000 हजार सैनीटरी पैडस पहुँचाए। 22 मार्च से अगस्त 2020 तक लगभग 90 फीसदी घरों को फायर बिग्रेड की गाड़ियों से सैनेटाईज करने वाली 180 दबंग और साहसी "कॉरोना वॉरियर्स" को सम्मानित किया जा चुका है।

एडिशनल डी.सी.पी व निर्भया स्क्वायड की नॉडल ऑफिसर सुनीता मीना ने बताया कि लॉकडाउन की शुरूआत में हमें भी आने वाली मुश्किलों का अन्दाजा नहीं था फिर भी निर्भया स्क्वायड की 213 महिला ऑफिसर में से एक ने मुझसे छुट्टी तक नहीं मांगी और लगातार फील्ड पर डटी रही। इन महिलाओं की बटालियन लॉकडाउन से वर्तमान में भी शहर के अलग – अलग हिस्सों में रात 12 बजे से सुबह 5 बजे तक अलग अलग नाकेबंदी प्वाईंट पर ड्यूटी देती नजर आ जाएंगी। रात्रि गश्त में या नाकेबंदी में महिला पुलिस कर्मी पूरी सजगता और निडरता से ड्यूटी करती हैं। अक्सर इन्हे चैकिंग पॉइंटस पर शराबी, मनचले, शरारती, और अपराधी किस्म के लोगों का सामना करना पड़ता है मगर अपनी वर्दी पर भरोसा रखने वाली जांबाज पुलिस कर्मी बिना किसी डर के अपना दायित्व पूरा करती हैं।

वहीं अक्टूबर 2020 में मास्क पुलिस अभियान के तहत लगभग 5 लाख से अधिक मास्क का वितरण जयपुर कमिशनरेट ने मास्क ही वैक्सीन है संदेश के साथ – साथ निर्भया स्कवायड के द्वारा आमजन में किया गया। अग्निशमन विभाग जयपुर की फायर फाइटर कहीं जाने वाली सीता खटीक ने बताया उनकी फायर ब्रिगेट टीम ने शहर को वीकली सैनेटाईजेशन रूपरेखा के रूट विभागों की ऑफिशियल वेबसाइट पर अपडेट करते हुए "डोर टू डोर" सैनेटाईजेशन किया।

पुलिस एवं सुरक्षा बलों में महिलाओं का योगदान अति महत्वपूर्ण रहा है। महिलाओं द्वारा किस प्रकार इनमें अपनी योग्ताएँ सिद्ध की, उनमें से कुछ इस प्रकार हैः–

वर्ष 1973 में भारतीय पुलिस सेवा में एक क्रांति का सूत्रपात हुआ जब किरन बेदी ने, लोक सेवा आयोग के तमाम हतोत्साहित करने वाले रवैये को चुनौती की तरह लिया और भारत की पहली महिला आई.पी.एस. अधिकारी बन, महिलाओं की दक्षता के नए कीर्तिमानों का प्रवेश द्वार तैयार किया। उनके द्वारा किए तमाम 'ऑपरेशन व प्रणालियाँ सभी पुलिस अधिकारियों का मार्गदर्शन करने वाले सफलतम प्रयास रहे।

वर्ष 1992 में महिलाओं को भारतीय सेना की विविध शाखाओं में 'शार्ट सर्विसेज कमीशन' के माध्यम से प्रवेश का शुभारंभ हुआ। 1992 में पहली बार महिलाओं को 'मेडिकल रोल्स' चिकित्सकीय परिचर्या से इतर भूमिका निभाने का मौका मिला जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। प्रिया झींगन (25 अन्य महिलाओं के साथ) भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त करने का गौरव प्राप्त कर चुकी हैं।

अगस्त 1966 में फ्लाइट लेफ्टिनेंट कांता हांडा, भारतीय वायु सेना की पहली महिला वायु सेनाधिकारी रहीं जिन्हें भारत–पाक युद्ध (1965) के दौरान दी गई सेवाओं के लिए 'कमेंडेशन' प्राप्त हुआ। वहीं करगिल विजय में 1999 में पहली फ्लाईट अधिकारी गुंजन सक्सेना का योगदान भी उल्लेखनीय है। सितंबर 2020 तक 1875 महिला अधिकारी वायुसेना में सेवाएं दे रही थी, जिनमें 10 पायलट व 18 नेवीगेटर शामिल थी। 1961 में पहली महिला मेडिकल ऑफिसर के रूप में भारतीय जल सेना ज्वाइन करने वाली डॉ. बबीता घोष 1976 में, भारतीय जल सेना में कमांडर रैंक प्राप्त करने वाली पहली महिला अधिकारी बनी।

भारतीय थल सेना, जल सेना और वायु सेना से इतर भारतीय सुरक्षा बलों जैसे विशेष सुरक्षा बल, सशस्त्र बल जैसे – आसाम राईफल्स में अप्रैल 2016, में 1 साल लंबे कड़े प्रशिक्षण के बाद आसाम राईफल्स ने लगभग 100 महिला सैनिकों के पहले बैच की दीक्षांत परेड सम्पन्न कराई जिनकी तैनाती विविध खोज अभियानों, मोबाइल चैक पोस्ट, संदिग्ध महिलाओं की पड़ताल, रोड़ ओपनिंग ऑपरेशन्स, आदि में की गई जहाँ उनकी उपस्थिति काबिले तारीफ हैं।

मार्च 2016 में भारत सरकार द्वारा, केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की इकाइयों– (BSF, CRPF, CISF, ITBP,A R) में महिलाओं की सीधी/प्रत्यक्ष नियुक्ति को मंजूरी दे दी गई। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में तो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा महिला अधिकारी पर्यवेक्षणीय योद्धा के रूप में (सुपरवाइजरी काम्बेट) पहले से नियुक्ति ले रही थी किंतु सीमा सुरक्षा बल और सशस्त्र सीमा बल में क्रमशः 2013 व 2014 से महिला अधिकारियों की नियुक्ति (पर्यवेक्षणीय भूमिका में) की जाने लगी। वहीं इंडो–तिब्बतन बॉर्डर पुलिस में महिलाओं की पर्यवेक्षणीय कॉम्बेट रूपी नियुक्ति 2016 से की जाने लगी।

रेलवे सुरक्षा बल की अपनी महिला इकाई है ''शक्ति स्कवॉड"। वर्ष 2015 में देबाष्मिता चट्टोपाध्याय पहली महिला असिस्टेंट सिक्योरिटी कमिश्नर बनी जिन्होंने आरपीएफ महिला कॉस्टेबल की शक्ति स्क्वॉड का प्रभार लिया।

राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल में पहली महिला कमांडर 2015 में नियुक्ति हुई, सीनियर कमांडेट रेखा नांबियार जिन्होंने उस चौथी बटालियन का नेतृत्व किया जिसमें 1000 से अधिक पुरूष तैनात थे।

देश की सेना की तीनों इकाइयों में 3 सितारा रैंक तक पदोन्नति पाने वाली पहली महिलाएँ चिकित्सकीय इकाई से जुड़ी थी जो सैन्य मैडिकल कॉलेज से ग्रेजुएट/स्नातक डॉक्टर थी। वर्ष 2004 में पुनीता अरोड़ा, भारतीय सेना में लेफ्टीनेंट जनरल पद पर पहुँचने वाली पहली महिला अधिकारी बनी। वर्ष 2005 में उन्होनें भारतीय जल सेना में गमन किया और वहाँ उन्होनें जल सेना की ''वाइस एडमिरल'' रैंक पर पदोन्नति प्राप्त कर पहली महिला अधिकारी कि उत्कर्ष यात्रा को एक स्वर्णिम सोपान दिया। वर्ष 2004 के अंत तक पदमा बंधोपाध्याय, भारतीय वायु सेना की मेडिकल सर्विसेज में ''एयर मार्शलिन" की 3 सितारा रैंक हासिल करने वाली सेना की दूसरी व वायुसेना की पहली महिला अधिकारी बनीं। वही हाल ही में वर्ष 2020 में भारतीय थल सेना की मैडिकल इकाई से, माधुरी कानिटकर लैफ्टीनेंट जनरल रैंक पर पदोन्नत हुई हैं।

यह सभी विविध क्षेत्रों, सैन्य व सुरक्षा बलों की विभिन्न इकाइयों मे अनेक पदों पर अपनी दक्षता और साम्यता को दर्शाने वाले उदाहरण हैं और प्रमाण भी हैं कि कालखंड और कर्मभूमि कोई भी हो, रण हो या रणभूमि, भूमिका कोई भी हो एक महिला रणचण्डी का ही अंश है। वे अपने पराक्रम की परीक्षा और परिणाम दोनों की सूची में अग्रणी रहना जानती है। वर्ष 2018 में महिला अधिकारियों की वायुसेना में सहभागिता लगभग 13.09 प्रतिशत थी, जल सेना में 6 प्रतिशत और थल सेना में 3.80 प्रतिशत रही है जो क्रमशः उत्तरोत्तर बढ़ती रहेगी यही आशा और अपेक्षा है।

वहीं सुरक्षा बलों और सैन्य क्षेत्र में भी महिलाओं की उपलब्धियां स्वयं एक इतिहास रच रही हैं जो विश्व के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं।

–संपादक हिंदी
पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

संदर्भ ग्रंथ

1. मनुस्मृति
2. बोस, मन्दक्रांता – फेसेज ऑफ द फेमिनाइन इन एनसिएण्ट, मिडाइवल एण्ड मॉडर्न इंडिया (ऑक्सफोर्ड, 2000)
3. रोमिला थापर – रीडिंग्स इन अर्ली इंडियन हिस्ट्री (ऑक्सफोर्ड, 2013)
4. डेविड ई.जोन्स (2000) वुमन वारियर्सः ए हिस्ट्रीं
5. विनोद अग्रवाल– इंडियन पोलिस फोर्स हिस्ट्री
6. इंडियन इम्पीरियल पोलिस–ऐतिहासिक पहल
7. आजाद हिन्द फौज
8. भारतीय दंड संहिता–1860, पुलिस अधिनियम–1861
9. भारतीय सेना अधिनियम–1950, भारतीय वायु सेना अधिनियम–1950
10. भारतीय जल सेना अधिनियम–1957, मॉडल पुलिस बिल, 2015
11. पुलिस अधिनियम, 1861, मॉडल पुलिस अधिनियम, 2006
12. मिल्टन सी.(1972) वुमन इन पोलिसिंग
13. स्टेटस ऑफ पुलिसिंग इन इंडिया रिपोर्ट, 2019
14. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 22 फरवरी 2012

ISSN No. : 0970-9398

चंद्रयान–3 से भारतीय महिला वैज्ञानिकों की उड़ान

–प्रो. समिना मुनवर नायकवडी

सृष्टि नहीं नारी बिना, यही जगत आधार।
नारी के हर रूप की, महिमा बड़ी अपार।।

स्त्री, प्रमदा, मानिनी, महिला, योषा, अनेक नामों से संबोधित होने वाली नारी को भारतीय अध्यात्मक जीवन में आदिशक्ति कहा जाता है, सृष्टि के कुदरती कानून ने भी नवसृष्टि निर्माण का वरदान नारी को दिया। प्राचीन काल में नारी को सम्मान और समान स्थान मिला। महर्षि रमण ने कहा कि, "पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए ममता, समाज के लिए शील और जीव मात्र के लिए करुणा संजोने वाली महाकृति का नाम, नारी है।" किन्तु मध्यकाल में भारतीय सामाजिक स्तर पर नारी को समानता का नहीं बल्कि दुय्यम, दास्यता का दर्जा दे नारी को उपेक्षित समझा और पितृकसत्ताक सामाजिक व्यवस्था ने नारी को बालविवाह, सतीप्रथा, देवदासी, दहेज प्रथा, शिक्षा वंचित, परदा प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध, अनमेल विवाह आदि कुप्रथा रीति–रिवाज, परंपरा और संस्कृति के नाम पर नारी को बलि चढाकर, उसकी प्रगति में बाधा बनाई। अंग्रेजी शासन और अंग्रेजी शिक्षा से उत्पन्न नवजागरण ने भारतीय सुधारवादी समाजसुधारक राजाराम मोहन रॉय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि ने नारी उत्थान का आंदोलन खड़ा कर भारतीय समाज सुधार का काम किया।

सन 1829 में राजाराम मोहन रॉय जी ने सती प्रथा पर अंग्रेजी शासन की मदद से प्रतिबंध लगाया, वही 1856 में ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी ने अंग्रेजों द्वारा विधवा पुनर्विवाह का कानून बनाया। ईश्वर चंद्र विद्यासागर और महात्मा ज्योतिबा फुले जी ने कोलकाता और महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा का अभियान चलाकर नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाया। महात्मा ज्योतिबा फुले और न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे आदि ने अपनी पत्नियों सावित्रीबाई और रमाबाई रानडे को शिक्षित कर नारी सुधारणा के कार्य में नयी पहल कर एक को शिक्षिका तो दूसरी को महिला अधिकारों के लिए समाजसुधारक बनाकर सामाजिक, शैक्षणिक और मुक्ति क्रांति को जन्म दिया। शिक्षा का अधिकार प्राप्त कर नारी ने जीवन के हर उस क्षेत्र में खुद को साबित किया, जहां उसे कमजोर और उपेक्षित समझा गया था, नारी ने विकास का नया इतिहास रचा। विज्ञान, भौतिकी, रसायन और चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य, राजनीति, अनुसंधान, शिक्षा, खेल, सैन्य आदि विभिन्न क्षेत्रों में नारी ने अपना योगदान बढ़ाया है। नोबेल पुरस्कार जीतने से लेकर नासा तक पहुंचने तक, महिला ने इतिहास में अपना नाम दर्ज कर, विज्ञान क्षेत्र विज्ञान–प्रौद्योगिकी में अल्पसंख्यक होने के बावजूद भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर, भारतीय महिलाओं ने वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र को व्यापक बना, देश को गौरवान्वित किया। इस क्षेत्र में जिन महिलाओं ने अपना योगदान दिया उन नारियों ने अपने वैज्ञानिक प्रयासों से पृथ्वी और उससे आगे विज्ञान के क्षितिज को अपना बनाकर नारी गरिमा को विस्तृत बनाया है। 14 जुलाई 2023 दोपहर 2:35 बजे श्रीहरिकोटा से उड़ान भरने वाला चंद्रयान–3 चालीस दिनों की लंबी यात्रा पूरी कर 24 अगस्त 2023 शाम 6 बज कर 4 मिनट पर चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरा जिसका उद्देश्य चंद्र की सतह पर उपलब्ध रासायनिक और प्राकृतिक तत्वों, मिट्टी, पानी आदि पर वैज्ञानिक प्रयोग करना। इंडियन स्पेस रिसर्च आर्गेनाईजेशन (ैप्त्व) के इस चंद्रयान–3 मिशन को सफल बनाने में पुरुष वैज्ञानिकों का जितना योगदान रहा उतना ही भारतीय महिला वैज्ञानिकों का भी योगदान रहा है। लगभग 54 महिला इंजीनियर/वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने सीधे चंद्रयान–3 मिशन में काम किया। वे विभिन्न केंद्रों पर काम करने वाली विभिन्न प्रणालियों की सहयोगी और उप परियोजना निदेशक और परियोजना प्रबंधक हैं। चंद्रयान–3 में काम करने वाले कुछ प्रमुख महिला वैज्ञानिकों के परिचय माध्यम से समकालीन महिलाओं के विकास के दौर देखा जा सकता है।

चंद्रयान–3 की प्रमुख भारतीय महिला वैज्ञानिक –

डॉ. रितु कारिधाल – चंद्रयान–3 के मिशन प्रथम उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित और नरम लैंडिंग का प्रदर्शन करना के लिए कार्यरत वैज्ञानिकों में डॉ. रितु कारिधाल प्रमुख थी उन्होंने चंद्रयान–3 की लैंडिंग की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी। डॉ. रितु कारिधाल जी ने चंद्रयान 3 के मिशन में डायरेक्टर के रूप में अपनी भूमिका निभाई। उन्हें भारत की "रॉकेट वुमन" के रूप में जाना जाता है। अपनी पढ़ाई पूर्ण कर वे इसरो से 1997 में जुड़ भारत के मार्स ऑर्बिटर मिशन में डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर के पद पर रह उन्होंने भारत के मंगलयान को मंगल ग्रह पर पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नंदिनी हरीनाथ– अमेरिकी विज्ञान कथा मनोरंजन कार्यक्रम, "स्टार ट्रेक" श्रृंखला को देखकर विज्ञान का अध्ययन के लिए प्रेरित होने वाली नंदिनी हरीनाथ इसरो से जुड़, अपने कार्यकाल में उन्होंने 14 परियोजनाओं पर काम किया। इसरो के मार्स ऑर्बिटर मिशन पर मिशन डिज़ाइन की परियोजना प्रबंधक और उप–ऑपेरशन संचालक के रूप में काम करनेवाली नंदिनी हरीनाथ जी ने भी भारत के चंद्रयान–३ में टेलीमेट्री ट्रैकिंग और कमांड नेटवर्क सेंटर (आई.एस.टी.आर.ए.सी.) में उप–निदेशक के रूप में काम कर अपना योगदान दिया।

कल्पना कालाहस्ती– चंद्रयान–3 मिशन में एसोसिएट प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में कार्यवाली कल्पना कालाहस्ती ने चंद्रयान–3 मिशन में उप परियोजना निदेशन में अपनी अहम भूमिका निभाई। चंद्रयान–3 की सफलता पर कल्पना कालहस्ती ने कहा, "हमने अपना लक्ष्य त्रुटिहीन तरीके से हासिल कर लिया है।" उनका यह वाक्य इस क्षेत्र में आने वाली महिलाओं के लिए प्रेरणादायी रहेगा। चंद्रयान–2 तुलना में इसरो ने चंद्रयान–3 लैंडर को अतिरिक्त ईंधन, मजबूत पैर और अन्य सुधार प्रदान करने के लिए ऑर्बिटर का निर्माण करना इस मिशन की सफलता की प्रथम स्तर था, इस प्रणाली में काम कर कल्पना कालाहस्ती जी ने महिलाओं की कार्यक्षमता को साबित कर दिखाया है।

मौमिता दत्ता – 'मेक इन इंडिया' अवधारणा को साकार करने की दिशा में काम कर रहे चंद्रयान 3 के वैज्ञानिकों में मौमिता दत्ता भी शामिल हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अहमदाबाद की वैज्ञानिक/इंजीनियर के रूप में कार्यरत मौमिता दत्ता को ऑप्टिकल और आईआर सेंसर/उपकरण/पेलोड के विकास और परीक्षण में विशेषज्ञता हासिल है। मार्स ऑर्बिटर मिशन में मौमिता दत्ता ने एमओएम के पांच पेलोड में से एक के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। चंद्रयान 3 में ऑप्टिकल उपकरणों के स्वदेशी विकास में लगी एक समर्पित टीम का नेतृत्व कर मौमिता दत्ता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनुराधा टी.के.जी– सांस्कृतिकता का भार घर और काम में अलग–अलग है इस सोच से काम करने वाली अनुराधा टी.के.जी 1982 में तब इसरो में शामिल हुई, जब इंजीनियरिंग विभाग में बहुत कम महिलाएं थीं, अनुराधा टी.के.जी ने संचार उपग्रहों में विशेषज्ञता हासिल की। वह भारतीय विज्ञानक अनुसंधान केंद्र (इसरो) में पहली औरत हैं, जो 2011 में अभियान – जीसैट 12 की निदेशक बनी। जीएसएटी–10, जीएसएटी–9, जीएसएटी–17 और जीएसएटी–18 संचार उपग्रहों के प्रक्षेपण का निरीक्षण के काम करने के साथ चंद्रयान 3 के संचार प्रक्षेपण का काम कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ऐन. वलरमठी – इसरो के साथ 1984 में जुड काम कर रही ऐन. वलरमठी जी ने इन्सैट 2 I, आईआरएस आईसी, आईआरएस आईडी, टीईएस परियोजनाओं में शामिल रही है।। वह भारत के पहले स्वदेश विकसित रडार इमेजिंग उप रिसैट–1 की परियोजना निदेशक थीं, जो सफलतापूर्वक 2012 में लांच किया गया था। इसरो में वह टी. के. अनुराधा, परियोजना निदेशक जीसैट–12–2011 के बाद किसी प्रतिष्ठित परियोजना का निदेशन करने वाली दूसरी महिला हैं। चंद्रयान–3 के लॉन्चिंग काउंटडाउन ट्रिपल लॉन्च के लिए ऐन. वलरमठी जी की ही आवाज थी। 54 वर्षीय ऐन. वलरमठी जी का 2 सितंबर 2023 हुआ। किंतु आने वाले समय में वे उनके योगदान के कारण वे सदैव स्मरणीय रहेगी।

इन महिला वैज्ञानिकों ने चंद्रयान 3 के मिशन, उसके उद्देश्य को सफल बनाने जैसे– अल्टीमीटरः लेजर और आरएफ आधारित अल्टीमीटर, वेलोसीमीटरः लेजर डॉपलर वेलोसीमीटर और लैंडर हॉरिजॉन्टल वेलोसिटी कैमरा, जड़त्वीय मापनः लेजर गायरो आधारित जड़त्वीय संदर्भ और एक्सेलेरोमीटर पैकेज, प्रणोदन प्रणालीः 800छ थ्रॉटलेबल लिक्विड इंजन, 58छ एटिट्यूड थ्रस्टर्स और थ्रॉटलेबल इंजन कंट्रोल इलेक्ट्रॉनिक्स नौवहन, गाइडेंस एंड कंट्रोल (छळब): पावर्ड डिसेंट ट्रैजेक्टरी डिजाइन और सहयोगी सॉफ्टवेयर तत्व खतरे का पता लगाना और बचाव : लैंडर खतरे का पता लगाना और बचाव कैमरा और प्रसंस्करण एल्गोरिथम लैंडिंग लेग तंत्र उपर्युक्त उन्नत प्रौद्योगिकि तकनीकी निर्माण कार्य में इन महिलाओं ने अपना योगदान दे नारी के हौसलों की उड़ान को सक्षम बना महिला सशक्तिकरण, नारी विकास में चाँद की उपस्तिथि दर्ज की हैं।

–डॉ. पतंगराव कदम कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
हिंदी विभाग, पेण, रायगढ़, महाराष्ट्र।

संदर्भ ग्रंथ–

1. भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन 1857–1947, डॉ. मुद्‌गल, चंद्रलोक प्रकाशन, 128/106, जी ब्लॉक, किदवई नगर कानपूर, पृ. 51
2. नारीः स्थिति, संघर्ष और चुनौतियाँ, डॉ. सीमा सिंह, प्रकाशक कल्पना प्रकाशन बी–1770, जहाँगीर पुरी दिल्ली–110 083 7 पृ. 15
3. https://rocket&women.com@meet&rocket&women@
4. https://www.isro.gov.in@Chandrayaan3&Details-html

ISSN No. : 0970-9398

आँध्र प्रदेश का एक सितारा: श्रीमती पोणका कनकम्मा

– डॉ. वी एल नरसिंहम शिवकोटी

'व्यक्ति' का बहुवचन 'समाज' होता है। यह समाज सतत् बदलता और आगे बढ़ता रहता है। सतत् बदलने वाले इस सामाजिक परिवेश का लेखा–जोखा रखने और सामाजिक विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के उत्तरदायित्व का निर्वहन 'इतिहास' करता है। संस्कृत वैयारकणों के अनुसार 'इतिहास' शब्द की व्युत्पत्ति – 'इति+ह+आस' अर्थात् निश्चित रूप से ऐसा ही हुआ था। इतिहास शब्द हमारे कई प्राचीन ग्रंथों में भी देखने को मिलता है। यहाँ तक कि अथर्ववेद में भी इस का उल्लेख है। अतः इतिहास शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि "व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया की महत्वपूर्ण, विशिष्ट एवं सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं का कालक्रम अनुसार लिखा हुआ विवरण; तथ्यों व घटनाओं का कालक्रमानुसार विवेचन।"

अब सवाल उठता है कि इतिहास की क्या आवश्यकता है? साफ ज़ाहिर है कि इतिहास हमें यह समझने में सहायक सिद्ध होता है कि किस प्रकार समाज अपने वर्तमान स्वरूप में आया है। इतिहास के अध्ययन से हम कालक्रम में घटित घटनाओं की पृष्ठभूमि और इसके कारण समझ सकते हैं। साथ ही, उन कारणों का विश्लेषण करने की क्षमता भी प्राप्त करते हैं। इससे वर्तमान समाज का सही आकलन करते हुए आगे जाकर एक बेहतर समाज के निर्माण में अपनी भूमिका सही ढंग से निभा सकते हैं।

इतिहास हमारे समाज की रुचि, संस्कृति और भावनाओं को समझने में मदद करता है। यह हमें अपने आदर्शों को जानने–समझने का अवसर प्रदान करता है। इतिहास के अध्ययन में हम उन घटनाओं व व्यक्तियों के बारे में समझ सकते हैं जिन्होंने इस समाज, देश और विश्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान परिस्थितियों में इतिहास की आवश्यकता के मद्देनज़र कहा जा सकता है कि 'जब स्मृति अथवा अतीत का, वैज्ञानिक अध्ययन के सहारे क्रमबद्ध किया जाता है, तब इतिहास का जन्म होता है। परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसके दृष्टिकोण में भी परिवर्तन देखने मिल रहा है। आजकल इतिहास के नाम पर घटनाओं का मात्र क्रमबद्ध विवरण पर्याप्त नहीं बल्कि उनसे जुड़ी परिस्थितियों का नियमबद्ध अध्ययन भी अनिवार्य हो गया है।

इतिहास हमेशा बहु–आयामी होता है। किसी निश्चित समय–सीमा के ऐतिहासिक अध्ययन में सामाजिक–आर्थिक–राजनैतिक–धार्मिक आदि जैसे कई आयाम जुड़ जाते हैं। इन पहलुओं के अलग–अलग अध्ययन की आवश्यकता भी महसूस की जाती है। यही कारण है कि इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधित्व रहता है। ऐसे में 'दुनिया की आधी आबादी' अर्थात् इतिहास के स्त्री–पक्ष के अध्ययन के बिना वह इतिहास अधूरा ही रह जाता है।

आधुनिक समय में एक ऐसे इतिहास–निर्माण की माँग की जा रही है जो सामाजिक विकास में नारियों के प्रतिनिधित्व को भी प्रतिबिंबित करता हो। वर्तमान समय में कई स्वैच्छिक संस्थाएँ इस दिशा में गहन अध्ययन कर इतिहास के पुनर्लेखन की आवाज़ उठा रही हैं। हाँ, इन आवाज़ों के कुछ सुपरिणाम भी सामने आए। कई प्रकार के अध्ययन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार व अनुसंधान के बल पर इतिहस को और समृद्ध बनाया जा रहा है।

हर किसी ने प्रश्नचिह्न लगाया इतिहास के क्रम पर!
हर किसी ने कोशिश की इतिहास को बदलने की!

अनगिनत सामाजिक आंदोलन व सामूहिक प्रयासों के बावजूद इतिहास के कई पन्ने विस्मृत ही रह गए। आंध्र प्रदेश के इतिहास का एक ऐसा ही विस्मृत पन्ना है – श्रीमती पोणका कनकम्मा।

तेलुगू के प्रमुख प्रगतिशील कवि–लेखक श्री गुरजाड़ा अप्पाराव ने कहा कि "आधुनिक स्त्री इतिहास का पुनर्लेखन करेगी। " उनका यह नारा पूरे आंध्र प्रदेश में इस क़दर फैल गया और महिलाओं को प्रभावित किया कि राज्य के हर प्रांत से महिलाएँ सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं। इनमें से अधिकतर महिलाओं ने समाज सुधार विशेषकर स्त्री–शिक्षा को अपने कार्य–क्षेत्र के रूप में चुना था। ऑध्र प्रदेश के इतिहासकारों ने भी यथासाध्य आँध्र प्रदेश के इतिहास–निर्माण में इन महिलाओं की उपस्थिति का उल्लेख किया लेकिन मात्र नामोल्लेख।

आँध्र प्रदेश के इतिहास के अध्ययन के दौरान केवल इतना उल्लेख मिलता है कि "नेल्लूर की पोणका कनकम्मा ने खादी के कपड़े बेचे। स्वतंत्रता संग्राम के लिए महात्मा गाँधी जी को अपने सोने के कंगन दे दिए और नमक सत्याग्रह के दौरान जेल भी गईं।" इतिहासकारों ने बस एक–दो वाक्यों में उनकी पूरी जिंदगी समेट दी। जबकि उन्होंने इस देश के लिए अपनी पूरी जिंदगी ही समर्पित कर दी थी।

अब हम देखेंगे कि कौन हैं पोणका कनकम्मा?

श्रीमती पोणका कनकम्मा का जन्म 10 जून, 1892 को ऑंध्र प्रदेश के नेल्लूर जिले के मिनगल्लू नामक गाँव में हुआ था। इनका बचपन और आगे की पूरी जिंदगी पोट्लपूड़ी नामक एक छोटे–से गाँव में ही गुज़री। फिर भी समाज सुधारकों के प्रभाव में आकर विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में भाग लेते हुए कनकम्मा ने स्वयं को एक 'आधुनिक महिला' के रूप में रूपायित किया।

कनकम्मा की ज़िदंगी को दो भागों में विभाजित कर देख सकते हैं – गाँधी जी के प्रभाव में आने से पहले की और उसके बाद की। महात्मा गाँधी जी के भाषणों से परिचित, प्रभावित होने से पहले कनकम्मा ने सन् 1915 में मद्रास में ओ वी चिदंबरम पिल्लै, गुंटूर के उन्नवा लक्ष्मीनारायण जैसे अतिवादियों से मिलकर पिस्तौल आदि आयात कर सही समय या मौके के इंतज़ार किया। उसी दौरान इन्होंने प्रतिबंधित साहित्य की सुरक्षा की जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ले रखी थी। लेकिन महात्मा गाँधी जी के प्रभाव में आने के बाद कनकम्मा ने स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े लगभग सभी कार्यक्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया था। महात्मा के प्रभाव में आने के बाद के कनकम्मा के व्यवहार और जीवन–शैली में जो परिवर्तन आए, उसका उल्लेख महत्वपूर्ण हो जाता है। कनकम्मा ने 'हरिजनों' की शिक्षा के लिए पोट्लपूड़ी गाँव में एक पाठशाला खोली; चरखा चलाया; अहिंसा का प्रचार किया; दलित बस्तियों में हैज़े के प्रकोप पर उनकी सेवा–सुश्रूषा व चिकित्सा की आवश्यक व्यवस्थाएँ करवाई। इतना ही नहीं बल्कि उन्होंने स्वयं नेल्लूर की गली–गली में घूमते हुए खादी भी बेची।

कनकम्मा ने ज्यादा कुछ शिक्षा–दीक्षा ग्रहण नहीं की थी। लेकिन शिक्षा के प्रति उनकी जो गहरी रुचि रही उसी का मूर्त रूप है नेल्लूर में कस्तूरीदेवी विद्यालय की स्थापना। गरीब दलित लड़कियों के लिए पाठशाला की स्थापना उनका प्रमुख लक्ष्य रहा था। कड़ी मेहनत से स्कूल की स्थापना से लेकर उसे अपने चरम पर पहुँचाया कनकम्मा ने। लेकिन अंततः यह विद्यालय पूँजीपतियों के हवाले हो गया। लेकिन हिम्मत देखें कनकम्मा की कि हार की इसी नींव पर उन्होंने 'श्रमिक पाठशाला' नाम से एक और पाठशाला की स्थापना की थी। इससे स्पष्ट होता है कि मुसीबतों का डटकर सामना करना और अपनी हार की नींव पर ही दूसरे लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना कनकम्मा का जीवन–दर्शन रहा।

अध्ययन के क्रम में एक तार्किक बात सामने आती है कि दुर्गाबाई देशमुख जैसी महिला नेताओं ने नमक सत्याग्रह के दौरान जेल काटकर सन् 1933 में रिहा होने के बाद स्त्री उद्धार के लिए पाठशालाओं तथा स्वैच्छिक सेवा संस्थाओं की स्थापना की थी। लेकिन इन सबसे पहले ही गाँधी जी के भाषणों से प्रभावित होकर कनकम्मा ने सन् 1923 अक्तूबर माह में ही नेल्लूर में कस्तूर बाँ के नाम पर जाति–पॉति मुक्त बालिका विद्यालय 'कस्तूरी देवी बालिका विद्यालय' की स्थापना की थी। ध्यातव्य है कि महात्मा गाँधी जी ने इस विद्यालय की नींव रखी थी जबकि टंगूटूरी प्रकाशम पंतुलू जी ने इस विद्यालय का उद्घाटन किया था। सन् 1913 में अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर सुजनरंजनी संस्था, विवेकानंद पुस्तकालय की स्थापना की थी। 'श्रीराम प्रसाद कोश–निलयम' और 'गोखले रीडिंग रूम' ऐसे कुछ और अन्य उदाहरण हैं। इसके अलावा कनकम्मा जी ने यज्ञ आदि में पशु हिंसा के विरोध में नेल्लूर में आंदोलन भी किए थे।

शायद यही कारण रहा होगा कि स्वयं दुर्गाबाई देशमुख ने कनकम्मा जी को अपना गुरु तथा मार्गनिर्देशक माना। सन् 1963 में कनकम्मा जी के देहांत का समाचार सुनकर दुर्गाबाई देशमुख की टिप्पणी ध्यातव्य है कि "आज आंध्र प्रदेश ने एक साहसी महिला, समाजसेविका और एक उत्तम चरित्र वाली देशभक्त को खो लिया।"

श्रीमती कनकम्मा जी को कवि–पंड़ितों का हमेशा सान्निध्य मिलता रहा। तेलुगु के स्थापित व लब्धप्रतिष्ठित लेखक श्री श्रीपाद सुब्रह्मण्य शास्त्री जी अपने लेखन–कार्य के सिलसिले में लगभग एक वर्ष तक कनकम्मा जी के घर पर ठहरे थे। इसी प्रकार सन् 1907 में बिपिन चंद्र पाल के नेल्लूर दौरे पर कनकम्मा जी ने उनका स्वागत–सत्कार किया। इनके अलावा काशीनाथुनि नागेश्वर राव, रायप्रोलू सुब्बा राव, दुग्गिराला गोपाल कृष्णय्या, गाडिचर्ला हरिसर्वोत्तम राव प्रभृति महानुभावों का सान्निध्य भी कनकम्मा जी को मिलता रहा।

सन् 1921 में कांग्रेस की वार्षिक सभा अहमदाबाद में संपन्न हुई थी। कनकम्मा जी अखिल भारतीय कांग्रेस समाज की सदस्या बनीं। सदस्य के रूप में दो वर्ष तक ऑंध्र प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया था उन्होंने। इसी से प्रेरणा ग्रहण कर सन् 1922 में कनकम्मा जी ने नेल्लूर महिला कांग्रेस समाज की स्थापना कर राजनीति में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज की थी।

इसी सिलसिले में 1923 में देशबंधु चित्तरंजन दास जी का नेल्लूर आगमन हुआ था। जिनसे कनकम्मा जी के राजनीतिक जीवन के लिए काफी प्रेरणा मिली थी। इसी क्रम में नेल्लूर तथा आसपास के गांव में घूमकर 'तिलक स्वराज निधि' के लिए लगभग रु. 3, 000/– की राशि इकट्ठा की। इसी प्रकार का एक और उदाहरण कनकम्मा जी की सामाजिक सक्रियता को दर्शाता है। सन् 1927–28 के दौरान आँध्र प्रदेश के रायलसीमा प्रांत में भयानक अकाल पड़ा। नेल्लूर से चंदा–राशि वसूल कर कनकम्मा और उनके दल ने उन लोगों की मदद की थी।

सन् 1930 में कनकम्मा जी जेल गई थीं। वहाँ भी कनकम्मा जी को दुव्वूरी सुब्बम्मा, उन्नव लक्ष्मीबायम्मा जैसी राजनीतिक रूप से सक्रिय महिलाओं की संगति मिली। यह सुखद हर्ष की बात है कि श्री मोटूरी सत्यनारायण जी कनकम्मा जी के हिंदी के प्रथम गुरु रहे। उन्होंने जेल में ही कनकम्मा जी को हिंदी सिखाई। कनकम्मा जी सन् 1932 में एक और बार जेल गईं। इस समय बेजवाड़ा गोपाल रेड्डी और कनकम्मा जी को एक साथ गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने लगभग डेढ़ साल तक जेल की जिंदगी बितायी। उसी दौरान अपने हिंदी ज्ञान का संवर्द्धन करते हुए उन्होंने कुछ रचनाओं का हिंदी से तेलुगु में अनुवाद भी किया था।

कनकम्मा जी ने साबरमती आश्रम से प्रेरणा प्राप्त कर 'पिनाकिनी सत्याग्रहाश्रम' की योजना बनायी। इस आश्रम के उद्घाटन के लिए दिनांक 07 अप्रैल, 1921 को महात्मा गाँधी नेल्लूर पहुँचे। इसी दौरान कनकम्मा जी और उनकी माता जी सहित कई महिलाओं ने अपने सारे गहनें महात्मा गाँधी जी को दान में दे दिए थे।

कनकम्मा जी सामाजिक आंदोलनों के साथ–साथ लेखन–कार्य में भी सक्रिय थीं। बीस साल की उम्र में ही उन्होंने कविताएँ, लेख आदि लिखना शुरू कर दिया था। 'शशिरेखा', 'हिंदू सुंदरी', 'अनुसूया' जैसी तत्कालीन प्रमुख पत्रिकाओं के लिए कनकम्मा जी नियमित रूप से लिखा करती थीं। इसके अलावा उन्होंने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की थीं। राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में सन् 1920 के आसपास लिखा गया उनका ऐतिहासिक उपन्यास 'रानी पद्मिनी' इस दृष्टि से एक उल्लेखनीय रचना है। लेकिन एक अग्नि दुर्घटना में यह कृति जल गई। अब यह अलभ्य है। जेल–जीवन के दौरान कनकम्मा जी ने न केवल हिंदी सीखी बल्कि फ्रेंच क्रांति की पृष्ठभूमि में लिखित 'उरि' (फाँसी) कृति का हिंदी में अनुवाद भी किया था। इसी तरह 'आदि कथा' शीर्षक एक और कहानी का भी उन्होंने तेलुगू से हिंदी में अनुवाद किया था। 'स्वप्नदृश्यम' कनकम्मा जी की स्वरचना है। एक और हर्ष की बात है कि श्रीमती कनकम्मा जी ने 'कनकपुष्यरागम' शीर्षक से अपनी आत्मकथा भी प्रकाशित की। साथ ही, कनकम्मा जी ने समय–समय पर विभिन्न सामाजिक आंदोलनों के क्रम में कई भाषण भी दिए थे। कनकम्मा जी इतिहास–निर्माण में स्त्री की भूमिका को लिपिबद्ध करने पर जोर दिया करती थीं। इसी प्रकार ग्रांथिक भाषा के स्थातन पर सरल–व्यावहारिक भाषा के प्रयोग को उन्होंने प्रोत्सा्हित किया था। इस प्रकार के उनके विचारों का उल्लेख समय–समय पर उनके द्वारा दिए गए भाषणों में मिलता है।

कनकम्मा जी को एक–एक कर कई आर्थिक–पारिवारिक समस्याओं ने घेर लिया था। धन–संपत्ति का नुकसान, पति–वियोग, इकलौती बेटी की असमय मृत्यु और इन सबसे बढ़कर अपनी मानस–पुत्री कस्तूरीदेवी विद्यालय के हाथ से निकल जाने से कनकम्मा जी अंदर से बहुत कमज़ोर हो गईं। फिर भी अपने आपको सँभालते हुए इन स्थितियों से पार पाने के लिए कनकम्मा जी ने आध्यात्मिकता की शरण ली। उन्होंने सन् 1935 से 1943 तक अरुणाचल के श्रीरमणाश्रम और नेल्लूर जिले के श्री रामयोगी आश्रम में तापसी की जिंदगी बितायी।

कनकम्मा जी के द्वारा स्थापित श्रमिक विद्यालय की के लिए खुद की जगह नहीं थी। जगह की कमी महसूस की जा रही थी। नेल्लूर के तत्कालीन म्युनिसिपल चेयरमेन ए सी सुब्बा रेड्डी ने सरकार की ओर से स्कूल के लिए जगह की व्यवस्था करवाई थी। स्कूल का 'पोणका कनकम्मा बालिका विद्यालय' के रूप में पुनःनामकरण किया गया। वर्तमान में, नेल्लूर में कनकम्मा जी के नाम पर बचा अकेला स्मृति–चिह्न यह एक स्कूल ही है।

आँध्र प्रदेश का नेल्लूर शहर नेताओं की इतनी सारी मूर्तियों से भरा पड़ा है कि स्वतंत्रता आंदोलन के लिए अपनी पूरी जिंदगी न्योछावर कर देने वाली कनकम्मा जी की मूर्ति के लिए जगह कम पड़ गई। यह खेद की बात है। खैर, इतने बड़े कस्तूरी देवी विद्यालय परिसर में स्थापित करने के लिए बनी कनकम्मा की मूर्ति तीस साल से एक बंद कमरे में पड़ी हुई है। आशा है कि इतिहास का यह विस्मृत पन्ना शीघ्र ही प्रकाश में आएगा। इतिहास के ऐसे कई अन्य विस्मृत पन्नों को भी प्रकाश में लाने की जिम्मेदारी केवल सरकार या किसी व्यक्ति / व्यक्ति–समूह / संस्था की नहीं बल्कि यह हममें से प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी है। आशा है कि टेक्नोलॉजी, आधुनिक संचार व सामाजिक माध्यमों के सहारे हम अपनी यह जिम्मेदारी पूरी करने में कृतार्थ होंगे और आने वाली पीढ़ियों को तथ्यात्मक इतिहास से परिचित कराकर राष्ट्र–निर्माण में योगदान देंगे।

–सहायक प्रबंधक (मा.सं.–रा.भा.)
भारत डायनामिक्स लिमिटेड
हैदराबाद

ISSN No. : 0970-9398

परिवार और समुदाय निर्माण में महिलाओं की भूमिका: हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में

–डॉ. सोनाली मल्होत्रा

परिचय

सुंदर, शांत, गौरवमयी और अतुलनीय हिमाचल प्रदेश, प्रकृति की भव्यता के प्रमाण के रूप में अपनी शान में सीना तान कर खड़ा है। अपने विस्मयकारी परिदृश्यों से परे, राज्य समुदाय की अदम्य भावना, पारिवारिक मूल्यों से प्रतिष्ठित और अपनी संस्कृति की एक अलग पहचान रखता है। इसी सुरम्य परिदृश्य के बीच, पारिवारिक और सामुदायिक बंधनो की जीवंत वास्तुकार यहाँ की महिलाएं अपना संघर्षमयी जीवन बिताती हैं। इस लेख में हिमाचल प्रदेश की महिलाओं द्वारा निभाई जाने वाली असंख्य भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही, इस लेख में हिमाचल प्रदेश की महिलाओं द्वारा उनके परिवारों के पोषण, खेती–बाड़ी, कामकाज और उनके द्वारा सकारात्मक सामाजिक परिवर्तनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर भी बात की गई है।

हिमाचल प्रदेश, बर्फ से ढकी अपनी चोटियों और हरी–भरी घाटियों के साथ, एक ऐसा स्वर्ग है जो परंपरा और प्रगति के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण को दर्शाता है, यहाँ की महिलाएँ केवल निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं बल्कि परिवर्तन की सक्रिय भागीदार हैं। पारिवारिक क्षेत्र में, हिमाचल प्रदेश में महिलाएं गुमनाम नायिकाएँ हैं, जो आधुनिकता के साथ अपनी परम्पराओ को संतुलित करने में माहिर हैं। सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करने से लेकर शिक्षा प्रदान करने तक, ये महिलाएं अपनी संतानों के चरित्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऐसे समाज में जहां परिवार आधारशिला है, महिलाएं वास्तुकार हैं, जो एक ऐसे वातावरण को सृजित करती हैं जो व्यक्तिगत विकास और सामूहिक कल्याण दोनों का विकास करता है। हिमाचल प्रदेश को देवी देवताओं की भूमि भी कहा जाता है, यहाँ "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" इस थीम के अंतर्गत मंडी में अंतराष्ट्रीय मेले के दौरान 1008 कन्याओं का सामूहिक पूजन किया गया जो बाद में लिम्का बुक ऑफ रेकॉर्ड्स 2020 में दर्ज किया गया जो कि पूरे भारत के लिए बड़े गर्व की बात है।

यहाँ की महिलाएं न केवल सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत के रूप में खड़ी हैं बल्कि पारिवारिक क्षेत्र से आगे बढ़ते हुए, सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करने वाली बाध्यकारी शक्ति हैं जो महिला सशक्तिकरण के द्वारा अपनी सामूहिक शक्ति का लाभ उठाकर, एक ऐसा सामूहिक जाल तैयार करती हैं जो न केवल पूरे समुदाय का उत्थान करता है बल्कि उनके प्रयास रूढ़िवादिता को चुनौती देने और बाधाओं को तोड़ने में सक्षम हैं और भावी पीढ़ियों को पारंपरिक सीमाओं से परे अपने लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनका लचीलापन और दृढ़ संकल्प न केवल सामाजिक धारणाओं को बदल रहा है, बल्कि लंबे समय से चले आ रहे लैंगिक मानदंडों को भी खत्म कर रहा है, और अधिक समावेशी और न्यायसंगत समाज को बढ़ावा दे रहा है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सांस्कृतिक समृद्धि से परिपूर्ण और ऐतिहासिक परिदृश्य समेटे हुए हिमाचल प्रदेश में महिलाओं की अलग–अलग भूमिकाओं से आगामी पीढ़ी को प्रेरणा और शक्ति मिल रही है। ऐतिहासिक कथाएँ निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को रेखांकित करती हैं, उन्हें निष्क्रिय पर्यवेक्षकों के रूप में नहीं बल्कि उनके समुदायों के सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने में गतिशील योगदान कर्ताओं के रूप में चित्रित करती हैं। मातृवंशीय वंश ने एक अनूठी संरचना प्रदान की जहां महिलाओं को विरासत, संपत्ति के अधिकार और सामुदायिक मामलों के मामलों में अपनी बात कहने का अधिकार था। उनकी आवाज़ें पारिवारिक परिषदों के पवित्र कक्षों में गूँजती थीं, जहाँ निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते थे, जिससे एक संतुलन सुनिश्चित होता था जिसमें दोनों लिंगों के दृष्टिकोण और ज्ञान पर विचार किया जाता था।

ऐतिहासिक अभिलेखों से महिलाओं के नेतृत्व वाली व्यापार पहल और कृषि गतिविधियों के अस्तित्व का पता चलता है, जहां उनको चतुर व्यापार कौशल और कृषि विशेषज्ञता सामुदायिक आजीविका को बनाए रखने में सहायक थी। हालाँकि, बाहरी प्रभावों और सामाजिक परिवर्तनों के साथ परिवर्तन की बयार इस क्षेत्र में बह गई। ऐतिहासिक मातृसत्तात्मक ताने–बाने को लचीला होते हुए भी चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योंकि बाहरी ताकतों ने हिमाचली समाज में नई गतिशीलता ला दी। जैसे–जैसे राजनीतिक और आर्थिक संरचनाएँ विकसित हुईं, कुछ पारंपरिक प्रथाओं में संशोधन हुए, जिससे परिवारों के भीतर शक्ति की गतिशीलता प्रभावित हुई।

ISSN No. : 0970-9398

कुल्लू दशहरा 2015 में 9892 महिलाओं ने एक नाटी प्रस्तुति कर गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाया

हिमाचल प्रदेश का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एक मनोरम कथा को उजागर करता है जहां महिलाएं न केवल अभिन्न भागीदार थीं, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में गतिशील और प्रभावशाली भी थीं। स्वायत्तता और प्रभाव की विशेषता वाली मातृसत्तात्मक परंपराओं ने महिलाओं को पारिवारिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आयामों को आकार देने के लिए एक अनूठी पृष्ठभूमि प्रदान की। इस ऐतिहासिक संदर्भ को समझने से हमें हिमाचली महिलाओं के लचीलेपन की सराहना करने की अनुमति मिलती है, जो अपने ऐतिहासिक योगदान की समृद्ध विरासत को बरकरार रखते हुए उभरते सामाजिक परिदृश्य को आगे बढ़ाती रहती हैं।

पारिवारिक गतिशीलता

आज हिमाचल प्रदेश की महिलाएं अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए गृहिणी की पारंपरिक भूमिका से आगे निकल कर अपनी नवीन पहचान के साथ आगे आ कर बहुआयामी स्तंभों के रूप में उभर रही हैं। इन भूमिकाओं को आकार देने वाला एक उल्लेखनीय पहलू शिक्षा पर क्षेत्र का जोर है, जो महिलाओं को पारंपरिक घरेलू कर्तव्यों से परे अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए सशक्त बनाता है। इस विकास ने एक ऐसे प्रतिमान को जन्म दिया है जहां महिलाएं अपने पुरुष समकक्षों के साथ खेत, फसल योजना, पशुधन प्रबंधन और संसाधन आवंटन में भूमिका निभाते हुए सक्रिय रूप से कृषि कार्यों में संलग्न हो कर इन से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। कृषि गतिविधियों में परिवार के पुरुष और महिला सदस्यों के बीच तालमेल, लिंग–आधारित सीमाओं से परे, आजीविका निर्वाह के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है। यह साझा जिम्मेदारी न केवल परिवारों की आर्थिक नींव को मजबूत करती है, बल्कि समानता का माहौल भी बनाती है, परिणामस्वरूप परस्पर निर्भरता लचीलापन और अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देती है, जो हिमाचल प्रदेश के चुनौतीपूर्ण इलाकों में महत्वपूर्ण गुण हैं।

इसके अलावा, पारिवारिक और सामुदायिक संदर्भों में महिलाओं के सशक्तिकरण का क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है और हिमाचल प्रदेश के समग्र कल्याण में योगदान देता है। स्थानीय शासन और सामुदायिक विकास परियोजनाओं में उनकी सक्रिय भागीदारी सकारात्मक परिवर्तनों के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है, जो उनके समुदायों की सामूहिक नियति को आकार देने में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है। महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण ने न केवल घरों में उनकी भूमिकाओं का विस्तार किया है, बल्कि क्षेत्र के भरण–पोषण के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में उनकी उपस्थिति को भी फिर से परिभाषित किया है। मातृसत्तात्मक प्रभाव, सहयोगात्मक पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ मिलकर, महिलाओं को प्रमुख निर्णय निर्माताओं के रूप में स्थापित करता है, समानता और लचीलेपन को बढ़ावा देता है। जैसे–जैसे महिलाएं बदलती भूमिकाओं में आगे बढ़ रही हैं, उनका योगदान हिमाचल प्रदेश के सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण बना हुआ है।

सामुदायिक निर्माण

हिमाचल प्रदेश में महिलाएं सामुदायिक निर्माण के क्षेत्र में एक निर्णायक वास्तुकार के रूप में उभरी हैं। विभिन्न स्वयं सहायता समूहों और सामुदायिक संगठनों के माध्यम से उत्साहपूर्वक जुड़कर, ये महिलाएं समग्र रूप से समाज के उत्थान के लिए बनाई गई पहलों में सक्रिय रूप से योगदान देती हैं। सामुदायिक निर्माण की खोज में, हिमाचल प्रदेश में महिलाओं ने स्वयं सहायता समूहों और सामुदायिक संगठनों का गठन किया है और उनमें सक्रिय रूप से भाग लेती हैं जो सहयोग और सशक्तिकरण के लिए गतिशील केंद्र के रूप में काम करते हैं। ये अवसर कौशल बढ़ाने, उद्यमिता को बढ़ावा देने और मूल्यवान ज्ञान के आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। इन समूहों में एकजुट होने वाली महिलाओं की विविध श्रृंखला अनुभव और विशेषज्ञता की समृद्धि लाती है, एक सामूहिक शक्ति का निर्माण करती है जो जमीनी स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाती है, चाहे यह प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, या सहयोगी उद्यमों के माध्यम से हो, ये पहल महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं से आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाती हैं, सामुदायिक विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में उनकी क्षमता को उजागर करती हैं।

ISSN No. : 0970-9398

सांस्कृतिक सदन मंडी में 24–27 अप्रैल 2023 को नेहा वत्सल हिमाचली ज्वेलरी डिज़ाइनर द्वारा वर्कशॉप और प्रदर्शनी, जिसमें हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक आभूषणों को नए डिजाइन के साथ बनाया गया है।

ग्रामीण परिदृश्य में, महिलाएं सामुदायिक निर्माण और सांस्कृतिक विरासत की संरक्षक के रूप में उभरती हैं, जो पारंपरिक कला और शिल्प रूपों को संरक्षित करती हैं जो हिमाचल प्रदेश की पहचान का अभिन्न अंग हैं। महिलाएं, अपने कौशल को स्थायी आजीविका में लगाती हैं। स्थानीय बाजारों, मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेकर, वे न केवल अपने परिवारों की आर्थिक भलाई में योगदान देते हैं, बल्कि आगंतुकों को हिमाचल प्रदेश की कलात्मक समृद्धि की एक प्रामाणिक झलक प्रदान करके पर्यटन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेहा वत्सल, हिमाचली ज्वेलरी डिज़ाइनर, जो कि हिमाचल प्रदेश के आभूषणों को आधुनिक लूक के साथ प्रस्तुत करते हुए, देश के कोने–कोने में पहुंचा रही हैं इन्होंने बिछू बुटी का प्रयोग कर ऐसे आभूषण बनाएँ हैं जो की लोगों में बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं।

इसके अलावा, महिलाओं के बीच सहयोगात्मक भावना भौगोलिक सीमाओं को पार कर नेटवर्क बनाती है जो सामुदायिक पहल के प्रभाव को बढ़ाती है। समुदायों के बीच विचारों, अनुभवों और संसाधनों का आदान–प्रदान महिलाओं के नेतृत्व वाले प्रयासों के सामूहिक लचीलेपन को और मजबूत करता है हिमाचल प्रदेश में सामुदायिक निर्माण में महिलाओं की भूमिका सशक्तीकरण, सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक आजीविका के धागों से बुना गया एक गतिशील परिदृश्य है। स्वयं सहायता समूहों से लेकर पारंपरिक कलाओं के जीवंत प्रदर्शन तक, महिलाएं सबसे आगे खड़ी हैं और ऐसे नेटवर्क बना रही हैं जो पारंपरिक भूमिकाओं और भौगोलिक बाधाओं से परे हैं। चूँकि वे अपने समुदायों की सांस्कृतिक जीवंतता और आर्थिक लचीलेपन में योगदान देना जारी रखती हैं, हिमाचल प्रदेश में महिलाएँ सूक्ष्म और वृहद दोनों स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देने में सामूहिक कार्रवाई की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं।

शिक्षा और सशक्तिकरण

हिमाचल प्रदेश में विकसित हो रहा शैक्षिक परिदृश्य एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में उभरा है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए एक गतिशील उत्प्रेरक के रूप में कार्य कर रहा है, जैसे–जैसे महिलाएं उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करती हैं, वे न केवल लाभार्थी बन जाती हैं बल्कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय योगदानकर्ता बन जाती हैं और पारिवारिक और सामुदायिक दोनों स्तरों पर प्रभाव डालती हैं। शिक्षा ने हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के लिए संभावनाओं का एक दायरा खोल दिया है, जो उन्हें पारंपरिक भूमिकाओं से परे करियर और व्यवसाय तलाशने में सक्षम बनाता है।

हिमाचल प्रदेश में शिक्षा पर जोर ऐतिहासिक मानदंडों से विचलन का प्रतीक है और समावेशिता और लैंगिक समानता के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। जैसे–जैसे महिलाओं के बीच साक्षरता दर में लगातार वृद्धि हो रही है, सामाजिक दृष्टिकोण में स्पष्ट बदलाव आ रहा है। शिक्षित महिलाएं न केवल ज्ञान से सुसज्जित हैं बल्कि अपने परिवारों और समुदायों के भीतर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने में भी सशक्त हैं। यह सशक्तिकरण केवल प्रतीकात्मक नहीं है; यह ठोस बदलावों में तब्दील होता है।

विभिन्न स्वयं सहायता समूहों, सामुदायिक संगठनों और स्थानीय शासन निकायों में, शिक्षित महिलाएं समावेशी नीतियों और सतत विकास की वकालत करने वाली मुखर आवाज़ के रूप में उभर रही हैं। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण सामाजिक धारणाओं में प्रतिध्वनित होता है। मानसिकता में यह बदलाव एक ऐसे माहौल को बढ़ावा देने में सहायक है जहां महिलाओं को न केवल स्वीकार किया जाता है बल्कि उनकी उपलब्धियों के लिए जश्न मनाया जाता है, इस प्रकार उन प्रणालीगत बाधाओं को खत्म करने में योगदान मिलता है जो महिलाओं की क्षमता के पूर्ण एहसास में बाधा बनती हैं।

हिमाचल प्रदेश में शिक्षा और सशक्तिकरण के बीच तालमेल परिवर्तनकारी सामाजिक परिवर्तन की धुरी बन गया है। जैसे–जैसे महिलाएं उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करती हैं, वे न केवल पारंपरिक भूमिकाओं से मुक्त हो जाती हैं, बल्कि पारिवारिक और सामुदायिक स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में प्रभावशाली योगदानकर्ता के रूप में भी उभरती हैं। हिमाचल प्रदेश में लैंगिक समानता की दिशा में यात्रा शिक्षा और सशक्तिकरण के धागों से गहराई से बुनी गई है, जो अधिक समावेशी और न्यायसंगत भविष्य की दिशा में मार्ग प्रशस्त करती है।

चुनौतियाँ और अवसर

अपने प्रगतिशील परिदृश्य के बीच, हिमाचल प्रदेश लगातार चुनौतियों से जूझ रहा है जिनका महिलाओं को सामना करना पड़ता है, भले ही सशक्तिकरण और परिवर्तन के अवसर प्रचुर मात्रा में हों। लिंग आधारित हिंसा, संसाधनों तक सीमित पहुंच और पारंपरिक भूमिकाओं को मजबूत करने वाली सामाजिक अपेक्षाएं राज्य भर में महिलाओं के लिए बड़ी बाधाएं बनी हुई हैं।

ISSN No. : 0970-9398

हालाँकि, इन चुनौतियों के बीच, सरकारी और गैर–सरकारी दोनों संस्थाओं ने इन मुद्दों को सीधे संबोधित करने, आवश्यक सहायता प्रणालियाँ प्रदान करने और महिलाओं के लिए बाधाओं को दूर करने के लिए रास्ते बनाने के उद्देश्य से पहल को लागू करने के लिए रैली की हैं। महिलाओं की उद्यमिता, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करने वाली हालिया सरकारी योजनाएं महिलाओं को और अधिक सशक्त बनाने और उन्हें अपने जीवन पर नियंत्रण हासिल करने में सक्षम बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती हैं।

लिंग आधारित हिंसा एक मर्मस्पर्शी चुनौती के रूप में सामने आती है जो हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के जीवन पर लगातार प्रभाव डाल रही है। राज्य के प्रगतिशील दृष्टिकोण के बावजूद, घरेलू हिंसा, उत्पीड़न और भेदभाव की घटनाएं जारी हैं। आर्थिक और शैक्षणिक दोनों तरह के संसाधनों तक सीमित पहुंच, हिमाचल प्रदेश में महिलाओं के लिए एक और महत्वपूर्ण चुनौती है। हालांकि शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने में प्रगति हुई है, लेकिन असमानताएँ बनी हुई हैं, विशेषकर दूरदराज के क्षेत्रों में। आर्थिक सशक्तीकरण एक महत्वपूर्ण पहलू बना हुआ है, महिलाओं को ऋण, बाज़ार और उद्यमशीलता के अवसरों तक पहुँचने में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में गहराई से निहित सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं के लिए उपलब्ध विकल्पों को आकार देने और बाधित करने के लिए एक स्थायी चुनौती पेश करती हैं। विभिन्न क्षेत्रों में उनकी बढ़ती भागीदारी के बावजूद, सामाजिक मानदंडों को चुनौती देते समय महिलाओं को अक्सर प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों के बीच, हिमाचल प्रदेश सकारात्मक परिवर्तन के अवसरों से समृद्ध परिदृश्य प्रदान करता है। सरकार के सक्रिय उपाय, जैसे महिला उद्यमिता, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ावा देने वाली योजनाएं, महिलाओं की प्रगति में बाधा डालने वाले प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने की प्रतिबद्धता का संकेत देती हैं। ये पहल न केवल ठोस समर्थन प्रदान करती हैं बल्कि बदलाव के प्रतीक के रूप में भी काम करती हैं, एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देती हैं जहां महिलाएं आगे बढ़ सकें और समाज में सार्थक योगदान दे सकें।

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर 8 मार्च, 2022 को मंडी की अंशुल मल्होत्रा को हस्तशिल्प और हथकरघा के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश की विभिन्न देशों में पहचान बनाते हुए 200 से अधिक महिलाओं को निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द द्वारा "नारी शक्ति अवार्ड" से सम्मानित किया गया यह हिमाचल प्रदेश की महिलाओं के लिए बड़े गौरव और सम्मान की बात है।

8 मार्च, 2022 राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति अवार्ड

7 मार्च, 2022 को प्रधानमंत्री के घर पर आमंत्रण

इसलिए, हम कह सकते हैं कि यद्यपि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, हिमाचल प्रदेश में महिला सशक्तिकरण की दिशा में यात्रा सकारात्मक बदलाव के महत्वपूर्ण अवसरों से चिह्नित है। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं के ठोस प्रयास, स्वयं महिलाओं के लचीलेपन और दृढ़ संकल्प के साथ मिलकर, एक आशाजनक प्रक्षेप पथ बनाते हैं। लिंग आधारित हिंसा, सीमित संसाधन पहुंच और सामाजिक अपेक्षाओं के मुद्दों को संबोधित करके, हिमाचल प्रदेश में लैंगिक समानता का एक प्रतीक बनने की क्षमता है, जहां महिलाएं न केवल चुनौतियों का सामना करती हैं बल्कि एक सहायक और सशक्त वातावरण में पनपती हैं।

उपसंहार

हिमाचल प्रदेश परिवार और सामुदायिक जीवन की नींव को आकार देने में महिलाओं की अपरिहार्य भूमिका को दर्शाता है। सशक्त स्तंभों के रूप में, राज्य में महिलाओं ने न केवल घरों का पोषण किया है, बल्कि अपने समुदायों के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताने–बाने में भी सक्रिय योगदान दिया है। उनका लचीलापन और गतिशीलता सकारात्मक परिवर्तनों को प्रेरित करते हुए प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ी है। जैसे–जैसे हिमाचल प्रदेश आगे बढ़ रहा है, इन महिलाओं के प्रभावशाली योगदान को न केवल पहचानना बल्कि उसका जश्न मनाना भी महत्वपूर्ण है। उनकी महत्वपूर्ण भूमिकाओं को स्वीकार करते हुए, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि महिला सशक्तिकरण हिमाचल के विकास में एक प्रेरक शक्ति बनी रहे जो भावी पीढ़ी के लिये प्रेरणा का स्त्रोत बनेगी। जैसा कि हम हिमाचल प्रदेश में महिलाओं की उपलब्धियों का सम्मान करते हैं, हम एक ऐसे भविष्य के लिए आधार तैयार करते हैं जहां उनका सशक्तिकरण दृढ़ता से सामाजिक प्रगति में सबसे आगे रहेगा, जिससे दुनिया के इस मनोरम हिस्से में एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत मार्ग को बढ़ावा मिलेगा। हिमाचल प्रदेश के विकास में यहाँ की महिलाएं अपने परिश्रम और संघर्ष से प्रदेश की प्रगति में निरंतर तत्पर रहें तो आगामी भविष्य में यह हिमाचल प्रदेश के लिए किसी उपलब्धि से कम नहीं होगा।

–वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मंडी,
हिमाचल प्रदेश

ISSN No. : 0970-9398

ब्रह्मवादिनी वेदज्ञः महान विदुषी गार्गी

—वाई. उमापति

भारत की पावन भूमि पर कई महान दार्शनिकों, विद्वानों और विदूषियों ने जन्म लिया है, जिनमें से महिला दार्शनिकों की बात की जाए तो गार्गी, घोषा, मैत्रेयी, अपाला, अदिति, गोधा, विश्ववारा, अरुन्धति, प्रतिथेयी, लोपामुद्रा इत्यादि वैदिक काल की परम विदूषियां थीं। ये सभी अपने समय की महान दार्शनिक मानी जाती हैं। उन्हीं में से एक हैं गार्गी, जो इस लेख की नायिका हैं। तो आइए महान विदुषी और दार्शनिक गार्गी के बारे में कुछ रोचक बातें जानते हैं।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

इनका पूरा नाम गार्गी वाचक्नवी था तथा लगभग 700 ईसा पूर्व के आसपास इनका जन्म माना जाता है। इनके पिता का नाम वाचक्नु था एवं गर्ग कुल में जन्म होने के कारण इनका नाम गार्गी वाचक्नवी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वैदिक साहित्य में, उन्हें एक महान प्राकृतिक दार्शनिक, वेदों की प्रसिद्ध व्याख्याता और ब्रह्मविद्या के ज्ञान के साथ ब्रह्मवादिनी के नाम से जाना जाता है। युवा आयु से ही इनकी वैदिक ग्रंथों में गहरी रुचि थी और दर्शन के क्षेत्र में बहुत ही कुशल थीं। वैदिक काल में वेदों और उपनिषदों में इन्होंने अत्यधिक ज्ञान प्राप्त किया और अन्य दार्शनिकों के साथ शास्त्रार्थ में वे भी भाग लिया करती थीं।

बृहदारण्यक उपनिषद् के छठी और आठवीं ब्राह्मण में, इनका नाम प्रमुख है क्योंकि वे विदेह राज्य के राजा जनक द्वारा आयोजित एक दार्शनिक शास्त्रार्थ में ब्रह्मयज्ञ में भाग लेती हैं और आत्मन के विषय पर प्रश्नों के साथ ऋषि याज्ञवल्क्य को शास्त्रार्थ की चुनौती देती हैं। यह भी कहा जाता है कि इन्होंने ऋग्वेद पर कई स्तोत्र लिखे हैं, जो ब्रह्मचर्य और परंपरागत सनातनियों द्वारा पूजन में उपयोग किए गए हैं।

याज्ञवल्क्य के साथ शास्त्रार्थ

बृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी जी और याज्ञवल्क्य जी के मध्य एक बड़े ही सुंदर प्रसंग की चर्चा है कि एक बार महाराज जनक ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया और भारत के समस्त विद्वानों, राजाओं और राजकुमारों को आमंत्रित किया। राजा जनक जो स्वयं एक विद्वान थे, इतनी संख्या में ऋषियों और विद्वानों को देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। उनका मन हुआ कि श्रेष्ठ विद्वानों के इस समूह में से ऐसे विद्वान का चयन किया जाए जो इन सभी में सबसे अधिक निपुण हो और जो सबसे अधिक ब्रह्मज्ञानी हो। इस उद्देश्य के लिए, उन्होंने एक योजना बनाई और 1000 गायों के पुरस्कार का प्रस्ताव दिया, प्रत्येक गाय के सींगों पर सोना लगा हुआ था। विद्वानों की इस गंगा में, अन्य लोगों के अलावा, प्रसिद्ध ऋषि याज्ञवल्क्य और गार्गी वाचक्नवी भी शामिल थे।

याज्ञवल्क्य यह जानते थे कि वहां एकत्रित सभा में आध्यात्मिक रूप से वे सबसे अधिक ज्ञानी हैं, क्योंकि उन्होंने कुंडलिनी योग की कला में महारत हासिल की थी, उन्होंने अपने शिष्य संश्रवा को गाय के झुंड को अपने घर तक ले जाने का आदेश दिया। इससे वहां उपस्थित विद्वान क्रोधित हो गए, क्योंकि उन्हें लगा कि शास्त्रार्थ के बिना ही याज्ञवल्क्य पुरस्कार ले जा रहे हैं। कुछ स्थानीय पंडितों और विद्वानों ने उनके साथ शास्त्रार्थ में स्वेच्छा से भाग नहीं लिया क्योंकि वे निश्चित नहीं थे कि याज्ञवल्क्य जैसे महाज्ञानी के साथ वे शास्त्रार्थ कर पाएंगे अथवा नहीं। हालांकि, आठ प्रसिद्ध संत थे जिन्होंने याज्ञवल्क्य जी को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी, जिसमें गार्गी भी शामिल थीं, जो विद्वानों की एकत्रित उस सभा में एकमात्र महिला थीं।

महाराज जनक की राजसभा के असवला, अर्तभागा, भुज्यु, उषास्ता और उद्दालक जैसे विद्वानों ने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया और दार्शनिक विषयों पर प्रश्न पूछे, जिनका याज्ञवल्क्य ने ठोस उत्तर दिया और वे सभी शास्त्रार्थ में पराजित हो गए। अब चुनौती स्वीकार करने की बारी गार्गी की थी।

शास्त्रार्थ में गार्गी ने याज्ञवल्क्य से विद्वानों के बीच उनकी श्रेष्ठता के दावे पर प्रश्न किया। वे उनसे बार–बार शास्त्रार्थ करती रहीं। गार्गी और याज्ञवल्क्य का शास्त्रार्थ, वास्तविकता के मूल "बुनावट" पर केंद्रित था ("बुनावट" से तात्पर्य है "किसी संरचना या इकाई का मूल आधार या पदार्थ")। याज्ञवल्क्य जी के साथ उनका प्रारंभिक संवाद बहुत अधिक आध्यात्मिक था, जैसे कि, व्यावहारिक स्थितियों से दूर, आत्मा की अंतहीन स्थिति। फिर उन्होंने अपना दृष्टिकोण बदला और विश्व में व्याप्त पर्यावरण से संबंधित तीक्ष्ण प्रश्न पूछे जो कि जीवन की उत्पत्ति से संबंधित थे।

गार्गी का प्रश्न विशिष्ट था जब उन्होंने याज्ञवल्क्य जी से पूछा कि, "ये समस्त पार्थिव पदार्थ जिस प्रकार जल में ओतप्रोत हैं, उस प्रकार जल किस में ओतप्रोत है?" एक प्रश्न जो आमतौर पर ज्ञात ब्रह्माण्ड संबंधी रूपक से संबंधित था जो संपूर्ण विश्व की एकता तथा इसकी आवश्यक परस्पर संबद्धता को व्यक्त करता था। बृहदारण्यक उपनिषद् में गार्गी द्वारा याज्ञवल्क्य से अनेक प्रश्न पूछने और उनके उत्तर देने का क्रम इस प्रकार वर्णित हैः

"गार्गी – ये समस्त पार्थिव पदार्थ जिस प्रकार जल में ओतप्रोत हैं, उस प्रकार जल किस में ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य– जल वायु में ओतप्रोत है।

गार्गी– वायु किसमें ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य– मध्यवर्ती क्षेत्र में ओतप्रोत है।

गार्गी– मध्यवर्ती क्षेत्र, किस में ओतप्रोत है?

याज्ञवल्क्य– गन्धर्व लोक में ओतप्रोत है। "

उन्होंने प्रश्नों की श्रृंखला जारी रखी जैसे कि सूर्य का ब्रह्मांड क्या था, चंद्रमा, तारे, देवता, इंद्र और प्रजापति क्या थे। इसके बाद गार्गी ने दो और प्रश्न पूछे। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से वास्तविकता के ताने–बाने पर ज्ञान देने का आग्रह किया और पूछा–

" हे याज्ञवल्क्य ! वह जो आकाश के ऊपर है, वह जो पृथ्वी के नीचे है, वह जो आकाश और पृथ्वी इन दोनों के बीच है, वह जिसे लोग भूत, वर्तमान और भविष्य कहते हैं, जो बुना हुआ एक ताना–बाना है, वह क्या है?"

याज्ञवल्कय ने उत्तर दिया "अंतरिक्ष"।

गार्गी उत्तर से संतुष्ट नहीं हुईं और उन्होंने अगला प्रश्न पूछा– "तो फिर, अंतरिक्ष का ताना–बाना किससे बुना हुआ है?"

याज्ञवल्क्य ने उत्तर दियाः वास्तव में, हे गार्गी ! यदि कोई इस संसार में हजारों वर्षों तक यज्ञ और पूजा करता है और तपस्या करता है, लेकिन उसे इस अविनाशी का ज्ञान नहीं है, उस स्थिति में, वास्तव में, उसका कार्य सीमित ही रहेगा।

हे गार्गी ! इस अविनाशी के पार जो अदृश्य है, उसी में अंतरिक्ष का ताना–बाना बुना हुआ है।

फिर गार्गी ने अंतिम प्रश्न पूछा कि– "ब्रह्म (अविनाशी संसार) क्या है?" याज्ञवल्क्य ने गार्गी को यह कहकर शास्त्रार्थ समाप्त कर दिया कि वे शास्त्रार्थ को और आगे न बढ़ाएं अन्यथा वे अपना मानसिक संतुलन खो देंगी। इस प्रत्युत्तर ने विद्वानों के सम्मेलन में उनके आगे के संवाद को समाप्त कर दिया। हालाँकि, शास्त्रार्थ के अंत में उन्होंने यह कहते हुए याज्ञवल्क्य के श्रेष्ठ ज्ञान को स्वीकार कियाः

"आदरणीय ब्राह्मणों, यदि आप इनके सामने झुकना छोड़ दें, तो आप इसे बहुत बड़ी बात मान सकते हैं। मेरा मानना है कि ब्रह्म के विषय में कोई भी इन्हें किसी भी तर्क द्वारा नहीं हरा पाएगा।"

गार्गी परम विदुषी थीं, वे आजन्म ब्रह्मचारिणी रहीं। विदुषी गार्गी के दार्शनिक विचारों का उल्लेख छांदोग्य उपनिषद् में भी मिलता है। ब्रह्मवादिनी के रूप में गार्गी ने ऋग्वेद पर आधारित कई स्तोत्रों की रचना की, जो कि जीवन की उत्पत्ति पर आधारित थे। 'योग याज्ञवल्क्य', योग पर आधारित एक शास्त्रीय पाठ है, जो कि गार्गी और ऋषि याज्ञवल्क्य के बीच का एक संवाद है। गार्गी को मिथिला के राजा जनक के दरबार में नवरत्नों (नौ रत्नों) में से एक के रूप में सम्मानित किया गया था।

आशा करता हूं कि, भारत–भूमि में जन्मी, वैदिक काल की महान दार्शनिक और विदुषी गार्गी जी का व्यक्तित्व आने वाले समय में नारी चेतना को जागृत रखेगा तथा नारियों को शिक्षित होने तथा निर्भीक होकर अपनी बातों को सबके समक्ष रखने एवं एक आदर्श जीवन जीने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

–कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
पूर्व तट रेलवे (मुख्यालय) भुवनेश्वर

ISSN No. : 0970-9398

आदिवासी कथाकार: एलिस एक्का

–डॉ. हीरा मीणा

दुनिया का और भारत का पहला प्रकाशित आदिवासी लेखक कौन है, बिना अथक मेहनत और अध्ययन के इसका जवाब दे पाना मुश्किल है। बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश भारत में आदिवासी लेखिकाओं का कहन भी उनकी मूल भाषाओं, हिंदी भाषा और गैर हिंदी भाषाओं में बिखरा हुआ है। आदिवासी कथाकारों की दुनिया में वाचिक परंपरा के समृद्ध और विशाल भण्डार हैं। आदिवासी रचनाकारों की कहन परंपरा के साथ–साथ विभिन्न भाषा–बोलियों के साहित्य को सहेजना और साहित्यिक परिदृश्य पर लाना बेहद खोजपूर्ण श्रमशील और महत्वपूर्ण कार्य है। आदिवासी साहित्य के नाम पर सबसे ज्यादा जमावड़ा अब तक गैर आदिवासियों का ही रहा है, जो आदिवासी समाज, संस्कृति और साहित्य विमर्श को जानने–समझने का एक सीमित नजरिया है। मूल रूप से आदिवासी साहित्य वही है जो आदिवासी दर्शन के साथ एवं स्वयं आदिवासियों द्वारा उनकी मूल भाषाओं में लिखा जा रहा है।

हिंदी कथा जगत में एलिस एक्का भारत की पहली आदिवासी कथा लेखिकाओं के रूप में जानी जाती है। वे झारखण्ड की पहली आदिवासी ग्रेजुएट महिला हैं। उनकी साहित्यिक अभिरूचि, सृजन मेधा का अंदाजा खलील जिब्रान के साहित्य को पढ़ने और अनुवाद करने से लगाया जा सकता है। एलिस एक्का को आदिवासी साहित्य पटल पर लाने का श्रेय वंदना टेटे जी को है। आदिवासी दर्शन और साहित्य की अगुआ पैरोकार, चिंतक, सर्जक, शोधक, खोजकर्ता, लेखिका वंदना टेटे ने कठिन और श्रम साध्य कार्य करके आदिवासी साहित्य को एलिस एक्का की कहानियों की अनुमोल धरोहर सौंपी है।

आदिवासी समाज और साहित्य की पैरोकार वंदना टेटे ने एलिस एक्का की 6 कहानियों को खोजकर 2015 में 'एलिस एक्का की कहानियाँ' शीर्षक से कथा संकलन का संपादन कर राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा हिंदी में प्रकाशित करवाया है। निश्चित ही एलिस एक्का भारतीय साहित्य में आदिवासी साहित्य और दलित साहित्य की प्रथम लेखिका के रूप में शिखर स्थान रखती है। एलिस एक्का की उपलब्ध कहानियां 6 हैं – 1. वनकन्या, 2. दुर्गी के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएं, 3. सलगी जुगनी और अंबा गाछ 4. कोयल की लाड़ली सुमरी 5. 15 अगस्त, बिलचों और रामू 6. धरती लहरायेगी झालो नाचेगी गायेगी।

एलिस एक्का की ये कहानियाँ 40–60 के दशक में 'आदिवासी' पत्रिका के कई अंकों में प्रकाशित हुई थीं। पहली पीढ़ी के आदिवासी साहित्यकारों में एलिस एक्का अगुवाई कर रही थी।

भारत की आदिवासी कथा लेखिका और उनकी कहानियों के बारे में बताने के लिए आदिवासी दर्शन और साहित्य की सजग सहित्यकार वंदना टेटे का प्रमुख विचार रखना चाहूंगी :–

"आदिवासी स्त्री लेखकों की रचना न सिर्फ भारतीय समाज के अदेखे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक संसार को दर्ज करती हैं बल्कि पूर्वाग्रहों और गैर बराबरी से मुक्त एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज की पुनर्रचना के लिए उत्प्रेरित भी करती हैं। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आदिवासी स्त्री लेखन न तो नारीवाद के प्रभाव से उपजा है और न ही दलितवाद की तरह किसी एक खास सामाजिक वर्ग से मुक्ति चाहता है। आदिवासियों का सच एक अलग सांस्कृतिक विश्व है जहाँ आदिवासी स्त्रियाँ अपनी विशिष्ट स्त्रीगत समस्याओं पर बात करते हुए भी गैर आदिवासी स्त्री लेखन की तरह 'देह' की मुक्तिया 'पुरूष सत्ता' के सवालों को नहीं उठातीं, बल्कि अपनी सामूहिक आदिवासी चेतना के कारण वे सीधे–सीधे उस विश्व से टकराती हैं जो श्रम और सृष्टि की अवमानना करता है। जो इंसानी समाज का नस्लों, धर्मों, जातियों के आधार पर रंग, भाषा और लिंग के आधार पर भेदभाव करता है, उसका संकुचन व संक्षेपण करता है।"[1]

एलिस एक्का हिंदी की पहली आदिवासी महिला कहानीकार है। 1947 से हिंदी लेखन में साप्ताहिक 'आदिवासी' की वे नियमित लेखिका थी। उनके समकालीनों में प्रमुख रूप से खड़िया में प्यारा केरकेट्टा, संथाली में रघुनाथ मुर्मू, हो में लको बोदरा, मुंडारी में बलदेव मुंडा, कुड़ुख में आयता उरॉव जैसे आदिवासी साहित्यकार सजग बुद्धिजीवी रहे हैं। रामदयाल मुंडा,

फादर कामिल बुल्के, नलिन विलोचन शर्मा, डॉ. दिनेश्वर प्रसार आदि वरिष्ठ लेखक, पुरोधा हिंदी में लिख रहे थे।

प्रकृति और श्रम पर आधारित आदिवासी संस्कृति और मुख्य धारा की संस्कृति में काफी विभिन्नताएं हैं। आदिवासी रचनाकार आदिवासी जीवन दर्शन के साथ अपनी रचनाओं में जीवंत रूप से साक्षात्कार कराता है। एलिस एक्का की पहली कहानी 'वनकन्या' की शुरूआत देखिए –

'जंगल ने मानो उस बस्ती को चारों और से घेरकर जैसे उसे गोद में ले रखा हो। पेड़ वहां इतने उँचे, ऐसे छतनार कि सूरज की किरणें भी जंगल की धरती पर नहीं पहुँच पाती। सर्वत्र शांति और शीतलता बिराजती है। जंगली जानवरों सांप–बिच्छुओं और कीड़े–मकोड़ों का सुखद वास स्थान। वहां झींगुर की झनकार, पक्षियों की काकली, पत्तियों की चुरमुराहट और खड़खडाहट, हवा की सरसाहट और सॉय–साय। एक ओर नदी अपनी कलकल–कुलकुल ध्वनि के साथ बहती जाती ('......... .... "जेठ का महीना। मुर्गे ने बॉग दी नहीं कि वनकन्याओं ने जंगल की राह ली। वहॉ जंगल में वे चारों और घूमती–फिरतीं। कोई फल तोड़ती, कोई कंद–मूल खोजती। कोई दतवन तोड़ती और कोई लकड़ी बीनती। "

"प्रकृति ही आदिवासी समाज का सर्वस्व है। उसी से जीवन पलता है बढ़ता है प्रभावित होता है। सामूहिकता, सहजीविता, समानता, सहभागिता और समान न्याय आदिवासी समाज के जीवन आधार है। स्त्री लेखन श्रमसाध्य कार्य है जिसकी प्रमाणिकता उसकी सरल–सहज जीवंत रचनाएं हैं जो वास्तविक जीवन के घर्षण से नव जीवन और समाज को उज्ज्वल राह दिखाती है। स्त्री संस्कृति और मूल्यों की संरक्षक और वाहक होती है।"[2]

एलिस एक्का की कहानी 'वनकन्या' की नायिका फेचो जंगल में बुरी तरह से घायल शहरी नवयुवक की दवा–पट्टी और सेवा करके उसके प्राणों की रक्षा करती है। स्वयं भूखी रहकर उसका पेट भरती है। युवक के होश में आने पर उसकी इस दशा का पता भी लगाती है –

"बाबू, तुम्हारी यह दशा कैसे हुई ? तुम कबसे यहाँ पड़े हो ? यहॉ पास के पुल में जो काम हो रहा है क्या वहॉ के बाबू हो ?"[3]

'वनकन्या' कथा की नायिका फेचो ने गैर आदिवासी साहित्य की मिथ्या अवधारणा तोड़ी है कि आदिवासी नवयुवतियां कामुक होती हैं और वे शहरी युवाओं को अपने जाल में फसां लेती हैं। फैचो जैसी आदिवासी स्त्रियां श्रमशील हैं जो अपने घर–परिवार को संभालते हुए बाहरी कार्यों को भी पूरी जिम्मेदारी के साथ पूर्ण करती हैं। बिना किसी भेदभाव के अपनी जान जोखिम में डालकर गैर आदिवासी युवक की जान भी बचाती हैं।

'दुर्गी के बच्चे और एल्मा की कल्पनाएं' कहानी को एलिस एक्का आदिवासी कथाकार की पहली दलित कहानी के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। एल्मा आदिवासी महिला है और दुर्गी दलित महिला दोनों बचपन की सहेलियां हैं। इस कथा से एलिस एक्का आजादी के बाद से ही स्वच्छ भारत का संदेश प्रत्येक व्यक्ति को दे रही है। आजादी के 70 सालों बाद भी स्वच्छ भारत का सपना प्रधान नेताओं के नारों और विज्ञापनों में दिखाई देता है हकीकत में गंदगी और कचरे के पहाड़ महानगरों की भीषण समस्या बनते जा रहे हैं :– वर्षों बाद एल्मा की मुलाकात दीन–हीन दुर्गी से होती है। तब एल्मा दलितों की दयनीय स्थिति और गंदगी के वास्तविक कारणों को अपनी कथा में इस प्रकार उजागर करती है।

"हाय री दुनिया! एक ही सृष्टिकर्ता परमपिता की संतानों में इतना फर्क ! कोई हिंडोले पर झूलता है और कोई सिर पर मैले की बाल्टी लेकर घर–घर डोलता है। हाय विधाता, क्या तुम्हारा यही न्याय है? और कितना घिनौना काम है यह। क्या हमारे देश में इस कार्य का अंत कभी नहीं होगा ?"[4]

"काश, ऐसा भी दिन आता कि इस आजाद भारत के कोने–कोने बिलकुल साफ–सुथरे हो जाते। जमीन के भीतर–भीतर सारी गंदगी बह जाती। सभी अपनी सफाई का काम आप कर लेते तब शायद कोई भंगी होता।"[5]

"सलगी, जुगनू और अंबा गाछ' कहानी में आदिवासियों के विस्थापन, पलायन, बेरोजगारी, अभावग्रस्ता, गरीबी, कुपोषण, भुखमरी और इलाज के अभाव में बचपन में सलगी जैसे बच्चे काल कलपित हो जाते है। बचपन की मित्र सलगी के असमय चले जाने से राजू के बालमन पर गहरा प्रभाव पड़ता है आज भी चमकते भारत में आदिवासी संतोषी भात–भात पुकारती भुख से तड़पकर मारी जाती है। एलिस एक्का सजग, चिंतक और मानवीय भावों से युक्त कथाकार है जो समाज की दुखती रंगों का उपचार भी करती है।

'कोयल की लाडली सुमरी' कहानी में एलिस एक्का ने गैर आदिवासी समाज की घृणित और विभत्स मानसिकता को अपनी लेखनी से स्पष्ट किया है। आदिवासी नवयुवती मुरी बीमार पिता का इलाज करवाने के लिए डॉक्टर को बुलाने दूसरे गॉव जाने के लिए नदी पार कर जंगल के रास्ते में पहुंचती है। शहरी बाबू लोग वहशी दरिंदों के रूप उसका बलात्कार कर लहूलुहान हालत में अधमरी करके झाड़ियों में फेंक जाते हैं। होश आने पर घायल सुमरी डॉक्टर को खोजती हुई अस्पताल पहुँचती है छुट्टी होने के कारण डॉक्टर नहीं मिलते और सुमरी निराश मन से घर लौटती है। उसके पिता की मृत्यु हो जाती है सुमरी पर मुसीबतों का पहाड़ टूटता जा रहा था। अनाथ अकेली सुमरी जीवन यापन के लिए दिनभर व्यस्त रहती है। अनचाहे हादसे की शिकार सुमरी गर्भवती हो जाती है। लोग सुमरी को पाविनी, दुष्टा, कुल कलंकिनी कहने लगे। लोगों की नासमझी और सामाजिक रूढ़ियां बेड़ियां बनकर सुमरी को विवश करने लगी। समुरी ने कोई अपराध नहीं किया फिर भी सभी उसे ही अपराधी मानकार दोषी करार दे रहे है तब सुमरी विवश होकर सोचने लगी "पर मेरा क्या दोष ? पेट में सांस ले रहे नए जीव का क्या दोष ? लोक दिकू की तरह सोचने लगे हैं – 'मैं किसी को मुँह दिखाने के लायक नहीं और न मुझे जीना ही चाहिए।"[6]

दूरदर्शी एलिस एक्का ने अनचाहे हादसों की शिकार महिलाओं को सम्मान के साथ जीवन जीने के लिए सुमरी के चरित्र के माध्यम से समाज में मुखर होने की प्रेरणा दी है। क्योंकि उन्होंने कोई अपराध किया ही नहीं तो सजा उन्हें क्यों दी जाये।

"15 अगस्त, बिचलो और रामू' प्रेम और समर्पण की कथा है जो निजी प्रेम से शुरू होकर विश्व कल्याण के लिए प्रेम को न्यौछावर करते रामू और बिलचों की दास्तान बयां कर रही है। एलिस एक्का की रचनाओं में आदिवासी दर्शन और विश्व मानवता के कल्याण के गूढ़ रहस्य चारों और विसर्जित दिखाई दे रहे हैं –

'रामू ने कहा – ' बिचलो, दुनिया बदलती है और उसके साथ–साथ समाज को भी बदलना पड़ता हे अगर हम पढ़े–लिखें ही कदम न उठाएंगे तो सुधार कैसे होगा। हमें तो एक विश्व समाज की स्थापना करनी चाहिए। बोलो बिलचों, साथ दोगी ? तुमने कहा था कि देश सेवा करेंगे ? शहर चलो। आगे बढ़ो। मस्तिष्क की वृद्धि करो। रूढ़िवादिता को दूर करो। चलो बिलचो, हम कंधे से कंधा मिलाकर विश्व कल्याण की ओर अग्रसर हो जाएं। भारत माँ भी तो यही चाहती है।"[7]

रामू और बिलचो शिक्षा की रोशनी से अंधविश्वास और रूढ़िवादिता की बेड़िया तोड़ जीवन की नई राह अपनाते हैं। इस कथा का अंत देश सेवा, ग्राम सेवा के प्रण के साथ होता है। प्रेम का अंत नहीं होता। प्रेम सार्वभौमिक है। वह तो अनेकानेक रूपों में समाज में, देश में पनपता रहता है। आदिवासी दर्शन श्रेष्ठ जीवन मूल्यों पर आधारित है। जिसमें समानता, सामूहिकता, सहभागिता, सहजीविता, सहअस्तित्व को महत्व दिया जाता है।

"धरती लहरायेगी .... झालो नाचेगी .... गायेगी' एलिस एक्का की छठी और संग्रह में प्रकाशित अंतिम कहानी है। झालों के चरित्र और कथा के माध्यम से एलिस एक्का ने 1967 के अकाल और सूखे के भयानक मंजर को खाद्यानों के अभाव और पर्यावरण संकट के साथ जीवंत रूप में उपस्थित किया है। सावित्री बड़ाईक के अनुसार 'धरती लहरायेगी झालो नाचेगी कहानी की नायिका झालो पर दुख .... मानवता सहृदयता के कई गिरह खोलती है। सारे संगी भूख से पीड़ित हैं। नदी, कुएं, झरने, नाले में पानी नहीं है। जंगल के घास–पात सूख गए हैं। पुआल, अनाज, भूसा नहीं है। क्या खाएंगे हमारे जानवर गाय गरू।"[8]

त्रिकाल अर्थात् अन्न, जल और घास के अभाव में संपूर्ण जनजीवन, मानव पशु–पक्षी जानवर सब गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं तब सरकारी सहायता पहुँचाई जाती है सबको कई दिनों के बाद भरपेट भोजन खाने को मिलता है झालो के चेहरे पर मुस्कान लौटती है और तब सब मिलकर अखाड़े की और चल पड़ते हैं – "ननकु ने कहा 'मैं जानता हूँ झालो कब गायेगी और नाचेगी। जिस दिन भूख मिट जायगी – जिस दिन हमारी धरती धान के पके बालों से लहराएगी – उस दिन उसकी स्वर लहरी हवा में लहरायेगी – वह पहाड़ों से टकरा कर आकाश में गूँज उठेगा – सब के हृदय झंकृत हो उठेंगे, सब नाच उठेंगे तब धरती थिरक उठेगी। और इसके लिए हम जी–जान एक कर देंगे कि धरती लहरा उठे। खेत–मुस्कुरा उठें, अनाज बलबला उठें। हम मिहनत करेंगे–सरकार हमें मदद दे रही है। क्यों झालो, अब तो खुश हो न यह सुनकर ? क्यों झालो, तब नाचोगी न, गाओगी न ?"[9] आदिवासियों में वैयक्तिकता नहीं बल्कि झालों की तरह सामूहिकता है।

भारतीय आदिवासी कथाकारों और उनकी कथाओं में आदिवासी जीवन दर्शन समाज और संस्कृति के भूत, वर्तमान और भविष्य का जीवंत रूप दिखाई देता है। उनकी कहानियां लिखने का उद्देश्य आर्थिक अर्जन या विशेष ख्याति प्राप्त करना नहीं है बल्कि उनकी छोटी–छोटी कथाओं के माध्यम से वे उन तमाम सवालों को उठाती है जो आदिवासी समाज के जीवन पर खतरे के रूप में मंडरा रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों की लूट के नाम पर किये जाने वाले विकास के विनाश से आदिवासी अंचलों में गाँव के गाँव तबाह कर दिए जाते है। संयुक्त परिवार व्यवस्था संस्कृति और जीवन शैली को विस्थापन और अपसंस्कृति निगल रही है। बड़े बुजुर्ग और बच्चे ग्रामीण अंचलों, जंगलों और खदेड़े गए स्थानों पर जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए तरस रहे हैं। युवा लड़के और लड़कियां रोजगार की तलाश में महानगरों की बंद अंधेरी कोठरियों में और झुग्गियों में जीवन की जद्दोजहद में संघर्षरत है। आदिवासी लेखिकाओं की कहानियों में गागर में सागर की तरह आदिवासी जीवन दर्शन जल, जंगल, जमीन, संस्कृति और परंपराओं पर हमला, अपसंस्कृति, शोषण और जीवन संघर्ष को अपनी लेखनी से रचाव और बचाव के सशक्त स्वर देने का सफल प्रयास किया है। आदिवासी कथाएं भारतीय साहित्य ही नहीं वरन विश्व साहित्य के रचाव और बचाव की अनमोल धरोहर हैं।

–पूर्व सहायक प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संदर्भ

1. एलिस एक्का की कहानियॉ संपादक वंदना टेटे आवरण पृष्ठ का अग्रभाग
2. एलिस एक्का की कहानियॉ संपादक वंदना टेटे आवरण पृष्ठ संख्या 37
3. एलिस एक्का की कहानियॉ संपादक वंदना टेटे पृष्ठ संख्या 39
4. लोक प्रिय कहानियॉ संपादक वंदना टेट पृष्ठ संख्या 16
5. आदिवासी साहित्य, संपादक गंगासहाय मीणा, पृष्ठ संख्या 41
6. एलिस एक्का की कहानियॉ संपादक वंदना टेटे पृष्ठ संख्या 60
7. एलिस एक्का की कहानियॉ (15 अगस्त, बिलचो और रामू) संपादक वंदना टेटे आवरण पृष्ठ संख्या 64–65
8. आदिवासी साहित्य, संपादक गंगासहाय मीणा, पृष्ठ संख्या 41 अंक 4–5
9. एलिस एक्का की कहानियॉ संपादक वंदना टेटे पृष्ठ संख्या 71

ISSN No. : 0970-9398

भारतीय स्वाधीनता संग्राम की विस्मृत वीरांगनाएं : रानी वेलू नचियार और सेनापति कुयिली

—डॉ. जी. एस. चौहान

आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ— जिसे भारत सरकार ने आज़ादी के "अमृत काल" की संज्ञा दी है। इसमें उन विस्मृत वीरांगनाओं का भी तहेदिल से स्मरण किया जा रहा है, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। यह एक सामाजिक क्रांति की शुरुआत भी थी जिसने पूरे राष्ट्र को स्वाधीनता से ओतप्रोत करने का काम किया और आमजन को प्रेरित करने का भी काम किया। अंग्रेजों को देश से बाहर निकालने के लिए सैकड़ों आन्दोलन किए। यह हमारे देश की आजादी के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य था। पूर्वोत्तर में नागालैंड से लेकर सिंध (अब पाकिस्तान) तक, दूसरी तरफ कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक की महान वीरांगनाओं ने भारत की स्वतंत्रता के लिए जो त्याग, बलिदान दिया, उनकी शौर्यगाथा, उनके संघर्ष को आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाना हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी है।

यह शुभ कार्य आज़ादी के अमृत महोत्सव में किया जा रहा है। यह सराहनीय है और यह भी सत्य है कि स्त्रियों के योगदान को इतिहास में कम ही आँका गया है। उनके योगदान को इतिहास में यथोचित सम्मान नहीं दिया गया। भारत माता की महान वीरांगनाओं ने अंग्रेजों से सीधी टक्कर ली थी तथा अंग्रेजों से पहले उन्होंने मुगलों के भी दाँत खट्टे किये थे। रणक्षेत्र में अपना जौहर दिखाकर दुश्मन को हर क्षेत्र में पराजित करने का कार्य किया था। भारतीय आज़ादी के इतिहास की यही महान वीरांगनाएँ है जिनका नाम हर भारतीय के द्वारा बड़े फ़ख्र के साथ लिया जाता है। भारतीय इतिहास में उनका नाम सदैव अमिट रहेगा। जैसे कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता, शौर्य और बलिदान की कथाएँ व्यापक रूप में उपलब्ध व लोक—प्रसिद्ध है। युवा पीढ़ी उनके बलिदान और शौर्य से भलीभांति परिचित है। इसके बावजूद आज़ादी के इतिहास में कुछ ऐसी महान वीरांगनाएँ भी थीं जिन्होंने भारत की आजादी के लिए त्याग, संघर्ष तो किया ही अपने प्राणों की आहुति भी दी लेकिन उनके बारे में युवा पीढ़ी अभी भी अनभिज्ञ है। कारण इतिहास में विस्मृत वीरांगनाओं की गाथाओं को उपलब्ध कराने वाली पुस्तकों का अभाव।

आज़ादी का अमृतकाल के विमर्श ने इन अज्ञात वीरांगनाओं की गौरवगाथाओं को पूरा करने का सुनहरा अवसर प्रदान किया है ताकि देश का प्रत्येक नागरिक उनका यशोगान कर सके। ऐसी महान वीरांगनाएँ जिन्होनें आजादी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर किया था उनमें प्रमुख रुप से झलकारी बाई, रानी वेलु नचियार एवं उनकी सेनापति कुयिली, उदा देवी पासी, रानी गिडालू, पन्नाधाय, दुर्गा भाभी, रानी दुर्गावती, माता गुजरी कौर, माता विद्यावती, रानी अहिल्याबाई होल्कर, अवंतीबाई लोधी, अरुणा असफ़ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल, बेगम हजरत महल, रानी चेनम्मा, फूलो व झानो आदि नाम प्रमुख हैं। इन सभी वीरांगनाओं ने समाज के प्रत्येक वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है। अधिकांश वीरांगनाएं समाज के वंचित वर्ग आदिवासी, दलित, पिछड़ा वर्ग से ताल्लुक रखती थी। पितृसत्तात्मक सोच के कारण उनके योगदान को इतिहास में उचित स्थान नहीं दिया गया और न ही उनके त्याग और समर्पण का सही मूल्यांकन किया गया।

अखिल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भूमिका निभाने वाली वीरांगनाएँ विशेष रूप से आदिवासी, दलित एवं पिछड़े वर्ग की स्त्रियों को अभी तक, आजादी के आंदोलन में योद्धा की भूमिका के रुप में पहचान और मान्यता नहीं मिल पाई। झलकारी बाई जैसे नाम अपवाद स्वरूप ही याद किये जाते हैं। दक्षिण भारत में रानी वेलु नचियार और उनकी सेनापति कुयिली ऐसी ही महान वीरांगनाएं हुई, जिन्होंने 18वीं सदी में क्रांति का बिगुल बजाया। इनको अमृतकाल में फिर से आमजन के बीच में लाने का स्वर्णिम अवसर मिला है। उनका नाम तमिलनाडु के गाँव—गाँव, शहर—शहर और बच्चे—बच्चे की जुबान पर है। भारत में तमिलनाडु राज्य से बाहर उनके बलिदान की चर्चा इतिहास में बहुत ही कम मिलती है। देश के प्रति उनके द्वारा दिये गये बलिदान, त्याग और कुर्बानी को आज़ादी के अमृत काल में सभी देश वासियों के सामने लाने का जिम्मा विशेष रुप से लेखकों, चिंतकों, बुद्धिजिवियों, साहित्यकारों एवं इतिहासकारों, शिक्षाविदों का प्रमुख कर्तव्य है ताकि हमारी युवा पीढ़ी स्वतंत्रता संग्राम के इन योद्धाओं के बलिदान को समाज से रूबरू करवा सके। आजादी के अमृत महोत्सव पर हमें इन दोनों महान वीरांगनाओं के बारे मे जानकारी देना भारत माँ की संतान के रूप में सच्ची श्रद्धांजलि होगी। शिवगंगई की रानी वेलू नचियार और उनकी सेनापति कुयिली के त्याग तथा बलिदान, जिन्होनें 1857 की क्रान्ति से 85 वर्ष पूर्व ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी और उसकी सहयोगी सेनाओं को नाको चने चबाए थे। अंग्रेजों को युद्ध क्षेत्र में पछाड़ कर अपने प्राणों की आहुति दी थी। ये दोनों ही भारत

ISSN No. : 0970-9398

की पहली महान महिला स्वतंत्रता सेनानीं थी। इनके जीवन की गौरव गाथा एवं बलिदान का परिचय इस प्रकार से हैः

रानी वेलु नचियार के जीवन के ऐतिहासिक रोचक तथ्य

स्वाधीनता आंदोलन में तमिलनाडु की रानी, राजा व नागरिकों ने भी ब्रिटिश साम्राज्य को न केवल मजबूत टक्कर दी थी, बल्कि कई बार उन्हें परास्त भी किया था। शिवगंगई तमिलनाडु का वह ऐतिहासिक जिला है, जो महान् शौर्यशाली रानी वेलु नचियार को पाकर संपन्न बना। शिवगंगई की मिट्टी ने वेलु नचियार को जन्म देकर भारत की मिट्टी का कर्ज चुकाया था। शिवगंगई जिला, राज्य की राजधानी चेन्नई से लगभग 450 किलोमीटर दूर दक्षिण तथा सुप्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक नगरी मदुरै से 48 किलोमीटर दूर पूरब में स्थित है। इस जिले को पहले सेतुनाडु के नाम से पहचाना जाता था। यह जिला 'नायक साम्राज्य' द्वारा स्थापित 72 छावनियों में से एक था। उस समय के नायक अधिपति अपने नाम के आगे 'सेतुपति' का उपयोग किया करते थे। संस्कृत कृति 'रघुनाथ अभ्युदयम' के अनुसार उनकी गणना दलित वर्ग में की जाती है। वे दोनों महान वीरांगनाएँ तमिलनाडु में बहुत लोकप्रिय रही। इन दोनों महान वीरांगनाओं ने अठारहवीं शताब्दी में ही तत्कालीन ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की (अंग्रेजी) सेना से टक्कर ली थी। औपनिवेशिक सेना को देश से खदेड़ने और उसे आज़ाद कराने हेतु क्रांति–युद्ध किए और अंग्रेजी हुकूमत को अपनी बहादुरी, शौर्य, पराक्रम और युद्ध कौशल से हतप्रभ किया और तो और उन्होंने अंग्रेजी सेना को युद्ध क्षेत्र से भागने को मजबूर कर दिया। आखिरकार उन्होनें युद्ध में लड़ते–लड़ते अंग्रेजी शासन के खिलाफ अपने जीवन को राष्ट्र की आज़ादी के लिए बलिदान कर दिया। दुर्भाग्य यह है कि उनके इस बलिदान को इतिहास में याद नहीं किया गया।

रानी वेलु नचियार का जीवन–परिचय

वेलु नचियार का जन्म 3 जनवरी, 1730 ई. में रामनाथपुरम के राजपरिवार में हुआ था और उनकी मृत्यु 25 दिसम्बर 1796 को लम्बी बीमारी के कारण हुई। वे रामनाथपुरम राज्य की राजकुमारी व रामनाथपुरम साम्राज्य के राजा चेल्लामुतहू विजयाराघुनाथ सेतुपति और रानी सविधुथल सेतुपति की एकमात्र संतान थी। राजा की रानी चोलों के कश्यपगोत्रम की तरह सूर्यवाम्सम की वंशज थीं। हालाँकि वह अपने माता–पिता की इकलौती संतान थीं लेकिन वे जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। उनके माता–पिता ने उनका लालन–पालन बेटों से बढ़ कर किया। जीवन के प्रारम्भ काल से ही वेलु को पढ़ने–लिखने की बहुत इच्छा थी। इसके अलावा हथियार चलाने का शौक भी रखतीं थीं। कुछ समय के उपरान्त ही उन्होंने तलवारबाजी, तीरंदाजी, घुड़सवारी, बलारी(हंसिया फैकने), सिलंबम(लाठी चलाने) तथा भाला फेंक जैसी युद्ध कलाओं में अपनी महारत हासिल कर ली थी। रानी ने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल पर मातृभाषा तमिल के अलावा दूसरी भाषाओं, विशेषकर फ्रांसिसी, उर्दू, मलयालम, तेलुगू और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान अर्जित कर लिया था। रानी वेलु नचियार ने बचपन से ही विद्या अर्जित करनी शुरु की थी। वे शिक्षा के महत्व को अच्छी तरह से जान गई थीं। इसी कारण रानी वेलु नचियार ने महान तमिल ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। बाद में उन्होंने स्वयं को अपने पिता का योग्य उत्तराधिकारी सिद्ध कर दिया। माता पिता ने अपनी पुत्री वेलु की कुशाग्र बुद्धि और लगन को देखते हुए बेटे न होने की चिंता को मन से निकाल दिया। वे अपनी पुत्री पर गर्व महसूस करने लगे।

सन् 1746 ईस्वी में मात्र 16 वर्ष की आयु में वेलु नाचियार के पिता ने उनका विवाह शिवगंगई के महाराज शशिवर्मा थेवर के बेटे मुत्तु वेढुंगानाथ थेवर के साथ कर दिया था। राजा शशिवर्मा एक महत्वाकांक्षी राजा थे और वे दिन–रात राज्य की प्रगति व विकास के बारे में न केवल सोचते रहते थे, बल्कि जनता की भलाई व राज्य को सुखी बनाने के लिए हमेशा चिंतित भी रहते थे। इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर उन्होंने शिवगंगई राज्य के आसपास के जंगलों की कटाई व सफाई करवाई ताकि राज्य के आम नागरिक वहाँ खेती–बाड़ी कर सकें और अपनी जीविका चला सके। इसके अलावा राजा शशि थेवर ने जगह–जगह तालाब और सड़कें आदि का निर्माण करवाकर शिवगंगा को सजाने–संवारने का ऐतिहासिक कार्य किया था। जिसके कारण राज्य का हर नागरिक उनका वफादार एवं चहेता बनता चला गया। इस कारण थोड़े समय के बाद ही उनकी कीर्ति एवं यश सारे राज्य में फैल गया। उनके देहान्त के उपरांत उनके पुत्र एवं रानी वेलु नचियार के पति राजकुमार मुत्तु वेढुंगानाथ थेवर को शिवगंगा का अधिपति बनाया गया।

सेनापति कुयिली का संघर्षपूर्ण जीवन

रानी वेलु नचियार की महान सेनापति कुयिली का जन्म शिवगंगई रियासत के एक गांव में हुआ था। उनके पिता पेरियमुदन और मां रकू एक कृषक मजदूर थे। वे अरुंथथियार जाति से संबंध रखते थे। यह जाति तमिलनाडु की एक अनुसूचित जाति से संबंधित है। इस जाति को उत्तर भारत में चमार जाति/जाटव/मेघवाल/रविदासिया सम्प्रदाय से जाना जाता है। तमिलनाडु राज्य में इस जाति के लोग आमतौर पर मेहनत मजदूरी और चमड़े का पेशा करते हैं। कुयिली का परिवार अरुंथथियार में निवास करता था। सेनापति कुयिली की मां भी बहादुर वीरांगना थी। उनकी बहादुरी के चर्चे पूरे गांव में विख्यात थे। उनके गाँव के लोग अक्सर उनकी माँ की बहादुरी के किस्से एक दुसरे को सुनाया करते थे। उनके माता–पिता का प्रमुख व्यवसाय गाँव के खेतों में खड़ी फसल को जंगली जानवरों से बचाना था। कुयिली के जन्म के उपरान्त कुछ समय उपरान्त जब उनकी माता खेतों की रखवाली कर रही थीं तो अचानक से एक सांड उनके खेतों में घुस आया। उनकी भिड़ंत उस बड़े एवं शक्तिशाली सांड से हो गई। सांड से लड़ते हुए उनकी माता ने इस संसार को अलविदा कह दिया।

उनके पिता पेरियमुदन उनकी माता के देहान्त से काफी

ISSN No. : 0970-9398

आहत हुए और पुत्री के साथ अपना घर बार छोड़कर रानी वेलु नचियार की नगरी शिवगंगई की राजधानी में आकर रहने लगे, जहाँ रानी वेलु नचियार का साम्राज्य था। उनके पिता यहाँ आकर जूते बनाने(मोची) का काम करने लगे। रात में अक्सर उनके पिता अपनी बेटी कुयिली को उनकी मां की वीरता की कहानियां सुनाया करते थे, जिनको सुनकर वह रोमांचित हो उठती थी। कुछ समय उपरान्त कुयिली अपनी युवा अवस्था को प्राप्त करने लगी तथा उसके मन में अपनी मां जैसी बहादुर नारी बनने की लहरें उठने लगी। कुयिली के मन में असीम उतार–चढाव आने लगे। इसी समय उनके जीवन में एक ऐतिहासिक घटना घटित हुई। उनके पिता को रानी के आदेशानुसार एक शाही मोची बना दिया गया। इस घटना ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी। दूसरी तरफ उन्हें रानी वेलु नचियार और उनके शाही परिवार की वफादार बनने का सुअवसर मिल गया। यह उनके जीवन के लिए कोई साधारण घटना नहीं थी। इस घटना ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल डाला। रानी वेलु नचियार ने इसी कारण से उनके पिता व कुयिली को राजमहल में आने जाने की इजाजत प्रदान कर दी। इस बीच ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और रानी वेलु नचियार के बीच साम्राज्य के लेकर खींचतान शुरु हो गई। इस वजह से रानी वेलु नचियार को सैन्य संगठन के कार्य को अंतिम रुप देना पड़ा। रानी ने पेरियमुदन को शाही मोची के साथ–साथ गुप्तचर का दायित्व भी सौंप दिया। इस प्रकार रानी वेलु नचियार, कुयिली से रोज मिलने लगी और दोनों में काफी अच्छी दोस्ती हो गई। युवावस्था प्राप्त होते–होते कुयिली अपनी मां जैसी साहसी और ताकतवर बनती चली गयी। कुयिली ने कई तरह के अस्त्र–शस्त्र चलाने सीखे और वह कई अलग–अलग युद्ध कलाओं में पारंगत हो गई। इसी शस्त्र विद्या के कारण वह रानी के साथ रहने लगी, और रानी की सबसे विश्वस्त सहयोगियों में भी शामिल हो गई। अब दोनों पिता–पुत्री आवश्यकतानुसार कभी भी, बेरोकटोक शाही दुर्ग में रानी वेलु नचियार के पास आ जा सकते थे। सेनापति कुयिली रानी की निजी सुरक्षा का कार्य बखुबी निभा रही थीं। इस प्रकार पिता–पुत्री का जीवन भी सुचारु रुप से चल रहा था।

परन्तु, शिवगंगई साम्राज्य के राजनैतिक हालात ठीक नहीं थे। शिवगंगई के राजा पेरिया थेवर के ऊपर कर्नाटक का नवाब, अंग्रेजों की मदद से उन्हें पराधीनता स्वीकार करने के लिए लगातार दबाव बना रहा था।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का दक्षिण भारत में प्रसार

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी दक्षिण भारत में आहिस्ता–आहिस्ता अपने पैर जमाने लग गई थी। कई भारतीय रियासतों पर इन्होंने कब्जा कर लिया था। आरकोट का नवाब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के आगे पूर्ण रुप से घुटने टेक चुका था। अब ब्रिटिश सत्ता की दूसरी नजर शिवगंगई साम्राज्य पर थी। तेजी से बदलते राजनैतिक घटनाक्रम के चलते रामनाथपुरम और शिवगंगई के शासकों ने नवाब को टैक्स देने से बिल्कुल ही मना कर दिया। इससे आरकोट के नवाब ने नाराज होकर ईस्ट इंडिया कंपनी को इसकी शिकायत भेज दी। कंपनी के लोग तो पहले ही ऐसे अवसर के फिराक में थे और नवाब ने इस काम को अंग्रेजों के लिए और अधिक सरल बना दिया।

शिवगंगई साम्राज्य के कालियार कोविल नामक कस्बे में महाकालेश्वर का अति प्राचीन मंदिर है। मुत्तुवेदुंगानाथ थेवर के शासनकाल में उस मंदिर की प्रसिद्धी चारों दिशाओं में फैली हुई थी। जून 1772 में मुत्तु वेढुंगानाथ थेवर अपनी दूसरी पत्नी गोरी नचियार के साथ महाकालेश्वर के दर्शन के लिए गए हुए थे। मौका पाकर और राजस्व कर उगाही का बहाना बना कर आरकोट के नवाब तथा ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना ने शिवगंगई साम्राज्य पर अचानक हमला बोल दिया। हालाँकि नवाब और अंग्रेजों के बीच बढ़ रहे रिश्तों से वेढुंगानाथ सावधान एवं सचेत थे। हमले की आशंका को देखते हुए वे रानी वेलु नाचियार के साथ सुरक्षा प्रबंधों में लग गये थे। राज्य की प्राकृतिक सुरक्षा चारों से कंटीली झाड़ियों से होती थी। दूसरी तरफ राज्य के बचाव के लिए राजा थेवर ने शिवगंगई की ओर आने वाले सभी मार्गो को खुदवाकर अनेकों जगह खाइयां खुदवा दी तथा जगह–जगह पर सैनिक चौकियां बनाकर सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए थे।

अंततः आखिरकार वह समय आ ही गया जिसकी आशंका राजा थेवर और उनकी सेना को थी। 21 जून, 1772 को कर्नल जोसेफ स्मिथ पूरब तथा कैप्टन विंजोर पश्चिम से आक्रमण के लिए शिवगंगई साम्राज्य की तरफ आगे बढ़े। जिनके सामने राजा थेवर के सुरक्षा के सभी इंतजाम नाकाफी साबित हुए और देखते ही देखते कीरानूर और शोलापुरम चौकियों को अंग्रेजी फौजों ने हथिया लिया। 25 जून, 1772 को मुत्तुवेदुगानाथ थेवर की फौजों तथा अंग्रेजों की सेना के बीच एक निर्णायक एवं भयंकर युद्ध हुआ। उनकी सेना और सेनापतियों ने अपने राजा के साथ मिलकर दुश्मनों का जमकर मुकाबला किया। लेकिन दो–तरफा हमले में घिरकर राजा थेवर तथा गोरी नाचियार को अपनी शहादत देनी पड़ी। उनको वीरगति प्राप्त होते ही अंग्रेज फौज ने राज्य में भीषण मारकाट मचा दी और आसपास की सभी बस्तियों को पूर्णतः लूट लिया। सैकड़ों महिलाओं–पुरुषों और बच्चों को बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया गया। रानी वेलु नाचियार को अपनी पुत्री के साथ शिवगंगई के किले को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। रानी के दुर्ग छोड़ने के तुरन्त बाद आरकोट के नवाब ने उस पर कब्जा कर लिया और उसने शिवगंगई का नाम बदलकर हुसैन नगर कर दिया।

उधर ब्रिटिश सेना एवं नवाब की फौज से बचाव करते हुए अपने गिने–चुने अंगरक्षकों के साथ रानी वेलु नचियार, डिंडीगुल के निकट विरुपाक्षी जा पहुंची। वहां के राजा गोपाल नायक्कर रानी का सम्मान करता था तथा उसका हितैषी भी था। उसने रानी को अपने साम्राज्य में संरक्षण दिया और हर प्रकार की सहायता के लिए वचन भी दिया। कुछ ही समय पश्चात रानी के भरोसेमंद सेनानायक पेरिया मुरुंडू तथा चिन्ना मुरुंडू भी

ISSN No. : 0970-9398

वहां पहुंच गए। राज्य पर हुए अचानक युद्ध तथा अपने पति राजा थेवर की युद्ध में मृत्यु के कारण रानी काफी व्यथित और आक्रोशित थी तथा अंग्रेजों से बदला लेने की सोच रही थी। वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी फौजें उसे खोजती हुई आगे की तरफ बढ़ रही थी। बढ़ते हुए खतरे को भाँपते हुए रानी के शुभचिंतक सेनापति टी. पिल्लई तथा मुरुंडू बंधुओं ने रानी को किसी सुरक्षित स्थान पर चले जाने की सलाह दी।

इन भयंकर युद्धों के बाद रानी तकरीबन 8 वर्षों तक भूमिगत रही और अपने गुप्तचरों के माध्यम से राज्य की पूरी जानकारी रखने लगी। इसी क्रम में उन्होंने कुयिली के पिता को अपना गुप्तचर बनाया हुआ था। यह वही समय था जब कुयिली अपने पिता के साथ रानी से मिलने लगी थी। कुयिली अक्सर रानी से अंग्रेजों और नवाब को मार भगाने की बात किया करती थी। रानी को भी कुयिली का यह जज्बा बहुत पसंद था। जल्द ही कुयिली ने अपनी वीरता, वफादारी और त्याग के कारण रानी के हृदय में विशेष स्थान बना लिया था। इस बीच अंग्रेजों और नवाब को यह भनक लग गई थी कि रानी अपना खोया हुआ राज्य वापस पाने के लिए काफी प्रयासरत है। अतः अंग्रेजों ने रानी को मारने के लिए साजिश रचनी शुरु कर दी। ऐसे ही एक षड्यंत्र को कुयिली ने अपनी जान पर खेलकर नाकाम किया था। वास्तव में एक दिन रानी जब सो रही थी, तभी एक घुसपैठिया उनका कत्ल करने के इरादे के साथ रानी के कक्ष में घुस आया। कुयिली ने यह सब देख लिया था। ऐसा देख वे तुरंत ही गुप्तचर का पीछा करने लगी। यहां उन्होंने देखा कि वह रानी के ऊपर हमला करने ही वाला था तभी कुयिली ने बिना देर किए उसे दबोच लिया। इसी संघर्ष में वह घुसपैठिया वहीं मारा गया और कुयिली इसमें जख्मी हो गई। इसके बाद रानी ने अपनी साड़ी का एक हिस्सा फाड़कर उनके घावों पर पट्टी बाँधी।

एक दूसरी घटना में कुयिली को पता चला कि उसके अपने सिलंबन (दक्षिणी भारत की मार्शल आर्ट शैली) के गुरु स्वयं ही एक जासूस हैं और रानी को मारने का षड़यंत्र कर रहे है तो इस बात की खबर लगते ही उसने खुद अपने गुरु की हत्या कर दी। कुयिली ने ऐसे कई बार रानी की जान बचाई। यह सब देखकर रानी वेलु नचियार उसकी वीरता और तीक्ष्णबुद्धि से अत्यंत प्रभावित हुई और उन्होंने कुयिली को अपना विशेष अंगरक्षक घोषित कर दिया। रानी वेलु नचियार और कुयिली के करीबी संबंधों की बात गुपचुप तरिके से ब्रिटिश शासकों तक पहुंच गई। वे चाहते थे कि रानी पर हमला और शिवगंगई की राजधानी पर कब्जा करने में कुयिली उनकी मदद करे। लालच और धमकियां देकर उन्होंने कुयिली को अपने पक्ष में मिलाने की भरपूर कोशिश की लेकिन वह अपनी बात पर अडिग रही। जब सारी कोशिशें नाकाम साबित हुई, तो ब्रिटिश सेना ने शिवगंगा के दलित समुदाय पर आक्रमण कर दिया। निहत्थे दलितों को दिनदहाड़े बेरहमी से काटा जाने लगा ताकि वह अपने समुदाय के लोगों की हालत देखकर अंग्रेजों से हाथ मिला ले। उन्होंने पूरी कोशिश की कुयिली को अपने साथ शामिल करने की, परन्तु वह टस से मस न हुई और अपने वतन के खातिर अपने सम्प्रदाय को और उसके नागरिकों की बलि दे दी, इस कुयिली ने एक उत्तम राष्ट्रभक्त होने का उदाहरण पेश किया।

अंग्रेजों ने छल कपट से सेनापति कुयिली को पकड़ लिया। उन्होंने कुयिली से रानी का पता पूछा, कुयिली ने नहीं बताया, तो उन्होंने कुयिली के ऊपर बहुत जुल्म किये। लेकिन कुयिली अपनी चतुराई और सूझ–बूझ से किसी तरह अंग्रेजों के चंगुल से छूटकर रानी के पास वापस आ गई। उन्होंने रानी को जब सारी आप–बीती सुनाई, तो रानी का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उन्होंने कहा कि अब अंग्रेजों और नवाब के ऊपर हमला करने का अंतिम समय आ गया है। इसी क्रम में उन्होंने कुयिली को अपनी सेना की महिला पलटन की सेनापति बना दिया ताकि वह अपने लोगों की रक्षा के लिए ब्रिटिश ताकतों के खिलाफ लड़ सके। अपने साहस और शौर्य के लिए उसकी सेना में उसे वीरतलपति (बीर नेता) और वीरमंगई (वीरांगना) जैसे नामों से अलंकृत किया और उनको पूरा सम्मान भी दिया गया।

राष्ट्र के लिए अपने प्राणों की आहुति

रानी को यह अच्छी तरह मालूम था कि वे अपने दम पर अंग्रेजों को नहीं हरा पाएंगी। इसलिए उन्होंने मैसूर के नवाब हैदर अली और टीपू सुल्तान से मदद मांगी, मदद मिलते ही रानी वेलु नचियार ने टीपू सुल्तान, उनके पिता हैदर अली और शिवगंगई के मरुदु पांडियर भाइयों के साथ मिलकर ब्रिटिश शासकों के खिलाफ हमला बोल दिया। रानी के सैनिक बहुत बहादुर थे और वे शौर्य और वीरता से लड़े। पिछले समय में उन्होंने कई युद्ध भी जीते थे, लेकिन अंग्रेजों के उच्च तकनीक वाले हथियारों के आगे ये टिक नहीं पा रहे थे। इस युद्ध को अब जीतने का केवल एक ही रास्ता था कि ऐसी युद्ध नीति बनाई जाए जिससे अंग्रेजो के उच्च तकनीक वाले हथियार खत्म कर दिए जाएं। कुयिली ने यह काम अपने जिम्मे ले लिया। सेना में कुयिली के पिता पेरियमुदन भी शामिल थे। मकसद था शिवगंगई किले को अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त करवाना, क्योंकि यहीं से वे शिवगंगा के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण कर रहे थे। अंग्रेजों के ज्यादातर हथियार भी शिवगंगई के किले में ही रखे थे। उस किले में कुयिली का जाना आसान नहीं था, शिवगंगई का किला हमेशा ब्रिटिश सैनिकों से घिरा रहता था और किसी को अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। इस किले के भीतर राजराजेश्वरी का एक मंदिर बना हुआ था। यह मन्दिर पूरे वर्ष में केवल एक ही दिन के लिए बाहरी लोगों के दर्शनार्थ खुलता था और राज्य की आम जनता को उस मंदिर के अन्दर जाने की अनुमति मिलती थी।

एक अन्य विशेष घटना यह थी कि मंदिर के पास ही अंग्रेजी सेना का शस्त्रागार होने के कारण पुरुषों को मंदिर में जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी। केवल नवरात्रि के आखिरी दिन, जब महिलाओं को विजयादशमी की पूजा करने के लिए

ISSN No. : 0970-9398

किले के अंदर देवी राजराजेश्वरी अम्मा के मंदिर में जाने की अनुमति होती थी। संयोग से लड़ाई के उस समय में भी नवरात्रे चल रहे थे। तब उसी समय सेनापति कुयिली ने इस मौके का लाभ उठाया और इसके आधार पर उसने एक नई रणनीति बनाई। सन 1780 ईस्वी के विजयादशमी के दिन जैसे ही किले का मुख्य द्वार खुला कुयिली अपनी पूरी पलटन के साथ साधारण वेश–भूषा में किले में प्रवेश कर गई। साथ ही उनकी पलटन की सारी महिलाएं जो भक्तों के वेश में थी और अपनी टोकरियों में उन्होंने फूल और प्रसाद के साथ अपने अस्त्र–शस्त्र छिपा कर ले गई थी।

अंदर जाते ही कुयिली किले के उस कमरे में चली गई जहां अंग्रेजों के सारे हथियार रखे हुए थे। कुयिली ने पहले ही अपनी महिला सैनिकों से कहकर अपने शरीर पर बहुत सारा तेल और घी डलवा लिया था। ताकि वे खुद को आग के हवाले कर सके और उसने ऐसा ही किया तथा चन्द ही क्षणों में अपने शरीर को आग के हवाले कर कुयिली ने अंग्रेजी सेना के हथियारों पर छलांग लगाई और सभी हथियार एक झटके में ही राख हो गये और बहादुर कुयिली का शरीर जलकर भस्म हो गया। इस समय वैसे भी अंग्रेजी सैनिक युद्ध के लिए तैयार नहीं थे और सारे हथियार कुयिली के द्वारा भस्म कर देने के बाद उनके पास आत्मरक्षा के अलावा का कोई भी विकल्प नहीं बचा था। इस प्रकार रानी वेलु नचियार की सेना ने अंग्रेजी सेना को आसानी से परास्त कर दिया और शिवगंगई किले पर पुनः अपनी जीत हासिल कर ली।

इस तरह एक महान देश भक्त एवं शौर्यशाली विरांगना कुयिली नें अपने वतन की आज़ादी और इसको अंग्रेजों के चुंगल से मुक्त कराने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। वह देश को आज़ादी दिलवाने वाली भारतीय इतिहास में पहली आत्मघाती हमलावर (Suicide Bomber) और पहली शहीद महिला बन गई। भारतीय इतिहास में पहली बार किसी युद्ध में शत्रु के हमले को नाकाम करने का यह अद्भुत तरीका अपनाया गया था। इसी नायाब तरीके एवं सेनापति कुयिली की महान शहादत के कारण रानी वेलु नचियार को उनका साम्राज्य वापस मिल पाया था। अपनी सेनापति कुयिली को रानी वेलु नाचियार ने अपनी धर्म–पुत्री का दर्जा देकर उनके बलिदान को भारतीय इतिहास में चिरस्मरणीय बना दिया। अपनी सेनापति के बलिदान, त्याग और अपने साम्राज्य के प्रति उनकी वफादारी एवं शहादत के कारण ही रानी वेलु नचियार ने लगभग 10 वर्षों तक शिवगंगई राज्य पर अपना शासन किया।

आज़ादी की प्रथम आत्म बलिदानी कुयिली

अपने असाधारण शौर्य, साहस और राष्ट्र को दिये गए बलिदान के लिए रानी वेलु नचियार और उनकी सेनापति कुयिली का नाम भारतीय इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टिकोण से ऐसा हुआ नहीं। लेकिन अब वेलु नचियार और कुयिली के देश को आज़ाद कराने और अंग्रेजों को अपनी मातृभूमि पर अधिपत्य से छुड़ाने के लिए उनके महान योगदान की सराहना न केवल तमिलनाडु राज्य बल्कि समस्त राष्ट्र में होने लगी है। भारतीय इतिहासकारों के अनुसार कुयिली पहली भारतीय महान वीरांगना थीं जिसे इतिहास में पहली "आत्मघाती हमलावर" और "पहली महिला" शहीद का दर्जा दिया गया है। उनके राष्ट्र के प्रति दिये गए योगदान एवं बलिदान के कारण ही वर्ष 2013 में तमिलनाडु की राज्य सरकार ने उनके सम्मान में शिवगंगई में एक स्मारक बनवाया। साथ ही वेलु नचियार की जयंती को सरकारी समारोह के रूप में मनाए जाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया।

सन् 2008 में भारत सरकार ने भी उनके राष्ट्र के प्रति किये गये योगदान को ध्यान में रखते हुए, रानी वेलु नचियार की स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। "आज़ादी के अमृत महोत्सव के इस पावन अवसर पर समस्त राष्ट्र व माँ भारती की इन महान् विरांगनाओं को उनके साहस, शौर्य एवं राष्ट्र को दिये गये बलिदान को हमेशा याद रखेगा। समस्त राष्ट्र उनके इस महान बलिदान के लिए सदैव कृतज्ञ एवं ऋणी रहेगा। देश का हर नागरिक, युवा, महिला–पुरुष, गरीब–अमीर, छोटा–बड़ा सभी उनके बलिदान के प्रति कृतज्ञ है, उनके योगदान से कोई भी उऋण नहीं हो सकता है। हम भारत की संतानें उनको कोटि–कोटि प्रणाम करती हैं।

–संयुक्त सचिव,
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

संदर्भ सूची:

1. वरिद्धागिरीसनः दि नायक्स ऑफ तंजोर, एशियन एजुकेशनल सर्विस, दिल्ली 1995, पृष्ठ 26।
2. जीवभारती, के. वेलु नचियार, कुमारन प्रकाशन, चेन्नई, 2001, पृष्ठ 156 द्य
3. जोसियस दू प्री और काउंसिल जुलाई, 1772, पृ.608।
4. वेलु नचियार और सेनापति कुयिली डॉ. महावर सी. एल. द्वारा रचित लेख जो, "आज़ादी की विरांगनाओं की शौर्य गाथाएँ, नामक पुस्तक में प्रकाशित, पृष्ठ संख्या 13–19।, नई दिल्ली, 2023।
5. वरियर क्विन ऑफ शिवगंगाः दि लिजेन्ड ऑफ रानी वेलु नचियार, पृष्ठ संख्या 248, 5 मई, 2023।

ISSN No. : 0970-9398

उन्नत तकनीकी से होता महिला कृषक उत्थान

–डॉ. एस. आर. यादव

भूमिका

भारतीय संस्कृति में ऋषि परंपरा और कृषि परंपरा का विशेष महत्व रहा है। इक्कीसवीं सदी तीव्र परिवर्तनों तथा चमत्कारिक उपलब्धियों वाली शताब्दी सिद्ध हो चुकी है। सृष्टि का सबसे बुद्धिमान जीव होने का श्रेय मानव को प्राप्त है। मानव के बुद्धिपक्ष का विकास विज्ञान के द्वारा ही हुआ है। मानव ने अपनी बुद्धि के बल पर प्रकृति को चुनौतियां दी हैं। सृष्टि के अनेकानेक रहस्यों का उद्घाटन मनुष्य ने अपने बुद्धि बल से किया है। ज्ञान और अनुभवों की विशाल परंपरा को उसने विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया है। मनुष्य की प्रकृति विकासशील है। वह सदैव परिवार, समाज, संगठन व राष्ट्र हित में विकासोन्मुखी योजनाएं बनाकर निरंतर कार्य करता रहता है। विज्ञान एवं तकनीक की बदौलत समूची दुनिया एक वैश्विक गांव में तब्दील हो रही है। स्थानीय व भौगोलिक दूरियां लुप्त हो चुकी हैं। देशज महिला कृषक राष्ट्र कृषि की गंगा से विश्वस्तरीय कृषि का गंगासागर बनने की प्रक्रिया में निरंतर प्रयासरत हैं।

भारत में केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा अपनी तरह का पहला संस्थान है। यह संस्थान विशेष रूप से कृषि में लैंगिक संबंधी अनुसंधान के लिए समर्पित है। इसकी स्थापना कृषि अनुसंधान और शिक्षा पर योजना आयोग द्वारा गठित कार्य समूह की सिफारिशों को कार्यान्वित करते हुए अप्रैल 1996 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के तहत भुवनेश्वर (ओडिशा) में कृषि में महिलाओं के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र (नेशनल रिसर्च सेंटर फॉर एग्रिकल्चर्ल वूमन) के रूप में हुई थी। 8वीं पंचवर्षीय योजना (1992–97) के तहत् संस्थान महिलाओं की भूमिका और भागीदारी तथा कृषि में उभरते अवसरों को प्रभावित करने वाले विभिन्न मुद्दों पर कृषि शोध कर रहा है। यह कृषि प्रौद्योगिकियों को महिलाओं हेतु उपयुक्त बनाने के लिए विभिन्न प्रौद्योगिकी–आधारित विषयगत क्षेत्रों में सहभागी कार्रवाई अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित करता है। संस्थान अपने अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों में कृषक महिलाओं के परिप्रेक्ष्य को लाने के लिए अनुसंधान और विकास संस्थानों को उत्प्रेरित करने और सुविधा प्रदान करने हेतु पहचाना जाता है। इसके अनुसंधान प्रयासों से प्रभावित होकर वर्ष 2014 में निदेशालय को अपग्रेड कर "केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान" (सीआईडब्ल्यूए) नाम दिया गया।

महिला कृषकों के उत्थान हेतु एक नई पहल

महिला किसान कृषि का अदृश्य चेहरा हैं और अब उन्होंने समावेशी सतत विकास प्राप्त करने के लिए नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और विकास संगठनों का ध्यान आकर्षित किया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर भारत का विश्व में अपनी तरह का पहला संस्थान है जो विशेष रूप से कृषि में महिलाओं से संबंधित अनुसंधान के लिए समर्पित है। संस्थान का दृष्टिकोण लैंगिक अनुसंधान के लिए एक अग्रणी केंद्र के रूप में उभरना है और कृषि की उत्पादकता और स्थिरता को बढ़ाने के लिए कृषि में महिला सशक्तिकरण के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करना है। यह संस्थान देशभर के बारह राज्यों के तेरह राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में कृषि में महिलाओं पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनों के साथ–साथ राष्ट्रीय स्तर पर अपने अधिदेश (मैंडेट) को संबोधित करने हेतु विभिन्न कृषि अनुसंधान परियोजनाओं को कार्यान्वित कर रहा है। अनुसंधान, कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में लैंगिक मुद्दे, बेहतर पोषण, आजीविका सुरक्षा, व्यावसायिक स्वास्थ्य खतरों एवं श्रम साध्य कार्यों में कमी और क्षमता निर्माण के माध्यम से कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए लैंगिक–समान कृषि नीतियां/कार्यक्रम और लैंगिक – संवेदनशील कृषि–क्षेत्र प्रतिक्रियाओं पर केंद्रित है। संस्थान में विभिन्न आंतरिक, बाह्य वित्तपोषित, अंतर–संस्थागत, सहयोगी और समन्वित माध्यमों से अनुसंधान और विस्तार आधारित गतिविधियां चल रही हैं। देश में कृषि और संबद्ध गतिविधियों में पुरुषों और महिलाओं की राज्यवार भागीदारी, समय व्यतीत और योगदान के अध्ययनों से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में 22.4 प्रतिशत महिलाएं (6+ आयु) और 34.6 प्रतिशत पुरुष (6+ आयु) फसल और पशुधन क्षेत्र सहित कृषि और संबद्ध गतिविधियों में भाग लेते हैं। महिलाएं औसतन 233 मिनट प्रतिदिन और पुरुष 330 मिनट प्रतिदिन कृषि और संबद्ध गतिविधियों से जुड़े हैं। कृषि कार्यों से जुड़ी कुल जनशक्ति में से 38.7 प्रतिशत महिलाएं तथा 61.3 प्रतिशत पुरूष हैं। कृषि में आवश्यक कुल समय में महिलाओं का योगदान 30.8 प्रतिशत और पुरुषों का 69.2 प्रतिशत है। उत्तराखंड में फसल और पशुधन दोनों क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान पुरुषों की तुलना में अधिक और लक्षद्वीप में सबसे कम योगदान (6.3%) है। बिहार दूसरे और पश्चिम बंगाल तीसरे स्थान पर है।

ISSN No. : 0970-9398

लैंगिक समावेशिता हेतु भारत सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग की तेरह केंद्रीय योजनाओं के अंतर्गत नामांकित महिला लाभार्थियों की संख्या की पहचान करने के लिए मिशन शक्ति, ओडिशा और पशु चिकित्सा विज्ञान और पशुपालन निदेशालय, ओडिशा के साथ संबंध स्थापित किया गया। महिला–उन्मुख पशुधन विकास कार्यक्रमों के प्रभाव को बढ़ाने के लिए पशु चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और सेवा वितरण प्रणालियों में इनकी सहभागिता जरूरी है।

कृषिरत महिला सशक्तिकरण

महिला डेयरी उद्यमियों के लिए विशिष्ट सब्सिडी को विभिन्न योजनाओं में शामिल करके महिलाओं की आजीविका पर संगठित डेयरी क्षेत्र की भूमिका में लघु महिला डेयरी किसानों के लिए प्रमुख दूध विपणन चैनलों की पहचान करके उनकी आजीविका में सुधार के लिए एक मॉडल विकसित किया गया। विभिन्न कृषि संस्थानों में होने वाले लैंगिक तथ्यों को प्रदर्शित करने के लिए एक ऑनलाइन मंच के रूप में जेंडर फैक्ट शीट बनाकर अनुसंधान परियोजनाएं चलाई गई। महिला उत्थान हेतु प्रौद्योगिकियां, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, बजट उपयोग, कर्मचारियों का स्वरुप (स्टाफिंग पैटर्न), प्रगतिशील किसानों या उद्यमियों में परिवर्तित किसानों की संख्या, छात्र नामांकन और उत्तीर्ण छात्रों की स्थिति (पास आउट), राष्ट्रीय योजना लाभार्थी, महिलाओं के लिए विशिष्ट बुनियादी ढांचा शामिल है। प्रगतिशील महिला किसानों पर एक डेटाबेस विकसित किया गया। प्रगतिशील महिला किसानों की सूची नामवार, क्षेत्रवार, विषयवार खोजने हेतु डेटाबेस को उपयोगकर्ताओं के अनुरूप (यूजर फ्रेंडली) बनाया गया है।

कृषिरत महिलाओं का उत्थान

महिला किसानों की आजीविका में सुधार करने हेतु उड़ीसा के पुरी जिले में मल्टी एजेंसी पार्टिसिपेटरी मॉडल के माध्यम से मसाला प्रसंस्करण पर कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना की गई है। ओडिशा के पुरी जिले के निमापारा ब्लॉक में 'भार्गबी महिला मशरूम उत्पादक संघ' का गठन किया गया। लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण से इनकी आजीविका में आमूल–चूल परिवर्तन संभव हुआ और प्रत्येक समूह को मशरूम की खेती से एक महीने के अंदर लगभग 1.5 लाख रुपये का लाभार्जन हुआ। आजीविका विविधीकरण के लिए महिलाओं को मुर्गी पालन जैसे वैकल्पिक आजीविका विकल्पों से परिचित कराया जा रहा है। भारत के 12 विभिन्न कृषि पारिस्थितिकी प्रदेश के वाटरशेड कार्यक्रमों से पता चला कि कृषि गतिविधियों से संबंधित निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी केवल दस प्रतिशत थी। वाटरशेड हस्तक्षेपों के कार्यान्वयन से पीने के पानी, चारा और ईंधन की लकड़ी के संग्रह में महत्वपूर्ण कमी हुई। उन्नत उच्च उपज वाली किस्मों, सिंचाई के पानी की उपलब्धता के कारण अधिक उत्पादन संभव हुआ जिसके कारण परिवारों द्वारा अपने उपयोग हेतु खरीद में कमी आई। कृषि शक्ति उपलब्धता का जिलावार डेटा कृषि–जलवायु क्षेत्रों के अनुसार तैयार किया गया।

कृषिरत महिलाओं का उद्यमिता विकास

उद्यमिता विकास के तहत, उड़ीसा के पुरी जिले के निमापारा ब्लॉक में छोटे पैमाने पर कुक्कुट उत्पादन में पांच सफल उद्यमिता इकाइयां स्थापित की गईं। बकरी पालन क्षेत्र में, कृषि महिलाओं की आजीविका में सुधार के लिए तारादेवी फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, जाजपुर और माहिरा फार्मर्स प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, खोरधा और मानिकस्टु एग्रो प्राइवेट लिमिटेड, कालाहांडी के साथ लिंकेज स्थापित किया गया। "ओम साईं" महिला किसान हित समूह का गठन, प्रसंस्करण गतिविधियों के लिए उपकरणों से लैस एक सामान्य सुविधा केंद्र (सीएफसी) स्थापित किया गया। 'चिल्का फूडलाइन' को विपणन हेतु फाल्कन चिल्का मछली आपूर्ति श्रृंखला, भुवनेश्वर से जोड़ा गया। एकीकृत वर्टिकल न्यूट्री–फार्मिंग सिस्टम मॉडल को ग्रामीण परिवारों को साल भर आहार विविधता प्रदान करने के लिए मशरूम की खेती या कुक्कुट पालन के साथ–साथ पौष्टिक सब्जियां उगाने के लिए विकसित किया गया। डेयरी उद्यम संग किचन गार्डनिंग मॉडल में अधिकतम महिला भागीदारी पाई गई। ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी से न्यूट्री स्मार्ट गांवों के विकास की परिकल्पना की गई। आजीविका संवर्धन, पोषण सुरक्षा और उद्यमिता संवर्धन नामक तीन मॉड्यूल विकसित करने से लाभ अर्जित हुआ तथा कृषि महिलाओं के बीच इक्विटी लाने, उद्यमिता को बढ़ावा देने और महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए समूह आधारित उत्पादन के लिए जागरूकता पैदा हुई। कृषक महिला समूह के कृषि–उद्यमी दृष्टिकोण को मजबूत करने हेतु एक महिला किसान उत्पादक संगठन (डब्ल्यू.एफ.पी.ओ.), "अनन्या फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड" गठित की गई। महिलाओं के अनुकूल जलवायु स्मार्ट कृषि प्रौद्योगिकियों (सीएसएटी) और प्रथाओं का प्रदर्शन किया। तकनीकी हस्तक्षेपों ने संपत्ति पर महिलाओं के बढ़ते नियंत्रण, निर्णय लेने में भागीदारी, ज्ञान, व्यवहार में परिवर्तन, दृष्टिकोण, जागरूकता, सशक्तिकरण और बढ़ी हुई आर्थिक स्थिति, खाद्य सुरक्षा और पोषण पर प्रभाव डाला। दूर–दराज के क्षेत्रों की महिला कृषि श्रमिकों के पास कृषि–उपकरण/उपकरण उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। मछली प्रसंस्करण में महिलाओं की भागीदारी और सफाई, डीस्केलैंगिक, छीलने, काटने जैसे कार्यों में आने वाली समस्याओं का निदान हुआ। कृषि में महिलाओं की गतिशीलता और भूमिका का विश्लेषण करने के लिए एक डेटाबेस रिपॉजिटरी विकसित किया गया। डेटाबेस में कृषि, बागवानी, वानिकी, पशुधन और डेयरी खेती में महिलाओं की भागीदारी शामिल थी। कृषक महिलाओं के आजीविका पैटर्न का आंकलन किया गया। विभिन्न कृषि गतिविधियों में लगी अनुसूचित जाति की ग्रामीण महिलाओं को मुख्यधारा में लाने और सशक्त बनाने के लिए अनुसूचित जाति उप–योजना के तहत पांच कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित किए गए। कृषिरत महिलाओं हेतु विभिन्न कौशल प्रशिक्षण, प्रदर्शन, फील्ड दौरे, बातचीत, महत्वपूर्ण आदानों का वितरण और कस्टम हायरिंग सेंटर की स्थापना की गई। महिला किसानों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न शोध पत्र, तकनीकी बुलेटिन, लोकप्रिय लेख और नीति सार (पॉलिसी ब्रीफ) भी प्रकाशित किए गए।

ISSN No. : 0970-9398

संस्थान उपलब्धियां

केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर देश में अपनी तरह का पहला संस्थान है जिसके पास कृषि में लैंगिक संबंधी अनुसंधान का एक अनूठा अधिदेश है। संस्थान के पास कृषि और सामाजिक विज्ञान सहित संबद्ध क्षेत्रों में एक मजबूत बहु–विषयक वैज्ञानिक आधार है, जो कृषि में महिलाओं की भूमिका, भागीदारी, बाधाओं और उनके लिए मौजूद उभरते अवसरों पर शोध करता है। संस्थान का अनुसंधान क्षेत्र लैंगिक परिप्रेक्ष्य में प्रौद्योगिकी मूल्यांकन और परिशोधन पर केंद्रित है जिसमें कृषक महिलाओं के लिए परिचालन कठिन परिश्रम का प्रबंधन; कृषक परिवारों की आजीविका और पोषण सुरक्षा; लैंगिक संवेदनशील विस्तार पद्धतियाँ; लैंगिक आधार पर डेटा और नीति वकालत के भंडार का निर्माण करना शामिल है। संस्थान की अधिकांश गतिविधियां महिलाओं को मुख्यधारा में लाने और सशक्त बनाने की राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं ताकि वे राष्ट्र निर्माण में भाग ले सकें। भारत सरकार के पोषण अभियान नामक कार्यक्रम के तहत एक "न्यूट्री–स्मार्ट विलेज" बनाया गया है।

आत्मनिर्भर भारत – बुनियादी सुविधाएं

प्रवासी श्रमिकों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए आत्मनिर्भर भारत योजना शुरू की गई। आत्मनिर्भर भारत पैकेज के तहत, भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रवासी श्रमिकों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया। कृषि में कृषक महिलाओं के भारी योगदान और भागीदारी को मान्यता देने के लिए "बाजरा : महिलाओं को सशक्त बनाना और पोषण सुरक्षा प्रदान करना" विषयक कार्यक्रम चलाया गया। बागवानी और क्षेत्रीय फसलों के अनुसंधान कार्यों तथा पशुधन और मत्स्य पालन हेतु रिसर्च फार्म उपलब्ध है। संस्थान में बागवानी आधारित फसल मोड, वर्मीकम्पोस्टिंग इकाई, एकीकृत मछली–पोल्ट्री–बत्तख–इकाई और सजावटी मछली इकाई सहित विभिन्न कृषि–उद्यमों के लिए अच्छी तरह से विकसित प्रदर्शन इकाइयां हैं। सूक्ष्म सिंचाई सुविधाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है। संस्थान में कीट विज्ञान, एर्गोनॉमिक्स, कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी, बागवानी, बीज प्रौद्योगिकी, पशु विज्ञान, मत्स्य पालन और लैंगिक डेटा केंद्र की अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं। सभी आवश्यक सुविधाओं से सुसज्जित प्रशिक्षु छात्रावास है। प्रशिक्षण–सह–विनिर्माण इकाई स्थापित है। महिलाओं के अनुकूल कृषि उपकरणों के निर्माण हेतु कच्चा माल खरीदकर उपकरण तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

कृषिरत महिलाओं पर एआईसीआरपी (एक्रीप)

कृषि में महिलाओं पर एक्रीप ग्रामीण परिवारों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में अनुसंधान और विस्तार का एक मजबूत आधार स्तंभ है। इस संस्थान के देशभर में तेरह राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में गृह विज्ञान पर ये एक्रीप केंद्र स्थापित हैं – चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा; पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, पंजाब; गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर, उत्तरांचल; महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान; प्रोफेसर जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय (पीजेटीएसएयू), हैदराबाद, तेलंगाना; कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़, कर्नाटक; कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय बेंगलुरु, कर्नाटक; असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट, असम; चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश; मराठावाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभणी, महाराष्ट्र; केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, तुरा, मेघालय; तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, मदुरै, तमिलनाडु और डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, समस्तीपुर, बिहार।

कृषि कार्यों में संलग्न महिला उत्थान

देश में महिलाएं विभिन्न प्रकार की असमानताओं का शिकार हैं जो उनकी प्रगति की गति को कम करती हैं। महिला सशक्तीकरण और सतत कृषि विकास के दोहरे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए योजना बनाने और बढ़ावा देने और लैंगिक उत्तरदायी कार्यों के लिए कृषि में महिलाओं की भागीदारी की बेहतर समझ बनी है। चूंकि, कृषि कई पुरुषों और महिलाओं के लिए कम आकर्षक आर्थिक व्यवसाय है परंतु अब कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी में लगातार वृद्धि हो रही है। कृषिरत महिलाओं के प्रति समर्पित इस संस्थान का महत्व बदलते सामाजिक–आर्थिक, संस्थागत, नीति और प्राकृतिक वातावरण में कई गुना बढ़ गया है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि कृषि में लैंगिक गतिशीलता एक बड़े बदलाव के लिए तैयार है।

निष्कर्ष

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् अर्थात् "सभी सुखी होवें, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े। "भारत इसी भावना के साथ सबकी मदद करता है। प्राचीन सभ्यता से परिपूर्ण हमारे देश का गौरवशाली भूतकाल था और शानदार भविष्य प्रतीक्षारत है। जैसे उजाला अंधियारे को चीरकर आशा की नई किरण पाता है, उसी तरह भारतीय महिला कृषक भी जिंदगी और प्रकृति के थपेड़ों को सहते हुए हर बार शरीर में नई कोपलों को प्रस्फुटित होते देखने के लिए लालायित रहकर नित नवीन उत्पादन की खोज में अग्रसर है। नित नवीन तकनीकी का आगमन कृषिरत महिलाओं के लिए वरदान साबित होता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब कृषिरत महिलाएं विश्व में अपनी अनूठी पहचान कायम करती नजर आएंगी। इस नेक कार्य में प्रस्तुत संस्थान अपनी विशेष भूमिका निभाने में तत्पर है। कृषिरत महिलाओं के उत्थान संबंधी विस्तृत जानकारी हेतु कृपया http://www.icar-ciwa.org.in नामक वेबसाइट पर पधारने का कष्ट करें।

–कृषि प्रसार विशेषज्ञ
सेंट्रल रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर ड्राइलेंड एग्रीकल्चर,
सैदाबाद पोस्ट, हैदराबाद – 59

स्त्रोत : भाकृअनुप–केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुनवेश्वर की वार्षिक रिपोर्ट, न्यूटलैटर व वेबसाइट।

ISSN No. : 0970-9398

विज्ञान के क्षेत्र में महिलाएं

—निवेदिता मिश्रा

जैसा कि यह ज्ञात ही है कि भारत संपन्न परंपरा एवं सांस्कृतिक मूल्यों में समृद्ध देश है, जहां प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या स्त्री सभी के हृदय में अपने देश के लिए विशिष्ट स्थान है। यह कहा भी गया है कि "जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसीद्य" मुझे गर्व है कि मैं भारतवासी हूँद्य जहां का वैदिक धर्म, ऊंचा इतिहास, नैसर्गिक भूगोल और मानवीय मूल्य अभिमान करने योग्य हैं। आज के दौर की अगर हम बात करें तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह कारोबार हो, साहित्य एवं कला हो, खेल—कूद हो, शिक्षा हो या विज्ञान और तकनीकी, इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं की सशक्त भागीदारी है, जिसे वैश्विक स्तर पर भी स्वीकार किया गया है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान होता है। आज के इस युग में भी हमारे देश में ऐसी विडंबना है कि अगर क्रिकेट के किसी खिलाड़ी का नाम पूछा जाता है तो तत्काल दिमाग में धोनी या विराट कोहली का नाम याद आ जाता है, लेकिन बहुत कम लोगों को महिला क्रिकेट खिलाड़ी मिताली राज, झूलन गोस्वामी का नाम याद रहता है, ठीक उसी प्रकार जब हम वैज्ञानिकों की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में सर्वप्रथम आईजैक न्यूटन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सी.वी. रमन जैसे पुरुष वैज्ञानिकों की ही छवि उभर कर सामने आती है, न कि जानकी अम्माल, असीमा चटर्जी, अन्ना मणि, मुथैया वनिता जैसी महिला वैज्ञानिकों की। भले ही आधुनिक युग में महिलाएँ धरती से आसमान तक हर जगह पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं, लेकिन आज भी उच्च शिक्षा से लेकर शोध संस्थानों व कार्यक्षेत्र तक, हर जगह पर उनके योगदान को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना कि एक पुरुष के योगदान को महत्व दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति के बावजूद भी महिलाएं सभी क्षेत्रों में अपना कार्य का परचम लहरा रही हैं और अनेक चुनौतियों का सामना करने के बाद भी इसरो में चंद्रयान मिशन हो या फिर मंगल मिशन की सफलता, नासा से लेकर नोबेल पुरस्कार तक हर क्षेत्र में हमारी महिला वैज्ञानिकों ने अपना लोहा मनवाया है।

आज का विषय है विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान, इस क्षेत्र में भी भारतीय महिलाएं किसी से कम नहीं हैं, हमारा भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। आज हम भारत की आजादी के 75 वर्षों का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, ऐसे में हमें उन महिलाओं के योगदान का भी जश्न मनाना चाहिए, जिन्होंने भारत में 19 वीं और 20 वीं शताब्दी में, रूढ़िवादी और दकियानूसी परंपराओं को तोड़कर विज्ञान के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दिया — वे विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी रही और उन्होंने भेदभाव के साथ—साथ महिलाओं को शैक्षणिक संस्थानों से दूर रखने की सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं के खिलाफ लड़ाई भी लड़ी। आज अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर रसायन, भौतिकी, जैव प्रौद्योगिकी, जीव विज्ञान, चिकित्सा, नैनो तकनीक, परमाणु अनुसंधान, पृथ्वी एवं पर्यावरण विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग और कृषि विज्ञान जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भारतीय महिला वैज्ञानिक अपनी बेहतरीन छाप छोड़ रही हैं। हालांकि, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग एवं गणित (STEM) के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या समानुपातिक नहीं है। कुछ दशक पहले महिलाओं के लिए यह स्थिति आज के मुकाबले कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण थी। अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण महिलाओं के लिए विज्ञान की दुनिया में मुकाम प्राप्त करना कभी आसान नहीं रहा है। लेकिन, बीसवीं सदी के उस दौर में भी कुछ महिलाओं ने चुनौतियों को पीछे छोड़कर विज्ञान का दामन थामा और ऐसी लकीर खींच दी, जिसे आज भी दुनिया याद करती है। ऐसे में, उन महिला वैज्ञानिकों का स्मरण अत्यंत आवश्यक है, जिनका कृतित्व और व्यक्तित्व आने वाली पीढ़ियों के लिए एक मिसाल है, प्रेरणा है।

- **जानकी अम्माल** : जानकी अम्माल का जन्म 4 नवंबर 1897 को केरल में हुआ। वो वनस्पति शास्त्र की वैज्ञानिक थीं। उन्होंने गन्नों की हाइब्रिड प्रजाति की खोज और क्रॉस ब्रीडिंग पर शोध किया था जिसे पूरी दुनिया में मान्यता मिली। वनस्पति शास्त्र में योगदान को देखते हुए वर्ष 1957 में इन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। 7 फरवरी, 1984 को इनका निधन हो गया।

- **आनंदीबाई जोशीः** इनका जन्म 31 मार्च 1865 को पुणे शहर में हुआ था। आनंदीबाई गोपालराव जोशी भारत की पहली महिला फिजीशयन थीं। उस जमाने में उनकी शादी महज 9 वर्ष की उम्र में हो गई थी। वह 14 वर्ष की उम्र में मां भी बन गई थीं, लेकिन, उन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को दम तोड़ने नहीं दिया। किसी दवाई की कमी के कारण उनके बेटे की कम उम्र में ही मृत्यु हो गई। इस घटना ने उनके जीवन को बदलकर रख दिया और उन्हें दवाओं पर शोध करने के लिए प्रेरित

ISSN No. : 0970-9398

किया। ये भारत की पहली ऐसी महिला थीं जिन्होंने विदेश में डॉक्टर की डिग्री प्राप्त की। भारत वापसी के बाद इन्होंने अधिक से अधिक कार्य चिकित्सा विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किया। 26 फरवरी 1887 में केवल 22 वर्ष की उम्र में बीमारी के चलते इनका निधन हो गया।

- **असीमा चटर्जीः** असीमा चटर्जी का जन्म 23 सितंबर 1917 को बंगाल में एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। ये उच्च कोटी की रसायनशास्त्री थीं। कैंसर चिकित्सा, मिर्गी और मलेरिया रोधी दवाओं के विकास के लिए इन्हें प्रसिद्धि हासिल हुई। उन्होंने कार्बनिक रसायन यानी ऑर्गेनिक केमिस्ट्री और फाइटोमेडिसिन के क्षेत्र में शानदार उपलब्धियां प्राप्त कीं। अपने शोधों के जरिए उन्होंने मिर्गी और मलेरिया जैसी तमाम बीमारियों के लिए कारगर नुस्खे विकसित किए, जिन्हें आज भी दवा कंपनियां बेच रही हैं। विज्ञान के क्षेत्र में उनके इस योगदान को उनके जीवनकाल में ही खूब सम्मान भी मिले। ये पहली ऐसी भारतीय महिला थीं जिन्हें किसी भारतीय विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट ऑफ साइंस की उपाधि दी गई थी। वर्ष 1962 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्हें सी.वी. रामन पुरस्कार से नवाजा। वहीं, वर्ष 1975 में उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। वर्ष 1982 से 1990 तक उन्हें राज्य सभा के लिए नामित किया गया था। 2006 में 90 वर्ष की उम्र में इन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया।

- **अन्ना मणिः** अन्ना मणि का जन्म 23 अगस्त 1918 को केरल के त्रावणकोर में हुआ था। इन्होंने 8 वर्ष की उम्र में उपहार के रूप में कान के हीरे के बुंदे ठुकराकर अपने लिए एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका मांग लिया था। वास्तव में उन्होंने अपने मणि नाम को सार्थक किया। मौसम वैज्ञानिक के तौर पर ये मशहूर थीं। वह भारत के मौसम विभाग के उप–निदेशक के पद पर रहीं और उन्होंने मौसम विज्ञान उपकरणों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है साथ ही उन्होंने सौर विकिरण, ओजोन परत एवं वायु ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। वर्ष 1940 में उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव आया, जब भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) ने उन्हें शोध छात्रवृत्ति प्रदान की और वह रमन की टीम के साथ काम करने लगीं। उन्हें जीवन में कई पुरस्कार मिले। उन्होंने 16 अगस्त 2001 को अंतिम सांस ली।

- **किरण मजूमदार शॉः** किरण विज्ञान की दुनिया में किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं। जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अहम योगदान देने वाली किरण मजूमदार ने मधुमेह, कैंसर और आत्म प्रतिरोधी बीमारियों पर शोध के साथ ही एंजाइमों के निर्माण के लिये एकीकृत जैविक दवा कंपनी 'बायोकॉन लिमिटेड' की स्थापना की। भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के सलाहकार परिषद की एक सदस्य के रूप में, उन्होंने भारत में जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास के मार्गदर्शन के लिए भारत सरकार, उद्योग और शिक्षा को एक साथ लाने में एक निर्णायक भूमिका निभाई है। वे दुनिया की 100 सबसे शक्तिशाली महिलाओं की फोर्ब्स की सूची और फाइनेंशियल टाइम्स के कारोबार में शीर्ष 50 महिलाओं की सूची में भी शामिल हैं।

हमारी महिला वैज्ञानिकों ने केवल विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य नहीं किए हैं, बल्कि गणित, अंतरिक्ष और खगोल शास्त्र के क्षेत्र में भी शानदार उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। अंतरिक्ष की दुनिया में दमदार प्रदर्शन करने वाली इन महिलाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः –

मुथैया वनिताः इनका जन्म 2 अगस्त 1964 को भारत के चेन्नई में हुआ। वनिता ने तीन दशकों से अधिक समय तक इसरो में काम किया है। मुथैया इसरो में इस स्तर का काम करने वाली ऐसी पहली महिला वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने मैपिंग हेतु प्रयोग किए जाने वाले पहले भारतीय रिमोट सेंसिंग उपग्रह कार्टोसैट–1 और दूसरे महासागर अनुप्रयोग उपग्रह ओशनसैट–2 मिशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये भारत में दूसरे चंद्रयान मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर थीं। वर्ष 2006 में इन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

ऋतु करिधलः ऋतु करिधल भारत के सबसे महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान–2 की मिशन डायरेक्टर थीं। चंद्रयान–1 मिशन में डिप्टी ऑपरेशंस डायरेक्टर के रूप में कार्यभार संभाला। वर्ष 2007 में इन्हें इसरो के यंग साइंटिस्ट ऑवार्ड से सम्मानित किया गया। ऋतु करिधल को अपनी पढ़ाई के दौरान ही अंतरिक्ष में काफी रुचि थी। इसीलिए उन्होंने इसी में अपना भविष्य तलाश करने की कोशिश की और आज सफलता की बुलंदियों को छू रही हैं। ऋतु करिधल ने लखनऊ में ही पढ़ाई की। इसके बाद लखनऊ से ही उन्होंने फिजिक्स में एमएससी की है। इसके बाद उन्होंने बेंगलुरु के इंडियन साइंस इंस्टीट्यूट का रुख किया, जहां अंतरिक्ष विज्ञान में उन्होंने महारथ हासिल की। ऋतु की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें ISRO में नौकरी मिल गई। इस युवा वैज्ञानिक ने इसके बाद कई उपलब्धियां प्राप्त की और 2007 में उन्हें यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड भी मिला।

टेसी थॉमसः टेसी थॉमस का जन्म 1963 को केरल में हुआ। इनको भारत की मिसाइल महिला और अग्निपुत्री के नाम से जाना जाता है। टेसी थॉमस रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन में अग्नि चतुर्थ की परियोजना निदेशक एवं एरोनाटिकल सिस्टम्स की महानिदेशक थीं। टेसी थॉमस ने डीआरडीओ में अपने काम से सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इन्होंने भारत की रक्षा प्रणाली को मजबूत करने में अत्यधिक योगदान दिया है। 2012 में टेसी थॉमस को लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए चयन किया गया था। यह पुरस्कार उन्हें राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया गया था। उनकी अनेक उपलब्धियों में अग्नि–2,

ISSN No. : 0970-9398

अग्नि–3 और अग्नि–4 प्रक्षेपास्त्र की मुख्य टीम का हिस्सा बनना और सफल प्रशिक्षण है। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को अपना प्रेरणा स्रोत माना है।

कल्पना चावला: कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को हरियाणा के करनाल में हुआ था। भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला के बारे में छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर कोई जानता है। कल्पना अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला थीं। वह 376 घंटे 34 मिनट तक अंतरिक्ष में रहीं। इस दौरान उन्होंने धरती के 252 चक्कर लगाए थे। 1 फरवरी 2003 को हुई अंतरिक्ष इतिहास की एक मनहूस दुर्घटना में कल्पना चावला सहित सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई।

सुनीता विलियम्स: सुनीता विलियम्स अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के माध्यम से अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की दूसरी महिला हैं। मैसाचुसेट्स से हाई स्कूल पास करने के बाद 1987 में उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की नौसैनिक अकादमी से फिजिकल साइन्स में बीएस (स्नातक उपाधि) की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात 1995 में उन्होंने फ़्लोरिडा इंस्टिट्यूट ऑफ़ टैक्नोलॉजी से इंजीनियरिंग मैनेजमेंट में एम.एस. की उपाधि हासिल की। सुनीता विलियम्स ने एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में 195 दिनों तक अंतरिक्ष में रहने का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया।

विज्ञान के क्षेत्र में वैश्विक रुझान को देखते हुए महिलाओं का प्रतिनिधित्व

- 20वीं शताब्दी के पहले भाग में कई यूरोपीय अकादमियों में महिला वैज्ञानिकों को सदस्य के रूप में स्वीकृति प्रदान की गई थी।
- 'जेंडर इन साइंस, इनोवेशन, टेक्नोलॉजी एंड एन्जनिरिंग (Gender in Science, Innovation, Technology and Engineering - Gender In SITE), इंटर एकेडमी पार्टनरशिप (Inter Academy Partnership - IAP) और इंटरनेशनल साइंस काउंसिल (International Science Council- ISC) द्वारा संयुक्त रूप से किए गए एक वर्तमान अध्ययन से पता चलता है कि वरिष्ठ अकादमियों (senior academies) में महिलाओं की निर्वाचित सदस्यता में मामूली वृद्धि हुई है जो वर्ष 2015 में 13% थी जो वर्ष 2020 में बढ़कर 16% हो गई है।
- हालाँकि यूथ एकेडमी (Young Academies) के मामले में स्थिति बेहतर है, लेकिन महिलाओं का प्रतिनिधित्व (42% औसत हिस्सेदारी) वहाँ भी कम है।
- वरिष्ठ अकादमियों में 'अकैडमी ऑफ़ साइंसेज़ ऑफ क्यूबा' (A cademy of Sciences of Cuba) 33% महिला प्रतिनिधित्व करते हुए सबसे आगे है।

विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में भारत–विशिष्ट आंकड़ों की अगर हम बात करें तो वर्ष 2020 में किये गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (Indian National ScienceA cademy & INSA) के 1, 044 सदस्यों में से केवल 89 महिलाएँ हैं जो कुल मात्र का 9% है। वर्ष 2015 में उनके प्रतिनिधित्व में और अधिक कमी देखी गई जिसमें 864 सदस्यों में मात्र 6% महिला वैज्ञानिक सदस्य शामिल थीं। इसी प्रकार, INSA के शासी निकाय में वर्ष 2020 में कुल 31 सदस्यों में से केवल 7 महिलाएँ शामिल थीं जबकि वर्ष 2015 में इसमें कोई महिला सदस्य शामिल नहीं थी। तीन अकादमियाँ–भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (INSA), भारतीय विज्ञान अकादमी (IAS) और नेशनल अकादमी (NAS) पेशेवर निकायों और संबंधित संस्थानों सहित विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने का प्रयास कर रही हैं।

वैज्ञानिक जगत में महिलाओं की भागीदारी को कम करने वाले कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं–

- विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं की कमी का एक प्रमुख कारण रूढ़िवादी लैंगिक धारणा है। लोगों के बीच यह मान्यता व्याप्त है कि अधिक परिश्रम व अधिक ज्ञान वाले कार्यों को पुरुष ही बेहतर तरीके से कर सकते हैं। महिलाएँ घर के कार्यों के लिए बनी हैं और इसलिए उन्हें घर के कार्य करने चाहिए या ऐसा व्यवसाय चुनना चाहिए जिसे घर के कार्यों के साथ–साथ आसानी से संभाला जा सके।
- महिलाओं को काम पर रखने या फेलोशिप और अनुदान आदि देने में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण पर ज़ोर दिया जाता है।
- लैंगिक समानता को अवरुद्ध करने में संगठनात्मक कारकों ने भी बड़ी भूमिका है। महिला नेतृत्वकर्त्ताओं और महिला रोल मॉडलों की कमी ने भी संभवतः अधिकाधिक महिलाओं को इन क्षेत्रों में प्रवेश को अवरुद्ध किया है।
- गर्भावस्था के दौरान संस्थागत ढाँचे का सहायक न होना और कार्यस्थल में सुरक्षा–संबंधी समस्याएँ महिलाओं को इस क्षेत्र से बाहर रहने को मज़बूर करती हैं।
- इन क्षेत्रों में महिलाओं की कम संख्या के लिए न केवल सामाजिक मानदंड बल्कि गुणवत्ताहीन शिक्षा भी ज़िम्मेदार है।
- किसी महिला वैज्ञानिक को नौकरी देने या उसे नेतृत्वकारी पद प्रदान करने का निर्णय लेते समय उसकी योग्यता के बजाय उसकी पारिवारिक स्थिति या फिर जीवन साथी के स्तर को ध्यान में रखा जाता है।
- यह एक सामान्य मानदंड सा बन गया है कि पहले से ही काम पर रखे गए फैकल्टी की महिला पत्नियों को वरीयता नहीं दी जायेगी चाहे वे कितनी भी मेधावी हों।
- विवाह एवं संतानोत्पत्ति से संबंधित तनाव, सामाजिक मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव और घरेलू बंधन

ISSN No. : 0970-9398

(घर चलाने से संबंधित ज़िम्मेदारी, बुजुर्गों की देखभाल आदि) इन 'गैर–पारंपरिक' क्षेत्रों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में और अवरोध उत्पन्न करते हैं।

- इन क्षेत्रों में महिलाओं की कम संख्या के लिये न केवल सामाजिक मानदंड बल्कि गुणवत्ताहीन शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित समस्याएँ भी ज़िम्मेदार हैं।

विज्ञान के क्षेत्र में महिलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु निम्नलिखित पहलें शुरू की गई हैं:–

- देश में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (Science Technology Engineering and Mathematics - STEM) के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के कम प्रतिनिधित्व की समस्या को संबोधित करने हेतु 'विज्ञान ज्योति कार्यक्रम' (Vigyan Jyoti Programme) को शुरू किया गया था।
- आरंभ में इसे स्कूल स्तर पर शुरू किया गया था जहाँ कक्षा 9–12 की मेधावी छात्राओं को STEM क्षेत्र में उच्च शिक्षा और करियर बनाने हेतु प्रोत्साहित किया गया।
- अभी हाल ही में कार्यक्रम के दूसरे चरण का 100 ज़िलों में विस्तारित किया गया है।
- महिला वैज्ञानिकों को शैक्षणिक और प्रशासनिक स्तर पर अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 2014–15 में 'किरण योजना' (KIRAN scheme) शुरू की गई।

- योजना के तहत शामिल 'महिला वैज्ञानिक योजना' बेरोज़गार महिला वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकीविदों को करियर के अवसर प्रदान करती हैं, विशेषकर उन महिलाओं को जिनके करियर में एक अवरोध आया है।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (DST) ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (Artificial Intelligence -AI) नवाचारों को बढ़ावा देने और भविष्य में AI–आधारित नौकरियों के लिए कुशल जनशक्ति तैयार करने के लक्ष्य के साथ महिला विश्वविद्यालयों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रयोगशालाएँ भी स्थापित की हैं।
- महिलाओं के लिए इंडो–यूएस फेलोशिप कार्यक्रम के तहत महिला वैज्ञानिकों को अमेरिका में अनुसंधान प्रयोगशालाओं में कार्य करने का अवसर प्रदान किया गया है।
- महिला विश्वविद्यालयों में नवाचार और उत्कृष्टता हेतु विश्वविद्यालय अनुसंधान का समेकन (Consolidation of University Research for Innovation and Excellence in Women Universities - CURIE) कार्यक्रम का उद्देश्य महिला विश्वविद्यालयों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता के सृजन हेतु अनुसंधान एवं विकास अवसंरचना में सुधार लाना और अत्याधुनिक अनुसंधान सुविधाओं की स्थापना करना है।
- STEM क्षेत्र में लैंगिक समानता का आकलन करने हेतु एक व्यापक चार्टर एवं फ्रेमवर्क विकसित करने के लिए 'जेंडर एडवांसमेंट फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंस्टीट्यूशंस' (GenderA dvancement for Transforming Institutions - GATI) कार्यक्रम शुरू किया गया।
- यद्यपि सभी क्षेत्रों में महिलाओं का कम प्रतिनिधित्व देखा जाता है। विज्ञान के क्षेत्र में इस स्थिति को देखते हुए वैज्ञानिक समुदाय एवं विज्ञान अकादमियों को महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देने के लिये रणनीतियों को विकसित करने की आवश्यकता है।
- इससे भी महत्त्वपूर्ण यह है कि विज्ञान अकादमियों में महिलाओं को बढ़ावा देने और उन्हें बनाए रखने के लिए उनकी भूमिका एवं योगदान को प्रतिबिंबित करना होगा और इस तरह विज्ञान के क्षेत्र को महिलाओं के प्रति भी समावेशी और संवेदनशील बनाना होगा।
- यह आवश्यक है कि हम लिंगभेद एवं संस्थागत बाधाओं को समझें और दूर करें जो अधिकांश महिलाओं को वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रवेश करने हेतु बढ़ा बनते हैं।

कुल मिलाकर यह कहना निश्चय ही अनिवार्य है कि समय के साथ–साथ विज्ञान के क्षेत्र में भी महिलाओं ने कठिन परिश्रम एवं लगन से अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है और साथ ही विज्ञान के क्षेत्र में बीते विगत कुछ वर्षों में महिला वैज्ञानिक तेजी से उभर कर सामने आई हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारी भारतीय महिलाओं ने गगन यान, मंगल मिशन से लेकर इसरो के तीनों चंद्र अभियानों में अपनी काबिलियत का लोहा मनवाया है। महिला वैज्ञानिक अंतरिक्ष विज्ञान ही नहीं, मिसाइलों के विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनके आविष्कारों व प्रयोगों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति में चार चांद लगाए दिए हैं लेकिन तेजी से भाग रही इस विज्ञान की दुनिया में उनकी रफ्तार का पहिया अभी थोड़ा धीमा है। इसलिए यथास्थिति में तेजी से बदलाव लाने के लिए हमारे समाज, परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी कार्यालयों कंपनियों और सरकारों, सभी को एक साथ मिलकर कार्य करना होगा। साथ ही, वैज्ञानिक जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाली महिलाओं की सफलता की कहानियाँ जन–जन तक पहुँचानी होंगी जिससे संकीर्ण मानसिकता वाले तबके की सोच में बदलाव लाया जा सके और देश की बेटियाँ बढ़–चढ़कर विज्ञान के क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सकें।

–हिंदी अधिकारी,
अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान,
गोवंडी, देवनार, मुंबई

ISSN No. : 0970-9398

हिंदी नाट्य साहित्य एवं रंगमंच में महिला नाटककारों का योगदान

–आराधना साव

विश्व में स्त्री विमर्श का दौर जब से शुरू हुआ तब से विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों के योगदान को चिह्नित किया गया एवं उनके महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकारा गया लेकिन बात जब हिंदी नाटक एवं रंगमंच की होती है तो लगता है इस क्षेत्र में महिलाओं को उनका उचित स्थान मिलना अब भी शेष है। यथा "महिलाओं ने भी नाटक लिखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। नाटक लिख कर सामाजिक कुरीतियों, रूढ़िवादिता, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को उजागर किया है। लेकिन उनके लिखे नाटक का मंचन न के बराबर हुआ है।"[1] हालांकि हिंदी नाट्य साहित्य के अंतर्गत महिलाओं द्वारा पुरुषों की तुलना में कम नाटक लिखे गए हैं, मगर लिखे गए हैं। हिंदी नाट्य साहित्य एवं रंगमंच की बात करते ही अनायास ही हमारी जेहन में भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश, भुवनेश्वर आदि जैसे हिंदी नाटककारों के नाम आ जाते हैं मगर उनमें से एक भी नाम महिला नाटककार का नहीं होता है। कारण, उनके द्वारा लिखी गई नाटकों पर न तो अधिक चर्चा की गई है और न ही उन पर बहुत कुछ लिखा या पढ़ा गया है। जबकि हिंदी नाट्य लेखन एवं रंगमंच से मृदुला गर्ग, मन्नू भण्डारी, मृणाल पाण्डेय, डॉ. कुसुम कुमार, मीरा कान्त, डॉ.गिरीश रस्तोगी, त्रिपुरारी शर्मा, मालती श्रीखंडे आदि महत्वपूर्ण नाम जुड़े हुए हैं। इसलिए हिंदी नाट्य साहित्य और रंगमंच में महिला नाटककारों के योगदान पर अध्ययन करना महत्वपूर्ण ही नहीं, आवश्यक भी है।

इस संबंध में हिंदी की 'आजकल' पत्रिका में आरती वर्मा के छपे लेख के अनुसार, "भारतेन्दु युग में उपलब्ध 'गोपीचंद' नाटक को हम एकमात्र ऐसा नाटक मान सकते हैं, जो किसी महिला ने लिखा है। इसकी लेखिका श्रीमती लाली देवी है।"[2] क्योंकि हिंदी नाटक की शुरुआत ही भारतेन्दु युग से हुई इसलिए हिंदी में 'गोपीचंद' नाटक को किसी महिला द्वारा लिखा गया पहला नाटक माना जा सकता है। इस नाटक में राजा गोपीचंद के सन्यास लेने के बाद उनकी रानियों की क्या मनोदशा हुई, इसका बखूबी चित्रण किया गया है। इस नाटक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ. सुमन राजे ने लिखा है, "प्रकाशित होते हुए भी प्रकाश में न आनेवाले इस नाटक की कई महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। इसकी लेखिका व तत्कालीन नाट्य–परम्पराओं से परिचित होते हुए भी उससे हटकर नए प्रयोग का प्रयास, नाटक में लोकशैली का प्रयोग, नाटक की गीतात्मक विधा और गीतों में हिंदी के अतिरिक्त भी अन्य भाषाओं का प्रयोग तथा पौराणिक नाटक होते हुए भी स्त्री विमर्श का स्पर्श।"[3]

श्रीमती लाली देवी के बाद कई दशकों तक हिंदी नाट्य लेखन परंपरा में कोई महिला नाटककार नहीं मिलती हैं। साठ के दशक के आस–पास डॉ. कंचनलता सब्बरवाल का नाम हमें मिलता है। डॉ. सब्बरवाल ने 'लक्ष्मीबाई', 'अनंता', 'आँधी और तूफान', 'भीगी पलकें', 'माँ की लाज' एवं 'आदित्यसेन गुप्त' जैसे नाटकों की रचना की। इनमें से 'आदित्यसेन गुप्त', 'लक्ष्मीबाई', 'अनंता' और भीगी पलकें ऐतिहासिक नाटक हैं जबकि 'आँधी और तूफान' एवं 'माँ की लाज' देशभक्ति से संबंधित नाटक हैं। 'आँधी और तूफान' एवं 'माँ की लाज' नाटकों की कथावस्तु क्रमशः भारत पर चीन एवं पाकिस्तान के आक्रमण की पृष्ठभूमि से संबंधित है जिसमें देशभक्ति को सर्वोपरि बताया गया है। वहीं अपने ऐतिहासिक नाटकों में डॉ.सब्बरवाल ने भारत के अतीत गौरव को केंद्र में रखा है। इस प्रकार डॉ. सब्बरवाल ने अपने नाटकों द्वारा अपने युगबोध एवं देशप्रेम का परिचय दिया एवं हिंदी नाट्य लेखन परंपरा में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की।

हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी ने भी 'बिना दीवारों के घर' एवं 'महाभोज' नामक दो महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं जिसमें पहला उनका मौलिक नाटक है एवं दूसरा 'महाभोज' नाम के ही उनके प्रसिद्ध उपन्यास का नाट्य रूपान्तरण है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक की कथावस्तु ऐसी दाम्पत्य जोड़ी के इर्द–गिर्द घूमती है जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं। इसमें पत्नी का आत्मनिर्भर होना विशेष है क्योंकि आर्थिक रूप से पति पर निर्भर पत्नियाँ अक्सर अपने वजूद को पति के साथ जोड़कर ही

ISSN No. : 0970-9398

देखती हैं। लेकिन 'बिना दीवारों के घर' नाटक में मौजूद दंपत्ति का एक दूसरे से अधिक स्वयं को महत्वपूर्ण मानना उनके दांपत्य संबंध को प्रभावित करता है जो उनके रिश्ते को टूटने की कगार पर ले जाती है। यह नाटक आज और अधिक प्रासंगिक लगता है, जब तलाक के मामले दिन–प्रतिदिन बढ़ रहे हैं जिसका मूल कारण पति–पत्नी का अहं है।

मन्नू भण्डारी जी का दूसरा नाटक 'महाभोज' एक राजनीतिक नाटक है जो एक हरिजन युवक की हत्या के इर्द–गिर्द घूमती है एवं जमींदारों एवं पुलिस के अत्याचारों, नेताओं एवं शासन के कपटी चरित्र और पत्रकारों की अवसरवादिता की पोल खोलती है। मन्नू भण्डारी जी के इस नाटक की रंगमंच पर कई सफल प्रस्तुतियाँ हो चुकी हैं।

हिंदी नाट्य लेखन परंपरा में मालती श्रीखंडे का नाम भी महत्वपूर्ण है। उन्होने 'वीरांगना' एवं 'दहेज' नामक दो महत्वपूर्ण नाटक लिखे हैं। जहां 'वीरांगना' एक ऐतिहासिक घटना को केंद्रित करके लिखा गया, वहीं 'दहेज' एक सामाजिक नाटक है। 'वीरांगना' नाटक दो अंकों में विभाजित है जिसमें कुंडनपुर और विजयनगर राज्यों के बीच दुश्मनी और इस दुश्मनी को समाप्त करने के लिए जयश्री की महत्वपूर्ण भूमिका का चित्रण किया गया है। यह नाटक मूलतः भारतीय नारी के राष्ट्र प्रेम और वीरता की भावना को उजागर करता है।

अपने 'दहेज' नाटक द्वारा मालती जी दहेज जैसी सामाजिक कुप्रथा पर कुठाराघात करती हैं। इस नाटक के नायक–नायिका सुधा और विनोद कॉलेज के दिनों से एक दूसरे से प्रेम करते हैं मगर उनके विवाह में दहेज रोड़ा बनकर खड़ा हो जाता है। दहेज देने में असमर्थ सुधा के पिता को विनोद अपने माता–पिता से छुपकर दहेज के पैसे उपलब्ध कराता है जिससे उनका विवाह हो जाता है। विवाह के बाद विनोद यह कहकर अपने माता–पिता के घर जाने से मना कर देता है कि आपने तो पाँच हजार (दहेज की रकम) में मुझे बेच दिया। उस समय दहेज के खिलाफ यह नया प्रयोग मालती जी की प्रगतिशीलता का ही परिचायक है।

हिंदी की प्रसिद्ध कथाकार मृदुला गर्ग का भी हिंदी नाटक में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होने 'एक और अजनबी', 'जादू की कालीन' एवं 'तुम लौट आओ' जैसे महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की। 'एक और अजनबी' नाटक पुरुषों की स्वार्थलोलुपता और उसके बीच फंसी नारी की दयनीय स्थिति को बहुत ही मार्मिक रूप से हमारे समक्ष लाता है। इस नाटक की नायिका शानी अपने पति जगमोहन और विवाह पूर्व प्रेमी इंदर के स्वार्थो के बीच पिसती नजर आती है। जहां एक ओर जगमोहन कंपनी के एमडी इंदर से अपनी पत्नी शानी की पहचान का फायदा उठाकर तरक्की पाना चाहता है वहीं दूसरी ओर इंदर शानी को अकेले में पाकर अपनी वासना तृप्त करना चाहता है। दोनों ही सूरतों में शानी को ही पिसना पड़ता है। शानी की भावनाओं को न समझने वाले उसका पति और प्रेमी, दोनों ही उसके लिए अजनबी होते हैं।

मृदुला गर्ग का दूसरा नाटक बाल मजदूरी पर आधारित है। इसमें कालीन उद्योग में काम करने वाले बच्चों की त्रासदी को दर्शाया गया है जिसमें बाल मजदूरों का शोषण, उनके कल्याण के लिए बनाई गई योजनाओं में भ्रष्टाचार और बच्चों को मजदूरी के लिए भेजने की विवशता शामिल हैं।

डॉ. कुसुम कुमार हिंदी महिला नाटककारों की सूची में महत्वपूर्ण नाम है। डॉ. कुसुम ने 'दिल्ली ऊंचा सुनती है', 'ओम क्रांति क्रांति', 'रावणलीला', 'सुनो शेफाली', 'संस्कार को नमस्कार', 'लष्कर चौक', 'पवन चतुर्वेदी की डायरी' आदि प्रसिद्ध नाटकों की रचना की। 'दिल्ली ऊंचा सुनती है' नाटक नौकरशाही और सरकारी दफ्तरों की लापरवाही की पोल खोलती है जिसमें एक रिटायर्ड सरकारी क्लर्क माधोसिंह को अपने अचानक बंद हो गए पेंशन अदायगी को दुबारा शुरू करने के लिए एवं स्वयं को जीवित साबित करने के लिए लगातार सरकारी दफ्तरों और डॉक्टरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। और जब तक उन्हें पेंशन मंजूरी पत्र मिलता है तब तक उनको मरे हुए तीन महीने बीत चुके होते हैं। 'ओम क्रांति क्रांति' कॉलेज में छात्रों और शिक्षकों के बीच तनाव को पृष्ठभूमि बनाकर लिखा गया नाटक है जिसमें बिना तैयारी के कक्षाओं में शिक्षकों का आना, छात्रों का विरोध करना, छात्रों के प्रिय शिक्षक बनने के लिए शिक्षकों की पैंतरेबाजी आदि शामिल हैं। उनकी 'रावणलीला' नाटक रामलीला शैली में लिखा गया नाटक है जिसमें यह दिखाया गया है कि कैसे कस्बे में रहने वाले अशिक्षित लोग पैसे के लिए बने बनाए नाटक को भी बिगाड़ सकते हैं। साथ ही समाज में पनप रही रावण प्रवृत्तियों को भी डॉ. कुसुम ने इस नाटक द्वारा बखूबी दर्शाया है।

डॉ. कुसुम अपने नाटक 'सुनो शेफाली' द्वारा दलित पहचान का दुरुपयोग करने वाले राजनीतिज्ञों का पर्दाफाश करती है। इस नाटक की नायिका शेफाली एक दलित युवती रहती है जिसका फायदा उसका प्रेमी बकुल और उसके पिता सत्यमेव दीक्षित अपनी राजनीति के लिए

उठाना चाहते हैं। मगर इसका पता चलते ही शेफाली बकुल से विवाह करने से इंकार कर देती है। वस्तुतः यह नाटक स्वार्थी राजनीतिज्ञों के विपरीत एक साधारण स्त्री के साहस और ईमानदारी को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत करता है जो इस नाटक के मंचन में रोचकता बढ़ाता है। उनका 'संस्कार को नमस्कार' नाटक महिलाश्रमों में होने वाले महिलाओं के शोषण पर आधारित है। इस नाटक में महिलाश्रम चलाने वालों द्वारा ही आश्रम की महिलाओं का शोषण किया जाता है। 'लष्कर चौक' नाटक धर्मांधता एवं सांप्रदायिकता के घेरे में पिसती स्त्री वेदना को हमारे समक्ष लाती है। 'पवन चतुर्वेदी की डायरी' नाटक एक ऐसे साधारण बेटे की कहानी है जिसका पिता शहर का एक विख्यात डॉक्टर है। पवन यानी नाटक का नायक अपने पिता के विपरीत फिल्म उद्योग में अपनी पहचान बनाना चाहता है मगर असफल हो जाता है जो उसके और उसके पिता के बीच संघर्ष का कारण बनता है।

हिंदी नाट्य लेखन परंपरा में मृणाल पाण्डेय ने भी अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उनके द्वारा रचित प्रसिद्ध नाटकों में 'जो राम रचि राखा', 'चोर निकल के भागा', 'मौजूदा हालात को देखते हुए' एवं 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' प्रमुख है। डॉ. जयदेव तनेजा ने 'जो राम रचि राखा' नाटक के संबंध में लिखा है कि, "सुप्रसिद्ध राजस्थानी रचनाकार विजयदान देथा की लोककथा से अनुप्रेरित होकर मृणाल पाण्डेय ने सामंती वातावरण में जन्मे और पले–बढ़े, अपने वर्ग से चेतन स्तर पर घृणा करनेवाले और अवचेतन स्तर पर उसके संस्कारों के अटूट बंधनों में जकड़े हुए विद्रोही युवक के अंतर्विरोधी व्यवहार को केंद्र में रखकर 'जो राम रचि राखा' नाटक की रचना की है।"[4] वस्तुतः इस इस नाटक में एक स्वार्थी पिता और आदर्शवादी बेटे के बीच सत्ता हेतु संघर्ष को दिखाया गया है और इस संघर्ष में अंतत आदर्श हार जाता है एवं स्वार्थ की जीत होती है। मृणाल जी का 'चोर निकल के भागा' नाटक भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण के युग में कला एवं संस्कृति से संबंधित प्रश्नों को हास्य–व्यंग्य तथा लोकनाट्य शैली में हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। इस नाटक की पृष्ठभूमि में ताजमहल की चोरी होने की रोचक कल्पना है। यह नाटक अपने रोचक विषय और हास्य–व्यंग्य से भरपूर होने के कारण रंगमंच पर काफी चर्चित रहा। इसी तरह 'मौजूदा हालात को देखते हुए' लोकनाट्य शैली में लिखा हुआ मृणाल जी का एक अन्य नाटक है। यह नाटक समकालीन सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को चित्रित करने वाला एक राजनीतिक नाटक है जो भ्रष्ट नेताओं एवं उनके गुंडों से लड़ती शारदा नाम की एक लड़की की साहस की कहानी हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। मृणाल जी अपने नाटकों के लिए सिर्फ लोकनाट्य शैली का ही प्रयोग नहीं करती बल्कि लोककथाओं को भी आधार बनाती है। उनका 'आदमी जो मछुआरा नहीं था' एक ऐसा ही नाटक है। यथा "लोककथा से प्रभावित मछुआरों के मछली रानी से तीन वर मांगने की पुराण कथा को सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक संदर्भों में जाँचा गया है।"[5] इस नाटक में नंददुलारे नामक युवक द्वारा मछली रानी से से तीन वर मांगना एवं उन वरों का उसके जीवन पर प्रभाव की कहानी दिखाया गया है जो मनुष्य की स्वभाविक प्रवृत्तियों को दर्शाता है।

हिंदी की महिला नाटककारों की कड़ी में अगला महत्वपूर्ण नाम त्रिपुरारी शर्मा का जुड़ता है। इन्होने 'विक्रमादित्य का सिंहासन', 'अक्स पहेली', 'काठ की गाड़ी', 'माँ का सपना', 'बहू', 'बांझ घाटी', 'पोशाख', 'रेशमी रुमाल', सन् सत्तावन का किस्सा : अजीजुनिसा' एवं 'बिरसा मुंडा' जैसे महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की। विषय का वैविध्य त्रिपुरारी शर्मा के नाटकों की विशेषता है। जहाँ 'सन् सत्तावन का किस्सा : अजीजुनिसा' ऐतिहासिक घटना के प्रसंग पर आधारित है जिसमें देशभक्ति से ओत–प्रोत एक वेश्या अजीजुनिसा के युद्ध के मैदान में उतरने एवं उसके साहस की कहानी है, तो वहीं 'काठ की गाड़ी' कुष्ठ रोगियों की करुण दशा को केन्द्रित करके लिखा गया नाटक है। 'बांझ घाटी' भोपाल गैस दुर्घटना जैसी सत्या घटना पर आधारित नाटक है तो वहीं 'रेशमी रुमाल' नाटक की नायिका सुलक्षणा का संघर्ष दिखाता एक पारिवारिक–सामाजिक नाटक है जिसमें सुलक्षणा अपने परिवार की खुशी के लिए अपने जीवन से समझौता कर लेती है और अपनी इच्छाओं और सपनों को मारकर परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ निभाती है। वस्तुतः त्रिपुरारी जी के नाटकों के विविध विषय उन्हें और रोचक बनाती है।

हिंदी नाट्य लेखन, नाट्य समीक्षा एवं आलोचना के क्षेत्र में डॉ. गिरीश रस्तोगी की अपनी एक अलग पहचान है। उन्होने मौलिक और रूपांतरित, दोनों प्रकार के नाटक लिखें। मौलिक नाटकों में 'असुरक्षित' एवं 'अपने हाथ बिकानी' और रूपांतरित नाटकों में 'रंगनाथ की वापसी' एवं 'नहुष' प्रमुख हैं। स्त्री विमर्श को केंद्र में रखते हुए 'अपने हाथ बिकानी' एक पिता–पुत्री के बीच वैचारिक संघर्ष की कहानी है जिसमें नाटक की नायिका बिंदु का पालन–पोषण बचपन से उसके पिता करते हैं और उसे हर तरह की स्वतंत्रता भी देते हैं लेकिन बात जैसे ही उसके विवाह की आती है, बिंदु पर अपनी मर्जी थोपने लगते हैं जो अंततः अपने पितृसत्तात्मक चरित्र को ही उजागर करता है।

हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकर श्रीलाल शुक्ल के प्रसिद्ध उपन्यास 'रागदरबारी' पर डॉ. रस्तोगी का रूपांतरित नाटक 'रंगनाथ की वापसी' आधारित है। इस नाटक में शिवपालगंज नामक गाँव के सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक एवं शैक्षिक जीवन की पृष्ठभूमि में कॉलेज और शिक्षा जगत में चल रहे शिक्षक एवं छात्रों गंदी राजनीति एवं भ्रष्ट आचरण को उजागर किया गया है। रस्तोगी जी का दूसरा रूपांतरित नाटक 'नहुष' मैथिलीशरण गुप्त जी के एक संक्षिप्त काव्य पर आधारित है जो नहुष के इंद्र के सिंहासन पर बैठने एवं अपने अहंकार के कारण सिंहासन से उतारे जाने एवं उसके पतन की कहानी हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

हिंदी महिला नाटककारों की सूची में मीरा कांत का नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्होने 'नेपथ्य राग', 'कंधे पर बैठा शाप', 'ईरामृग', 'हुमा को उड़ जाने दो', 'अंत हाजिर हो' एवं 'भुवनेश्वर–दर–भुवनेश्वर' जैसे महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की। 'नेपथ्य राग' पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथा पर आधारित नाटक है जो आधुनिक मनुष्य की समस्याओं की तरफ हमारा ध्यान ले जाता है। यह नाटक मूलतः युगों–युगों से मंच के नेपथ्य के पीछे रही स्त्री की सामने आने की छटपटाहट और सामने आने के बाद स्त्रियों का पुरुषों से अधिक योग्य होने पर आगे बढ़ने पर पुरुषों की प्रतिक्रिया हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। इस नाटक के संबंध में डॉ. रामचंद्र तिवारी लिखते हैं, "पुरुष समाज द्वारा स्त्री के महत्व को अस्वीकार करने की इस परंपरा का निर्वाह किस तरह हो रहा है, इस नाटक की आधुनिक नायिका मेधा दर्शाती है। वह एक ऑफिस में अफसर है परंतु उपेक्षित सी। दो काल खंडों में सामंजस्य स्थापित करता यह नाटक निश्चित रूप से वैचारिक धरातल पर गहरा प्रभाव छोडता है। समय भले ही बदल जाये, हमारी मानसिकता में बदलाव कब आएगा। इस प्रश्न को जैसे बार–बार यह नाटक उठाता है। औरत शताब्दियों पहले भी नेपथ्य में थी और आज भी सही मायने में नेपथ्य में है।"6 इसी प्रकार मीरा कांत जी अपने नाटक 'कंधे पर बैठा शाप' और 'ईरामृग' में भी पुरुषों की बनाई दुनिया में स्त्रियों की वेदना को विद्योतमा, कामिनी, स्नेहगंधा एवं सागरिका जैसे स्त्री पात्रों के द्वारा हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। उनका 'भुवनेश्वर–दर–भुवनेश्वर' नाटक हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार भुवनेश्वर के जीवन पर आधारित है जिसमें भुवनेश्वर के साहित्यिक और व्यक्तिगत जीवन के संघर्षों और तनावों एवं उससे उत्पन्न विसंगतियों को फैंटसी एवं अतीत तथा वर्तमान स्थिति की कल्पना के साथ बहुत ही प्रभावी रूप से हमारे सामने लाती हैं।

उपरोक्त के अतिरिक्त शांता गांधी, रेखा जैन, श्यामा जैन, शांति मेहरोत्रा, कुंथा जैन, रूपवती किरण, अलका सरावगी, नादिरा बब्बर आदि ने भी हिंदी नाट्य लेखन परंपरा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें से शांता गांधी, रेखा जैन, श्यामा जैन ने बाल रंगमंच हेतु बाल नाटकों की रचना की जिसका हिंदी नाट्यसाहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। शांति मेहरोत्रा, कुंथा जैन, रूपवती किरण और अलका सरावगी ने क्रमशः 'ठहरा हुआ पानी', 'वर्धमान रूपायन', 'वसंत तिलक' एवं 'आठ दिसंबर उन्नीसौ बान्नवें' जैसे महत्वपूर्ण नाटकों की रचना कर हिंदी नाट्यसाहित्य में अपना नाम दर्ज किया। फिल्म उद्योग एवं रंगमंच से जुड़ी नादिरा बब्बर उभरती हुई महिला नाटककार हैं। इन्होने 'दयाशंकर की डायरी', 'जी जैसी आपकी मर्जी', 'सकुबाई', 'ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट' एवं 'सुमन और सना' जैसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण नाटकों की रचना की।

अतः हिंदी नाट्यसाहित्य में पुरुषों का वर्चस्व अवश्य रहा है पर महिलाओं के योगदान को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। उन्होने सामाजिक, राजनीतिक, पौराणिक, ऐतिहासिक आदि हर विषय से संबंधित नाटकों की रचना की एवं समाज एवं देश के ज्वलंत मुद्दों एवं समस्याओं की ओर दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया है। महिला नाटककारों के नाटकों का मंचन भी कम हुआ है लेकिन इसका मतलब ये नहीं की वे नाटक रंगमंच की दृष्टि से किसी भी प्रकार से उन्नीस है। हिंदी नाट्य लेखन परंपरा उपरोक्त महिला नाटककारों के योगदान को उल्लेखित किए बिना हमेशा अधूरा ही रहेगा।

–कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा, पूर्वी कमान, कोलकाता

संदर्भ

1. https://hindi.feminisminindia.com/2023/11/07/hindi-women-writer-you-should-know - about&hindi/
2. वर्मा आरती, आजकल, मई 2001, पृ.41
3. राजे डॉ. सुमन, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रथम संस्करण 2022, पृ. 294
4. तनेजा डॉ. जयदेव, हिंदी रंगक्रम : दशा और दिशा, तक्षशिला प्रकाशन, पृ. 189
5. त्रिपाठी सत्यवती, आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, पृ.–165
6. तिवारी डॉ. रामचंद्र, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 13वां संस्करण 2020, पृ.506)

ISSN No. : 0970-9398

बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र में नेतृत्व का परचम लहराती नारी शक्ति

—नौशाबा हसन

कोविड महामारी और रूस–यूक्रेन युद्ध से उपजी अनिश्चितता ने वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं को बुरी तरह प्रभावित किया है। कुछ देश सॉवरेन डिफॉल्ट के कगार पर हैं और कुछ तो पहले ही डिफॉल्ट कर चुके हैं। इन सब के उलट भारत विश्व में सबसे तेज़ी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है। आज भारत सकल घरेलू उत्पाद के मापदंड में यूनाईटेड किंगडम को पछाड़ कर विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था व पी.पी.पी. के आधार पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। गत वर्ष विश्व आर्थिक मंच सम्मेलन में ग्लोबल जियो–इकॉनोमिक्स में भारत को एक चमकीला सितारा (Bright Spot) बताया गया था। सम्मेलन में यह भी कहा गया था कि यदि भारतीय अर्थव्यवस्था में गति आएगी तो वैश्विक अर्थव्यवस्था में भी गति आएगी।

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उसकी विभिन्न आर्थिक एवं वित्तीय गतिविधियों का समुच्चय होती है जिसमें उसकी बैंकिंग एवं अन्य वित्तीय संस्थाएं जैसे बीमा कंपनियां, प्रतिभूति बाज़ार, म्यूचुअल फंड और फिनटेक आदि अभिन्न रुप से सम्मिलित रहती हैं। बैंक एवं अन्य वित्तीय संस्थाएं, वित्तीय प्रणाली की कार्य–कुशलता को सुनिश्चित करते हुए अर्थव्यवस्था के विकास में न केवल सक्रिय योगदान ही देते हैं अपितु पूंजी निर्माण की प्रक्रिया द्वारा उसे सतत विकास के पथ पर भी अग्रसर बनाए रखते हैं। आज भारतीय बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थानों ने सफलता के जो नए मुकाम हासिल किये हैं वे अन्य देशों के लिए भी प्रेरणा के स्त्रोत बन गए हैं। दिनांक 16.10.2022 को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डी.बी.यू.) राष्ट्र को समर्पित करते हुए भारत के डिजिटल बैंकिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए वैश्विक प्रशंसा का उल्लेख किया था। उन्होंने ज़ोर देकर कहा था कि "आई.एम.एफ. ने भारत के डिजिटल बैंकिंग इंफ्रास्ट्रक्चर की प्रशंसा की है। विश्व बैंक कह रहा है कि भारत डिजिटलीकरण के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में अग्रणी बन गया है। आज भारत में प्रति एक लाख वयस्क नागरिकों पर जितनी बैंक शाखाएं मौजूद हैं, वह जर्मनी, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों से भी अधिक है।"

कहते हैं कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था उतनी ही प्रगतिशील होती है, जितनी कि उस देश की वित्तीय प्रणाली मज़बूत होती है। इस बात में कोई दो मत नहीं कि एक संस्था की सफलता के पीछे उससे जुड़े लोगों का सबसे बड़ा योगदान होता है और अगर उस संस्था की अगुवाई मज़बूत इरादों और समय की नब्ज़ को पकड़ने वाला सशक्त टीम–लीडर करे तो फिर कहना ही क्या! कुछ वर्षों पहले तक बैंकिंग एवं वित्तीय क्षेत्र के उच्च पदों पर पुरुषों का ही वर्चस्व हुआ करता था लेकिन आज समय बदल चुका है। आधुनिक भारतीय नारी सभी क्षेत्रों में अपना वर्चस्व सिद्ध करती जा रही है और कुरीतियों की बेड़ियों से निकलकर अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर रही है। वर्तमान में भारत के बैंकिंग और वित्तीय सेक्टर में महिलाओं ने अपना जो मुकाम बनाया है वह सारे कयासों और दकियानूसी विचारों को पीछे छोड़ता है। अब जब देश के वित्त मंत्रालय की कमान भी स्वयं एक महिला ने ही संभाल रखी हो तो फिर इस विषय में और अधिक कुछ कहने को रह ही क्या जाता है? आज हमारे आस–पास ऐसी महिलाओं के अनेक उदाहरण हैं जिन्होंने अपने फौलाद से मज़बूत इरादों, दृढ़ इच्छा–शक्ति, कठोर परिश्रम, कभी भी हार न मानने वाली मानसिकता और कुशल नेतृत्व क्षमता की बदौलत न केवल भारत के अपितु वैश्विक आर्थिक पटल पर अपना एक अलग ही मुकाम बनाया है। सीनियर मैनेजमेंट से एक्जीक्यूटिव पद और फिर वहां से वित्तीय तंत्र के सबसे सम्मानजनक और शक्तिशाली पदों जैसे अध्यक्ष अथवा मुख्य कार्यपालक अधिकारी बनने की अपनी लंबी यात्रा, धुन की पक्की तथा आत्मविश्वास से भरपूर इन महिलाओं ने तमाम बाधाओं के बाद भी पूरी की है और हम सब के लिए एक रोल–मॉडल बन कर उभरी हैं। विषम से विषम परिस्थितियों का डट कर सामना करने का हौसला तथा किसी भी स्थिति में हार न मानने का जुनून ही इन महिलाओं को भीड़ से अलग हटकर एक उच्च पायदान पर ला खड़ा करता है। आइए नारी शक्ति को नमन करते हुए इस आलेख में चर्चा करें ऐसी ही चंद नामी–गिरामी महिलाओं की, जिन्होंने बैंकिंग उद्योग एवं अन्य वित्तीय संस्थाओं में सफलता की अभूतपूर्व उंचाईयों को छुआ है।

1. सुश्री रंजना कुमार, भूतपूर्व चेयरमैन इंडियन बैंक एवं भूतपूर्व चेयरमैन नाबार्ड

सुश्री रंजना कुमार का उल्लेख किए बिना प्रभावशाली महिला बैंकर्स की सूची अधूरी ही रहेगी। देखा जाए तो श्रीमती रंजना कुमार ने ही महिलाओं की इस टॉप बॉस लीग की शुरुआत की थी। वर्ष 2000 में जब भारत सरकार ने आपको इंडियन बैंक का चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक नियुक्त किया था, तब आप देश के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में इस पद पर पहुंचने

ISSN No. : 0970-9398

वाली पहली महिला बैंकर बनीं थीं। इंडियन बैंक को जिस प्रकार से आपने संकट के दौर से उबारा वह दूसरे बैंकों के लिए एक मिसाल बना और आज भी आपके सफल नेतृत्व एवं कार्य कुशलता की बातें की जाती हैं। उसके बाद दिसंबर 2003 में आपको नाबार्ड का चेयरमैन भी नियुक्त किया गया था। उल्लेखनीय है कि नाबार्ड की भी आप पहली महिला चेयरमैन बनीं थीं। बैंकिंग इतिहास में महिलाओं के योगदान की जब–जब भी बात की जाएगी तब–तब श्रीमती रंजना कुमार का नाम पूरे आदर–सम्मान के साथ अवश्य लिया जायेगा।

2. सुश्री अरुंधति भट्टाचार्य भूतपूर्व अध्यक्ष, भारतीय स्टेट बैंक

बैंकिंग इंडस्ट्री में सफल महिलाओं की बात हो और उसमें श्रीमती अरूंधती भट्टाचार्य का नाम न आये, इस बात की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। दिनांक 7 अक्टूबर 2013 को जब उन्होंने देश के सबसे बड़े बैंक के चेयरमैन का पद ग्रहण किया तब उन्होंने एक इतिहास रच दिया क्योंकि वे भारतीय स्टेट बैंक की तब तक की सर्वप्रथम महिला चेयरमैन बनीं थीं। सुश्री भट्टाचार्य ने वर्ष 2013 से 2017 तक भारतीय स्टेट बैंक का कुशल नेतृत्व किया है। साथ ही, वे भारत की ऐसी प्रथम महिला रहीं जिन्होंने फार्च्यून 500 लिस्ट में आने वाली किसी भी भारतीय कंपनी का नेतृत्व किया है। सुश्री भट्टाचार्य के कार्यकाल के दौरान ही भारतीय स्टेट बैंक का उसके पांच सहयोगी बैंकों यथा स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद और स्टेट बैंक ऑफ

पटियाला तथा भारतीय महिला बैंक के साथ विलय हुआ था। इस विलय के पश्चात लगभग 26 ट्रिलियन रुपये की जमा राशि और लगभग 18.76 ट्रिलियन रुपये की अग्रिम राशि के साथ ही भारतीय स्टेट बैंक दुनिया के शीर्ष पचास बड़े बैंकों में से एक बन कर उभरा था। सुश्री भट्टाचार्य को सरकार द्वारा लोकपाल खोज समिति, पद्म पुरस्कार विजेता चयन समिति, सेबी की म्यूचुअल फंड सलाहकार समिति और राष्ट्रीय कोयला सूचकांक समिति सहित चुनिंदा समितियों का हिस्सा बनने के लिए भी नामित किया गया है।

3. सुश्री शांति एकंबरम पूर्ण–कालिक निदेशक, कोटक महिंद्रा बैंक

सुश्री शांति एकंबरम भारत के वित्तीय उद्योग में सबसे प्रभावशाली महिलाओं में से एक मानी जाती हैं। उनके कुशल नेतृत्व एवं त्वरित व सटीक निर्णय लेने की क्षमता और नवोन्मेष को बढ़ावा देने की उनकी प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप कोटक महिन्द्रा बैंक का ज़बरदस्त विस्तार हुआ है। सुश्री एकंबरम को बैंक में कई रणनीतिक पहलों के लिए जाना जाता है जिनमें के उल्लेखनीय रूप से शामिल हैं कोटक महिन्द्रा बैंक में डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का प्रसार, नए बाजारों में विस्तार और ग्राहकों के लिए नवीन समाधानों की शुरूआत आदि। वह लंबे समय से कोटक महिंद्रा समूह का हिस्सा रही हैं और उन्होंने बैंक से जुड़ी अनेक पहलों को सफलतापूर्वक स्थापित और संचालित किया है। बिजनेस टुडे ने कॉर्पोरेट क्षेत्र में उनके स्थायी प्रभाव को उजागर करते हुए उन्हें 'भारतीय व्यवसाय में सबसे शक्तिशाली महिलाओं' के बीच मान्यता दी है।

4. सुश्री कल्पना मोरपारिया भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ई.ओ.), दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया जे. पी. मोर्गन

फॉरच्यून पत्रिका द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में 50 सबसे शक्तिशाली महिलाओं' में से एक के रूप में वरीयता प्राप्त, सुश्री कल्पना मोरपारिया की शीर्ष पर बढ़ने की कहानी वास्तव में हम सभी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है। जे.पी. मॉर्गन इंडिया में अपने उल्लेखनीय कार्यकाल के दौरान, उन्होंने अपने

ISSN No. : 0970-9398

असाधारण नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन करते हुए सफलता के नए झंडे गाड़े। वर्ष 2008 से 2021 तक जे.पी. मॉर्गन में अपने कार्यकाल के दौरान सुश्री कल्पना मोरपारिया भारत में जे.पी. मॉर्गन के कॉर्पोरेट सेवा केंद्रों की देखरेख करती थीं। उन्होंने रणनीतियाँ तैयार करने, विविध व्यवसायों को एकीकृत करने और प्रमुख ग्राहकों के लिए कवरेज का दायरा बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने जे.पी. मॉर्गन के भारत निवेशक शिखर सम्मेलन का नेतृत्व किया और आसियान देशों के लिए रणनीति तैयार करने में भी सक्रिय योगदान दिया था। सुश्री मोरपारिया एक लंबे समय तक आई.सी.आई.सी.आई. समूह से भी जुड़ी रहीं और उन्होंने आई.सी.आई.सी.आई. समूह की प्रमुख कॉर्पोरेट संरचना पहल– आई.सी.आई.सी.आई. लिमिटेड के आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के साथ विलय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसके परिणामस्वरूप आई.सी.आई.सी.आई. बैंक भारत का दूसरा सबसे बड़ा बैंक बन कर उभरा है।

5. सुश्री नैना लाल किदवाई, भूतपूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ई.ओ.) और देश प्रमुख, एच.एस.बी.सी.

सुश्री नैना लाल किदवई एक निपुण और व्यापक रूप से सम्मानित चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं भारतीय बैंकर हैं जिन्होंने पुरुष–प्रधान वित्तीय क्षेत्र में लैंगिक बाधाओं को तोड़ने के लिए प्रतिष्ठा अर्जित की है। सुश्री किदवई ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक उपाधि प्राप्त की और 1982 में हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से MBA की उपाधि हासिल की। वह हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से स्नातक होने वाली प्रथम भारतीय महिला थीं और भारत में विदेशी बैंक की कार्य पद्धति के दिशा–निर्देश देने वाली भी प्रथम भारतीय महिला थीं। साथ ही वे फेडरेशन ऑफ इंडियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) की पहली महिला अध्यक्ष भी थीं। सुश्री किदवई ने वर्ष 1982 से 1994 तक ए.एन.ज़ेड. ग्रिंडलेज़ में काम किया। वर्ष 1994 में वे मॉर्गन स्टेनली इंडिया से जुड़ीं जहां उन्होंने निवेश बैंकिंग के प्रमुख के रूप में कार्य किया। मॉर्गन स्टेनली के बाद वह एच.एस.बी.सी. में चली गईं और वर्ष 2009 में एच.एस.बी.सी. इंडिया की कंट्र्– हेड और ग्रुप जनरल मैनेजर बनीं। सुश्री नैना लाल किदवई ने व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त किया है। सतत विकास को बढ़ावा देने और लैंगिक असमानता से निपटने के लिए सुश्री किदवई की अथक प्रतिबद्धता उन्हें वित्तीय उद्योग में दूसरों से अलग करती है।

6. सुश्री रेनू सूद कर्नाड प्रबंध निदेशक, हाउसिंग डिवल्पमेंट फाईनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेडः

सुश्री कर्नाड की कुशल नेतृत्व क्षमता एवं रणनीतिक दूरदर्शिता ने एच.डी.एफ.सी. को भारतीय मॉर्टगेज उद्योग में न केवल अग्रणी ही बनाया है बल्कि व्यवसाय में भी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की की है। सुश्री कर्नाड को एच.डी.एफ.सी. में बैंकिंग सेवाओं के लिए तत्कालीन नए हब और स्पोक मॉडल की पहल करने का श्रेय जाता है, जिसके तहत ग्राहकों को संपर्क–बिंदु पर ही ऋण प्रदान करके आसान पहुंच की शुरुआत की गई थी। उन्हें 2007 में एच.डी.एफ.सी. में संयुक्त प्रबंध निदेशक के रूप में नामित किया गया था और 2010 में प्रबंध निदेशक के पद पर पदोन्नत किया गया था। वर्ष 2022 में उन्हें एच.डी.एफ.सी. बोर्ड द्वारा निदेशक के रूप में फिर से नियुक्त किया गया है। उल्लेखनीय है कि उन्होंने एच.डी.एफ.सी. बैंक का उसकी मूल कंपनी एच.डी.एफ.सी. के साथ विलय कराने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

7. सुश्री ज़रीन दारूवाला मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ई.ओ.), स्टैंडर्ड चार्टर्ड इंडिया

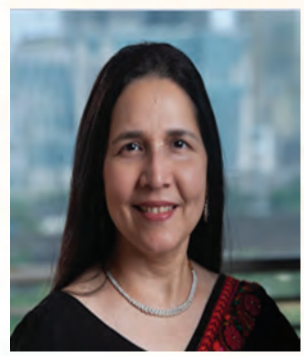

स्टैंडर्ड चार्टर्ड इंडिया के लंबे इतिहास में, सुश्री ज़रीन दारूवाला भारत इकाई की प्रमुख बनने वाली पहली महिला हैं। ब्रिटिश बैंक स्टैंडर्ड चार्टर्ड, जिसे भारत में बढ़ते खराब ऋणों के कारण एक वक्त घाटे में जाना पड़ा था, उसने इस संकट से उबरने के लिए अपनी भारतीय इकाई की कमान सुश्री ज़रीन दारूवाला के हाथों में सौंपने का निर्णय लिया और तब से लेकर अब तक सुश्री दारूवाला के नेतृत्व में बैंक ने सफलता के नए अध्याय लिखे हैं। अप्रैल 2016 में सुश्री दारूवाला के भारतीय फ्रेंचाइजी के सी.ई.ओ. बनने के बाद से स्टैनचार्ट ने एक लंबा सफर तय किया है। उन्होंने बैंक के परिसंपत्ति आधार को जोखिम से मुक्त करके, उप–इष्टतम व्यवसायों/ उत्पादों के रिडिजाइन और सेवाओं के डिजिटलीकरण के विस्तार जैसे उपाय अपनाकर स्टैंडर्ड चार्टर्ड इंडिया के भारतीय परिचालन को लाभप्रदता के क्षेत्र में वापस ला खड़ा किया है।

8. सुश्री आर.एम. विशाखा प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, इंडियाफर्स्ट लाइफ

सुश्री आर.एम. विशाखा ने मार्च 2015 से इंडियाफर्स्ट लाइफ के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी का पदभार संभाला है। चार्टर्ड अकाउंटेंट होने के साथ ही सुश्री विशाखा भारतीय बीमा संस्थान की फेलो भी हैं। उनके मजबूत नेतृत्व में, कंपनी ने महत्वपूर्ण विकास दर दर्ज़ की है और उद्योग

ISSN No. : 0970-9398

रैंकिंग में लगातार वृद्धि दर बनाये रखी है। सुश्री विशाखा सी.आई.आई. की पेंशन और बीमा समिति की सह–अध्यक्ष होने के साथ ही साथ नेशनल काउंसिल ऑन इंश्योरेंस (A SSOCHA M) की सम्मानित सदस्य, FICCI की समिति सदस्य और। IWMI }kjk Exqualifi की चार्टर सदस्य भी हैं। वह एन.आर.बी. बियरिंग्स प्राइवेट लिमिटेड के बोर्ड में एक स्वतंत्र निदेशक हैं और जीवन बीमा परिषद की कार्यकारी समिति में भी रही हैं।

9. सुश्री विभा पडालकर प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एच.डी.एफ.सी. लाइफ

मार्केट कैपिटलाइजेशन के लिहाज से देश में प्राइवेट सेक्टर की अग्रणी बीमा कंपनी एच.डी.एफ.सी. लाइफ की प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री विभा पडालकर अगस्त 2008 से इस संस्था की बेहतरी के लिए निरंतर प्रयत्नशील हैं। एच.डी.एफ.सी. लाइफ से पहले वह कोलगेट पामोलिव (इंडिया) लिमिटेड और प्राइस वॉटरहाउस कूपर्स के साथ काम कर चुकी हैं। सुश्री पडालकर इंग्लैंड में इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड एकाउंटेंट्स की क्वॉलिफाइड मेंबर हैं। प्रतिभूति बाज़ार में एच.डी.एफ.सी. लाइफ की लिस्टिंग में उनकी अहम भूमिका रही है। एच.डी.एफ.सी. लाइफ की पेंशन बिजनेस से जुड़ी सब्सिडियरी एच.डी.एफ.सी. पेंशन मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड और दुबई बेस्ड लाइफ रीइंश्योरेंस सब्सिडियरी एच.डी.एफ.सी. इंटरनेशनल लाइफ एंड री को मज़बूत बनाने का श्रेय सुश्री पडालकर को ही दिया जाता है। बहुत कम समय में, एच.डी.एफ.सी. इंटरनेशनल लाइफ एंड री कंपनी लिमिटेड जीवन बीमा कंपनियों को पुनर्बीमा क्षमता प्रदान करने के लिए काफी विकसित हो चुकी है और अब वैश्विक स्तर पर अन्य क्षेत्रों में विस्तार करने की प्रक्रिया में है।

10. सुश्री माधवी पुरी बुच, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की चेयरपर्सन

वर्ष 2022 में भारत सरकार ने सुश्री माधवी पुरी बुच को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) का नया चेयरपर्सन नियुक्त किया है। सेबी प्रमुख पद पर पहली बार किसी महिला की नियुक्ति की गई है। साथ ही वह पिछले कुछ वर्षों में इस पद पर आने वाली पहली गैर–नौकरशाह है। सुश्री बुच सेबी की पूर्णकालिक सदस्य भी रह चुकी हैं। इससे पहले वह चीन के शंघाई में स्थित न्यू डिवलपमेंट बैंक की सलाहकार थीं। उन्होंने निजी इक्विटी फर्म ग्रेटर पैसिफिक कैपिटल के सिंगापुर कार्यालय के प्रमुख के रूप में भी काम किया है। कई उल्लेखनीय पदों तक फैले करियर के साथ, सुश्री बुच ने वर्ष 1989 में आई.सी.आई.सी.आई. बैंक में अपनी पेशेवर यात्रा शुरू की थी। उन्होंने इंग्लैंड के वेस्ट चेशायर कॉलेज में व्याख्याता के रूप में भी अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। इसके अतिरिक्त सुश्री बुच ने विभिन्न कंपनियों में बिक्री, विपणन और उत्पाद विकास सहित विविध भूमिकाएँ निभाईं हैं। वर्ष 2006 में वे आई.सी.आई.सी.आई. सिक्योरिटीज़ में शामिल हुईं और बाद में प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी के पद पर आसीन हुईं और फरवरी 2009 से मई 2011 तक संगठन का नेतृत्व किया। अप्रैल 2017 में, सुश्री बुच को सेबी में पूर्णकालिक निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया और सामूहिक निवेश योजनाओं, निगरानी और निवेश प्रबंधन जैसे पोर्टफोलियो का प्रभार दिया गया था।

निष्कर्ष: नारी के संदर्भ में कहा जाता है कि उसमें सूर्य के समान तेज, पृथ्वी के समान सहनशीलता, चन्द्रमा के समान शीतलता, समुद्र के समान गंभीरता एवं पर्वत के समान उच्चता के दर्शन होते हैं। युग चाहे जो भी रहा हो संसार का विकास नारी के विकास पर ही आधारित रहा है। इस तथ्य को हम सभी को खुले मन से स्वीकार करना होगा कि नारी को सशक्त बनाए बिना हम मानवता को सशक्त नहीं बना सकते। इसके लिए अति आवश्यक है कि हर संभव प्रयास किये जाएँ जिसके परिणामस्वरूप नारियाँ देश की आर्थिक मुख्यधारा में पुरुषों के साथ भागीदारी करते हुए देश को निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर बनाये रखें। महिलाओं की कार्य–कुशलता और सक्षम नेतृत्व क्षमता का लोहा आज पूरा विश्व मान रहा है और भारत भी इसका अपवाद नहीं है। हमने इस आलेख में कुछ ऐसी ही असाधारण भारतीय महिलाओं की चर्चा की जिन्होंने बड़े–बड़े बैंकों एवं अन्य वित्तीय संस्थानों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया है/ कर रही हैं। अपने कुशल नेतृत्व के दम पर अपनी संस्थाओं को सफलता की नई उंचाईयों तक पहुंचाने वाली यह महिलाएं हम सब के लिए अनुकरणीय उदाहरण हैं। इन महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि अगर कुछ कर दिखाने का हौसला और मज़बूत इच्छा–शक्ति हो तो असंभव केवल एक शब्द बन कर रह जाता है। सर्वोच्च पद पर नेतृत्व की राह लंबी और दुर्गम अवश्य है पर महिलाओं की पहुंच से दूर बिल्कुल भी नहीं है, आवश्यकता है तो बस कड़ी मेहनत और लक्ष्य को पाने के दृढ़ निश्चय की! नारी शक्ति को पुनः नमन करते हुए मैं यह आशा करती हूं कि आने वाले समय में हम महिलाओं को बैंकिंग और वित्तीय जगत में और भी अधिक सफल होते हुए देखेंगे तथा उनकी नेतृत्व क्षमता का परचम भी चहुँ ओर लहराते हुए देखेंगे।

–सहायक महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक
जी.आई.टी.सी.बेलापुर, नवी मुंबई

ISSN No. : 0970-9398

ग्रामीण महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने का एक सशक्त माध्यमः स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी)

–मनीष पासवान

स्वयं सहायता समूह (SHG) कुछ ऐसे लोगों का एक अनऔपचारिक संघ होता है जो अपने रहन सहन की परिस्थितियों में सुधार करने के लिए एक साथ काम करते है। सामान्यतः एक ही सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले लोगों का ऐसा स्वैच्छिक संगठन स्वयं सहायता समूह कहलाता है, जिसके सदस्य एक–दूसरे के सहयोग के माध्यम से अपनी सांझा समस्यों का समाधान करते है। एस.एच.जी स्वरोजगार व गरीबी उन्मूलन को प्रोत्साहित करने के लिए स्वयं सहायता (Selfn`Employment) की धारणा पर भरोसा करता है।

स्वयं सहायता समूह (SHG) की आवश्यकताः

- हमारे देश में ग्रामीण निर्धनता का एक कारण ऋण और वित्तीय सेवाओं तक उचित पहुँच का अभाव है।

- 'देश में वित्तीय समावेशन' पर एक व्यापक रिपोर्ट तैयार करने हेतु डॉ. सी. रंगराजन की अध्यक्षता में गठित एक समिति ने वित्तीय समावेशन की कमी के चार प्रमुख कारणों की पहचान की, जो इस प्रकार हैं:
    - संपार्श्विक सुरक्षा प्रदान करने में असमर्थता
    - खराब ऋण शोधन क्षमता
    - संस्थानों की अपर्याप्त पहुँच
    - कमज़ोर सामुदायिक नेटवर्क

- ग्रामीण क्षेत्रों में मज़बूत सामुदायिक नेटवर्क के अस्तित्व को क्रेडिट लिंकेज के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्वों में से एक के रूप में तेज़ी से पहचान मिली है।
- वे गरीबों को ऋण प्रदान करने में मदद करते हैं, इस प्रकार गरीबी उन्मूलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- वे गरीबों, विशेषकर महिलाओं के बीच सामाजिक पूंजी के निर्माण में भी मदद करते हैं। यह महिलाओं को सशक्त बनाता है।
- स्वरोज़गार के माध्यम से वित्तीय स्वतंत्रता में कई बाहरी पहलू भी शामिल हैं जैसे कि साक्षरता स्तर में सुधार, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और यहाँ तक कि बेहतर परिवार नियोजन।

स्वयं सहायता समूह (SHG) का महत्त्वः

- सामाजिक समग्रताः
    - एसएचजी, दहेज, शराब आदि जैसी प्रथाओं का मुकाबला करने के लिये सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं।
- लिंग समानताः
    - एसएचजी, महिलाओं को सशक्त बनाते हैं और उनमें नेतृत्व कौशल विकसित करते हैं। अधिकार प्राप्त महिलाएं ग्राम सभा व अन्य चुनावों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेती हैं।
    - इस देश के साथ–साथ अन्यत्र भी इस बात के प्रमाण हैं कि स्वयं सहायता समूहों के गठन से समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के साथ परिवार में उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होता है और उनके आत्म–सम्मान में भी वृद्धि होती है।

ISSN No. : 0970-9398

- हाशिये पर पड़े वर्ग के लिये आवाज़:
  - सरकारी योजनाओं के अधिकांश लाभार्थी कमज़ोर और हाशिए पर स्थित समुदायों से हैं, इसलिये एसएचजी के माध्यम से उनकी भागीदारी सामाजिक न्याय सुनिश्चित करती है।
- वित्तीय समावेशन:
  - प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र को ऋण देने के मानदंड और रिटर्न का आश्वासन बैंकों को एसएचजी को ऋण देने के लिये प्रोत्साहित करता है। नाबार्ड द्वारा अग्रणी SHG–बैंक लिंकेज कार्यक्रम ने ऋण तक पहुँच को आसान बना दिया है तथा पारंपरिक साहूकारों एवं अन्य गैर–संस्थागत स्रोतों पर निर्भरता कम कर दी है।
- रोज़गार के वैकल्पिक स्रोत:
  - यह सूक्ष्म–उद्यमों की स्थापना में सहायता प्रदान करके कृषि पर निर्भरता को आसान बनाता है, उदाहरण के लिये व्यक्तिगत व्यावसायिक उद्यम जैसे– सिलाई, किराना और उपकरण मरम्मत की दुकानें आदि।

संबंधित मुद्दे:

- कौशल के उन्नयन का अभाव:
  - अधिकांश एसएचजी नए तकनीकी नवाचारों और कौशल का उपयोग करने में असमर्थ हैं। क्योंकि नई प्रौद्योगिकियों से संबंधित सीमित ज़ागरूकता है, साथ ही उनके पास इसका उपयोग करने के लिये आवश्यक कौशल नहीं हैं। इसके अलावा प्रभावी तंत्र की कमी भी है।
- कमज़ोर वित्तीय प्रबंधन:
  - यह भी पाया गया है कि कतिपय इकाइयों में व्यवसाय से प्राप्त होने वाले प्रतिफल को इकाइयों में उचित रूप से निवेश नहीं किया जाता है, बल्कि धन को अन्य व्यक्तिगत और घरेलू उद्देश्यों जैसे विवाह, घर के निर्माण आदि के लिये उपयोग कर लिया जाता है।
- अपर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाएँ:
  - उत्पाद चयन, उत्पादों की गुणवत्ता, उत्पादन तकनीक, प्रबंधकीय क्षमता, पैकिंग, अन्य तकनीकी ज्ञान के विशिष्ट क्षेत्रों में एसएचजी के सदस्यों को दी गई प्रशिक्षण सुविधाएँ मज़बूत इकाइयों के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के लिये पर्याप्त नहीं हैं।
- विशेष रूप से महिला एसएचजी के बीच स्थिरता और एकता की कमी:
  - महिलाओं के वर्चस्व वाले एसएचजी के मामले में यह पाया गया है कि इकाइयों में कोई स्थिरता नहीं है क्योंकि कई विवाहित महिलाएँ अपने निवास स्थान में बदलाव के कारण समूह के साथ जुड़ने की स्थिति में नहीं हैं।
  - इसके अलावा व्यक्तिगत कारणों से महिला सदस्यों के बीच कोई एकता नहीं है।
- अपर्याप्त वित्तीय सहायता:
  - यह पाया गया है कि अधिकांश स्वयं सहायता समूहों में संबंधित एजेंसियों द्वारा उन्हें प्रदान की गई वित्तीय सहायता उनकी वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है। वित्तीय अधिकारी श्रम लागत की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये भी पर्याप्त सब्सिडी नहीं दे रहे हैं।

महिला सशक्तीकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका:

- स्वयं सहायता समूह (SHG) आंदोलन ग्रामीण क्षेत्रों में महिला लचीलापन और उद्यमिता के सबसे शक्तिशाली इन्क्यूबेटरों में से एक है। यह गाँवों में लैंगिक सामाजिक निर्माण को बदलने के लिये एक शक्तिशाली चैनल है।

ISSN No. : 0970-9398

- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अब आय के स्वतंत्र स्रोत बनाने में सक्षम हैं, जबकि कई युवा अर्द्ध–साक्षर महिलाएँ थीं जिनके पास घरेलू कौशल है, पूंजी और प्रतिगामी सामाजिक मानदंडों की अनुपस्थिति उन्हें किसी भी निर्णय लेने की भूमिका में पूरी तरह से शामिल होने तथा अपना स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित करने से रोकती है।
- महिलाएँ कई क्षेत्रों में बिज़नेस कॉरेस्पोंडेंट (BC), बैंक सखियों, किसान सखियों और पशु सखियों के रूप में काम कर रही हैं।

भारत सरकार की नीति

- उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के इस युग में महिलाएँ अपनी स्वाधीनता, अधिकारों और स्वतंत्रता, सुरक्षा, सामाजिक स्थिति आदि के लिये अधिक जागरूक हैं, लेकिन आज तक वे इससे वंचित हैं, इसलिये उन्हें सम्मान के साथ उनके योग्य अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए।
- SHG समाज के ग्रामीण तबके की महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक उन्नति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

ग्रामीण विकास मंत्रालय ने महिलाओं को उच्च आर्थिक क्रम में ले जाने पर अधिक ध्यान देने के लिए, एसएचजी से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाने के लिए एक पहल की शुरुआत की है। इसका उद्देश्य ग्रामीण एसएचजी महिलाओं को प्रति वर्ष कम से कम 1 लाख रुपये कमाने में सक्षम बनाना है। इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए मंत्रालय ने अगले 2 वर्षों में 2.5 करोड़ ग्रामीण एसएचजी महिलाओं को आजीविका सहायता प्रदान करने की योजना बनाई है। देश भर में मौजूद विभिन्न मॉडलों के आधार पर राज्य सरकारों को एक विस्तृत एडवाइजरी जारी की गई है। 28 अक्टूबर, 2021 को इस विषय पर विशेष चर्चा के लिए राज्यों, बीएमजीएफ (बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन) और टीआरआईएफ (ट्रांसफोमेशन रूरल इंडिया फाउंडेशन) के साथ एक हितधारक परामर्श कार्यशाला आयोजित की गई थी।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन एक परिपूर्णता वाली सोच पर काम करता है। इस कार्यक्रम के तहत अब तक 7.7 करोड़ महिलाओं को 70 लाख स्वयं सहायता समूहों में शामिल करने के साथ 6768 ब्लॉकों को कवर किया गया है। एसएचजी को प्रारंभिक पूंजीकरण सहायता प्रदान करने से लेकर सालाना लगभग 80 हजार करोड़ रुपये की सहायता दी जा रही है। इस मिशन के तहत, विभिन्न वर्ग और जाति की गरीब महिलाएं स्वयं सहायता समूहों और उनके संघों में शामिल होती हैं, जो अपने सदस्यों को उनकी आय और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए वित्तीय, आर्थिक और सामाजिक विकास सेवाएं प्रदान करते हैं।

वर्षों से एसएचजी द्वारा बैंक पूंजीकरण सहायता के माध्यम से उधार ली गई इस धनराशि का उपयोग अब आजीविका के विविध अवसर पैदा करने के लिए किया जा रहा है। हालांकि, इन कोशिशों से सकारात्मक बदलाव दिख रहे हैं, फिर भी यह महसूस किया गया है कि महिला एसएचजी सदस्यों की स्थायी आजीविका और सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करने यानी उन्हें लखपति बनाने के लिए प्रति वर्ष कम से कम एक लाख रुपये की उनकी आय सुनिश्चित करने के लिए ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। एक लाख रुपये का यह आंकड़ा ग्रामीण एसएचजी महिलाओं के लिए आकांक्षी और प्रेरणादायक दोनों है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना ग्रामीण विकास मंत्रालय की एक प्रमुख योजना है जो ग्रामीण गरीब महिलाओं के लिए क्षमता निर्माण और विविध आजीविका के अवसर पैदा करने पर ध्यान देने के साथ ग्रामीण गरीबों को स्व–शासित संस्थानों में संगठित करती है। मिशन ने महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के माध्यम से सफल प्रगति की है और किसानों के रूप में महिलाओं की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया है। सामुदायिक एकजुटता और महिलाओं की संस्थाओं के निर्माण के चरण से आगे बढ़ते हुए, अब ध्यान एसएचजी महिलाओं को उत्पादक समूहों, एफपीओ और निर्माता कंपनियों के माध्यम से उच्च क्रम की आर्थिक गतिविधियों में शामिल करने पर है।

इसके अलावा सरकारी कार्यक्रमों को विभिन्न एसएचजी के माध्यम से लागू किया जा सकता है। यह न केवल पारदर्शिता और दक्षता में सुधार करेगा बल्कि हमारे समाज को महात्मा गांधी की कल्पना के अनुसार 'स्व–शासन' के करीब लाएगा।

–प्रबन्धक राजभाषा
पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय हुगली

ISSN No. : 0970-9398

शैव भक्ति के संवर्धन में तमिल की महान नारियाँ

–लता वेंकटेश

इतिहास यह सिद्ध करता है कि तमिल प्रदेश ने पुरातन समय से साहित्य, धर्म और विविध ललित कलाओं के क्षेत्रों में अपनी अलग छाप छोड़ी है। यही नहीं, तमिल समाज की समस्त मनःस्थितियों की परिपक्वता साहित्य की प्रत्येक विधा में प्रतिबिंबित हुई है। तत्कालीन तमिल समाज में पुरुष और नारी दोनों को समान रूप से सम्मान मिला, स्वतंत्रता मिली। कभी भी वहाँ ऊँच–नीच का भेद–भाव नहीं रहा। संघ साहित्य के कई काव्य पदों में ये बातें सिद्ध होती हैं। संघ साहित्य के रचनाकारों में कवियत्री भी रही हैं और तीसरे संघ के श्रेष्ठ रचनाकारों में अव्वैयार जो थीं, वह प्रसिद्ध नारी रत्न थीं।

तमिल साहित्य के अध्ययन से तत्कालीन समाज की जीवन–शैली, विभिन्न क्षेत्र में उनके विस्तृत ज्ञान संबंधी सूक्ष्म जानकारियाँ स्पष्ट होती हैं। आजकल के तकनीकी सुविधाओं से युक्त काल में एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ने के प्रयास किये जाते हैं। देखा जाए तो पुराणों में भी ऐसे विवरण पाये जाते हैं कि रावण ने कैलाश पर चढ़कर भगवान शिवजी के दर्शन किये; देवी मीनाक्षी ने कैलाश पहुँचकर कैलाश नाथ पर प्रहार किया, वगैरह, वगैरह।

पुनीतवती

ईसवीं सन् छठी शताब्दी की कालावधि के दौरान तमिल प्रदेश की एक नारी, शिवजी के दर्शन की आकांक्षा को मन में रखते हुए कैलाश पर चढ़ी थीं। और वह भी अपने सिर और हाथ के बल से, इसलिए कि पवित्र कैलाश पर उनके पाँव का स्पर्श न हो। इसका उल्लेख चेक्किळार के 'पेरिय पुराणम' में है। चेक्किळार 12 वीं शताब्दी के दौरान, तमिल प्रदेश में शासन चलानेवाले राजा अनबाय चोल के प्रधान मंत्री थे। उन्होंने शैव–धर्म को आम जनता तक सरलतम भक्ति–पद्धति के माध्यम से पहुँचाने वाले तिरसठ नायनमारों (शैव संत) की जीवनी को अपने 'पेरिय पुराण' कृति में, काव्यम शैली में प्रस्तुत की। उसमें कारैकाल अम्मै यार जो कैलाश पर चढ़ी थीं, उनके बारे में प्राप्त विवरण निम्न प्रकार है।

कारैकाल अम्मैयार का अर्थ है, कारैकाल की माता। तमिल नाडु के समुद्र तटीय स्थल है कारैकाल। वह तत्कालीन प्रसिद्ध पत्तन क्षेत्र था। वह श्रेष्ठ शिव–भक्त थीं। शिवजी के दर्शन करने के लिए कैलाश पहुँची तो उन्हें लगा कि मेरे पूज्य देव जहाँ विराजते हैं, वहाँ मेरा पैर रखना उनका अपमान करना जैसा होगा। अतः उन्होंने कैलाश का आरोहण अपने सिर और हाथ के बल से ही किया। इस संदर्भ में पेरिय पुराण की पंक्तियाँ इस प्रकार है। कारैकाल अम्मै यार को देखकर शिवजी देवी पार्वती से कहते हैं:–

वरूमिवल नम्मै पेणुम अम्मै काण उमैये मट्री
पेरूमै सेर वडिवम् वेण्डि पेट्रनल एंड्रु पिंड्रै
अरूगुवन तणैय नोक्की अम्मैपये एन्नुंम् चेम्मै
ओरू मोली उलगम् उय्यवे अरूली चेयदार

(पेरियपुराण)

अर्थात, "देवी उमा ! मुझसे याचित इस प्रेत जैसे रूप के साथ मेरे दर्शन हेतु यहाँ पहुँची यह नारी कोई और नहीं, बल्कि यह मेरे देखभाल करनेवाली मेरी माता श्री हैं।'

हिंदु धर्म में यह माना जाता है कि शिवजी का न आदि है न अंत है ; वे 'स्वयंभू' हैं, फिर भी कारैकाल अम्मै यार की भक्ति से आनंद विभोर होकर शिवजी ने उन्हें माता का श्रेय दिया। अपनी तरह का यह पहला उदाहरण है जब भगवान शिव ने किसी को माँ का संबोधन दिया। तमिलनाडु के शिव मंदिरों में तिरसठ नायनमारों की मूर्तियाँ जो देखने को मिलती है, उनमें मात्र कारैकाल अम्मैयार, बैठी हुई स्थिति में पायी जाती हैं। उनकी कहानी इस प्रकार है: कारैकाल अम्मै यार का पूर्व नाम पुनीतवती था। वह नागपट्टिनम में जन्मी थीं। बचपन से शिव आराधना में उनकी रूचि बनी रही जो उनके वैवाहिक जीवन काल के समय में भी उनकी दिनचर्या का अंग बनकर रहा। उनके पति परम दत्त धनी व्यापारी थे। विवाह के बाद पति–पत्नी को कारैकाल में बसा दिया गया। किसी दिन परम दत्त के मित्र ने उन्हें दो आम ला दिये, जिसे उन्होंने घर भिजवा दिया। घर में किसी शैव संत का सादर सत्कार करते हुए दो में से एक आम को पुनीतवती ने उन्हें परोस दिया। मध्यान्ह भोजन काल में घर पहुँचे परम दत्त ने आम परोसने के लिए कहा। आम उन्हें स्वादिष्ट लगा, इसलिए उन्होंने दूसरा आम माँगा, तो पुनीतवती असमंजस में पड़ गयीं। पति की इच्छा पूर्ति न होती देख पुनीतवती ने शिवजी से प्रार्थना की कि उसे ऐसी संकट स्थिति से बचा दें। तुरंत उनके हाथ में एक आम आ गिरा। लेकिन यह खुशी अल्प कालीन रही, इसलिए कि परमदत्त ने दूसरे आम में अधिक मीठेपन का एहसास करते हुए सवाल उठाने लगे।

पुनीतवती को कहना पड़ा कि यह दूसरा आम शिवजी का प्रसाद है। परम दत्त चकित हो गये। उन्होंने कहा, यदि यह सत्य है तो सत्य का और एक बार प्रमाण हो जाए। पुनीतवती की आँखें भर गयी। अपनी भक्ति को सिद्ध करने के लिए दूसरी बार शिवजी से प्रार्थना रखीं तो अब परमदत्त के सामने ही और एक आम उनके हाथ में प्रस्तुत हुआ। पत्नी की शिव भक्ति के साक्षात्कार से परमदत्त हिल गये। डर और सम्मान से उस घटना के बाद परमदत्त पुनीतवती को अपनी पत्नी के रूप में देख न पाये। कुछ दिनों के बाद, व्यापार–वृद्धि के बहाने से वह पांडिय राज्य चले गये और वहीं दूसरा विवाह कर बस गये, अपनी पुत्री का नाम भी पुनीतवती रख दिये। कुछ वर्षों के बाद जब पुनीतवती को व्यापारियों के ज़रिए पता चला कि परम दत्त पांडिय क्षेत्र में है, अपने सगे–संबंधियों के माध्यम से उसने सूचना भिजवायी कि वह उसके साथ जीवन बिताने के लिए पांडिय राज्य में आ रहीं हैं। सूचना मिलते ही परमदत्त अपनी नयी पत्नी व पुत्री के साथ पुनीतवती का स्वागत करने के लिए नगर–द्वार में पहुंच गये। पुनीतवती को देखते ही उसका पाँव छूकर आशीर्वाद माँगने लगे। चकित–सी खड़ी रही पुनीतवती से पति का व्यवहार सहा न गया। जड़वत–सी रही पुनीतवती ने, आँसू बहाते हुए शिवजी से प्रार्थना की कि यदि यह उनकी लीला है तो उसके सुंदर से रूप को तुरंत नष्ट करके और उसका प्रेत–सा रूप हो जो किसी को न भाएँ। नगर–वासियों और सगे–संबंधियों के देखते–देखते पुनीतवती के सुंदर रूप का नाश हो गया और लेश–मात्र मांस के साथ हड्डी के ढाँचे जैसा रूप हो गया। यह अदभुत कौतुक देखकर सब उसको प्रणाम करने लगे और तब से 'कारैकाल अम्मैयार' के नाम से पुनीतवती जानी जाने लगीं।

शैव–भक्ति आंदोलन में कारैकाल अम्मैयार का योगदान महत्वपूर्ण है। 'अद्भुत तिरुअंतादि', 'इरट्टै मणिमालै अंतादि' आदि उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। तमिलनाडु स्थित 'तिरुवालंकाडु' क्षेत्र के शिवमंदिर में शिवजी के आनंद नृत्य का दर्शन कर उन्होंने 'मूत्तनार पदिकम' गाया था। शैव भक्ति को जन साधारण में फैलाने के महान कार्य में कारैकाल अम्मैयार की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

तिलकवती

तिरसठ में से प्रमुख चार नायनमारों में गिने जानेवाले 'तिरुनावुक्करसर' का उल्लेख उनकी बहन के बारे में कहे बिना अधूरा रहता है। तमिल शैव–भक्ति, जन आंदोलन, लोक–सेवा, मंदिर–सेवा में तिरुनावुक्करसर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है तो उसका श्रेय उनकी बहन तिलकवती को जाता है।

बचपन में तिरुनावुक्करसर का नाम 'मरुल नीक्की' था। इनकी बहन तिलकवती का विवाह चोल राजा के सेनापति के साथ निश्चित ही था कि खबर मिली, वे युद्ध में वीर गति को प्राप्त हुए। इस दुखद सूचना ने तिलकवती के माता–पिता को इतनी वेदना दी कि वे दोनों शीघ्र ही चल बसे। ऐसी परिस्थिति में विरक्त तिलकवती ने निर्णय लिया कि उसे भी दुनिया त्यागनी है। किंतु मरुल नीक्की के निश्छल चेहरे ने उन्हें रोक दिया। तब विधवा का वेशधारण कर, तिलकवती ने मरुल नीक्की के पालन–पोषण में अपना मन लगा दिया। वह बड़ी शिव–भक्त थी और शिव–आराधना में अपना सारा दुख भूल जाती थी।

यह माना जाता है कि तिरुनावुक्करसर सातवीं शताब्दी की कालावधि के हैं। ये पल्लव राजा महेंद्र वर्मन प्रथम के समकालीन थे। इस पल्लव राजा का शासन काल ई. 600–630 तक कहा जाता है। आरंभिक दौर में राजा महेंद्र वर्मन जैन धर्मावलंबी थे। शिव–भक्त तिलकवती से पालन–पोषण होने के बावजूद मरुल नीक्की अपनी युवावस्था में जैन–धर्मावलंबी बने। उन्होंने अपना नाम भी 'धर्मसेन' बदल लिया। जैन आचार्यों ने उनकी तर्क–बुद्धि, वाकपटुता ज्ञान, कुशलता का सदुपयोग किया। उनके पांडित्य, ज्ञान और बुद्धि शिव–निंदा और जैन–धर्म प्रचार–प्रसार में लगे जाने के कारण तिलकवती की वेदना बढ़ती गयी। वह शिवजी से दिन रात प्रार्थना करती रही कि मरुल नीक्की का उद्धार हो। कुछ ही दिनों के बाद मरुलनीक्की भयंकर उदर रोग से पीड़ित हुए जिसका निवारण कोई भी नहीं दे पाए। दुख और वेदना से पीड़ित मरुल नीक्की को अपनी बहन की याद आने लगी। जब वे अपनी बहन के यहाँ पहुँचे, तब अपने भाई के दुख को देखकर तिलकवती आँसू बहाने लगी और अपने भाई से वचन माँगा कि यदि शिव–पूजा से उसके उदर रोग का निवारण हो जाए तो वे वापस अपने ही धर्म में आ जाएँ। भाई ने यह बात मान ली। कहा जाता है कि तिलकवती ने अपनी भाई को शिव पंचाक्षर मंत्र की दीक्षा दी और मरुलनीक्की शिव पंचाक्षर मंत्र का लगातार जप करने लगे। कुछ ही दिनों में वे रोग मुक्त हो गए और पंचाक्षर मंत्र का जप करते करते शिव आराधना में तन–मन से खो गए। लेकिन इनका पंथ परिवर्तन जैन आचार्यों को नहीं भाया। जैन आचार्यों की प्रेरणा से राजा महेंद्र वर्मन इन्हें अत्यधिक यातना देने लगे किंतु हर विपदा से मरुलनीक्की बचते रहे। उन्हें अनेक उपायों से मारे जाने की कोशिश किये जाने पर भी उन सबसे बच जाने की कहानी, राजा की हिंसा–प्रवृत्ति और शिव–भक्ति की महिमा चारों ओर फैलने लगी। जब उन्हें चूने की भट्टी में डलवा दिया गया उन्होंने जो गीत शिवजी पर गाये उसकी पहली चार पंक्तियाँ निम्नप्रकार है।

"मासिल वीणैयुम मालै मदियमुम
वीसु तेंड्रलुम वींगि वेनिलुम
मूसु वंडरै पोइगयुम पोंड्रदे
इशन एंदै इणैयडि नीषले"

अर्थात वीणा का नाद, चंद्रमा की ठंडी छाया, दक्षिणी हवा, सुखद मौसम, भंवर मँडराते सुगंध तालाब आदि के जैसे परम सुख देने वाली है मेरे शिवजी के पदकमलों की छाया।

इन घटनाओं के बाद मरुलनीक्की को आम जनता और शैव–संत 'तिरुनावुक्करसर' (वागीश) के नाम से पुकारने लगे।

पल्लव राजा महेंद्र वर्मन तिरुनावुक्करसर की भक्ति से प्रभावित होकर शैव धर्म में दीक्षित हो गए।

शैव भक्ति नव–जागरण में तिरुनावुक्करसर की उपलब्धि मील के पत्थर के जैसे जानी जाती है तो उसका संपूर्ण श्रेय उनकी बहन तिलकवती को जाने के कारण तिलकवती, अति प्रभावशाली एवं एक शैव–संत को सृजित करनेवाली नारी मणि के रूप में तमिलनाडु में आज भी पूजित है।

मंगैयरकरसी

पूजनीया तिलकवती ने अपने भाई में परिवर्तन लाया तो चोल राज कन्या मंगैयरकरसी ने अपने पति में परिवर्तन लाने मे सफलता प्राप्त की। पांडिय राजकुमार नेडुमारन की शूर वीर गाथा सुनकर उनसे आमने–सामने भेंट न होने पर भी राजकुमारी मंगैयरकरसी ने उन्हें अपना स्वामी मान लिया। नेडुमारन के साथ विवाह संबंध निश्चित होने के बाद मंगैयरकरसी को सूचना प्राप्त हुई कि वे जैन धर्म के अनुयायी हैं। मंगैयरकरसी तो शिव–भक्त थी। मन–ही–मन दुखित होने पर भी उसे एहसास हुआ कि यदि ईश्वर की कृपा हो तो उन्हें वापस शिवपूजन में लगाऊँगी। मंगैयरकरसी, पांडिय राजा की पट्ट महिषि बनकर गयी। उनके वैवाहिक जीवन में या अटूट प्यार के बंधन में धर्म भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। नेडुमारन को युवावस्था से ही उदर रोग की समस्या थी। बीच–बीच में इसका उपचार होता था, कभी–कभी युद्ध क्षेत्र में भी उपचार होता था। चिकित्सकों के साथ–साथ वे जैनाचार्यों का भी सहारा माँगते थे। दिन–ब–दिन रोग की समस्या बढ़ती गयी ; कई बार रोग की वेदना इतनी असह्य होती कि उनकी कमर बिलकुल आगे झुक जाती। इसके चलते, जन–साधारण में वे 'कून पांडियन'(कमर झुका पांडियन) नाम से जाने लगे। इसी बीच में तिरु ज्ञान संबंधर (तिरसठ नायनमारों में एक हैं और जो तिरुनावुक्करसर के समकालीन होने पर भी उनसे उम्र में बहुत छोटे थे) के मदुरै भ्रमण की सूचना मंगैयरकरसी को मिली। इस भ्रमण का सदुपयोग करने के विचार से रानी मंगैयरकरसी ने तिरु ज्ञान संबंधर के आगमन की खुशी में मंदिर में आयोजित विशेष पूजा में आम जनता के रूप में भाग लिया और आम जनता के साथ उनकी भेंट के समय में उनसे विनती की कि वे उनके पति के उदर रोग का उपचार करते हुए शैवधर्म की ख्याति सिद्ध करें।

अगले दिन तिरु ज्ञान संबंधर राजमहल पहुँचे और धर्म विचारों के आदान–प्रदान के बीच उन्होंने कहा कि शिवजी की कृपा से वे राजा के उदर रोग का निवारण कर पाएँगे। राजा की स्वीकृति पर उन्होंने शिव पंचाक्षर मंत्र की दीक्षा दी और मंत्रोच्चार से शक्ति संपन्न विभूति को राजा के पेट पर लगाया। फिर शिवजी का ध्यान करते हुए निम्न प्रकार से शुरु होनेवाले अपने भक्ति–गीत गाये।

मंदिरमावदु नीरु, वानवर मेलदु नीरु,
सुंदरमावदु नीरु, तुदिक्क पडुवदु नीरु,
तंदिरमावदु नीरु, समयत्तिल उल्लदु नीरु,
सेंदुवरवाय् उमै पंगन तिरुआलवायान तिरुनीरे।

अर्थात्–

मंत्र है विभूति, देवताओं की शक्ति से संपन्न है विभूति
धारण कर्ता को सुंदरता देती है विभूति,
पूज्य है विभूति, तंत्र है विभूति,
देवी उमा के संग विराजे महादेव का प्रसाद है विभूति।

कहा जाता है कि शिवजी की कृपा से पांडिय राजा उदर रोग से मुक्त हुए। साथ ही तिरु ज्ञान संबंधर के अनुयायी बन गए। जो पांडिय राजा कून पांडियन नाम से जाने जाते थे, वे अब निंड्र सीर नेडुमारन (सीधे खड़े होने वाले नेडुमारन) हो गए। निंड्र सीर नेडुमारन और मंगैयरकरसी (दोनों पति–पत्नी नायनमार के रूप में पूजित हैं) तिरसठ नायनमारों में गिने जाते हैं।

अपने पति पांडिय राजा को जैन धर्म के प्रभाव से मुक्त कर शैव धर्म की ओर प्रवृत्त कराने में और पांडिय प्रदेश में फिर से शैव–धर्म को विकसित करने के महान कार्य में मंगैयरकरसी का हाथ था। ऐसी नारीमणियों की पति–भक्ति, स्नेह, वात्सल्य और धर्म–परायणता से तमिल प्रदेश में जो बौद्ध और जैन धर्म का आधिपत्य रहा, वह क्षीण हुआ और फिर से शैव धर्म का विकास हुआ। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि संकट की स्थितियों में संतों की दृढ़ता को बनाये रखने में इन नारी मणियों की मानसिक दृढ़ता प्रमुख कारण रही। परिणामस्वरूप, तत्कालीन राजाओं के शासनकाल के दौरान शैव–धर्म पनपने लगा। उनके सुदृढ़ शासन के कारण, देश में शांति की स्थापना हुई, कलाकृतियों से युक्त अनेकानेक मंदिरों के निर्माण हुए। तमिल प्रदेश के इन पल्लव, पांडिय, चोल राजाओं का काल तमिल प्रदेश और साहित्य का विकास काल और स्वर्ण काल माना जाता है।

–सहायक निदेशक (रा.भा.)
आकाशवाणी, कामराजर सालै, मइलापूर, चेन्नै

संदर्भ ग्रंथः

सेक्किषार कृत "पेरिय पुराणम"
–डॉ. सेषन।

ISSN No. : 0970-9398

समाज सुधारक: सावित्री बाई फूले

—डॉ. अजय कुमार

सावित्री बाई फुले, भारतीय समाज में महिला शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जानी जाती हैं। उनका जन्म 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के एक छोटे से गाँव नयागांव में एक दलित परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम खन्दोजी नेवसे और माँ का नाम लक्ष्मीबाई था। वह तीन भाई–बहनों में सबसे छोटी थी। सावित्री बाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका होने का श्रेय हासिल है एवं वह पहले किसान स्कूल की संस्थापक भी थीं। उन्हें भारतीय नारीवाद की जननी माना जाता है।

प्रारंभिक जीवन :

सावित्री बाई फुले जब महज 9 साल की थी जब उनका विवाह 13 साल के ज्योति राव फुले से वर्ष 1940 में कर दिया गया था। जिस समय सावित्री बाई फुले की शादी हुई थी उस समय वह अनपढ़ थी। पढ़ाई में उनकी लगन देखकर ज्योति राव फुले प्रभावित हुए और उन्होंने सावित्री बाई को आगे पढ़ाने का मन बनाया। ज्योति राव फुले भी शादी के दौरान कक्षा तीन के छात्र थे। लेकिन तमाम सामाजिक बुराइयों की परवाह किए बिना उन्होंने सावित्री बाई की पढ़ाई में पूरी मदद की। उनके पति ज्योति राव ने उन्हें और अपने कुल की बहन सगुणाबाई क्षीरसागर को, गाँव में कृषि कार्यों के साथ अपने निवास स्थान पर पढ़ाया। उन्होंने आगे की पढ़ाई के लिए एक अमेरिकी मिशनरी, सिंथिया फर्रार द्वारा चलाए जाने वाले संस्थान में और एक नॉर्मल स्कूल में (अब पुणे) दो शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी पंजीकरण करवाया। उनके प्रशिक्षण के कारण, सावित्री बाई फुले महज 17 साल की उम्र में ही अध्यापिका और प्रधानाचार्य बन गई थी। सावित्री बाई फुले संभवतः पहली भारतीय महिला शिक्षिका और प्रधानाचार्य थी। उन्होंने यह उपलब्धि तब हासिल की जब महिलाओं का शिक्षा ग्रहण करना तो दूर की बात थी, उनका घर से निकलना भी दूभर था। आजादी से पहले भारत में महिलाओं के साथ काफी भेदभाव होता था। समाज में दलितों की स्थिति अच्छी नहीं थी। महिला दलित होती थी तो यह भेदभाव और भी बड़ा होता था।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान :

शिक्षा पूरी करने के बाद, सावित्री बाई फुले ने पुणे में लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया। उन्होंने ज्योति राव फुले की बहन सगुणाबाई क्षीरसागर के साथ यह कार्य शुरू किया, जो ज्योति राव की क्रांतिकारी बहन और मार्गदर्शिका थीं। शागुना बाई के साथ शिक्षा देना शुरू करने के बाद, सावित्री बाई और ज्योति राव फुले ने सगुणा बाई के साथ भीड़ेवाड़ा में अपना स्कूल शुरू किया। सावित्री बाई ने 3 जनवरी 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की 9 छात्राओं के साथ महिलाओं के लिए पहले स्कूल की स्थापना की। एक महिला प्रिंसिपल के लिए सन 1848 में बालिका विद्यालय चलाना कितना मुश्किल रहा होगा इसकी कल्पना आज शायद नहीं की जा सकती। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। सावित्री बाई फुले उसे दौर में न सिर्फ खुद पढ़ी बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने का भी बंदोबस्त किया।

1851 के अंत तक, सावित्री बाई और ज्योति राव फुले पुणे में लड़कियों के लिए अलग–अलग स्कूल चला रहे थे। तीनों स्कूलों में लगभग एक सौ पचास छात्राएं पंजीकृत थीं। पाठ्यक्रम की तरह, तीनों स्कूलों में शिक्षा के

लिए सरकारी स्कूलों में प्रयुक्त किए जाने वाली शिक्षा विधियों से भिन्न थी। इन स्कूलों में उपयोग की जाने वाली विधियाँ सरकारी स्कूलों से बेहतर मानी जाती थीं। इस प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप, फुले के स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं की संख्या सरकारी स्कूलों में दाखिले होने वाले छात्रों की संख्या से अधिक थी। उन्होंने 1853 में पुणे में भारतीय समाज में पहली महिला शिक्षा संस्था "हिंदू महिला दोषपरिहारिणी सभा" की स्थापना की। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने अनगिनत महिलाओं को शिक्षित करने का कार्य किया और समाज में जागरूकता फैलाई। इस सभा के माध्यम से उन्होंने विधवाओं और दलित महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने का कार्य भी किया। सावित्री बाई ने अपने समाज में बेटियों को शिक्षित बनाने की मांग की और उन्होंने सामाजिक रूप से उन्हें शिक्षा मिलने के लिए समर्थन जताया। सावित्री बाई ने दलित और पिछड़े वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने के लिए विशेष रूप से कार्य किया। उन्होंने एक दलित शाला स्थापित की जिसमें वे स्वयं शिक्षिका बनीं और दलित बच्चों को पढ़ाया। फुले दंपति ने देश में कुल 18 स्कूल खोले जिसकी वजह से ईस्ट इंडिया कंपनी ने उनके योगदान को सम्मानित भी किया।

उन्होंने मजदूरों के लिया रात्रि में स्कूल खोला ताकि दिन में काम पर जाने वाले मज़दूर रात में पढ़ाई कर सके। वह पहले किसान स्कूल की संस्थापक थीं।

सामाजिक विरोध:

सावित्री बाई फुले का जीवन बेहद ही कठिनाई भरा रहा। आज़ादी से पहले भारत में महिलाओं के साथ काफ़ी भेदभाव होता था। महिलाओं, ख़ास कर दलित महिलाओं के उत्थान के लिया काम करने, छूआ–छूत के ख़िलाफ़ आवाज उठाने के कारण उन्हें स्थानीय समुदाय से बहुत विरोध भी आया। जब वह पढ़ाने स्कूल जाती थी तो लोग उन्हें पत्थरों से मारते थे। लोग उन पर कूड़ा और कीचड़ भी फेंकते थे, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। सावित्री बाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थी और स्कूल पहुँच कर गंदी हुई साड़ी बदल लेती थी।

समाज सुधार के क्षेत्र में उनकी भूमिका:

सावित्री बाई फुले ने "महिला समाज सुधार समिति" की स्थापना की, जो समाज में महिलाओं के उत्थान के लिए कार्य करती थी। सावित्री बाई ने विधवा पुनर्विवाह की वकालत की थी। उन्होंने इस परिस्थिति को सुधारने के लिए आंदोलन किया और विधवाओं को समाज में समानता के लिए आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। 1854 में उन्होंने विधवाओं के लिया एक गृह खोला। वर्षों के निरंतर सुधार के बाद 1864 में इसे एक बड़े आश्रय में बदलने में सफल रहीं। इस आश्रय गृह में निराश्रित महिलाओं, विधवाओं और उन बाल बहुओं को जगह मिलने लगी जिनको उनके परिवार वालों ने छोड़ दिया था। सावित्री बाई ने एक विधवा को आत्महत्या करने से रोका और उसकी डिलीवरी अपने घर पर कराई। बाद में सावित्री बाई ने इसके पुत्र यशवंत राव को गोद ले लिया और पालकर बड़ा किया। उस समय गाँवों में कुएं पर पानी लेने के लिए दलितों और नीच जाति के लोगों का जाना वर्जित था। उन्होंने अपने पति के साथ मिल कर एक कुआँ भी खोदा जिसमें दलित और पिछड़े वर्ग के लोग पानी ले सके। उनके इस कदम का उस समय बहुत विरोध भी हुआ। सावित्री बाई ने दलितों के अधिकारों की रक्षा करने में समर्थन किया और उनके समाज में समानता की बात की। सावित्री बाई फुले ने सती प्रथा के खिलाफ भी आंदोलन किया और इसे समाप्त करने के लिए समर्थन किया।

जातिवाद और असमानता के खिलाफ:

सावित्री बाई फुले ने अपने पति महात्मा ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर सामाजिक परिवर्तन की दिशा में काम किया। ज्योति राव जो बाद में ज्योतिबा के नाम से जाने गए, सावित्री बाई के संरक्षक गुरु और समर्थक थे। सावित्री बाई फुले ने जातिवाद के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने जातिवाद को समाज में एक दूषित प्रथा मानी और इसके खिलाफ आंदोलन किया। सावित्री बाई फुले ने समाज में समानता के महत्व को बताया और लोगों को यह सिखाया कि हर व्यक्ति को समान अधिकार और अवसर मिलने चाहिए। उन्होंने समाज को जागरूक किया कि जातिवाद और असमानता समृद्धि और समाज के विकास को रोकने वाला कारक हैं। उन्होंने महिलाओं, दलितों और पिछड़े वर्ग के लोगों को शिक्षा में समर्थ बनाने के लिए कार्रवाई की और उन्हें समाज में अधिकार प्राप्त करने के लिए तैयार किया। सावित्री बाई ने उपनिवेशियों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए अपने जीवन में कई आंदोलन और प्रतिवाद किए। उन्होंने उनके अधिकारों की प्रतिस्थापना के लिए जातिवाद और असमानता के खिलाफ उठे आंदोलनों का समर्थन किया।

सावित्रीबाई फुले की लेखनी कला:

सावित्री बाई फुले की लेखनी कला ने उन्हें समाज

ISSN No. : 0970-9398

में जागरूकता बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान किया। उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से समाज में जातिवाद और महिलाओं तथा दलितों के अधिकारों के प्रति अपराधिक दृष्टिकोण के खिलाफ आवाज बुलंद की। सावित्री बाई ने अपनी कविताओं में महिला उत्थान के महत्वपूर्ण विषयों पर बातें की। उनकी कविताएं महिलाओं को सशक्त करने के लिए समर्थन देने के लिए जानी जाती हैं। जाति और पितृसत्ता से संघर्ष करते हुए उन्होंने कविता संग्रह छापें। सावत्री बाई को आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत माना जाता है। सावित्री बाई फुले ने शिक्षा के महत्व को अपने लेखों में उजागर किया। उन्होंने समाज में शिक्षित वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका पर चर्चा की और दलितों और महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्थन किया। सावित्री बाई फुले ने अपने जीवन की आपबीती और अनुभवों को अपनी साहित्य कला के माध्यम से व्यक्त किया। उनकी रचनाएं महिलाओं के हक में आवाज बुलंद करती हैं और समाज को सोचने पर मजबूर करती हैं। सावित्री बाई फुले ने अपने जीवन के अनुभवों को "आपबीती" नामक पुस्तक में लिखा, जो उनके जीवन की कठिनाइयों और संघर्षों का संग्रह है। इसमें हमें उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की बेहद मौलिक जानकारी मिलती है।

मृत्यु

सावित्री बाई फुले का निधन 10 मार्च, 1897 को हुआ था। उनके पति ज्योति राव का निधन उनसे पहले 1890 में हो गया था। पति के निधन के बाद सावित्री बाई फुले ने ही उनका दाह संस्कार किया था। सावित्री बाई फुले ने पुणे में एक बड़ी महामारी के समय पीड़ितों की सेवा की थी और वे इस प्रकार ब्यूबोनिक प्लेग के शिकार हो गई थीं। इस समय भारत में बड़ी मात्रा में ब्यूबोनिक प्लेग का प्रकोप था और उससे अनेक लोग मर रहे थे। सावित्री बाई, एक समाज सुधारक और शिक्षिका के रूप में, इस महामारी के समय में अपने जीवन को समर्पित करती रहीं और बीमारों की देखभाल करने में सक्रिय रूप से शामिल रहीं। उनकी निष्ठा और समर्पण के बावजूद, उन्हें भी ब्यूबोनिक प्लेग से संक्रमण हो गया और उनकी आध्यात्मिक यात्रा इसके कारण समाप्त हो गई। इस दुखद घड़ी में, सावित्री बाई ने अपने जीवन की आध्यात्मिकता और समर्पण का परिचय दिया, और उनका योगदान आज भी महत्वपूर्ण है। उनका निधन एक बड़ी क्षति थी, लेकिन उनका आदर्श और समर्पण समाज में सुधार लाने की मिशाल बना रहा है। वे एक महान समाज सुधारक, महिला समर्थक और शिक्षिका थीं जिनका योगदान आज भी प्रेरणा स्रोत है।

सम्मान

वर्ष 2018 में कन्नड़ में सावित्री बाई फुले की ज़िंदगी पर एक फ़िल्म भी बनाई गई थी। 1998 में उनके सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया गया था। वर्ष 2015 में पुणे विश्वविद्यालय का नाम बदल कर सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय कर दिया गया था।

सावित्री बाई फुले का जीवन सार्थक रहा और उन्होंने अपने पूरे जीवन में शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में सच्चे समर्पण का परिचय दिया। उनके कार्यों ने समाज में बदलाव की बुनियाद रखी और उन्होंने महिलाओं और दलितों को समाज में समानता और न्याय की दिशा में प्रेरित किया। सावित्री बाई फुले ने अपने जीवन से हमें यह सिखाने का संदेश दिया है कि सही दिशा में काम करने, समाज में सुधार लाने और न्याय के लिए खड़ी होने में कोई बाधा खड़ी नहीं हो सकती है। सावित्री बाई फुले ने अपनी लेखनी कला का सबसे अद्वितीय और प्रभावशाली रूप से उपयोग किया जो समाज में सुधार और समाजिक न्याय की बातें करके लोगों को प्रेरित करता है।

सावित्री बाई फुले के जन्म के समय समाज काफी रूढ़िवादी था। महिलाओं खासकर दलित महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय थी। उन्हें शिक्षित नहीं किया जाता था एवं घर के कामकाज में ही उनकी भागीदारी होती थी। ऐसे समय में एक दलित महिला के द्वारा समाज के विरोध के बाद भी महिला उत्थान का प्रयास करना अकल्पनीय है। उनके निधन को एक सदी से ज्यादा का समय बीत चुका है। लेकिन भारतीय समाज में उन्होंने जो योगदान दिया उसे आज भी याद किया जाता है। सावित्री बाई फुले अपने काम की वजह से आज भी लोगों के बीच जिंदा है। सावित्री बाई फुले ने महिलाओं की समानता के लिए और उन्हें उनका हक दिलाने के लिए जो कुछ किया उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि अगर आज के जमाने में महिला सशक्तिकरण इतना अधिक हुआ है तो इसका सबसे पहला श्रेय सावित्री बाई फुले को जाता है

–प्रोफेसर (शिशु रोग)
वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज एवं
सफ़दरजंग अस्पताल

ISSN No. : 0970-9398

स्त्री दर्पण: रामेश्वरी नेहरू की महिला पत्रकारिता

–सुभाष

हिंदी साहित्य में पत्र–पत्रिकाओं की शुरुआत मूल रूप से 1826 ई. में कलकत्ता से प्रकाशित होने वाली 'उदन्त मार्तण्ड' पत्रिका से मानी जाती है जिसके संपादक पं. जुगल किशोर थे। इस पत्र का प्रमुख उद्देश्य हिंदी भाषा में विभिन्न देशों के समाचारों को प्रकाशित कर भारतवासियों का मनोरंजन करना था और इसी से प्रेरणा लेते हुए कालान्तर में 'बंगदूत', 'प्रजामित्र', 'बनारस अख़बार', 'प्रजा हितैषी' जैसी प्रसिद्ध अनेक हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ।[1]

किन्तु साहित्यिक एवं सामाजिक विकास की दृष्टि से हिंदी पत्रकारिता का प्रमुख चरण 'भारतेंदु युग' से आरम्भ माना जाता है। इस युग में न केवल राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी पत्रकारिता का प्रचार–प्रसार हुआ अपितु हिंदी भाषा व साहित्य के विकास के नए मार्ग भी खुले। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में इस युग की पत्रिकाओं ने अंग्रेजी नीतियों का विरोध कर भारतीय जनता में स्वदेश प्रेम की भावना को जागृत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसके महत्व को रेखांकित करते हुए डॉ. अर्जुन तिवारी ने लिखा है – "भारतेन्दु 'नवजागरण' के अग्रदूत थे। देश की पराधीनता से दुःखी होकर वे सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में सदैव तत्पर रहते थे। हिन्दी गद्य के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन के साथ पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन, सम्पादन में उन्होंने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। भारतेन्दु ने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और 'बालाबोधिनी' पत्रों को स्वतः निकाला तथा उन्होंने प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, चौधरी बदरी नारायण प्रेमघन, अम्बिकादत्त व्यास, लाल खड्ग बहादुर मल्ल, महाराजकुमार ठाकुर रामदीन सिंह, राधाचरण गोस्वामी, राधाकृष्ण दास, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, तोताराम, श्रीनिवासदास, काशीनाथ खत्री, जगमोहन सिंह, कार्तिक प्रसाद खत्री आदि को विविध पत्रों के प्रकाशन हेतु सत्प्रेरणा दी।"[2]

भारतेंदु हरिश्चंद्र की विशेषता यह थी की उन्होंने समग्रता में राष्ट्रीय उन्नति का स्वप्न देखा था। जिस प्रकार साहित्य के विकास के लिए उन्होंने सभी साहित्यिक विधाओं के विकास को आवश्यक माना उसी प्रकार समाज के विकास के लिए उन्होंने समाज के विभिन्न अंगों को भी आगे बढ़ाने का प्रयास किया जो समाजिक दृष्टि में पिछड़े हुए थे। इस हेतु उनका सर्वमहत्त्वपूर्ण कार्य 'बालाबोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन रहा है जो महिलाओं पर केन्द्रित हिंदी की पहली पत्रकारिता मानी जाती है। हिंदी भाषा में महिला विषयक मुद्दों को प्रमुखता प्रदान कर स्त्रियों को समाज में अपने अधिकारों के लिए जागरूक करने का सर्वप्रथम प्रयास 'बालाबोधिनी' पत्रिका ने किया। यद्यपि इस पत्रिका से पूर्व भी अनेक पत्रिकाओं में महिलाओं के उत्थान से संबंधित सामग्री का प्रकाशन छुट–पुट रूप में होता रहा है किंतु बालाबोधिनी ने महिलाओं के विकास को वह तीव्रता प्रदान की जिसके प्रभावस्वरूप बीसवीं सदी में अनेक महिला केंद्रित पत्रिकाओं का उदय हुआ।

बीसवीं सदी को हिन्दी पत्रिकाओं का स्वर्णिम काल माना जाता है। साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक, महिला केन्द्रित आदि विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का प्रकाशन इस कालखण्ड में हुआ। महिला केन्द्रित पत्रिकाओं की बात की जाए तो इस सदी में हिंदी भाषा में प्रकाशित होने वाली 'स्त्री दर्पण', 'गृहलक्ष्मी', 'स्त्री धर्म शिक्षक', 'आर्य्य महिला', 'चाँद' आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है, किन्तु जिस पत्रिका ने बीसवीं सदी के आरंभ में महिला विषयक समस्याओं, मुद्दों, विचारों आदि पर प्रमुखता एवं गहनता से प्रकाश डाला वह 'स्त्री दर्पण' पत्रिका थी।

महिला केंद्रित पत्रिकाओं में 'स्त्री दर्पण' पत्रिका का नाम इसलिए भी विशेष उल्लेखनीय है क्योंकि यह हिंदी की पहली पत्रिका थी जिसका संपादन एवं प्रबंधन दोनों कार्य महिलाओं द्वारा किया गया। 'स्त्री दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन सन 1909 ई. में प्रयाग (इलाहाबाद) से आरम्भ हुआ जिसकी प्रबंधक भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की पत्नी श्रीमती कमला नेहरू तथा संपादक श्रीमती रामेश्वरी नेहरू (जवाहर लाल नेहरु के चचेरे भाई बृजलाल नेहरु की पत्नी) थी। स्त्रियों पर केंद्रित इस पत्रिका का हिंदी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। यद्यपि यह पूर्णतः साहित्यिक पत्रिका नहीं थी फिर भी हिंदी साहित्य और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में पत्रिका ने जो कार्य किया वह अद्वितीय है।

इस पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर केवल पत्रिका का नाम, अंक, भाग, संपादिका व मैनेजर की जानकारी छपी होती थी। शुरुआती एक–दो पृष्ठों पर विज्ञापन होते थे जिनमें से एक विज्ञापन 'स्त्री दर्पण' का भी होता था। इस विज्ञापन में लिखा होता था – "स्त्रियों और लड़कियों के पढ़ने योग्य हिंदी भाषा में महिला मासिक पत्र। इस पत्र में धर्म, साहित्य, समाज सुधार, राजनीति आदि विषयों पर अधिकतर स्त्रियों ही के लेख रहते है।"[3]

स्पष्ट है कि पत्रिका का कलेवर स्त्री समकक्ष बनाया गया था जिसमें केवल स्त्रियों से संबंधित सामग्री को ही प्रकाशित किया जाए किन्तु कुछ अंको में ऐसे भी आलेख प्रकाशित हुए जो

ISSN No. : 0970-9398

स्त्रियों के लिए महत्वपूर्ण तो थे किंतु वह पुरुषों पर केंद्रित थे। उदाहरणस्वरूप फरवरी, 1910 के अंक में श्रीमती कैलासरानी वातल द्वारा लिखित माननीय पं. मदनमोहन मालवीय पर आलेख, मई और जून, 1910 ई. के अंक में वर्म्मा द्वारा लिखित मोहनदास कर्मचंद गांधी पर आलेख आदि को देखा जा सकता है।

पत्रिका का मुख्य लक्ष्य 'भारतीय स्त्री को मनुष्योचित पद दिलाना रहा है जिससे संबंधित विविध विषयों पर अनेक आलेख पत्रिका की शोभा बढ़ाते रहे है।अलग–अलग इन आलेखों में 'आर्य्य नारी', 'विधवा विवाह', 'स्त्री धर्म', 'श्रीमती महादेवी जी', 'मातृभाषा', 'सावित्री', 'विद्या का परिणाम', 'राष्ट्र की उन्नति में स्त्री का स्थान', 'सीता राम के प्रति', 'स्त्री जाति पर पुरुषों का बुरा व्यवहार', 'स्त्री सुधार' आदि शीर्षकों से अनेक हिंदी के लेखकों ने लिखा है जिनमें मन्नन द्विवेदी, भुवनेश्वरी देवी, रामचंद्र दुबे, युगल किशोर अखौरी, गिरिजाकुमार घोष, माधव शुक्ल आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है।

'स्त्री दर्पण' की विशेषता उसकी सम्पादकीय टिप्पणियों में थी जिसमें स्त्री विरोधी विचारों पर तीव्र प्रहार किया जाता था, भले ही वह लेख पत्रिका के पूर्व अंकों में प्रकाशित हुए हो। इस दृष्टि से पत्रिका का अगस्त, 1921 ई. अंक विशेष उल्लेखनीय है जिसमें संपादिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरु ने श्री देशबंधु द्वारा लिखित 'स्त्री जाति और असहयोग' लेख में स्त्रियों को पुरुषों के मुकाबले कमज़ोर बताने पर इस प्रकार जवाब दिया– "लेखक महाशय ने अस्ल में इस लेख में यह दिखाने की कोशिश की है कि स्त्रियां पुरुषों की बराबरी नहीं कर सकतीं। हमें खेद है कि हम लेखक महाशय की इस बात से सहमत नही हो सकतीं। आप लिखते हैं शारीरिक परिश्रम में स्त्रियां पुरुषों के समान नहीं हैं सिवाय इसके कि आप ऐसी राय दे दें आप कोई सबूत नहीं देते। हमारा प्रश्न आप से यह है कि आपने कभी मजदूर पेशा स्त्रियों को देखा है या नहीं? मजदूरी तो अवश्य पांच आने मिलती है परन्तु एक–एक चक्कर में अट्ठारह अट्ठारह बीस बीस इंटे वह ढ़ोती है। मजदूर पुरुष नौ आने पाने पर भी एक भी ईंट नहीं ढोते। जरा ऊंचे घरानों में क्या आपने यह नहीं देखा कि पुरुष देवता जब खूब गहरी नींद सो रहे होते हैं उस समय स्त्रियां उठकर झाड़ू बुहारू, सीधा पानी और रसोई के धन्धों में लग जाती हैं, और जब वह भोजन कर चले जाते हैं तब वह नहा धो कर भोजन करती हैं और फिर शाम की रसोई के धन्धों में लग जाती हैं, और जब वह सो जाते हैं तब वह धन्धों से छुट्टी पाती हैं? क्या यह सब शारीरिक परिश्रम नहीं ?[5]

'स्त्री दर्पण' के माध्यम से रामेश्वरी नेहरु जी ने केवल स्त्री विरोधी विचारों पर तीखा प्रहार ही नहीं किया अपितु स्त्री समर्थन में किये गये कार्यों की प्रशंसा भी खुले शब्दों में की है। जून, 1923 ई. के अंक में 'स्त्री जाति चेतो' शीर्षक में एक तेरह वर्षीय बंगाली लड़की की घटना का जिक्र किया गया है जिसमें अपने पति की बदसलूकी को न झेलते हुए लड़की ने अदालत में मुक़दमा दर्ज कर दिया। दरअसल काले रंग के चलते विवाह उपरांत एक धनी पुरुष ने उस लड़की को अपनाने से इंकार कर दिया था जिस पर मजिस्ट्रेट ने पुरुष पर लड़की की परवरिश के लिए तीस रुपये प्रतिमाह जुर्माना लगाया। मजिस्ट्रेट एवं लड़की की प्रशंसा करते हुए रामेश्वरी नेहरू जी लिखती है– "जो दशा स्त्रियों की इस अभागे देश में है उसे देखते हुए इस लड़की और मैजिस्ट्रेट दोनों को बधाई देनी चाहिए। मैजिस्ट्रेट ने जो कुछ इस लड़की के हक में किया वह कानून के मुताबिक उसकी अधिकारी थी।"

महिला उत्थान के अतिरिक्त पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा के स्वरूप एवं विकास से संबंधित लेखों को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया गया जो इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि रामेश्वरी नेहरू जी की दृष्टि केवल महिलाओं सम्बन्धी विषयों तक ही संकुचित नहीं रही बल्कि देश एवं समाज विकास के लिए आवश्यक तत्कालीन महत्वपूर्ण विषयों को भी उन्होंने अपनाया है। पत्रिका के सितम्बर, 1910 ई. अंक में 'प्रथम हिंदी साहित्य सम्मेलन' से संबंधित विस्तृत जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है जिसमें सम्मेलन के लक्ष्यों, सम्मेलन के कार्यों तथा सभापति मदनमोहन मालवीय का जिक्र किया गया है। यद्यपि रामेश्वरी नेहरू जी ने सम्मलेन द्वारा स्त्रियों के लिए लाभकारी पुस्तकों की आवश्यकता पर चर्चा न होने पर खेद अभिव्यक्त किया है और इस ओर ध्यान आकर्षित कराया कि सम्मेलन स्त्रियोपयोगी ग्रन्थों की रचना पर भी आवश्यक कदम उठाए।

रामेश्वरी नेहरू जी का मानना था कि स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत एवं जागरूक बनाने के लिए बाल्यावस्था से ही मार्गदर्शन की नींव रखी जानी चाहिए। यही कारण था कि बालिकाओं के विकास के लिए उन्होंने 'कुमारी दर्पण' नामक बाल पत्रिका को प्रकाशित करने का निश्चय किया जिसकी भूमिका को स्पष्ट करते हुए उन्होंने जुलाई, 1915 ई. के सम्पादकीय में लिखा है– "आज की कन्याएँ और बालिकाएँ कल की माताएँ और शिक्षिकाएँ हैं, इस सिद्धांत से कोई अपरिचित नहीं है। अतएव बालिकाओं में सच्चे और स्वतंत्र विचारों का पैदा करना स्त्री पुरुषों की शिक्षा से अधिक आवश्यक और लाभकारी है। हमारा विचार है कि यदि दर्पण का प्रचार बालिकाओं में हो जाए तो दर्पण को अपने सिद्धांतों के प्रचार में बहुत कुछ सहायता मिलना संभव है।"

जनवरी 1916 ई. से 'स्त्री दर्पण' के साथ ही 'कुमारी दर्पण' का भाग प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। चूँकि तत्कालीन समाज में स्त्रियों को अधिक शिक्षा का अधिकार प्राप्त नही था इसलिए उन्हें मात्र उतनी ही शिक्षा दी जाती थी जिससे वे चिट्ठी लिखना पढना, घरेलु हिसाब किताब आदि रख सकें। ऐसे में 'स्त्री दर्पण' में प्रकाशित होने वाली अधिकांश स्त्री उपयोगी जानकारी की भाषा क्लिष्ट एवं जटिल होने के कारण सामान्य स्त्रियों को समझ नहीं आती थी। 'कुमारी दर्पण' ने भाषा के इस कठिन कलेवर को न अपनाकर सरल भाषा में कविताएं, कहानियां और ज्ञानवर्धक लेख छापे जो शिक्षाप्रद होने के साथ साथ मनोरंजक भी थे।

'कुमारी दर्पण' के शुरुआती अंकों का संपादन रामेश्वरी नेहरू जी द्वारा तथा बाद में श्रीमती रुपकुमारी नेहरू एवं कुमारी कमलेश्वरी कुंजरू द्वारा किया गया। 'स्त्री दर्पण' के साथ प्रकाशित होने वाले इस भाग की विशेषता यह थी कि इसकी अधिकांश पाठक और लेखक दोनों कुमारी बालिकाएं हुए करती

ISSN No. : 0970-9398

थी। 'कुमारी दर्पण' प्रत्येक अंक में कविताएं, कहानियां, लेख आदि के साथ मनोरंजन के लिए एक पृष्ठ पर सवाल–जवाब और पहेलियां भी छपा करती थीं जिनका सही जवाब देने पर प्रोत्साहन हेतु बालिकाओं को पुरस्कार भी दिया जाता था।

पत्रिका के विभिन्न अकों को देखकर यह सहज ही कहा जा सकता है कि बालिकाओं से संबंधित रुढ़ियों और वर्जनाओं से मुक्त लेखन की जो नवीन परम्परा 'कुमारी दर्पण' के माध्यम से आरंभ हुई उसने कालान्तर में स्त्रियों को सामाजिक सरोकारों से जोड़ने में काफी सहायता प्रदान की। 'कुमारी दर्पण' के अतिरिक्त पत्रिका ने भारत के प्रसिद्ध रचनाकारों की पत्नियों की परिस्थिति का वर्णन करने के लिए भी एक श्रृंखला चलाई जिनमें गोस्वामी तुलसीदास, रामचंद्र शुक्ल, रवींद्रनाथ टैगोर, शिवपूजन सहाय, मैथिलीशरण गुप्त, जैनेन्द्र, रामविलास शर्मा, नागार्जुन, नरेश मेहता, मार्कण्डेय आदि की पत्नियों के जीवन को समाज के सामने रखने के लिए आलेख लिखे गए।

इस प्रकार स्पष्टतः कहा जा सकता है कि हिंदी के क्षेत्र में 'स्त्री दर्पण' एक ऐसी पत्रिका के रूप में प्रस्तुत हुई जिसने पत्रकारिता के माध्यम से समाज में स्त्री चेतना के नए आयाम खोले। अपने बीस वर्षों के इतिहास में पत्रिका ने तत्कालीन समाज में चल रहे स्त्री संबंधी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक, वैचारिक आदि सभी परिदृश्यों को उजागर किया जिनके माध्यम से समय सन्दर्भ में जुड़ी स्त्री की परिस्थिति के इतिहास को बखूबी जाना और समझा जा सकता है। स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, मत का अधिकार, बाल विवाह, परदा प्रथा एवं सती प्रथा आदि पर विचार विमर्श को प्रमुखता देते हुए समाज में चल रही कुरीतियों को भी पत्रिका ने खुलकर उजागर किया। जिससे यह कहा जा सकता है कि 'स्त्री दर्पण' ने केवल भविष्य के लिए इतिहास को संरक्षित रखने का ही कार्य नहीं किया अपितु विभिन्न सामाजिक मुद्दों में अपनी विशिष्ट भूमिका भी निभाई।

'स्त्री दर्पण' की विशेषता थी कि वह केवल भारत की सूचनाओं और जानकारी तक ही सीमित न रहकर वैश्विक परिदृश्य पर हो रही उन घटनाओं को भी प्रकाशित करती रही जो स्त्री चेतना के विकास के लिए आवश्यक समझी गयी। पत्रिका ने तत्कालीन समय के ऐसे सभी मुद्दों को स्पर्श किया जो परिवर्तनकारी और महत्वपूर्ण थे। विश्व के किसी भी हिस्से में हो रहे अन्याय, शोषण, असमानता आदि का विरोध करने में पत्रिका सबसे आगे दिखाई देती है। यदि बीसवीं सदी के आरंभिक दशकों की पत्रिकाओं की बात की जाए तो उनमें स्त्री चेतना को प्रसारित करने वाली पत्रिका के रूप में केवल 'स्त्री दर्पण' का नाम ही प्रमुख रूप से उभर कर आता है जिससे इस पत्रिका का महत्व और भी बढ़ जाता है।

'स्त्री दर्पण' में साहित्यिक लेख कम लिखे गए किन्तु जितने भी लिखे गए उनमें नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, जीवनी आदि सभी विधाओं को आधार बनाया गया। पत्रिका के अंत में प्रकाशित होने वाला 'समालोचना' नामक स्तंभ अपने में विशिष्ट था जिसके माध्यम से समय संदर्भ में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि का संक्षिप्त परिचय पाठकों को दिया जाता था। इस संदर्भ में जनवरी 1910 ई. के 'समालोचना' को विशिष्ट रूप से उद्धृत किया जा सकता है जिसमें 'हिंदी प्रदीप' के पुनः प्रकाशन पर इस प्रकार सूचित किया गया था – "हिन्दी प्रदीप का आज फिर पुनरोद्धार हुआ है। श्रीयुत बालकृष्ण भट्ट की प्रभावशाली लेखनी द्वारा इस मासिक पत्र ने 30 वर्ष तक हिन्दी व हिन्दुस्तान की सेवा की, और 30 वर्ष ही की अवस्था में हिन्दी प्रदीप का दीपक बुझ गया था। आज फिर नवीन ज्योति हमारे सन्मुख है। कार्तिक की संख्या नवीन जीवन का पहला अंक है। इस में '1 प्रदीप की जगमाती ज्योति' '2 दिवालियों की दिवाली '3 आगे क्या होनेवाला है' 4 भारत क्यों भारत' '5 हमारे सुरक्षितों में परिवर्तन' ये पांच बड़े अच्छे लेख हैं।[6]

अतः कहा जा सकता है कि 'स्त्री दर्पण' ने तत्कालीन समय की सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं और घटनाओं को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। पत्रिका ने राजनीतिक परिदृश्य पर महिलाओं को जागरूक बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस पत्रिका में स्त्रियों से जुड़े विभिन्न मुद्दों को उठाया जाता था जिनके माध्यम से स्त्रियों को अधिक सचेत होने का अवसर मिला। इसी पत्रिका से प्रभावित होकर बाद में 'मर्यादा', 'चाँद', 'हंस' जैसी अन्य पत्रिकाओं ने 'स्त्री विशेषांक' निकालने आरम्भ किये जो पूर्णतः स्त्रियों पर केंद्रित होते थे।

स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों के बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने में 'स्त्री दर्पण' का उत्कृष्ट योगदान रहा है। बीसवीं सदी का प्रारंभिक दशक स्त्रियों को आगे बढ़ाने के विभिन्न प्रयास करता है जिनमें रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित 'काव्येर उपेक्षिता नारी' निबंध, महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' निबंध, मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित 'साकेत' महाकाव्य आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। इनके इस प्रयास को सफल बनाने में 'स्त्री दर्पण' की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। स्त्रियों पर केंद्रित होने के कारण इस पत्रिका ने महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, ज्ञान आदि सभी क्षेत्रों प्रबलता प्रदान की और उन्हें स्वाधीनता आंदोलन में आगे बढ़ाने का कार्य किया। यही कारण है कि 'स्त्री दर्पण' के महत्व को स्थापित करते हुए गरिमा श्रीवास्तव ने लिखा है– "'स्त्री दर्पण' पत्रिका का महत्व इस बात में है कि इसके माध्यम से हिन्दी पट्टी की स्त्रियों ने बृहत्तर विश्व से जुड़ने और अपनी दशा और दिशा के बारे में बताने का प्रयास किया।"[7]

–शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

संदर्भ

1. तिवारी, डॉ. अर्जुन, हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ 50
2. तिवारी, डॉ. अर्जुन, हिंदी पत्रकारिता का बृहद इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ 127
3. स्त्री दर्पण, मार्च 1910, पृष्ठ 3–4
4. स्त्री दर्पण, जुलाई 1915, संपादकीय, पृष्ठ 1–2
5. स्त्री दर्पण, अगस्त 1921, पृष्ठ 106
6. स्त्री दर्पण, जनवरी 1910 ई., पृष्ठ, 50
7. आजकल पत्रिका, नवंबर 2020, पृष्ठ 16, लेख – गरिमा श्रीवास्तव, आईना मुझसे मेरी पहले सिई सूरत माँगे

ISSN No. : 0970-9398

कोविड–19 महामारी से संघर्ष में महिलाएं नहीं रहीं किसी से कम

–डॉ. विनीता

कोविड–19 महामारी एक अभूतपूर्व वैश्विक संकट रहा है, जिसमें व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों से असाधारण प्रतिक्रियाओं की मांग की गई है। इस समय में, जहां पूरे देशों ने मिलकर इस समस्या का सामना किया है, वहीं महिलाएं भी इस लड़ाई में अपने योगदान के माध्यम से एक मजबूत साझेदार बनी।

1. स्वास्थ्य वीरः

महिलाएं महामारी के प्रति स्वास्थ्य सेवा प्रतिक्रिया में सबसे आगे रही हैं, जो फ्रंटलाइन श्रमिकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। नर्सों, डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मचारियों ने बीमार की देखभाल में अद्वितीय समर्पण, करुणा और लचीलेपन का प्रदर्शन किया है। अपने स्वयं के स्वास्थ्य के लिए बढ़ते जोखिमों का सामना करने के बावजूद, स्वास्थ्य सेवा में महिलाओं ने नेतृत्व और दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित किया है, जो महामारी के गुमनाम नायक बन गए।

2. शैक्षिक नवोन्मेषीः

स्कूलों के बंद होने और दूरस्थ शिक्षा में अचानक बदलाव के साथ, महिलाओं, विशेष रूप से माताओं, ने शिक्षकों के रूप में अतिरिक्त जिम्मेदारियों को संभाला। संतुलित कार्य, घर और अपने बच्चों की शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करते हुए, महिलाओं ने शैक्षिक उथल–पुथल से उत्पन्न चुनौतियों को अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विभिन्न जिम्मेदारियों के प्रबंधन के दौरान ऑनलाइन सीखने की जटिलताओं को नेविगेट करने की उनकी क्षमता भविष्य की पीढ़ियों की शिक्षा के लिए उनकी अनुकूलन क्षमता और प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

3. आर्थिक लचीलापनः

महामारी ने कई और महिलाओं के लिए आर्थिक कठिनाइयों को प्रेरित किया, विशेष रूप से कमजोर रोजगार क्षेत्रों में महिलाओं को अद्वितीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हालांकि, महिलाओं ने नए रास्ते खोज, कौशल सेट को अपनाकर और अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में योगदान करके उल्लेखनीय लचीलापन प्रदर्शित किया। महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों और उद्यमियों ने स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बनाए रखने, महिलाओं की शक्ति को आर्थिक एजेंटों और नवाचारियों के रूप में चित्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. सामुदायिक नेता और देखभालः

महिलाएं पारंपरिक रूप से समुदायों की रीढ़ रही हैं, और महामारी ने देखभाल करने वालों और सामुदायिक नेताओं के रूप में उनकी भूमिका को बढ़ा दिया है। पड़ोसियों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए आपसी सहायता समूहों के आयोजन से, महिलाओं ने एक दूसरे का समर्थन करने में अद्वितीय ताकत और एकजुटता का प्रदर्शन किया। समुदाय और देखभाल की भावना को बढ़ावा देने की उनकी क्षमता इस कठिन समय के दौरान भावनात्मक और व्यावहारिक समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण रही है।

5. मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरः

महामारी ने मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों में वृद्धि लाई और महिलाओ ने सक्रिय रूप से मानसिक स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों को सुलझाने में मदद की। मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों, वक्ताओं के रूप में या केवल खुली बातचीत को बढ़ावा देकर महिलाओं ने महामारी के मनोवैज्ञानिक दबाव को संबोधित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी सहानुभूति, समझ और मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा करने के लिए सुरक्षित स्थान बनाने के प्रयासों ने समुदायों के समग्र कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

6 विज्ञान और अनुसंधान में नवोन्मेषीः

महिला वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने टीके, उपचार और सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीतियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वायरस को समझने, महत्वपूर्ण अनुसंधान करने और प्रमुख वैज्ञानिक प्रयासों के लिए उनका योगदान महामारी के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण रहा है। स्टेम क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा लाए गए दृष्टिकोण की विविधता जमीनी खोजों और प्रगति के पीछे एक प्रेरक शक्ति रही है।

7. लैंगिक समानता की वकालतः

महामारी ने मौजूदा लैंगिक असमानताओं को उजागर किया, जिससे दुनिया भर की महिलाओं को न्याय के लिए अपनी आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया। घरेलू हिंसा में वृद्धि को संबोधित करने के लिए संसाधनों के उचित वितरण की वकालत करने से, महिलाओं ने संकट के उदार प्रभावों पर ध्यान आकर्षित करने में केंद्रीय भूमिका निभाई। उनके समर्थन के प्रयासों ने महामारी के बाद के युग में प्रणालीगत लैंगिक असमानताओं को दूर करने के लिए आधार तैयार किया है।

8. डिजिटल समावेशन चैंपियनः

जैसे–जैसे रिमोट वर्क और ऑनलाइन कम्युनिकेशन मानदंड बन गया, महिलाओं ने डिजिटल समावेशन की वकालत की। डिजिटल विभाजन को पाटना और यह सुनिश्चित करना कि महिलाओं, विशेष रूप से हाशिए के समुदायों में, प्रौद्योगिकी तक पहुंच कर संगठनों और कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रमुख आकर्षण बन गई। डिजिटल साक्षरता और समावेशन को बढ़ावा देने के महिलाओं के प्रयासों का अवसरों तक पहुंच में लिंग अंतराल को कम करने के लिए दूरगामी प्रभाव हैं।

9. राजनीतिक नेतृत्वः

राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका में महिलाओं ने प्रभावी संकट प्रबंधन और सहानुभूति का प्रदर्शन किया। महिला नेताओं के नेतृत्व वाले देशों ने अक्सर सक्रिय प्रतिक्रियाओं, पारदर्शिता और सफल शमन रणनीतियों का प्रदर्शन किया। उनकी नेतृत्व शैलियों ने सहयोग पर जोर दिया और उनकी आबादी की भलाई पर ध्यान केंद्रित किया। महामारी के दौरान महिला नेताओं की सफलताएं संकट के समय में विविध और समावेशी नेतृत्व के महत्व को उजागर करती हैं।

10. महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियांः

उनके उल्लेखनीय योगदान के बावजूद, महिलाओं को महामारी के दौरान विशिष्ट चुनौतियों का सामना करना पड़ा। देखभाल जिम्मेदारियों में वृद्धि, घरेलू हिंसा का बढ़ता जोखिम, और महिला–प्रधान क्षेत्रों पर आर्थिक मंदी का प्रभाव उन बाधाओं में से था जिन्हें महिलाओं को नेविगेट करना था। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए महामारी के उदार प्रभावों की बारीकी से समझ और सहायक और न्यायसंगत वातावरण बनाने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।

11. डिजिटल सक्रियता और नेटवर्किंगः

महामारी ने महिलाओं के नेतृत्व में डिजिटल सक्रियता में वृद्धि देखी है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से, महिला कार्यकर्ताओं ने दबाव के मुद्दों, संगठित आभासी घटनाओं और विश्व स्तर पर समान विचार वाले व्यक्तियों से जुड़े बारे में जागरूकता बढ़ाई। डिजिटल नेटवर्किंग संसाधनों को जुटाने, जानकारी साझा करने और परिवर्तन की वकालत करने वाली महिलाओं की आवाजों को बढ़ाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गया।

12. सांस्कृतिक संरक्षण और रचनात्मकताः

महिलाओं ने महामारी के दौरान सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और रचनात्मकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आभासी कला प्रदर्शनियों, ऑनलाइन प्रदर्शन या सांस्कृतिक प्रथाओं के प्रलेखन के माध्यम से, महिलाओं ने अलगाव से जूझ रही दुनिया में पहचान और संबंध की भावना बनाए रखने में योगदान दिया।

कोविड–19 महामारी के दौरान महिलाओं की भूमिका असाधारण रही है। स्वास्थ्य देखभाल की फ्रंटलाइन से लेकर समुदायों के दिल तक, महिलाओं ने लचीलेपन, नेतृत्व और सकारात्मक परिवर्तन के लिए एक अटूट प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। जैसे–जैसे हम बहाली की दिशा में आगे बढ़ते हैं, महिलाओं के चल रहे योगदान को पहचानना, मनाना और समर्थन करना अनिवार्य है। महामारी ने लैंगिक–उत्तरदायी नीतियों, समान अवसरों और समाज को आकार देने में महिलाओं की विविध भूमिकाओं की मान्यता की आवश्यकता को उजागर किया है।

इसके अलावा, महामारी के दौरान महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमें स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और उससे आगे शामिल हैं। महामारी के बाद की एक समावेशी और समान दुनिया को बढ़ावा देकर, हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकते हैं जो अपने सभी सदस्यों की ताकत का मूल्य और लाभ उठा सके।

अंत में, महिलाओं ने न केवल तूफान का सामना किया है, बल्कि इन चुनौतीपूर्ण समय के दौरान आशा, लचीलेपन और प्रगति के वास्तुकार के रूप में उभरी हैं। महामारी एक ऐसी दुनिया की पुनर्कल्पना के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है जहां महिलाओं के योगदान को स्वीकार किया गया, महत्व दिया गया है, और एक अधिक समावेशी और लचीले भविष्य के निर्माण का अभिन्न अंग माना गया है।

–तकनीकी अधिकारी
राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान
हैदराबाद

ISSN No. : 0970-9398

पर्यावरण की रक्षा में रत एक अमूल्य रत्नः वृक्षजननी सालुमरदा तिम्मक्का

– किरण अय्यर वी.

प्रस्तावना

चारों तरफ हरे–भरे वृक्षों की कतारें, झरनों का कल–कल नाद, फूलों की सुरभि लिए बहती स्वच्छ वायु, प्यास बुझाते निर्मल जलस्रोत, क्षुधा शांत करते मधुर फल, पक्षियों के सुमधुर गान से गुंजायमान वातावरण, क्या यह धरती पर स्वर्ग का दृश्य प्रतीत नहीं होता?

इस स्वर्ग की संकल्पना केवल पर्यावरण संरक्षण पर ही निर्भर करती है, जिसमें हर एक नागरिक का योगदान अनिवार्य है। पर्यावरण की रक्षा भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। यहाँ वृक्षों, नदियों, पर्वतों, पशु–पक्षियों आदि को ईश्वरतुल्य मानकर पूजा जाता है। प्रकृति के प्रति प्रेम और अपनापन हमें यहाँ की संस्कृति, सामाजिक प्रथाओं व रीति–रिवाजों में सहज ही देखने को मिलता है। हर भारतीय घर में तुलसी, केले इत्यादि के पौधों का होना, प्रातः काल सूर्य को अर्घ्य देना, चन्द्रमा, जल, भूमि आदि का पूजन करना, इस शरीर को प्रकृति के पंचमहाभूतों से निर्मित मानना इत्यादि पर्यावरण के प्रत्येक अजैविक व जैविक घटक के प्रति हमारे मन में व्याप्त सम्मान का सूचक है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संस्कार सदा से ही विद्यमान रहे हैं, जिन्हें आधुनिक समाज रुढ़िवादिता कहकर अपमानित करता है। परंतु आज सिद्ध हो गया है कि हम उस संस्कृति की ओर लौटकर ही पर्यावरण को संरक्षित रख सकते हैं। भारतीय सन्दर्भ में विवेचना करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि, भारतीय महिलाएँ वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण की पक्षधर रही हैं।

पर्यावरण संरक्षण और नारी

इस धरती को माता मानने वाली इस भारतीय संस्कृति में कई ऐसी महान नारियों ने जन्म लिया है जिन्होंने समाज के समक्ष सेवा व पर्यावरण सुरक्षा के उत्तम आदर्श प्रस्तुत किए हैं। नारी को प्रकृति का ही रूप मानकर यहाँ पूजा जाता है। वह मातृत्व, शक्ति व सहनशीलता जैसे अनेक महान गुणों से युक्त होती है। पर्यावरण के प्रति नारियों का लगाव व उसकी रक्षा के लिए इनके द्वारा किए गए प्रयास अगणित हैं। दैनंदिन पूजा–अर्चना और व्रत–त्यौहार में नारियों और प्रकृति का घनिष्ठ संबंध तो वैदिक काल से ही रहा है। चिपको आन्दोलन, खेजड़ी आंदोलन, नर्मदा बचाओं आंदोलन, जैविक खेती से संबंधित नवधान्या आंदोलन इत्यादि में महिलाओं के योगदान ने सारे विश्व को महिलाओं पर गर्व करने हेतु प्रेरित किया है। पर्यावरण की रक्षा के लिए तो कई महान नारियों ने अपने प्राणों की भी आहुति दे दी है। विभिन्न प्रदेशों की आदिवासी महिलाओं ने विशेष रूप से वन संपदा व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में अपनी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। आदिवासी जनजातियों की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थाओं में वृक्षों का महत्व बहुत अधिक है। अतः आदिवासी महिलाएँ पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रतिपल तत्पर रहती हैं। कार्ल मार्क्स ने तो स्पष्ट रूप से कह दिया था कि, "कोई भी बड़ा सामाजिक परिवर्तन महिलाओं के बिना नहीं हो सकता है।" पर्यावरण व विकास से संबंधित सम्मेलन रियो डिक्लेरेशन में भी पर्यावरण प्रबन्धन एवं विकास में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका को स्वीकारा गया है। उपर्युक्त कथन कोफी अन्नान जी के उस वक्तव्य को सिद्ध करते हैं जिसमें उन्होंने कहा था कि, "इस ग्रह का भविष्य महिलाओं पर निर्भर है।"

पर्यावरण संरक्षण की दिशा मे विभिन्न क्षेत्रों में सफलता पाती महिलाएँ

महिलाओं ने हर क्षेत्र में विकास के झंडे गाड़े हैं। पर्यावरण की रक्षा में भी इनका कोई सानी नहीं है। पर्यावरण सुरक्षा में अनवरत निःस्वार्थ सेवा करने वाली भारतीय नारियों में से कुछ निम्नानुसार हैं:–

- अरावली जैव विविधता की संरक्षिका व नारीशक्ति सम्मान से सम्मानित लतिका ठकुराल जी,
- झरनों का बचाव, पशु संपदा की रक्षा व ठोस कचरे के प्रबंधन इत्यादि क्रियाकलापों सहित प्रदूषण विरोधी आंदोलनकर्ता व पर्यावरणविद अल्मित्रा पटेल जी,
- कचरे कूड़े के ढ़ेर कहलाने वाले नगर को स्वच्छता का पुरस्कार दिलवाने तक की लंबी यात्रा करने हेतु अपने को झोंक देने वाली केरल की पहली महिला मेयर मर्सी विलियम्स जी,
- वन्य जैव विविधता के संरक्षण में लगी अग्रणी छायाचित्रकार बेलिंडा राइट जी,
- पद्मश्री से सम्मानित पश्चिमोत्तर की समाजसेविका तथा पर्यावरणविद सिल्वरलाइन स्वेर जी
- प्रकृति संरक्षण समिति की संस्थापिका, मलयालम कवयित्री

ISSN No. : 0970-9398

तथा साइलेंट वैली बचाव आंदोलन की अग्रणी कार्यकर्ता सुगाथा कुमारी जी,

- परंपरागत ज्ञान से जलवायु परिवर्तन को रोकने की दिशा में कार्य करने वाली स्थानीय खरिया जनजाति की पर्यावरण कार्यकर्ता अर्चना सोरेंग जी,
- विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली व जैव विविधता, जैव प्रौद्योगिकी, जैव–नीतिशास्त्र, आनुवंशिक इंजीनियरिंग, वैश्वीकरण की नीतियों में बदलाव आदि क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर प्रकृति के संरक्षण की दिशा में अग्रसर होने वाली पर्यावरण कार्यकर्ता वंदना शिवा जी,
- अवैध खनन और उत्खनन के खिलाफ डटकर खड़ी रहने वाली पर्यावरण कार्यकर्ता किंकरी देवी जी,
- उत्तराखंड के गाँव–गाँव जाकर वृक्षों की रक्षा हेतु ग्रामीणों को जागृत करती, नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित बसंती देवी जी,
- पर्यावरण संरक्षण की दिशा में वैकल्पिक स्रोतों के प्रयोग तथा अपशिष्ट के उचित निदान के बारे में लोगों को जागरूक करती सीता कोलमैन कम्यूला जी,
- सामाजिक स्वास्थ्य व पर्यावरण के प्रति जागरुकता फैलाती पद्मश्री से सम्मानित इंदिरा चक्रवर्ती जी,
- चिपको आंदोलन की सक्रिय कार्यकर्ता व हिमालय के जंगलों के संरक्षण की दिशा में कार्यरत गांधीवादी सरला बेन जी (कैथरनि मैरी),
- शहरों में पर्यावरण रक्षा के लिए योजना बनाने की दिशा में अग्रसर सुनीता नारायण जी,
- वायु प्रदूषण से लड़ती 'राइट टू क्लीन एयर' अभियान का नेतृत्व करती अनुमिता राय चौधरी जी,
- ध्वनि प्रदूषण और अवैध रेत खनन के विरूद्ध लोहा लेती भारत की ध्वनि मंत्री कहलाने वाली सुमायरा अब्दुल अली जी,

इन सभी के अतिरिक्त पार्वती बरुआ, केहकशां बासु, दयामनी बारला, ऐल्सी गैब्रिएल, एलिस गर्ग, तुलसी गौड़ा, डॉ. कृति के. कारंत, सेहला मसूद, शर्मिला ओसवाल, अमला रुइया इत्यादि जैसी अनेक भारतीय नारियों नें अपनी सेवाओं से समाज में पर्यावरण की रक्षा की एक नई मिसाल कायम की हैं। इन सबके बीच एक चमकता सितारा है, वृक्षजननी सालुमरदा तिम्मक्का।

वृक्षजननीः सालुमरादा तिम्मक्का

ममत्व का भाव नारी के ह्रदय में सदा ही विद्यमान रहता है, चाहे फिर वह ममत्व संतान पर लुटाएं या फिर इस संसार पर। संतान के न होने पर वृक्षों पर ही अपना ममत्व लुटाकर बच्चों की तरह उनका पालन पोषण करने वाली व स्वप्रयत्नों से वृक्षों की कतारों से इस धरा को सुशोभित करने वाली उस माँ तिम्मक्का को हम वृक्ष माता या वृक्षों की कतार का निर्माण वाली तिम्मक्का के नाम से जानते हैं। सरकार में कैबिनेट रैंक पाने वाली तिम्मक्का समाज हेतु एक आदर्श है। बचपन से अभावों में जीवन बिताने वाली तिम्मक्का ने जिंदगी में कभी भी हार नहीं मानी। चाहे चीथड़ें पहनकर तन ढँकना हो, रूखी–सूखी खाकर जीवन जीना हो, पत्ते–लकड़ी आदि जमाकर जीवनोपार्जन करना हो, पिता के साथ बंधुआ मजदूर के रूप में दिन रात काम करना हो या पति चिक्कय्या के साथ चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ना हो, हर परिस्थिति का सामना तिम्मक्का ने साहस और धैर्य के साथ किया। संतान प्राप्ति न हो पाने को इन्होंने शाप न मानते हुए इसे प्रकृति माता की सेवा का सुनहरा अवसर माना। अपने द्वारा रोपे गए हर एक पौधे और हर एक वृक्ष में उन्होंने अपनी संतान की छवि देखी और उन पर एक माँ की भाँति अपने ममत्व की वर्षा की। कई वर्षों तक संतान के लिए तरसती तिम्मक्का के मन में एक बार आत्महत्या का भी विचार आया जिस पर पति के प्यार ने उन्हें इस विचार को भुलाकर अपनी ऊर्जा वृक्षारोपण की ओर समर्पित करने की प्रेरणा दी। इनके पति पर समाज ने संतान प्राप्ति हेतु दूसरी शादी करने के लिए बहुत दबाव डाला पर उन्होंने इसे अस्वीकार कर जीवन को एक सच्चा अर्थ देने हेतु वृक्षारोपण के लक्ष्य को चुना। इस दंपत्ति ने निःस्वार्थ प्रेम का एक उत्तम उदाहरण समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया।

जिस प्रकार बूंद–बूंद से सागर भरता है और एक–एक कदम से मीलों लंबा सफर तय कर लिया जाता है उसी प्रकार पंद्रह–बीस पौधों से प्रारंभ हुआ तिम्मक्का का यह सफर पूरे गाँव को हरा भरा करने तक बढ़ता ही गया। माँ अपने बच्चे को जिस प्रकार हर कष्ट से बचाती है ठीक उसी तरह तिम्मक्का पौधों को हर कष्टों से बचाकर उन्हें वृक्षों के रूप में परिणत करने लगी। अब इन वृक्षों की रक्षा के उत्तरदायित्व का निर्वहन कर्नाटक सरकार कर रही है। सरकार की सड़क योजनाओं के कारण जब इन वृक्षों का काटा जाना निर्धारित किया गया तब इस माँ ने अपने बच्चों की रक्षा के लिए सरकार से गुहार लगाई, जिस पर सरकार ने कार्रवाई की और सड़क की योजना के लिए दूसरे स्थल के विकल्प का चुनाव किया।

तिम्मक्का की उपलब्धियाँ

निःस्वार्थ भाव से प्रकृति की सेवा में रत तिम्मक्का ने कभी किसी प्रशंसा या पुरस्कारों की अपेक्षा नहीं की परंतु उनकी इस महत्तर सेवा के परिणामस्वरूप विभिन्न राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के पुरस्कार स्वयं उनकी ओर अग्रसर होते गए। राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदत्त पद्मश्री, हंपी विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त नाड़ोज पुरस्कार, इंदिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार, वीरचक्र प्रशस्ति, कर्नाटक कल्पवल्ली पुरस्कार, गौडफ्रे फिलिप्स ब्रेवरी पुरस्कार, विशालाक्षी पुरस्कार, विश्वात्मा पुरस्कार, ग्रीन चैंपियन पुरस्कार, परिसर रत्न पुरस्कार, वृक्षमाता पुरस्कार इत्यादि इस वृक्ष जननी के हाथों में आकर अत्यंत सुशोभित हुए। विभिन्न संस्थानों ने पर्यावरण दिवस एवं अन्य विभिन्न कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि के रूप में तिम्मक्का को आमंत्रित कर कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाई है। वर्ष 2016 में तिम्मक्का को ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन द्वारा विश्व की सबसे प्रभावशाली और प्रेरणादायक महिलाओं में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया। केवल वृक्षारोपण ही नहीं अपितु पर्यावरण रक्षा व समाज सेवा से संबंधित कई क्रियाकलापों में ये अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं जिसमें वर्षा जल संरक्षण, अस्पताल निर्माण, वृक्षों की कटाई पर रोक, पर्यावरण रक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना आदि सम्मिलित हैं। पर्यावरण के प्रति इनके योगदान को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 2000 में

तिम्मक्कन मातु 284 मक्कळु (तिम्मक्का की बातें और 284 बच्चें) शीर्षक के साथ डाक्यूमेंट्री के रूप भी में प्रदर्शित किया गया।

तिम्मक्का के महत्वपूर्ण कार्य को देश–विदेश में भी बहुत सराहा गया। एक अमेरिकी पर्यावरण संगठन जो ओकलैंड और लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया में स्थित है, उसका नाम तिम्मक्का रिसोर्सेज फॉर एनवायर्नमेंटल एजुकेशन रखा गया है। वर्ष 2020 में कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय ने तिम्मक्का को मानद डॉक्टरेट की उपाधि देने की घोषणा की। तिम्मक्का के काम ने ही उन्हें इतना नाम दिया। कभी उनके पास पौधे लगाने हेतु कोई विशेष उपकरण भी उपलब्ध न था। जो भी उपकरण उनके पास थे उनका प्रयोग करते हुए इस दंपत्ति ने कई प्रकार के शारिरिक व मानसिक कष्टों को सहते हुए बरगद के पेड़ों का संरक्षण किया जिसका परिणाम आज हमारे सम्मुख प्रस्तुत है। यह तथ्य स्पष्ट परिलक्षित करता है कि, किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए केवल संसाधन ही पर्याप्त नहीं होते अपितु मानसिक शक्ति और समाज कल्याण की भावना भी उस कार्य को पूरा करने में अपना योगदान देती हैं।

तिम्मक्का जनता को संबोधित करती हुई कहती है कि, "जैसा हमने वृक्षों को अपने बच्चों की तरह पाला है आप सभी को भी पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ऐसा ही करना चाहिए।" अपनी अशिक्षा को उन्होंने अपनी समाजसेवा में कभी आड़े आने नहीं दिया। आज वहीं निरक्षर तिम्मक्का कर्नाटक राज्य सरकार के पाठ्यक्रम की पुस्तकों में अपने नाम के अध्याय को देखकर आश्चर्य प्रकट करती है। जिस समाज ने उनके निःसंतान होने पर उन पर उंगलियाँ उठाई थी, आज वहीं दाँतों तले उंगलियाँ दबाकर इनकी उपलब्धियों पर दोनों हाथों से तालियाँ बजा रहा है।

हुलिकल से कुडूरू ग्राम के बीच स्थित राजमार्ग संख्या 94 का दृश्य (4 किलोमीटर तक फैले घने वृक्ष)

तिम्मक्का और पद्मश्री पुरस्कार

प्रकृति में चहुओर ममत्व बिखेरती तिम्मक्का को वर्ष 2019 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनका भोलापन व निःस्वार्थ मातृत्व भाव इस बात से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि पुरस्कार ग्रहण की बेला में इन्होंने मातृभाव से राष्ट्रपति महोदय को भी आशीर्वाद दे दिया, जिससे प्रधानमंत्री सहित संपूर्ण सभा भावविभोर हो गई और सभा करतल ध्वनि से गूंजने लगी। पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी के शब्दों में "पद्म पुरस्कारों से राष्ट्र की सबसे योग्य व श्रेष्ठ प्रतिभाओं को सम्मानित करना राष्ट्रपति के लिए प्रसन्नता का विषय होता है, लेकिन आज जब पर्यावरण की रक्षा में तत्पर, कर्नाटक की 107 वर्ष की सालूमरदा तिमक्का ने आशीर्वाद देते हुए मेरे सिर पर हाथ रखा तो मेरा हृदय भर आया"।

महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण की यह मुहीम कोई नई नहीं है। भारत देश सहित संपूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में नारियों का योगदान अवर्णनीय है। इस प्रकार का पर्यावरण संरक्षण अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'इको फ़ेमिनिज्म' या 'नारीवादी पर्यावरणवाद' भी कहलाता है। जब भी कभी पर्यावरण को क्षति पहुँचाने का यत्न हुआ है तब महिलाओं ने उसका पुरज़ोर विरोध कर जनता में क्रांति का संचार किया है।

तिम्मक्का के प्रयासों से एक धूलधूसरित सूखी सड़क आज हरियाली की रेखा बन चुकी है। वृक्षों को जल देने हेतु उन्होंने चिलचिलाती धूप में हँसते हुए परिश्रम किया और वर्षों तक उन्हें आंधी तूफान व जानवरों से बचाया। विश्व भर में चाहे उनकी कितनी ही प्रसिद्धि फैली हो पर वे आज भी एक सरल एवं सादा जीवन व्यतीत करती हैं जो भारतीय संस्कृति के 'सादा जीवन उच्च विचार' की भावना को चरितार्थ करता है। महज 500 रूपये वृद्धावस्था पेंशन पाने वाली तिम्मक्का को किसी से कोई शिकायत नहीं हैं। बड़ी–बड़ी पदवियाँ हासिल कर केवल पर्यावरण रक्षा की बातें करने वालों के समक्ष तिम्मक्का एक सच्ची प्रेरणास्रोत है, जो सभी को निःस्वार्थ भाव से प्रकृति की सेवा करने की प्रेरणा देती है। अपने लक्ष्यों के बीच इन्होंने उम्र को कभी बाधा नहीं माना। प्रकृति के प्रति निःस्वार्थ सेवा भाव, अपने अथक परिश्रम व निष्ठा से पर्यावरण रक्षा के अपने महत्वपूर्ण कार्य से दृढ़ संकल्पित यह माँ समाज में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करवा चुकी है। कर्नाटक सरकार ने सालुमारदा तिमक्का व उनके काम को सम्मान देने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिससे आज कर्नाटक राज्य के कक्षा 1 से 10 तक की पाठ्यपुस्तकों में तिम्मक्का की कहानी व उनकी उपलब्धियाँ बच्चों को पर्यावरण रक्षा की दिशा में प्रेरित कर रही हैं।

आज तिम्मक्का द्वारा रोपे गए वृक्षों में पक्षी चहचहाते हैं, बच्चें उन वृक्षों की छाव में खेलते हैं, कई पशुओं के लिए वृक्षों के फल उपलब्ध हैं, राहगीर अपनी थकान को शांत करते हैं, वातावरण स्वच्छ वायु से परिपूर्ण हैं, इन सब के परिणामस्वरूप समय पर वर्षा होती है और खेत लहलहाते हैं। इस स्वर्ग का निर्माण करने का श्रेय तिम्मक्का को ही जाता है। एक निःसंतान महिला जिसे कभी समाज ने दुत्कारा था वह आज हजारों वृक्ष रूपी संतानों के साथ सुखी है और विश्व के लिए प्रेरणास्रोत बन गई है।

–कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
सीमा शुल्क गृह, कोचिन

ISSN No. : 0970-9398

मेहरुन्निसा परवेज़ और नारी उत्थान संघर्ष

–इरफान आलम

साठोत्तर हिन्दी कथाकारों में मेहरुन्निसा परवेज़ का नाम शुमार है। मात्र 19 वर्ष की आयु में ही उनकी पहली कहानी 'पांचवीं कब्र' का प्रकाशन कमलेश्वर द्वारा संपादित पत्रिका 'नई कहानियां' में हुआ। तब से लेकर आज तक उनकी रचनाशीलता बनी हुई है। अब तक इनके 14 कहानी संग्रह और 5 उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज की विभिन्न विकृतियों को हमारे सामने रखा है। उनकी व्यक्तिपरक संवेदनाओं के क्षितिज में जीवन के कई दृश्य शामिल हैं। एक महिला कथाकार होने के नाते इनकी कथा साहित्य में भी महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का विशेष रूप से चित्रण है। मेहरुन्निसा परवेज़ ने जिस समय साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय साहित्यिक रचनाओं में अनेक परिवर्तन शामिल हो रहे थे। साठोत्तर कथाकरों ने अपनी रचनाओं में निजी अनुभूतियों को भी स्थान दिया, साथ ही वे अपने परिवेश को भी अभिव्यक्त कर रहे थे। उसमें एक नई मूल्यपरक दृष्टि का विकास हुआ और उसके तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक दृष्टि ने समाज की ज्वलंत समस्याओं, परिवर्तनशीलता के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों एवं मनुष्य की विकृतियों–विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया। परवेज़ जी की रचनाओं में भी इन सूक्ष्म तत्वों का समावेश हुआ है। उनके रचना संसार को बेहतर समझने के लिए उनके परिवेश एवं जीवन के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का अवलोकन कर लेना उचित होगा।

परवेज़ जी का जन्म 10 दिसंबर, 1944 को मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के बहेला नामक ग्राम में हुआ। पिता का सरकारी विभाग में नौकरी के कारण स्थानांतरण होता रहता था जिससे इनकी प्रारंभिक शिक्षा एक स्कूल में न होकर कई स्कूलों में हुई। मुख्य रूप से उनका बचपन बस्तर और वहाँ के आदिवासियों के बीच गुजरा है जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर भी दिखाई पड़ता है। परवेज़ जी का विवाह मात्र 15 वर्ष की आयु में रऊफ परवेज़ के साथ हुआ। रऊफ उर्दू के शायर थे। मेहरुन्निसा परवेज़ के पिता प्रगतिशील विचार के थे किंतु ससुराल कट्टरपंथी विचारवाला था। परवेज़ जी को शादी के लगभग 10 वर्ष तक बच्चा नहीं हुआ। फलतः ससुराल में उनका अपमान होने लगा। बाद में उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम सलीम था। परवेज़ जी और उनके पति रऊफ के बीच अनबन बनी रही और अंततः दोनों का तलाक हो गया। तलाक के बाद वह लगभग बेसहारा थी फिर भी वह अपने मनोबल पर आगे चल पड़ी। परवेज़ जी ने 35 वर्ष की आयु में दूसरा विवाह श्री भागीरथ प्रसाद से किया।

परवेज़ जी ने समाज के निर्बल और शोषितों की स्थिति को सुधारने के लिए मात्र कलम ही नहीं उठाई बल्कि प्रत्यक्ष रूप से ठोस कार्य भी किए हैं। विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उन्होंने निःस्वार्थ भाव से समाजसेवा के कार्य किए हैं। वर्ष 1974 में बस्तर जिले की बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना के अध्यक्ष रहीं। उन्होंने आदिवासी महिलाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने हेतु प्रयास किया। उन्होंने बस्तर में रुक्मणि देवी आश्रम की स्थापना में अथक परिश्रम कर एक सशक्त महिला विकास केंद्र के रूप में उसे विकसित किया। सन् 1993 से 1996 तक मध्यप्रदेश में पिछड़ा वर्ग आयोग की सदस्य रहीं। उन्होंने बांछड़ा जातियों की लड़कियों की वेश्यावृत्ति बंद करवाने हेतु प्रयास किया। उन तक सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा आदि को पहुँचाने की कोशिश की हैं। समाज के दुर्बल घटकों की समस्याओं को अपने साहित्य में प्रस्तुत कर उनकी दुर्दशा की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास किया है। वर्तमान में मध्यप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में गठित 'मध्यप्रदेश महात्मा गांधी ट्रस्ट' की वे न्यासी हैं। वे समाज कल्याण, हिंदी–उर्दू भाषाओं के उत्थान, महिला एवं बाल विकास तथा कमजोर वर्ग के उत्थान में संलग्न प्रदेश एवं देश की कई संस्थाओं में सक्रिय हैं।

परवेज़ जी का साहित्य नारी शोषण, वेदना और उपेक्षा का साक्षी है। उनका नारी मन पुरुष–प्रधान समाज द्वारा नारी शोषण के लिए बनाए गए विधि, रीति, संस्कारों का विरोधी है। उनकी उदार संवेदना सभी जाति, वर्ग, वर्ण, धर्म की नारियों के साथ हैं। इसलिए उनके साहित्य में सभी धर्म, जाति विशेष कर बस्तर के आदिवासी महिलाओं के आंसुओं से भरे जीवन को करुणा, दया, सहानुभूति के साथ वाणी दी गई। परवेज़ जी नारी सम्मान एवं नारी के अधिकारों की प्रबल समर्थक हैं। उनके साहित्य के नारी पात्र अपने सम्मान एवं

ISSN No. : 0970-9398

अधिकारों की रक्षा के लिए लड़ते हुए दिखाई देते हैं। नारी की वेदना, घुटन तथा छटपटाहट को उन्होंने अत्यंत संवेदनशीलता से उजागर किया है। पुरुष–प्रधान समाज में नारी को व्यक्तिगत स्तर पर स्वेच्छा से चयन का अधिकार नहीं था; न शिक्षा का, न नौकरी का और न ही आर्थिक स्वतंत्रता का। समाज में इसका निर्णय केवल पुरुष ही कर सकता था। उसकी इच्छा के बिना वह घर की चौखट भी पार नहीं कर सकती थी। पर्दे के पीछे अपना दुःख भोगती रहीं। इनकी रचनाओं में स्त्री–पुरुष के बीच की कृत्रिम दीवार को तोड़कर नारी को पुरुष के समान जीने की प्रेरणा दी गई है। साथ ही ऐसे पुरुष की छत्रछाया से नारी मुक्ति का आह्वान किया गया है। कई रचनाओं में नारी स्वतंत्रता के लिए विरोध के तीव्र स्वर पाए जाते हैं। ऐसी नारियाँ नौकरी कर आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबी हैं, स्व–इच्छा से प्रेम विवाह करती हैं, पुरानी मान्यता और रूढ़ियों का विरोध करती हैं। इस प्रकार वे समाज में नारी को पुरुष के समान अधिकार और स्व–चयन का अधिकार दिलाने का प्रयत्न रचना और समाज सेवा के माध्यम से कर रही हैं। इस संबंध में उनकी रचनाओं के कुछ संदर्भों को उद्धृत करना समीचीन होगा।

परवेज़ जी की कहानी 'सूकी बयड़ी' प्रतीकात्मक रूप से कहाने के पात्र नीमड़ा की बड़ी बेटी थोरा के जीवन को व्याख्यायित करती है। नीमड़ा की तीन बेटियां और एक बेटा है– थोरा, होरा, फूलाँ और टेसूआ। थोरा और होरा की शादी एक साथ एक ही घर में होती है। थोरा सांवली है जबकि होरा गोरी। थोरा का सांवलापन उसकी जिंदगी की खुशियों को गहरा आघात पहुँचा रहा है। वस्तुतः यह हमारे पुरुषवर्चस्ववादी समाज की मानसिकता है जिसमें पुरुष का रूप, रंग, शारीरिक बनावट चाहे जैसी भी हो किंतु उसे पत्नी के रूप में किसी अप्सरा का ही सपना आता है। पुरुषवर्चस्ववादी मानसिकता स्त्रियों के गुणों की अपेक्षा रूप और रंग को अधिक महत्व देती है। थोरा भी इस मानसिकता की भेंट चढ़ती है। शादी की पहली रात को ही उसके हृदय पर आघात होता है। उसका पति कोठरी में घुसते ही कहता है "तेरी बईण तो राणी रूपमती है। मेरा भाई बड़ा भाग्यवान है। "

वस्तुतः हमारे समाज में लड़कियों के लिए सांवलापन विशेषकर कालापन किसी शारीरिक अपंगता जितना ही बड़ा अभिशाप है। ऐसी लड़कियों के जन्म पर दुःख और अफसोस जताया जाता है। शरीर का यह रंग लड़कियों को हीन महसूस करने को बाध्य करता है, उनके आत्मविश्वास को खत्म करता है और उनके व्यक्तित्व को बेरहमी से कुचलता है। कई बार यह अभिशाप तो उसे मृत्यु के मुंह में भी धकेल देता है। हालांकि वर्तमान में अपने अधिकारों के प्रति जागरूक महिलाओं के दस्ते ने समाज की इस मानसिकता पर आघात किया जिसका प्रभाव हमें बाजारू उत्पाद से लेकर फिल्मी दुनिया तक देखने को मिलने लगी है। हिंदुस्तान युनिलीवर कंपनी को अपने उत्पाद 'फेयर एंड लवली' का नाम बदल कर 'ग्लो एंड लवली' करना पड़ा। फिल्मी दुनिया के गानों में प्रेमिका की तारीफ़ में शब्द 'चौदवीं का चाँद' और 'गोरी है तू हद' से चलकर 'साँवली सलोनी' तक आ गई है। फिर भी अभी तक इस मानसिकता का पूर्ण रूप से निराकरण नहीं हुआ है।

'सूकी बयड़ी' की थोरा की समस्या केवल उसके सांवलेपन पर खत्म नहीं होती है। शादी के बाद उसकी बहन होरा मां बनती है लेकिन थोरा को कोई बच्चा नहीं जन्मता है। उसके पति को बहाना मिलता है और वह एक दूसरी स्त्री ले आता है। सौत के आने से थोरा का जीवन शून्य हो जाता है। उसके पति का अब उसके प्रति कोई फर्ज नहीं। थोरा दिनभर कोठरी में कैद रहती है। बहन उसको वहीं खाना दे जाती है। वास्तव में हमारे समाज ने विवाह पश्चात एक स्त्री का अंतिम लक्ष्य संतान उत्पन्न करना ही निर्धारित कर दिया है और यदि ऐसा नहीं हुआ तो उसे महसूस कराया जाता है कि उसका जीवन व्यर्थ हो गया है। किसी दंपति को बच्चा नहीं होने के कई कारण हो सकते हैं किंतु प्रथम दृष्टया इसके लिए स्त्री में दोष होना मान लिया जाता है जिससे एक विवाहिता की स्थिति ससुराल में दयनीय हो जाती है। परिवार में उसकी भागीदारी और सम्मान कमतर होने लगते हैं। मध्यवर्ग और उच्चवर्ग तो इलाज के माध्यम से अधिकतर इस समस्या से निदान पा लेते हैं या कई बार पुरुषों की अक्षमता का पता लग जाता है किन्तु निम्नवर्ग की स्त्रियां सहज ही इसका शिकार होती हैं। थोरा की भी स्थिति ऐसी ही है क्योंकि उसके पति को दूसरी पत्नी से भी संतान प्राप्त नहीं होती है।

एक परिवार में बहू से केवल पाने की कामना की जाती है, वह ससुरालवालों और अपने पति की आवश्यकताओं को मात्र पूरा करने के लिए होती है और इसमें किसी भी प्रकार के चूक को ससुराल में नकारा नहीं जाता है, बल्कि उसे विशेष रूप से उद्घाटित किया जाता है और उसकी भरपाई के लिए आवश्यक कदम उठाए जाते हैं, भले ही ऐसे कदम से उस स्त्री का अस्तित्व और जीवन दाँव पर क्यों न लग जाए। उपन्यास 'उसका घर' की पात्र एलमा को दमे की बीमारी है जिसके कारण उसे पति त्याग देता है। एलमा अपने दुख को व्यक्त करते हुए कहती है "मेरी शादी हुई थी, मैं सुंदर थी पर सिर्फ मेरे दमे की बीमारी ने ससुरालवालों को चौंका दिया और मेरे पति को लगा कि मैंने उसके साथ जबरदस्त धोखा किया है। माना मुझे बीमारी थी, पर वह मेरे हाथ की चीज तो नहीं थी फिर क्यों मेरे सारे अधिकार छीन लिए गए।"

उच्च शिक्षित नारी समाज में पुरुष के समान कार्य कर रही है। संविधान ने स्त्री–पुरुष दोनों को समान अधिकार दिए

ISSN No. : 0970-9398

हैं, लेकिन हमारे समाज में आज भी पुरुषों का एक वर्ग नारी को घरेलू रूप में ही देखना पसंद करता है, उसकी काबिलियत को अहमियत नहीं देता है, खुद के सामने पत्नी को हमेशा दबाकर रखता है, उसकी सफलता से वह खुश नहीं होता है और पत्नी से हमेशा घरेलू नारी बने रहने की अपेक्षा रखता है। उपन्यास 'अकेला पलाश' की तहमीना को अपना काम देखना पड़ता है, वह एक उच्च पद पर बनी हुई है, फिर भी घर का सारा काम उसे ही निपटाना होता है, उसका पति जमशेद उसकी कोई सहायता नहीं करता है। कई बार तहमीना को घर का सभी काम निपटाने में बहुत देर भी हो जाती है। इस स्थिति पर वह अपना रोष व्यक्त करते हुए कहती है "खाना बनाना तो अपनी किस्मत में लिख लाए हैं, वह कहाँ छूटने वाला है! पता नहीं लोग शादी क्यों करते हैं? शादी के बाद औरत केवल घर की नौकरानी बन कर रह जाती है। क्या घर की रखवाली और खाना बनाने के लिए ही औरत है?"

इस उपन्यास की दूसरी प्रमुख पात्र डॉ. नाहिद का व्यक्तित्व भी सशक्त स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है। नाहिद अपने सपनों को पूरा करने का हौसला रखती है। गरीब परिवार से होने के बावजूद वह डॉक्टर बनती है और प्रैक्टिस करती है। उसे रूढ़िवादी विचारों में विश्वास नहीं है। वह खोखली सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानती है। नाहिद स्त्री सशक्तिकरण के लिए स्त्री आत्मनिर्भरता को अत्यंत आवश्यक मानती है। उसका मानना है कि औरत के बाहर काम करने से उसके मन में आत्मविश्वास आता है। तहमीना भी जब पहली बार घर से बाहर काम के लिए निकली तो नाहिद उसके भय और शंकाओं को मिटाती है और उसे सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में समान दर्जा पाने के लिए प्रेरित करते हुए कहती है "तुम्हारा डर अब नौकरी करने से धीरे–धीरे खत्म हो जाएगा और तुम घरेलू और दब्बू किस्म की औरतों की हदों से बाहर आ जाओगी।" नाहिद जिस तरह अपना रास्ता स्वयं चुनती है वैसे ही वह उम्मीद करती है कि सभी स्त्रियाँ बंधी–बंधायी पारिपाटी से मुक्त हो और अपने जीवन पर खुद का अधिकार प्राप्त करे।

उपन्यास 'समरांगण' की पृथा परम्परावादी संस्कृति में पलने–बढ़ने के बावजूद अपने अधिकारों के लिए खड़ी होती है और अपने पति के अत्याचार और तिरस्कार का विरोध करती है। वह अपने भविष्य के असुरक्षा की पहली आहट पर ही सजग हो गई। उसे पत्नी धर्म के नाम पर स्त्रीत्व की बलि किसी प्रकार स्वीकार्य नहीं है। मोहन के व्यवहार पर वह प्रश्न करती है "ऐसी व्यवस्था कब तक चलेगी? स्त्री कब तब गृहस्थी तथा पति की मोहताज बनी रहेगी, कहीं इसका अंत होना चाहिए न?" पृथा पुरुष द्वारा स्त्री को प्रताड़ित किए जाने वाली व्यवस्था का अंत चाहती है। यह दुराचार अब और आगे नहीं चलने वाला। मोहन द्वारा उसे हर कार्य–व्यवहार, हर खुशी, हर आयोजन से दूर रखने पर वह अपने अधिकारों के लिए भी प्रश्न उठाती है। पति–पत्नी की समानता में विश्वास करनेवाली पृथा संबंध की दृढ़ता और पारस्परिक मैत्रीपूर्ण साहचर्य में विश्वास रखती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मेहरुन्निसा परवेज़ के साहित्य सृजन का मूलाधार अपनी संवेदनाओं, अनुभवों एवं विचारों को दूसरों तक अधिकाधिक पहुँचाने की चाह है। उनके निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उनकी रचना निर्माण का मूल मंत्र है। परवेज़ जी ने उपन्यास, कहानी, लेख, संस्मरण आदि लिखते हुए एवं 'समरलोक' त्रैमासिक पत्रिका का संपादन करते हुए अपने साहित्य की यात्रा आज भी जारी रखी हैं। स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था की अभिलाषा और यातना से मुक्ति पाने की छटपटाहट ही इनके लेखन का आधार है। अपने लेखों के माध्यम से उन्होंने विशेष रूप से आदिवासियों की स्थिति एवं समस्याओं पर प्रकाश डाला है। संस्मरणों में उन्होंने अपने बचपन की कुछ घटनाओं को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। परवेज़ जी का विविध विषयों पर लिखा गया साहित्य समाज के दुर्बल एवं पीड़ित घटकों के प्रति संवेदनशीलता एवं सहानुभूति को प्रकट करता है।

परवेज़ जी को अपने लेखन एवं सामाजिक कार्यो के लिए कई पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं, और इस यात्रा में उन्हें वर्ष 2005 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा "पद्मश्री" से सम्मानित किया गया। लेखन कार्य में उन्हें वर्ष 1980 में 'कोरजा' उपन्यास के लिए मध्यप्रदेश सरकार का 'अखिल भारतीय महाराजा वीर सिंह जुदेव' राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया। इस उपन्यास को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ से भी सम्मान प्राप्त हुआ। सन् 1995 में उन्हें 'सुभद्रा कुमारी चौहान' पुरस्कार मिला। सन् 1995 में ही उत्तर हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया। 'भारत भाषा भूषण' सम्मान उन्हें वर्ष 2003 में प्राप्त हुआ। साहित्यिक पत्रिका 'समर लोक' के संपादन के लिए वर्ष 2003 में 'श्री रामेश्वर गुरू पुरस्कार' प्राप्त हुआ। सितंबर, 1999 में लंदन में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी भाषा एवं साहित्य की विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

–वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक

ISSN No. : 0970-9398

महिलाओं का बदलता कलेवरः लॉन बाउल्स खेल में भारतीय महिला शक्ति

– संजय राघव

बर्मिंघम, इंगलैंड में आयोजित राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारतीय महिलाओं ने एक ऐसे खेल में देश का नाम रोशन किया जिससे अधिकतर देशवासी अंजान हैं। यह खेल है "लॉन बाउल्स"। चार महिलाओं– लवली चौबे, रूपा रानी तिर्की, पिंकी और नयनमौनी सैकिया के दल ने "लॉन बाउल्स" में राष्ट्रमंडल खेलों में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक जीतकर सुर्खियां बटौरी और देश की नारी शक्ति को गौरान्वित किया। इन महिलाओं की चौकड़ी ने यह अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल कर भारत के लोगों का ध्यान लॉन बाउल्स की तरफ आकर्षित किया है। भारत जैसे देश में क्रिकेट का जुनून सिर चढ़के बोलता है और इसकी दीवानगी देखते ही बनती है। ऐसे में यहां के लोगों का 'लॉन बाउल्स' नाम के विशिष्ट खेल से बेखबर होना लाज़मी है।

स्वर्ण पदक विजेता लवली चौबे, पिंकी, नयनमौनी सैकिया और रूपा रानी तिर्की

यह एक ऐसा खेल है जो वर्ष 1930 से राष्ट्रमंडल खेलों में शामिल रहा है। लॉन बाउल्स में देश का यह पहला स्वर्ण पदक है। भारत में लॉन बाउल्स खेल के बुनियादी ढांचे की काफी कमी है और यह अभी शुरुआती स्तर पर है। इसे देखते हुए लवली चौबे, रूपा रानी तिर्की, पिंकी और नयनमौनी सैकिया ने जो उपलब्धि हासिल की है वह असाधारण है।... राष्ट्रमंडल खेलों में शानदार प्रदर्शन करने वाली इन महिलाओं का स्वर्ण पदक तक का सफर अत्यंत संघर्षपूर्ण और प्रेरणादायी रहा है।[1]

लवली चौबे, इतिहास रचने वाले इस दल की सबसे वरिष्ठ सदस्य हैं। वे स्वयं झारखंड पुलिस में सिपाही तैनात थीं। वे एक एथलीट थीं और फर्राटा दौड़ व लॉन्ग जंप में प्रतिस्पर्धा करती थीं। बार–बार चोटिल होने के कारण उनका ट्रैक एंड फील्ड करियर आगे नहीं बढ़ पाया। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में बिहार के पूर्व अंपायर मधुकांत पाठक से मुलाकात के बाद उनका करियर बदल गया। मधुकांत पाठक लॉन बाउल्स खेल के भी कोच थे। उन्होंने लवली चौबे को लॉन बाउल्स खेलने के लिए प्रेरित किया और यही लवली के जीवन का अहम निर्णय साबित हुआ।1

लवली चौबे

उन्होंने वर्ष 2008 में लॉन बाउल्स प्रतियोगिता में पहली बार भाग लिया और एक स्वर्ण पदक जीता। वर्ष 2013 में एशिया पैसिफिक मर्डेका कप में मिश्रित युगल स्वर्ण पदक जीतकर भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। वर्ष 2014 में उन्होंने ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया तथा चीन में आयोजित एशियाई लॉन बाउल्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीता। उन्होंने गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेल, 2018 में रूपा रानी तिर्की सहित महिला युगल क्वार्टर फाइनल खेला।

रूपा रानी तिर्की पूर्व में एक कबड्डी खिलाड़ी रही हैं। राज्य सरकार की ओर से लॉन बाउल्स में खिलाडियों के लिए दी जाने वाली मदद, कबड्डी की तुलना में कहीं अधिक है। यह देखकर रूपा रानी ने इस खेल में करियर बनाने का इरादा पक्का कर लिया। रूपा ने वर्ष 2010 के बाद से प्रत्येक राष्ट्रमंडल खेल में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

ISSN No. : 0970-9398

रुपा ने कुआलालंपुर में आयोजित पैसिफिक लॉन बाउल्स चैम्पियनशिप 2009 में महिलाओं की तीन और चार सदस्यीय टीम स्पर्धा में क्रमशः स्वर्ण और कांस्य पदक जीता।

पिंकी ने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्पोर्ट्स की डिग्री लेने के पश्चात स्पॉर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एसएआई), पटियाला से स्पॉर्ट्स डिप्लोमा भी लिया है। अपने कॉलेज के दिनों में वे एक क्रिकेट खिलाड़ी थीं और रानी झांसी ट्रॉफी जैसे क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग भी लिया है।

पिंकी

लॉन बाउल्स से उनका परिचय भी रोचक है। वर्ष 2007 में वे दिल्ली पब्लिक स्कूल, रामकृष्ण पुरम में एक शारीरिक शिक्षक (फिजिकल एजुकेशन) के रूप में कार्यरत थीं। उस दौरान स्कूल के मैदान को दिल्ली के खिलाड़ियों के लिए लॉन बाउल्स खेल के अभ्यास स्थल के रूप में चुना गया था। पिंकी ने यह खेल पहले कभी न खेलने के बावजूद रज़त पदक जीता और राष्ट्रीय टीम में जगह बनाई। इस तरह एक स्कूल टीम की क्रिकेट कोच ने लॉन बाउल्स चैम्पियन बनने की अपनी यात्रा शुरू की। अब उसी स्कूल में वे लॉन बाउल्स का प्रशिक्षण भी देती हैं।

पिंकी ने 2009 में मलेशिया में आयोजित पैसिफिक लॉन बाउल्स चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीता। उन्होंने विगत कुछ वर्षों में लॉन बाउल्स एशियाई चैम्पियनशिप में भी कई पदक प्राप्त किए हैं।1

नयनमोनी सैकिया भारतीय लॉन बाउल्स की शानदार चौकड़ी में सबसे कम उम्र की खिलाड़ी हैं। एक साक्षात्कार में अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए उन्होंने कहा था कि, "मैंने इस खेल के लिए अपने पूरे परिवार को पीछे छोड़ दिया। मैं अपनी बेटी को पर्याप्त समय नहीं दे पाती थी और न ही देख पाती थी क्योंकि मैं बहुत यात्रा कर रही होती थी। यह सब इसलिए किया क्योंकि मुझे देश के लिए अच्छा प्रदर्शन करना था।"

नयनमोनी सैकिया की कहानी भी उनकी टीम की बाकी साथियों से अलग नहीं है। शुरुआत में वे भारोत्तोलन से जुड़ी थीं। परंतु पैर की चोट के कारण भारोत्तोलन छोड़ना पड़ा। वर्ष 2008 में उन्होंने लॉन बाउल्स को करियर के रूप में चुना। उन्होंने बर्मिंघम में लॉन बाउल्स की चार सदस्यीय टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतने में अहम भूमिका निभाई। बर्मिंघम, 2022 उनका तीसरा राष्ट्रमंडल खेल था। चार सदस्यीय स्पर्धा में भी स्वर्ण पदक विजेता रही हैं। 1

लॉन बाउल्स खेल

लॉन बाउल्स खेल को लॉन बॉलिंग अथवा लॉन बॉल्स भी कहा जाता है। सबसे सरल और शुरुआती प्रतियोगिता, एकल प्रतियोगिता होती है जिसमें एक–एक प्रतिभागी आमने–सामने होते हैं। इसके अलावा यह खेल दो–दो (युगल), तीन–तीन (ट्रिपल) और चार–चार (चौकड़ी) खिलाड़ियों की

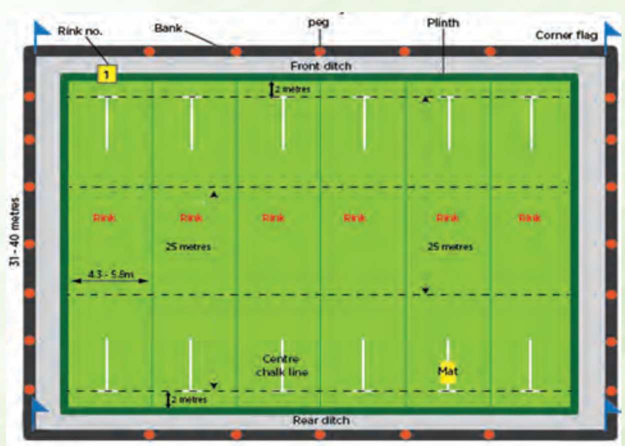

बॉलिंग ग्रीन

टीम के बीच भी खेला जाता है। इसके मैदान को बॉलिंग ग्रीन कहा जाता है जिसकी सतह प्राकृतिक घास, कृत्रिम टर्फ अथवा कॉटुला (न्यूजीलैंड में) हो सकती है। यह आमतौर पर बाहर खुले मैदान में खेला जाता है हालांकि कई इनडोर स्थानों पर भी खेला जाता हैं। बॉलिंग ग्रीन को समानांतर प्लेइंग स्ट्रिप्स में विभाजित किया जाता है जिन्हें रिंक कहा जाता है। प्रत्येक मैच इस रिंक की सीमा के भीतर खेला जाता है। 2

लॉन बाउल्स उपकरण

लॉन बाउल्स खेलने के लिए मुख्य रूप से तीन उपकरणों की आवश्यकता होती है – एक बाउल, एक जैक और एक मैट।

जैक, लॉन बॉलर का लक्ष्य है। खेल के आधिकारिक शासी निकाय– वर्ल्ड बाउल्स के अनुसार जैक एक ठोस गोलाकार बाउल है, जिसका व्यास 63 और 67 मिमी के बीच होता है, जो सफेद या पीले रंग का होता है।

बाउल एक बड़ी गेंद की तरह होता है जिसे लॉन बॉलर, जैक की ओर घुमाता है। वर्ल्ड बाउल्स के अनुसार बाउल 112 मिमी–134 मिमी के व्यास के साथ लकड़ी, रबर या प्लास्टिक रेसिन से बना होता है। बाउल को पकड़ने में आसानी के लिए इसके डिज़ाइन में इंडेंटेशन (डिंपल या प्रतीक आकृतियां) होता है।

बाउल पर उकेरी गईं डिंपल व प्रतीक आकृतियां (इंडेंटेशन)

बाउल्स पक्षपाती (बायस्ड) होते हैं, जिसका अर्थ है कि इनका एक भाग हल्का और दूसरा आधा भाग वजन में भारी बनाया जाता था। इसका असर यह होता है कि यह कभी भी सीधी रेखा में नहीं बल्कि वक्र (कर्व) में लुढ़केगा। नियमानुसार अब वजन डालने की अनुमति नहीं है और वक्र अब पूरी तरह से बाउल के आकार से उत्पन्न होता है। कोई भी बॉलर अपने हाथ में एक तरफ डिंपल अथवा प्रतीकों द्वारा बाउल की वक्र दिशा निर्धारित करता है। न्यूनतम अनुमत डिंपल और व्यास की सीमा (11.6 से 13.1 सेमी (4.6 से 5.2 इंच)), निर्धारित होती है, लेकिन इन नियमों के तहत बॉलर अपनी पसंद के अनुरूप बाउल का चयन कर सकते हैं। वे अब आमतौर पर कठोर प्लास्टिक मिश्रित सामग्री से बने होते हैं।

विभिन्न प्रकार के बाउल्स

मैट, कपड़े का एक टुकड़ा होता है जिस पर लॉन बॉलर खड़ा होता है और बाउल को जैक की ओर घुमाता है। वर्ल्ड बाउल्स का कहना है कि मैट 600 मिमी लंबा और 360 मिमी चौड़ा होना चाहिए। 2

खेल के नियम

किसी टीम में, जो लॉन बॉलर सबसे पहले रोल करता है उसे लीड कहा जाता है और जो सबसे बाद में रोल करता है उसे स्किप कहा जाता है। रिंक के ऊर्ध्वाधर सिरों (वर्टिकल एंड्स) को एंड्स कहा जाता है।

इस खेल में प्रतिभागी खिलाड़ी अपनी–अपनी बाउल को सपाट मैदान में इस प्रकार रोल करते हैं ताकि वह "जैक" या "किटी" नामक छोटी बॉल के करीब रुके। किसी लॉन बॉलर या टीम को जैक को मारने या उसके करीब पहुंचने के उद्देश्य से अपने सभी बाउल्स एक छोर से रोल करने होते हैं। दोनों लॉन बॉलर/टीमों द्वारा प्रत्येक छोर पर सभी बाउल रॉल किए जाने के बाद अंक दिए जाते हैं। खिलाड़ी को स्थिति परखनी होती है और बाउल को छोड़ने के लिए रेखा, कोण और पकड़ (ग्रिप) का निर्धारण करना होता है, जो जैक की ओर जाते समय झुकता है क्योंकि बाउल बायस्ड होता है।

टॉस जीतने के बाद, लीड वह एंड चुनते है जहां से खेल शुरू करना है। फिर वे मैट बिछाते हैं और जैक को दूसरे एंड की ओर रॉल करते हैं। जैक को कम से कम 23 मीटर की यात्रा करनी होती है और एक बार जब यह आराम की स्थिति में आ जाता है, तो जैक को रिंक के केंद्र में ले जाया जाता है जिसके बाद लॉन बॉलर/टीम, बाउल को रोल करना शुरू कर सकती है और इस तरह 'हेड' (जैक के चारों ओर बाउल्स का समूह) बनाते हैं।

बाउल अपने रास्ते पर रिंक सीमा के बाहर मुड़ सकता है, लेकिन खेल में बने रहने के लिए उसे रिंक सीमा के भीतर रुकना होगा। डिच (बाहर) में गिरने वाले बाउल डेड हो जाते हैं और खेल से हटा दिए जाते हैं, सिवाय उस स्थिति के जब उसने रास्ते में जैक को "टच" किया हो। "टचर्स" को चॉक से चिह्नित किया जाता है और वे डिच में गिरने पर भी

खेल में जीवित रहते हैं। इसी तरह यदि जैक को डिच में गिरा दिया जाता है तो वह तब तक जीवित रहता है जब तक कि वह किनारे की सीमा से बाहर न हो जाए, जिसके परिणामस्वरूप एक "डेड एंड" होता है जिसे फिर से खेला जाता है, हालांकि अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुसार जैक को रिंक के केंद्र में "रिस्पॉट" कर दिया जाता है और एंड जारी रहता है। 2

लॉन बाउल्स स्कोरिंग प्रणाली

दोनों लॉन बॉलर्स /टीमों द्वारा प्रत्येक एंड को पूरा करने के बाद अंकों की गणना की जाती है। प्रत्येक प्रतियोगी द्वारा अपने सभी बाउल्स रॉल करने के बाद (एकल और जोड़े में चार–चार, ट्रिपल में तीन–तीन, और चार में से प्रत्येक में दो बाउल्स), जैक से निकटतम बाउल की दूरी निर्धारित की जाती है। जो अपने प्रतिद्वंद्वी के निकटतम बाउल की तुलना में जैक से अधिक निकट होता है, प्रत्येक उस बाउल के लिए अंक दिए जाते हैं, जिन्हें "शॉट्स" कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी प्रतियोगी ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी की तुलना में जैक के करीब दो बाउल्स फेंके हैं, तो उन्हें दो शॉट दिए जाते हैं। फिर से खेल को अगले एंड के लिए दोहराया जाता है। बाउल्स का खेल आमतौर पर इक्कीस एंड्स का होता है।

किसी एकल मैच में, प्रत्येक लॉन बॉलर को एक एंड से चार बाउल्स रॉल करने होते हैं। युगल, ट्रिपल और चार–चार की टीम के प्रत्येक लॉन बॉलर को एक एंड से दो बाउल्स रॉल करने की अनुमति होती है। एकल मैच का विजेता वह व्यक्ति होता है जो 21 अंक तक पहले पहुंचता है। युगल और ट्रिपल मैचों का निर्णय 18 एंड्स के बाद निर्णय किया जाता है जबकि चार–चार की टीम के मैचों का निर्णय 15 एंड्स के बाद किया जाता है।

यदि लीग मैच (टीम मैच) में टाई होता है, तो दोनों टीमों को एक–एक अंक दिया जाता है। हालाँकि, यदि नॉकआउट में टाई होता है, तो विजेता निर्धारित होने तक अतिरिक्त एंड्स खेले जाते हैं। एकल प्रारूप में कोई मैच टाई नहीं हो सकता।

यह खेल मानसिक और शारीरिक रूप से कठिन है क्योंकि खिलाड़ियों को दो घंटे और 15 मिनट तक खड़ा रहना पड़ता है। अपनी–अपनी बारी के बीच बैठ सकते हैं लेकिन ऐसे में वे एकाग्रता और गति खो सकते हैं और मानसिक रूप से इसलिए क्योंकि बाउल और जैक 23 मीटर की दूरी पर हैं, इसलिए प्रत्येक बाउल पर ध्यान केंद्रित करना और इसे कैसे छोड़ना है, आसान नहीं होता, क्योंकि बाउल का एक पक्ष भारी और दूसरा हल्का होता है। 2

बाउल्स इंडिया

बाउल्स को भारत में ब्रिटिश प्रवासी मुख्य रूप से अपने मनोरंजन और गोल्फ के विकल्प के रूप में लाए थे। रॉयल कलकत्ता गोल्फ क्लब (आरसीजीसी) जैसे क्लब, जहां बाउल्स अभी भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, भारत में बाउल्स के ध्वजवाहक रहे हैं। बाउल्स को 1830 ई. के आसपास भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के हितधारक प्रवासियों द्वारा आरसीजीसी में शुरु किया गया था, वहां से इसे ब्रिटिश द्वारा संरक्षित पूर्वी भारत के अन्य क्लबों, विशाल चाय बागानों और जूट मिलों में भी लागू किया गया था।

प्रारंभ में, जब रेल व्यवस्था भारत में शुरू की गई थी, तब इसमें प्रवासी लोग कार्यरत थे और इसके लिए काम करने वालों का एक बड़ा समुदाय एंग्लो–इंडियन था, जिन्होंने बाउल्स को तुरंत अपना लिया। देश भर के सभी रेलवे हब में अनेक क्लब सक्रिय थे और 1950 के दशक तक बाउल्स इन क्लबों में खेला जाता था। बाद में प्रवासियों के वापिस लौटने और एंग्लो–इंडियन समुदाय के बड़े पैमाने पर यूनाइटेड किंग्डम, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा आदि में प्रवास के साथ ही खेल की लोकप्रियता तेजी से कम होने लगी। अधिकांश क्लब सुविधाओं का रखरखाव नहीं कर सके और बाउल्स के लिए अपने द्वार बंद कर दिए।

1980 के दशक की शुरुआत में, लॉन बाउल्स के मुट्ठी भर सक्रिय खिलाड़ियों ने भारत में बाउल्स को फिर से जीवित करने का जिम्मा खुद उठाने का फैसला किया। 21 नवंबर, 1985 को एक राष्ट्रीय महासंघ अर्थात बॉलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया का गठन किया गया। यह फेडरेशन भारतीय ओलंपिक संघ से संबद्ध है। बॉलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया पर भारत के सभी राज्यों में बाउल्स सुविधाओं को बढ़ावा देने और शुरू करने का दायित्व है। 3

बॉलिंग फेडरेशन के प्रयासों का ही परिणाम है कि खेल में नई–नई प्रतिभाएं देश के अलग–अलग क्षेत्रों से सामने आ रही हैं। पुरुष वर्ग की प्रतियोगिताओं में भी भारतीयों का अच्छा प्रदर्शन रहा है। परंतु महिला वर्ग में हमारी स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ियों की चौकड़ी ने एक मिसाल पेश की है। इनके मार्गदर्शन में भविष्य में आने वाले युवा खिलाड़ी देश का नाम अवश्य रौशन करेंगे। सारांश यह है कि इन चारों महिलाओं– लवली चौबे, रूपा रानी तिर्की, पिंकी और नयनमौनी सैकिया ने यकीनन खेल के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

–वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजस्व विभाग, वित्त मंत्रालय

सहायक ग्रंथ सूचीः–

1. टाइम्स ऑफ इंडिया, दिनांक 4 अगस्त, 2022
2. विकीपीडिया– बाउल्स
3. बॉलिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया

ISSN No. : 0970-9398

संघर्षशील आदिवासी नायिका : मैरी कॉम मैदान के अंदर और बाहर

–डॉ. गौतम कुमार मीणा

मैरी के पिता का नाम मांग्ते टोपना कॉम और माता का अखम जिन्हें प्यार से अनु कहते थे (खनैखम)। मैरी कॉम का जन्म 24 नवम्बर, 1982 को मणिपुर के चूड़ाचांदपुर जिले के सांगांग नामक गांव में हुआ था। सागांग कॉम आदिवासियों का सबसे बड़ा गांव है। मैरी के पिता गांव के एक मुखिया के वंशज होते हुए भी भूमिहीन किसान थे। इसी कारण परिवार की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए काम की तलाश में उन्हें अपना गांव छोड़ना पड़ा।

स्वयं मैरी के शब्दों में "अपा के तीन भाई दो बहनें थी। समय के साथ जैसे–जैसे ज़मीन बेटों के बीच बँटती गयी, सहोदरों का संघर्ष भी तीखा होता चला गया। बेटे ज़मीन की देखरेख करने में लापरवाह थे। बारिश भी अनियमित रही हमारे परिवार पर बुरे वक्त की मार पड़ी। मेरे दादा का छोटा सा खेत उनके परिवार को खिलाने के लिए काफी नहीं था।"[1] मैरी ने पिता के साथ बहुत छोटी उम्र में ही संघर्ष करना सीख लिया था। ऐसा जीवट जो आज भी उनमें बिंदास दिखाई देता है।

मैरी कॉम के पिता मांग्नेछ टोपना कॉम एक कम पढ़े, भूमिहीन किसान थे जिनके लिए गुज़ारा चलाना ख़ासा कठिन था। लेकिन इसी संघर्ष के बीच, उस फटीचर सी झोपड़ी में मैरी के जन्म से पहले अधिकतर गर्भवती मांओं की तरह अनु ने भी बेटे की उम्मीद लगा रखी थी। "उसके ख़याल में बेटी मदद की बजाय बोझ ही साबित होगी वे सोचती थीं कि क्या वह खेतों में अपने पिता के साथ–साथ उसी तरह मेहनत–मजदूरी कर पायेगी जैसे कोई बेटा करता है ?"[2] गरीब और भूमिहीन मां की ज़ायज़ निराशा थोड़ी देर की मेहमान साबित हुई। स्वास्थ बच्ची की मां बनने की खुशी से वे वात्सल्य से भर गई।

आदिवासी कबीलों में बच्चों का नामकरण परिवार के पुरखों के नामों से शुरू किया जाता है। इससे दिवंगत और बुजुर्गों को याद रखते हुए उन्हें सम्मांन दिया जाता है। पुरखों के स्मरण के साथ उनके जीवनानुभव और ज्ञान को सहेजने की कला आदिवासी समाज में विशेष रूप से पाई जाती है। आदिवासी साहित्य की सशक्त पुरोधा वंदना टेटे के अनुसार "जन कण्ठों और मौखिक परंपराओं में सुरक्षित आदिवासी पुरखौती साहित्य हमें न सिर्फ समाज और मनुष्य के सामाजिक होने की यात्रा पर ले जाता है, बल्कि यह दुनिया को बचाये रखने तथा इंसान को इंसान बने रहने की सामूहिक समझ और विश्वदृष्टि भी प्रदान करता है।"[3]

कॉम समाज के शिक्षा के क्षेत्र में लड़कों को तरजीह के विपरीत मैरी के पिता ने स्कूल में दाख़िला करा दिया। मैरी कॉम के स्कूल जाने पर उन्हें बेहद गर्व हुआ था। मैरी हर रोज़ पैदल स्कूल जाती थी। शहर तक पहुँचने मे एक घण्टे चलना पड़ता था। गांव के माता–पिता अपने कठोर शारीरिक श्रम में इतने ज्यादा फँसे रहते हैं कि उन्हें बच्चों को स्कूल छोड़ने, लाने और लाड़ प्यार का समय नहीं दे पाते। छोटे भाई–बहन स्कूल जाने लगे तो मैरी स्कूल और घर में उनकी देखभाल की जिम्मेदारी निभाती। खेत में बैलों के साथ कदमताल साधती हुई काम करती तो पुरूष भी भौंचक्के रह जाते। मैरी को गांव के अन्य बच्चों की अपेक्षा कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। "मेरे पिता ने हमें बहुत छोटी सी उम्र से काम करना सिखाया था।

मैरी कॉम का बचपन आम पहाड़ी बच्चों में सबसे नीरस और मेहनती था फिर भी मैरी सारे काम–धाम के बीच ऐसे मौके तलाश लेती जब दोस्तों के साथ चुपके से बाहर निकल जाती। मैरी कंचे खेलने में उस्ताद थी, अचूक निशाने वाली होने के कारण सभी के कंचे जीत कर उठती। कुछ बेच देती और कुछ उधार देती ताकि खेल जारी रख सकें। लड़कियां घर के कामों में व्यस्त रहने के कारण कम ही खेलती हैं पर मैरी लड़कों के साथ भी खेलती और बाजी जीत जाती। वह मुकाबला हारना पसंद नहीं करती इसके लिए लड़ने–भिड़ने के जज्बे से हमेशा तैयार रहती। यही स्वघोषित सभ्य समाज और आदिवासी समाज का सबसे बड़ा अंतराल है।

रमणिका गुप्ता पूर्वोत्तर की आदिवासी लड़कियों और महिलाओं के बारे में लिखती हैं कि "भारत की अन्य स्त्रियों के विपरीत आदिवासी लड़कियां लड़कों को देखकर न तो मोम की

तरह पिघलती हैं और न ही बर्फ की तरह पानी–पानी हो जाती है बल्कि वे उससे बतियाती हैं, परखती हैं। ....आदिवासी स्त्रियां स्वावलंबी होती हैं। वे खुद–कमाकर अपना और अपने पूरे परिवार का भरण–पोषण करती हैं।"[7]

मैरी हमेशा स्कूल की सालाना खेल–कूद प्रतियोगिताओं का बेसब्री से इंतजार करती। उन्हीं के शब्दों में "मैं हमेशा स्कूल की सालाना खेल–कूद प्रतियोगिताओं में भाग लेती: 100 मीटर, 400 मीटर, लम्बी दौड़ आदि। फिर कम मुश्किल मुकाबले भी थे, जैसे चम्मच दौड़ (मुंह में चम्मच लिए दौड़ना जिस पर एक कंचा रखा होता) और सुई दौड़ (दौड़ कर जाओ, सूई में धागा पिरो दो, वापस भाग कर आओ)। ज्यादातर मुकाबलों में जिनमें मैं हिस्सा लेती, मैं पहला इनाम जीत कर आती। इनाम बहुत करके तश्तरियाँ, प्याले और टिफ़िन बॉक्स जैसे घरेलू सामान होते, जिस पर मेरे परिवार को बहुत खुशी होती। मेरा भाई टिफिन बॉक्स को लेकर बहुत उत्तेजित था, क्योंकि अब वह अपने दोस्तों की तरह चावल स्कूल ले जा सकता था।"[8]

ऊँचे पहाड़ों से सुनहरी दिखने वाली आदिवासी दुनिया के बच्चों को उनकी जरूरत की मूलभूत वस्तु भी गरीब माता–पिता पूरी नहीं कर पाते। अभावों और संघर्षों से जूझते हुए मैरी जैसे अदम्य साहस वाले बच्चे ही आगे का सफर तय करते हैं। मैरी के पिता लड़कियों के खेलने के पक्ष में नहीं थे लेकिन मैरी का खेल–कूद में जबरदस्त जोश देखकर उन्हें खेल स्वीकार करना पड़ा। वे मैरी को 'राष्ट्रीय खेल संस्थान' में दौड़ों और कूदों के कोच ओजा निपामचा के पास ले गये। मैरी को शिष्या के रूप में स्वीकार कर लिया गया। दौड़ वाले कोर्स में दाखिले और साज़–सामान के लिए कोई खर्च नहीं लगा। समस्या (उचित) संतुलित भोजन के अभाव की बनी रही। गांव से चार बार कसरत और प्रशिक्षण के लिए आना बेहद चुनौती पूर्ण सिद्ध हुआ। मैदान में आते ही मैरी की परेशानियां विकट चिन्ता का कारण बन गई। स्वयं मैरी कॉम के शब्दों में "मेरे प्रशिक्षण को सहारा देने के लिए संतुलित भोजन नहीं था और यही हुआ, दिन में चार बार मोइरांग और अपने गांव के बीच साइकिल चलाना भारी साबित होने लगा। यह भी मेरे सामने साफ हो गया कि दौड़ने वाली प्रतियोगिताएं मेरे मनोनुकूल नहीं थी। लगभग बीस दिन ही, मैंने हाथ खड़े कर दिये।"[9]

बिना संभावनाओं और मौकों के मैरी ने अपने आप को दृढ़ कर लिया। कसरत के सही तरीके, शरीर को खींचना–तानना, ताकत और दम बढ़ाने वाली कसरतें और तेजी से अभ्यास करना सीखा। अध्यापक और मित्र जैसे–जैसे खेल–कूद के संदर्भ में मैरी की प्रतिभा की चर्चा करने लगे और वैसे–वैसे मैरी का जोश बढ़ता गया। मैरी ने तय कर लिया कि उसका भविष्य पढ़ाई–लिखाई में न होकर खेल–कूद में हो, अभी तक मैरी तय नहीं कर पाई कि कौन से खेल को अपनी मंजिल बनायेगी। मुक्केबाजी तो उसके ख्यालों में भी नहीं आया था।

1999 में मैरी ने गांव छोड़कर इम्फाल के 'भारतीय खेल प्राधिकरण' में प्रवेश ले लिया। एक और छोटे भाई बहन और माता–पिता को छोड़ने का दु:ख तो दूसरी और भविष्य को सुदृढ़ बनाने की चिंता मैरी अपने परिवार के सुखद भविष्य के लिए खेल कर खेल कोटे से नौकरी पाना चाहती थी। वे अपने पिता की शिक्षा 'कड़ी मेहनत की गरिमा और ईमानदारी के साथ जुट गई'।

"जो तुम बोओगे, तुम काटोगे
जो मैं बोऊँगा, मैं काटूँगा"

मैरी के अपा का दिया हुआ सबसे महत्वापूर्ण सबक जो हमेशा ऊर्जा देता रहा है। किराये के घर में लगभग शून्य बजट पर अकेले रहना मैरी के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण रहा। उन्होंने अलग–अलग खेलों में अपना हाथ आज़माया। पोल वाल्ट, भाला फेंकना, दौड़ना, कूदना, जिम्नास्टिक आदि किसी में भी मन नही माना। एक मणिपुरी मुक्केबाज डिंको सिंह ने बैंकॉक में 1998 के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता था। सारे मणिपुर में खबर फैल गई। डिंको सिंह मणिपुर और मैरी कॉम का चहेता हीरो बन गया। डिंको सिंह के अलावा मैरी बचपन से मोहम्मद अली और उसकी बेटी लैला अली से भी प्रभावित थी। एक महिला मुक्केचबाज़ रेबिका चिरू ने सही राह दिखाई। उन्होंने मैरी को बताया कि पहली बार महिला मुक्केबाजी को खेल में शामिल किया गया है और वे खुमन लम्पाक में 'भारतीय खेल प्राधिकरण' संस्थान में प्रशिक्षण ले रही है। मैरी ने अपना मन बना लिया कि मुक्केखबाजी ही वह खेल है जिसकी उन्हें तलाश थी।

ओजा ईबोम्चा मुक्केबाज़ी के सबसे अच्छे प्रशिक्षकों में से है, जिनसे मैरी ने बहुत कुछ सीखा। 2010 में भारत सरकार द्वारा उनके मुक्केबाजी में योगदान के लिए द्रोणाचार्य सम्मान दिया गया। कठिन परिश्रमी मैरी मणिपुर 'गैर पेशेवर मुक्के बाजी संघ' में भी प्रशिक्षण लेने लगी। जितना मैरी को सिखाया जाता उससे बेहतर प्रदर्शन करती। उसके प्रशिक्षक पीठ थपथपाते, तब उसका जोश कई गुना बढ़ जाता। 'मणिपुर मुक्केबाजी संघ' और 'भारतीय खेल प्राधिकरण' के बीच की रस्साकशी, राजनीति गुटबाजी और पक्षपात के बीच मैरी ने सूझबूझ से तालमेल बैठाया और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होती गई।

सबसे पहले राज्य महिला मुक्केबाजी के मुकाबले आये जिसमें मैरी ने 48 किलो वर्ग में न केवल स्वर्ण पदक जीता बल्कि मुकाबलों की सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज के खिताब ने राष्ट्रीय स्तर की योग्यता साबित करने का मौका प्रदान किया। एक स्थानीय अखबार ने मैरी के गलत नाम मांकी कॉम लिखते हुए राज्य प्रतियोगिताओं की खबरें छापी। अपा को मैरी की मुक्केबाजी और गलत नाम पर बहुत क्रोध आया। वे नहीं चाहते थे कि मैरी को कोई चोट आये। अधिकांश लोगों की तरह उसका मानना था कि मुक्केबाजी जैसा खेल लड़कियों के लिए नहीं बल्कि वह तो लड़कों का खेल हैं। पिता को मैरी ने बताया कि नाम गलत छपा है और उसे मुक्केबाजी में ही भविष्य बनाना है।

मैरी कॉम का मुकाबला खेल के मैदान से निकलकर घर में सीधे पिता से जा टकराया। मां, अनु को मैरी की योग्यता पर पूर्ण विश्वास था पर पिता की सबसे प्यारी अनमोल धरोहर सानेहा (मैरी कॉम) का खतरनाक भविष्य चुनने वाला फैसला उनको बर्दाश्त नहीं था। अपा ने मैरी को चुनौती दी 'अपा और खेल' में से किसी एक को चुनने की मैरी अपने इरादे पर

एकलव्य की तरह अड़िग रही और खेल को चुन लिया। अपा मैरी से काफी नाखुश हो गए और बोलचाल भी बंद कर दिया। पिता का गुस्सा भी जायज़ था और मैरी कॉम को भी अपने बुलंद हौसलों पर पूरा यकीन था।

बैंकॉक प्रतियोगिता के कुछ महिनों बाद ही नवम्बर–दिसम्बर, 2001 में 'अंतर्राष्ट्रीय गैर पेशेवर मुक्केबाजी संघ' की 'विश्व महिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता' के लिए चुन लिया गया जो अमेरिका में हो रही थी। मैरी के माता–पिता खून–पसीना बहाकर दौरे के लिए 2000 रूपये ही जुटा पाये जो अमेरिका जाने के लिए पर्याप्त नहीं थे। ऑनलर ने 'कॉम रेम संघ' के माध्यम से फिर चंदा जुटाया मैरी कॉम के पास कुल 10000 रूपये जमा हो गये जो अमेरिका जाने के साथ अपार राहत का अहसास था। "मेरे लिए लोगों ने जो इतनी सारी कोशिशें की थी, उनके बाद में खाली हाथ नहीं लौट सकती थी। "

क्वांटर फाइनल में मैरी ने पोलैण्ड की नादिया होक्मी को मध्यस्त अवरोधित मुकाबले के आधार पर बुरी तरह हरा दिया। सेमी–फाइनल में दूसरी प्रतिद्वंद्वी कैनेडा की जेमा बेल को 21–9 से हरा कर अन्तिम दौर में कदम रखा, लेकिन वहाँ तुर्की की हुला साहिन से 13–5 से हार गयी। मैरी का स्वर्ण पदक जीतने का सपना चकनाचूर हो गया। मैरी कॉम के प्रशिक्षक ने शाबाशी के साथ बुलंद हौसला दिया। स्वयं मैरी के विचारों से "प्रशिक्षक बहुत समझदार और दयालु थे, उन्होंने मुझे तसल्ली दी और रजत पदक जीतने के लिए मेरी पीठ थपथपायी। पूरी टीम में अकेली मैं ही थी जिसने पदक जीता था। लेकिन जो सबसे बड़ी चीज मैं इस मुकाबले से लेकर विदा हुई, वह इस बात का विश्वास था कि मैं किसी भी मुक्केबाज़ का सामना कर सकती थी।"[10] विदेश में मैरी को छोटी–मोटी कई परेशानियों का सामना करना पड़ा। एशिया के देशों का खाना तो पसंद था लेकिन यूरोप का खाना बेस्वाद और सादा होने की वजह से मैरी घर से चटनी, सुखाया गया गोश्ते और मछली साथ ले जाने लगी।

एक हिंदुस्तानी ने पहली अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर ही देश को रजत पदक जीता था लेकिन मीडिया ने बिलकुल भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। महिला मुक्केबाजी अभी अपनी शैशवास्था में थी और उसके लिए प्रशंसकों या समीक्षकों का ध्यान खींचने का काम अभी बाकी था। मैरी कॉम अब देश लौटने पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की मुक्केबाज के रूप में खेलकूद की दुनिया में विख्यात हो गई। मैरी के अपा के सारे गिले–शिकवे दूर हो गये। वे अपनी सानेहम को गर्व से आशीष देने लगे। मणिपुर का खेल जगत और कॉम समाज मैरी कॉम का स्वागत करने को आतुर हो गया। इस पदक ने मैरी कॉम के सपनों को जीवंत आधार प्रदान किया। स्वयं मैरी के कथानुसार :– "उस पदक ने हमारी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में भारी मदद दी। खेल मंत्रालय ने नौ लाख के नकद इनाम की घोषणा की। यह बात अलग है कि तत्कीलीन खेल मंत्री उमा भारती को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में आखिकार चैक मुझे देने में लगभग साल भर लगा था।"[11]

मैरी ने मां अनु से किये वादे को पूरा करने के लिए इनाम की राशि में सभी परिजनों की हिस्सेदारी को अपना कर्तव्य समझकर भलीभांति पूर्ण करने में लगा दिया। सबसे पहले अपा के भूमिहीन होने के दंश को दूर किया। भूमि आदिवासी जीवन की आधारशिला होती है यह बात अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी भूली नहीं थी। वो अपने आपको और परिजनों को जड़ों से जोड़कर आगे बढ़ना चाहती थी।

मैरी कॉम में आदिवासियत कूट–कूट कर भरी हुई थी। यहीं उसके अटूट हौसलों की अक्षय उर्जा बनी। "आदिवासी दर्शन रचाव और बचाव का दर्शन है। सृजन का दर्शन है। वह खुद भी बने रहना चाहता है और इसके लिए पुरी दुनिया को भी बनाए रखना चाहता है। वह जीयो और जीने दो में विश्वास करता है। सब लोग साथ–साथ जिएं यही आदिवासी कथाओं में आया है।"[12]

इसी दर्शन के आधार पर हम गैर आदिवासी और आदिवासियों में फर्क कर सकते है। ऑनलर मैरी की जिंदगी में सहयोग, समर्थन, दोस्ती और सहारे का भावनात्मक आधार था। मैरी के लिए उसके पास सिर्फ सूझ–बूझ वाली सलाह और सावधानी भरे शब्दा होते। 2003 में अर्जुन पुरस्कार से सुर्खियों में आने से मैरी की जिन्दगी में जबरदस्त उफान आया। शादी के लिए हर तरह के वर माता–पिता से मिलने लगे। ऑनलर सच्चे मित्र और हितैषी की तरह चिंता करने लगा। उसे मैरी कॉम का भविष्य शादी के बाद घर की चाहर दीवारी में सिमटता नजर आने लगा। ऑनर ने मैरी को रिझाने की कोई कोशश नहीं की और न ही कोई स्नेह निमंत्रण के लिए प्रेरित किया। वह सरल और निश्छल व्यक्तित्व का धनी था। उसने मैरी को जिंदगीभर साथ निभाने के लिए उसके समक्ष विवाह प्रस्ताव रखा दिया। मैरी का एक ही सवाल था "क्या तुम मुझे मुक्केबाजी करते रहने दोगे ?" ऑनलर का भी एक ही जवाब था "मै कभी तुम्हारे और तुम्हारे खेल–जीवन के बीच नहीं आऊँगा। मैरी के अपा ने ऑनलर को अधिक उम्र का बताकर विवाह के लिए इंकार कर दिया। दो वर्ष के अंतराल में घर–परिवार मैरी कॉम के जीवन का मुकाबला स्थल बन गया था। पिता से मनमुटाव होने पर वह अपनी सहेली के घर आ गई। मैरी ने पिता की मर्जी के खिलाफ घर से भागकर ऑनलर के साथ जीवन जीने की प्रतिज्ञा भी कर ली जो ऑनलर को मंजूर नहीं हुई। दोनों ने अपनी सूझ–बूझ से परिवारों की रजामंदी के साथ 12 मार्च 2005 को इंफाल के एक सबसे बड़े गिरजे में शादी कर ली।

विश्व प्रतियोगिताओं के पहले दो खिताबों ने मैरी कॉम को पुलिस के सिपाही की नौकरी दिलायी जिसे मैरी ने इंकार कर दिया था। दूसरे स्वर्ण पदक के बाद मणिपुर सरकार ने सब इंस्पेक्टर का पद पेश किया जिसे 2005 में मंजूर कर लिया। इस वर्ष मैरी कॉम दो वरदानों में पहला खेल कोटे से सरकारी नौकरी और ऑनलर जैसा स्नेही जीवन साथी उपहार में मिले। इन तीन कामयाबियों ने मैरी कॉम को 'मुक्केबाजी की रानी', 'मैगिनफिसेंट मैरी' प्रतापी मैरी के रूप में नवाजा गया।

शादी के कुछ साल बाद ऑपरेशन से बच्चे होने और दो बच्चों की दोहरी जिम्मेदारी के अहसास और चिंता से माता–पिता

ने मैरी को खेल की दुनिया से दूर रहकर आराम करने और बच्चों की देखभाल की सलाह दी। उनका कहना था कि कहीं कोई विरोधी भूल से मुकाबले के दौरान मैरी के पेट में मुक्का न मार दे "अगर टाँके खुल गये और इससे जटिलताएं बढ़ गयी तो? मैरी ने जवाब में कहा कि मैं किसी को अपने पेट पर मुक्का नहीं मारने दूँगी और मैंने ज़ोर देकर कहा कि कोई मुझे मुक्केबाजी से नहीं रोक सकेगा।

जुड़वाँ बच्चों को दूध पिलाना, देखभाल करना और घर की अन्य जिम्मेदारियों के साथ मैरी अपने लक्ष्य की ओर एकाग्र होने लगी। सैर सपाटे के न्योते ठुकरा दिए और उसके बदले अपना समय अभ्यास और कसरत करने में लगाया। ऑनलर ने भी उसकी सारी जिम्मेदारियों में बढ़–चढ़कर हिस्सेदारी निभाई। उसकी सॉझी मेहनत रंग लायी। दिल्ली में हुई पाँचवीं विश्व प्रतियोगिता में चौथा स्वर्ण पदक ऐतिहासिक जीत के साथ दुनिया की सबसे कामयाब महिला मुक्केबाज के रूप में चर्चित हुई।

बुलंद हौसलों और कठिन परिश्रम से बनी प्रतापी मैरी जीवन में एक ओर उपलब्धियों से स्वर्ण पदकों की झड़ी लगी हुई थी दूसरी और बहुत कुछ छूटता जा रहा था कुछ पाने के लिए मैरी को बहुत कुछ खोना भी पड़ रहा था जो हर किसी की हिम्मत की बात नहीं है। "विश्व प्रतियोगिताओं में जीते गये चार स्वर्ण पदकों में से, जो मैंने जीते थे, यह सबसे कीमती था। यह उन सारी कुर्बानियों का निचोड़ था जो मुझे करनी पड़ी थी। अपने पति को पीछे छोड़ आना तो काफी बुरा था ही, अपने जुड़वा बेटों से जुदा होना दिल तोड़ने वाली बात थी। उनके बड़े होने के कई पड़ाव मुझसे छूट गये। मैं किसी शिविर या प्रतियोगिता के लिए उन्हें छोड़कर आती और वापस आने पर पाती कि वे पहले से कुछ बड़े हो गये हैं या उनके चेहरे कुछ बदल गये हैं। यह पदक उन्हीं के लिए था।"[13]

राजनीति और पुरूषवाद ने आदिवासी दुनिया की प्रतापी और साहसी महिला मुक्केबाज मैरी कॉम को भी उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार बनाया "एक विश्व प्रतियोगिता में मेरे पहले स्वर्ण पदक ने मेरे नाम को अर्जुन पुरस्कार की सूची में दर्ज करा दिया था, लेकिन ऐन वक्त पर मेरा नाम काट दिया गया। यह एक व्यक्तिगत निराशा थी, मगर मुझे अर्जुन पुरस्कार दिये जाने का मतलब होता कि महिलाओं की मुक्केबाजी को दूसरे खेलों के बराबर समझा जा रहा है।"[14]

2004 में मैरी कॉम को आखिरकार अर्जुन पुरस्कार मिला। इसके कुछ समय बाद मुझे भारत के चौथे सबसे ऊँचे नागरिक सम्मान पद्मश्री के लिए चुना गया। लेकिन भारत का सबसे बड़ा खेल सम्मान, प्रतिष्ठित राजीव गाँधी खेल रत्न सम्मान मुझे कुछ तीखेपन का इतिहास लिए हुए मिला। पहली बार मैरी कॉम की अर्जी खारिज हो गयी थी। जब भारतीय मुक्केबाजी संघ ने दूसरी बार मैरी कॉम का नाम आगे भेजा तो चुनाव समिति के मिल्खा सिंह ने यह कहते हुए काट दिया कि उन्हें पता नहीं था कि मैरी कॉम किस खेल में हिस्सा लेती थी।

स्वर्ण कन्या मैरी कॉम को इस टिप्पणी से इतनी शर्मिंदगी और अपमान का अहसास हुआ और उन्होंने सार्वजनिक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए यह सवाल पूछा : 'देश को यह यक़ीन दिलानें के लिए कि मैं इस सम्मान के योग्य हूँ मुझे कितने और खिताब जीतने होंगे ?" महेन्द्र सिंह धोनी ने एक विश्व कप की जीत के बाद यह सम्मान हासिल कर लिया था तत्कालीन खेल मंत्री एम एस गिल ने मैरी कॉम को आश्वस्त किया कि उन्हें न्याय जरूर मिलेगा। आखिरकार यह घोषणा हुई कि बीजिंग ओलम्पिक प्रतियोगिता में कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज, विजेन्द्र सिंह और उसी प्रतियोगिता में कुश्ती में कांस्य विजेता, सुशील कुमार को और मुझे संयुक्त रूप से सम्मानित किया जायेगा। 29 अगस्तर, 2009 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल ने मुझे पुरस्कृत किया।

चीन में 2011 में एशियन कप से ठीक पहले मैरी कॉम का बेटा बीमार हो गया और दिल के ऑरेशन से गुजरना पड़ा। एक मां के लिए वह दौर बेहद तकलीफदेह और घोर निराशा वाला था। स्वयं मैरी कॉम के शब्दों में – "मैं पूरी निष्ठा से प्रार्थना करती, अपने डर परे धकेलती और खेल पर ध्यान लगाती। मैं सबसे कठिन दिनों के दौरान अपने परिवार से दूर थी। मुझे इस तपस्या की कीमत वसूलनी थी। मैंने वसूली और स्वर्ण पदक जीता। जिस समय दल खुशियाँ मना रहा था मैं चण्डीगढ़ पहुँचने के लिए बेताब थी।"[15]

2009 में जमशेदपुर में हरियाणा की पिंकी जोगरा से मैरी कॉम 15–15 अंक की बराबरी पर होने के बावजूद पक्षपात और पूर्वाग्रह के कारण हरायी गई और मैरी के विरोध करने पर 'खेल विरोधी' व्यवहार बताकर निलम्बित भी कर दिया। मैरी के क्षमा मांगने पर अस्थायी निलम्बन खारिज हो गया। मैरी कॉम को अपमानित होने से अन्दरूनी संघर्ष का कड़ा मुकाबला करना पड़ा जो किसी को भी दिखाई नहीं दे रहा था। जीवन के ऐसे विषैले अनुभवों से भी मैरी कॉम जबरदस्त मुकाबला कर रही थी।

2009 के महिला मुक्केबाजी को 2012 के ओलम्पिक खेलों में शामिल करने की औपचारिक घोषणा ने मैरी कॉम को फिर पिंकी जागरा से सामना करने के लिए मुक्केबाजी की जंग में मैदान में ला खड़ा किया। 2012 में 13–9 से मैरी कॉम ने पिंक जागरा को हरा दिया। तब पत्रकारों ने पिछले मुकाबले में हारने का कारण पूछा तो प्रतापी मैरी ने बताया "अगर एक अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी निर्णायकों के फैसले के बल पर एक राष्ट्रीय खिलाड़ी द्वारा पराजित घोषित किया जाता है तो इसका मतलब है कि गाड़ी पटरी पर नहीं है।"[16]

प्रशिक्षण के दौरान भी प्रशिक्षकों द्वारा अक्सर मणिपुरी होने के कारण भी मैरी कॉम को उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। प्रशिक्षक और अधिकारी अपने–अपने राज्यों के खिलाड़ियों को तवज्जो देते। मैरी कॉम के पास अखाड़े में उतरकर लड़ने और लगातार ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य साधने के सिवा कोई चारा नहीं था। मुक्केबाजी आँखों और पैरों का खेल है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तत्व है, दम–खम जिसके बल पर प्रतिस्पर्धा जीती जाती है।

2012 में लंदन ओलम्पिक खेल प्रतियोगिता में मैरी कॉम का चयन और कांस्य् पदक विजेता होने का सम्मान जीवन और खेल जगत का शिखर सम्मान रहा है। इसने स्वर्ण कन्या प्रतापी

ISSN No. : 0970-9398

मैरी के जीवन की अधिकांश बाधाओं को हरा दिया। मैरी कॉम के अदम्य साहस से उसका सपना पूर्ण हुआ। फिर दुनिया की साहसी महिला मुक्के बाज को वह सब मिला जिसकी वह हकदार थी।

"कई वर्षों की कड़ी मेहनत, हाथ खड़े करने से इंकार, सामने आने वाली हर सीमा को लाघंना। जीत का रोमांच, जीत की खुशी, और मेरी सफलताएं। मुक्केबाजी वह खेल है जिसे मैंने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। ओलम्पिक में जीता हुआ कांस्य पदक, मेरा सबसे कीमती तोहफा है। यह सब सच है। मैं पुराकथा के डेविड नामक यौद्धा जैसी थी और मैंने गोलायथ जैसे दानवों से मुक्केबाजी के अखाड़े में दो–दो हाथ किये। .... और मैं अधिकतर मौकों पर जीत गई।"

13 मई 2013 में चुंगथांगहेन 'प्रिंस' मैरी कॉम का तीसरा बेटा मैरी की जीवन गाथा (अनब्रिकेबल–अटूट) 'मेरी कहानी' आत्म कथा का आधार बना। मैरी कॉम जब दूसरी बार गर्भवती हुई तब गर्भ में आये बच्चे के साथ उन्होंने अपनी अदम्य साहस भरी दास्तानें आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत की। 25 नवम्बर 2018 में मैरी कॉम ने विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता का छठा स्वर्ण पदक जीतकर विश्व मानचित्र में भारत का नाम शिखर पर स्थापित कर दिया है। कर्मठ, जुझारू और साहसी सुपर मां मैरी कॉम ने आदिवासी समाज के साथ पूरे भारतवर्ष को विश्व में मुक्केबाजी के खेल में सर्वोच्च स्थान दिलाया है। भारत की आदिवासी महिला बॉक्सर एम सी मैरीकॉम ने छठी बार विश्व खिताब पर कब्जा जमाकर इतिहास रच दिया है। विश्व चैम्पियनशिप के छठे खिताबी जीत को देश को समर्पित कर उन्होंने कहा है 'मैंने अपना कर्त्तव्य निभाया है। मैं अपने कोचों और सहयोगी स्टाफ को धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। "

2003 में अर्जुन पुरस्क्र, 2006 में पद्म श्री, 2012 मे सीएनएन – आईबीएन इंडियन ऑफ द इयर स्पैशल अवार्ड, 2013 में पद्म भूषण, 2014 में बिग स्टार मोस्ट एंटरटेनिंग स्पोर्ट्स पर्सन ऑफ द ईयर, 2014 में दक्षिण कोरिया में एशियाई खेलों में गोल्डन मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं और 2018 में नेशनल गेम्स में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय महिला भी बनी हैं। विश्व एमेच्योर ग्रैडली चैंपियनशिप में छह बार जीत का रिकॉर्ड बनाने वाली एकल महिला हैं और कुल सात विश्व चैंपियनशिप में हर बार पदक जीतने वाली एकल महिला 2023 में दक्षिण–पूर्वी इंग्लैंड के विंडसर में वार्षिक यूके–इंडिया अवार्ड्स में 'ग्लोबल इंडियन आइकन ऑफ द ईयर अवॉर्ड, भारत सरकार का सर्वोच्च खेल पुरस्कार राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार और कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित मैरी कॉम तीन बच्चों की मां अभी भी अखाड़े से विदा होने को तैयार नहीं है। 26 अप्रैल 2016 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा नामांकित होने के बाद कॉम राज्यसभा की सदस्य भी रही हैं। संघर्षमयी जीवन जीने वाली साहसी मैरी कॉम का संदेश "मैं तहे–दिल से विश्वास करती हूँ कि अगर आप अपने अंदर के पूरे जोश और उत्साह के साथ अपने सपने को पूरा करने की कोशिश करते हैं तो कुछ भी असंभव नहीं है।"[17] (अनब्रिकेबल–अटूट)

–उप प्रबंधक (राजभाषा)
दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय 2, दिल्ली

संदर्भ

1. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 10 मंजुल पब्लिशिंग हाउस 2014
2. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 12 मंजुल पब्लिशिंग हाउस 2014
3. 'आदिवासी साहित्य परंपरा और प्रयोजन' : वंदना टेटे पृष्ठ संख्या 38 प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन 2013
4. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 20 मंजुल पब्लिशिंग हाउस 2014
5. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 21 मंजुल पब्लिशिंग हाउस 2014
6. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 23 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
7. पूर्वोत्तर का आदिवासी स्वरः संपादक : संपादक रमणिका गुप्ता पृ.सं. 26–27 अनन्य प्रकाश प्रथम संस्करण 2018
8. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 29 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
9. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 32–33 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
10. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 63 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
11. मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 66 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
12. आदिवासी दर्शन और साहित्य : संपादक वंदना टेटे पृ. 79 विकल्प प्रकाशन 2015
13. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 107–108 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
14. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 108 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
15. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 116 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
16. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 124 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014
17. 'मैरी कहानी' अनुवाद नीलाभ : आत्मकथाकार मैरी कॉम पृष्ठ संख्या 148 मंजुला पब्लिशिंग हाउस 2014

ISSN No. 0970-9398

26 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

26 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

26 जनवरी, 2024 को नई दिल्ली के कर्तव्य पथ पर आयोजित 75वें गणतंत्र दिवस परेड की झलकियां

भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, एन डी सी सी -II भवन, नई दिल्ली-110001
के लिए डॉ. धनेश द्विवेदी, उप संपादक द्वारा प्रकाशित तथा
वारिधि कार्ड एण्ड ग्राफिक्स, चावड़ी बाजार, दिल्ली द्वारा मुद्रित